भजनों की भेंट

लेखक:—

मुनिश्री धनराजजी (सिरसा)

संग्रहकर्ता:—

रामावतार जैन

प्रकाशक:—

डूंगरमल जैन (सोरे वाला)

भिवानीवाला जैन आदर्श
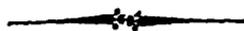
पी. ३५ कॉटन स्ट्रीट कलकत्ता ७

प्राप्ति-स्थानः—

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

भिवानी (पंजाब)

भिवानी वाला फैन्सी क्लोथ एण्ड जरी हाउस

पी० २५ कलाकार स्ट्रीट (जैन कटरा) कलकत्ता—७

राजगढ़िया सिल्क हाउस

पी० २५ कलाकार स्ट्रीट (जैन कटरा) कलकत्ता—७

बम्बई वाला फैन्सी साड़ी हाउस

पी० ३५ कॉटन स्ट्रीट कलकत्ता—७

प्रथम संस्करण नवम्बर १९६० — १००० प्रति

द्वितीय संस्करण अक्टूबर १९६२ — २००० प्रति

संशोधित—तृतीय संस्करण

१००० प्रतियां नवम्बर १९६४

मुद्रकः—

मा० रामरत्नपाल सिंहल

सुमित्रा प्रिंटिंग प्रेस, भिवानी।

मूल्य ६० पैसे

क्यों ?

चार वेदों में एक सामवेद है जो गाया जाता है। चार प्रकार के काव्यों में एक गेय काव्य बतलाया है; वह भी राग-रागिनी मय है। और तो क्या! तीर्थङ्कर भगवन् की वाणी भी मालवकोशिक्यादि राग युक्त होती है। वास्तव में विधियुक्त गाया हुआ गीत चित पर बड़ा भारी असर करता है।

कहा जाता है कि अकबर बादशाह के दरबार में तानसेन एक मशहूर गवैया था। वह दीपक राग गाकर दीपक जला देता था एवं मेघमल्हार गाकर मेह बरसा देता था। अपनी इस गायनकला की विशेषता से वह बादशाह का अत्यधिक प्रीतिपात्र बन गया था। एक दिन बादशाह ने उसके गाने की बहुत ज्यादा प्रशंसा की और पूछा, तानसेन तेरे जैसा गवैया दुनियाँ में कोई दूसरा भी है क्या ?

तानसेन—राजन्! मैं क्या गवैया हुं, गवैया तो मेरे गुरु श्री हरीदासजी हैं। वे जब प्रभुभक्ति में लीन होकर गाते हैं, तब सुनने वाले भान तक भूल जाते हैं। इन्सान तो क्या ? पशुगण भी मस्ती में झूमने लग जाते हैं। बादशाह के दिल में अब तो और ही ज्यादा कुतूहल पैदा हो गया और वह कहने लगा कि तुम्हारे गुरुजी का गाना मुझे भी अवश्य सुनवाओ !

तानसेन—हजूर ! वे सामान्यतया किसी को सुनाने के लिए कभी गाते ही नहीं, मात्र प्रभुभक्ति में लीन होकर गाया करते हैं अतः आपको सुनवाना मुश्किल है। ऐसे कहने पर भी बादशाह आग्रह करता ही रहा, तब उसे साथ लेकर तानसेन आश्रम में आया। दिल्लीपति को गुप्तरूप से बाहर बिठाकर स्वयं अन्दर गया एवं गुरुचरणों में सविनय प्रणाम किया। आने का कारण पूछने पर तानसेन ने कहा—भगवन् अमुक राग आपने मुझे सिखाई थी, किन्तु कुछ विस्मृत-सी हो गई अतः पुनः कृपा कीजिए।

शिष्य की प्रार्थना पर ज्यों ही गुरु ने भक्तिभरे भजन में वह राग गाना शुरू किया अद्भुत आनन्द बरसने लगा आनन्द भी इतना बरसा कि उससे ओत-प्रोत होकर बादशाह मूर्च्छित ही हो गया। समयान्तर उठाकर उसे गुरुचरणों में लुटाया एवं फिर दोनों शहर में आए, लेकिन अकबर रह-रहकर उस आनन्द का स्मरण करता हुआ कहने लगा-तानसेन तेरा गाना मैं प्रायः हमेशा ही सुनता रहा हूँ, पर आज जैसा आनन्द मुझे कभी नहीं आया, इसका क्या कारण? तू भी तो विश्व में सर्वोत्कृष्ट गायक है।

तानसेन—स्वामिन ! मैं स्वार्थवश आपको खुश करने के लिए गाता हूँ एवं मेरे गुरुजी निःस्वार्थ परमात्मा को खुश करने के लिए गाते हैं। अब आप ही कहिए ! स्वार्थ-भरे गाने में वैसा आनन्द कैसे आ सकता है ?

हाँ तो ! यहां इस प्रसंग को उद्धृत करके मैं यहि कहना चाहता हूं कि श्रद्धा-भक्ति एवं तत्त्वज्ञानभरे गायन डगमगाते मनमन्दिर को स्थिर करने में एक स्तम्भ का काम करते हैं। यद्यपि मैं संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, पंजाबी एवं राजस्थानी भाषा में लगभग पांच सौ भजन लिख चुका हूं फिर भी तृप्ति नहीं होती एवं झूमरमुनि द्वारा नई राग-रागिनी सुनाने पर व नये भाव उत्पन्न होने पर नये भजन लिखने के लिए पुनः विवश हो ही जाता हूं।

इस पुस्तक में संकलित भजन अधिकतर नये ही हैं। मुझे निस्सन्देह मानना चाहिये कि भजनानन्दी सज्जन इन्हें पढ़कर प्रभुभक्ति एवं वैराग्यरस में अवश्य झूमेंगे, क्योंकि मैं भी इनकी रचना करते समय झूमे बिना नहीं रह सका। बस ! इसी शुभ कामना के साथ जनता के समक्ष मैं यह भजनों की भेंट कर रहा हूं।

धनमुनि

प्रकाशकीय

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ शासन के नवम-अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने इस वर्ष ऐसे पारसमणि परम प्रभावक सर्वप्रथम शतावधानी धनमुनि का चातुर्मास देकर भिवानी नगर पर असीम कृपा की। अट्ठारह साल पहले मुनि श्री का चातुर्मास यहां अद्भुत उल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ था। समय-समय पर नगर निवासी उसका स्मरण कर ही रहे थे कि दुबारा चातुर्मास पाकर तो वे आनन्द-विभोर होकर मानों नाचने ही लग गये, एवं आचार्य श्री द्वारा की गई दृष्टि का पूरा-पूरा लाभ उठाने की कोशिस करते हुए उन्होंने भिवानी क्षेत्र के लिए अनेक नवीनताएँ क़ायम कर दी जैसे—पर्यूषण में सात दिनों का अखंड जाप, सामायिक समारोह में अधिक मात्रा में सामायिकें, संवत्सरी महापर्व पर १८० पौषध, तात्विक स्वाध्याय तथा चरित्रत्माओं के न होने पर भी भाई बहिनों का पीछे से अध्यात्म प्रवृति चालु रखने का आदि २।

मुनिश्री का असाढ़ शुक्ला नवमी को नगर में पदार्पण हुआ एवं धर्म-ध्यान के अनूठे ठाठ लगने लगे। रात को प्रार्थना के बाद लगभग दो मास तक तीनों ही मुनि प्रायः भजन सुनाया करते थे एवं पश्चात मुनिश्री धनराज जी पच्चीस बोल का अर्थ समझाकर जैन दर्शन के गूढ़तत्व को जनता के हृदयङ्गम करवाते थे।

भजन लोगों को विशेष प्रिय होने से बालोतरा (राजस्थान) से प्रकाशित "भजनों की भेंट" जिस में धनमुनि–चन्दनमुनि के बनाए हुए १०६ भजन हैं) पुस्तक की अधिक मांग हुई लेकिन समाप्त हो जाने के कारण न मिल सकी अतः इसका तृतीय संस्करण प्रकाशित करने का प्रयास किया है। आशा है भजनानन्दी भाई-बहिन इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे, अस्तु!

भवदीय—
चिमनलाल जैन

प्रस्तावना

दर्शन और संस्कृति के मर्मज्ञ असाधारण विद्वान् आचार्य श्री तुलसी के आज्ञानुवर्ती मुनि श्री धनराजजी जो तेरापंथ शासन में सर्वप्रथम शतावधानी हैं एवं अपने युग के बेजोड़ काव्य साधक हैं, उनकी लेखनी में काव्यधारा को प्रस्फुटित करने की अद्‌भुत शक्ति है। आपकी नित नई काव्यधारा अवलोक कर एक कवि की उक्ति सहसा याद आ जाती है—

सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूर्व बात।
ज्यों खर्चे त्यो-त्यों बढ़े, बिन खर्चे घट जात॥

वस्तुतः जीवन एक प्रयोगशाला है, जिसमें विभिन्न प्रकार के सुख, दुःख और स्वात्मानुभव की कड़वी-मीठी रासायनिक प्रक्रिया के फलस्वरूप जो अनुभूति होती है वह साधुजीवन में स्वाभाविक ही है। ये ही अनुभूतियाँ जब नैसर्गिक रूप से कवि की कलम से प्रवाहित होने लगती हैं तब एक उत्कृष्ट काव्यधारा बन जाती है।

साहित्य जगत में विद्वानों को लुभाने वाले शब्द-जाल से अलंकृत अनेकों काव्य उपलब्ध हैं अपितु जनता-जनार्दन के मर्मस्थल को छूने वाले, शब्द विन्यास की अद्‌भुत सरलता लिये भावभंगिमा के उत्कृष्ट प्रपात को प्रवाहित करने वाले

तथा आत्मवाद जैसी गहन आध्यात्मिक व दार्शनिक संश्लिष्ट गुत्थी को सुलझाने वाले लघुगीतों का संकलन जनता के लिए जनता की भाषा में रागबद्ध प्रायः मिलना दुष्कर है। यह संकलन इस अभाव की पूर्ति में एक बहुत बड़ा सफल प्रयास है। इसी दृष्टिकोण से यह संकलन अपने आप में एक अनूठा महत्व रखता है।

कविता स्वयं कवि के जीवन का निचोड़ है। अपने युग के समाज-जीवन का एक प्रतिबिम्ब है। जागृति का संखनाद है। मुनि श्री की भजनों की भेंट मानवसमाज को एक अपूर्व भेंट है जो अपने प्रगल्भ में अनेकों विशेषताओं से अलंकृत है। इस पुस्तक के अन्त में मुनि श्री चन्दनमलजी की कतिपय भाव भरी रचनाएँ भी दी गई हैं।

सौभाग्य और आचार्य प्रवर की असीम कृपा से मुनिश्री का चातुर्मास बालोतरा में हुआ। मुनिश्री के स्वयं तथा मुनिश्री झुमरमलजी व मूलचन्दजी के सुमधुर कण्ठाभरण से समय-समय पर गीतिकाएँ सुनने के पश्चात इनके संकलन करने की प्रेरणा उत्पन्न हुई। तत्पश्चात यहां के क्षेत्रीय तरुण कार्य-कर्त्ताओं ने अदम्य उत्साह और लगन के साथ इस पुस्तक का संकलन अल्पकाल की अल्पकाल की अवधि में ही कर डाला। इसकी उपयोगिता और हमारे श्रम की सफलता स्वयं पाठकों के हाथों में है।

—त्रिलोक "राकेश"

अनुक्रम

हिन्दी-भजन

मारवाड़ी–भजनमाला

क्रमांक विषय पृष्ठ सं०

श्री चन्दन मुनि द्वारा रचित गीतिकाएँ

कृपया अशुद्धियां सुधार कर पढ़िये।

पृष्ठ सं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१०	अमर-अमर	-अमर
१३	१५	धरता	धारता
२१	६	स्वर्ग भी देखो !	स्वर्ग भी देखा !
२१	६	नरक भी देखो	नरक भी देखा
३२	१२	मोटर पैं	मोटर
२६	११	बनें	बने
३१	१७	उढ़ेड़िया	ऊँटड़िया
३३	७	समझाया	सझाया
४०	१३	तो रही रे।	तो हो रही रे।
४४	१		यहां से चार अंक गलती छपे हैं।
५२	२०	छोड़ दो !	छोड़ दो !
५५	ध्रुवपदमें	प्यार	प्यारा(सब जगह)
५८	८	सीधो	सीधो-सीधो
५६	१४	शास्त्र प्रामाणै	शास्त्र प्रमाणै
६०	४	गाए लो कनी,	गाय लो कनी,
६०	१६	तिरया	तिरया
६१	१८	सू	सूं
६३	८	रहे	रहै
६३	१६	प्रटट्यो	प्रगट्यो

६६	१६	घड्या लितावै	घड्या बितावै
६७	१६	या भी	या भी है
७०	१२	पड्या है	पड्यो है
७५	८	पड पोंतां	पडपोता
८७	८	पूरा	पूरो
६१	६	इन्द्रया	इन्द्रयाँ
६१	१२	टालंनै	टालनैं
६७	११	जो म्हांसु कोई हुओ अबिनय	अविनय जो म्हांसू कोई हुओ
६६	७	गुरुजी यै	गुरुजी पै
६६	१३	हिरयां में	हिरदा में
६६	१७	उड़ारयां	उड़ास्यां
६७	१६	मीली	मीली
६८	१०	खाय	खाये
१०२	८	जिवेणी	त्रिवेणी
१०२	१५	समता	समता में
१०६	८	गति	गीत
१०६	१८	जाया	पाया

भजनों की भेंट

: १ :

शुभ कामना

(तर्जः-तेरा तीर)

एक ही हो ध्यान मेरा एक ही विचार हो,
वह सूरज कब ऊगे, सुखिया सारा ही संसार हो ॥ ध्रुव ॥

ना रहें बदमाशियाँ न चोरियाँ न जारियाँ,
ना रहें कचहरियाँ न हथकड़ियाँ न बेड़ियाँ। २
ना रहे पुलिसों के थाने ना काले बाजार हो ॥ व ॥ १ ॥

गालियाँ न बोलें कोई ना करें लड़ाइयाँ,
निकल जाय दुनियाँ से निंदा-चुगली और बुराइयाँ। २
एक-एक के आपस में अंदरूनी असली प्यार हो ॥ व ॥ २॥

दूसरों की देख माया रोष का न पोष हो,
अपनी-अपनी संपदा में सब ही को सन्तोष हो। २
राजा और प्रजा में न कभी खार का संचार हो ॥ व ॥ ३ ॥

धर्म की हो भूख प्यारे प्रभुजी का ध्यान हो,
मन में सच्चे साधुओं का पूरा ही सम्मान हो। २
धन मुनि की शुभ-कामना यह शीघ्र ही साकार हो ॥ व ॥४॥

: २ :

हमारे महावीर

(तर्ज-तुझे मेरे गीत बुलाते हैं)

जैन-दुनियाँ में सबसे बड़े वीर, प्रभु महावीर हमारे हैं ।
प्रभु के समरन से भाग जाती भीड़-प्रभु (ध्रुव)

त्राता हमारे भ्राता हमारे, माता-पिता वे हमारे ।
आत्मिक सुखों के विधाता हमारे, उनके हैं अद्भुत नज़ारे ।
मेरु से भी वे बढ कर थे धीर-प्रभु ॥ १ ॥

कर्मों की फौजों ने आकर के उन , झगड़ा भयंकर रचाया ।
लड़कर उन्होंने सब को हराया, डंका विजय का बजाया ।
कहलाये इसी से महावीर - प्रभु ॥ २ ॥

चाहे दिगम्बर हों या श्वेताम्बर, कहलाएँ देहरावासी ।
तेरापंथी कहलाएँ चाहे, कहलाएं स्थानकवासी ॥
(पर) आगे चल कर सभी के वे ही पीर-प्रभु ॥ ३ ॥

ध्येय एक है तो भी धन मुनि ! ध्यान के मार्ग अलग हैं ।
मार्ग सही अपनाना रे भाई । रहना खूब सजग है ॥
हमें लेना है भवजलतीर-प्रभु ॥ ४ ॥

: ३ :

भगवान से प्रश्न

(तर्ज-देखले है कितना नादान)

भगवान्! करो फरमान, करोगे कब मेरा कल्यान?
मैं शरणागत-भक्त तुम्हारा, तुम मेरे भगवान रे ॥ भ० ॥ ध्रुव ॥

चंडकोश ने डंक लगाया, तुमने उसे भी पंथ चढ़ाया।
भेजा अमरपुरी मे देकर, शम का मन्त्र महान् रे ॥ भ० ॥ १ ॥

गौतम तुम्हें हराने आया, इन्द्र जालिया तुम्हें बताया।
फिर भी तुमने ज्ञान सुना कर, उसे दिया निर्वान रे ॥भ०॥२॥

प्रतिद्वन्दी गोशाला कहाया, जिसने तुमको ठग ठहराया।
वाह-वाह कृपानिधान! उसे भी, सौंपा अमर-विमान रे ॥भ० ३॥

उड़दबाकुले खाकर कोरे, चन्दनबाला के बन्धन तोड़े।
जीभ एक है कैसे गाऊं, तेरे अमित बखान रे ॥ भ० ॥ ४ ॥

जो भी आया तुमने तारा, क्यों नहीं आया मेरा वारा?
अहो वीर भगवान्! धरो अब, धन की अर्ज पर ध्यान रे ॥भ०५॥

: ४ :

जल्दी तार

(तर्ज-तेरा तीर ······)

तार ! तार ! जल्दी तार ! तू ही तारन हार है,
प्रभु महावीर ! मेरे तेरा ही आधार है ॥ ध्रुव ॥

तू ही मेरा चांद और तू ही मेरा सूर है,
कामधेनु कामकुंभ तू ही गुनपूर है । २
चिंतारत्न तू ही मेरा, तू ही तो मंदार है ॥ प्र ॥ १ ॥

इष्ट देव तेरे सिवा मेरा कोई भी नहीं ।
देखता हूं जिस तरफ मैं दीखता मूझे तू ही । २
तेरे ही भरोसे मैंने छोड़ा घरबार है ॥ प्र ॥ २ ॥

तार दिये लाखों तूने सारा जग गा रहा,
(तो) मेरे वक्त तारने में ढील क्यों दिखा रहा ? २
चल रही हो गाड़ी वहां छाज का क्या भार है ॥ प्र ॥ ३ ॥

तेरापंथ आज मेरे कलेजे की कोर है,
सुनता नहीं मैं कोई करे कुछ शोर है । २
तेरे लिये नाथ ! मेरे प्राण उपहार हैं ॥ प्र ॥ ४ ॥

: ५ :

महावीर का जाप

(तर्ज: मन सुमर सुमर ······)

जप महावीर का जाप-जाप, जिया ! हर भवसंचित पाप-पाप ॥ध्रुव॥

प्रभु से अन्तर तार जोड़ले !
तज सब क्रियाकलाप-लाप ॥ जप ॥ १ ॥

चाहे बाहिर कुछ भी होवे,
तू कर आत्मालाप-लाप ॥ जप ॥ २ ॥

प्रभु गुण-अमृतरस के प्याले ।
पी धीरज से धाप-धाप ॥ जप ॥ ३ ॥

बन जाएगा अजर अमर-अमर तू,
पाकर ज्ञान अमाप-माप ॥ जप ॥ ४ ॥

शाश्वत शाँति मिलेगी तुझको,
हटेंगे तीनों ताप-ताप ॥ जप ॥ ५ ॥

शान्त हृदय मे शीघ्र लगेगी,
पावन प्रभु की छाप-छाप ॥ जप ॥ ६ ॥

रे झूमर मुनि ! मन-मन्दिर मे,
प्रभु गुन-प्रतिमा थाप-थाप ॥ जप ॥ ७ ॥

: ६ :

महावीर की महिमा

(तर्ज-दिल लूटने वाले जादूगर)

महावीर की महिमा गा करके, भवसागर से हम तर जायें।
उनकी शिक्षा अपना करके, लोहे से सोना बन जायें ॥ ध्रुव ॥

महिमा गाने में लीन बनें, सुमिरन का अनुपम रंग छने।
तंबूर के तीनों तारों सम, तीनों योगों में साम्य सने।
निज-पर का भान रहे न रती, प्रभु की लौ में लौ मिल जाये ॥म॥१॥

आत्मा की नैया त्यार करें, प्रभु महिमा का पतवार धरें।
ममता का लंगर खोलें फिर, भवसागर से हम पार तरें।
हैं मोह भंवर रागादि मगर-इन सबसे नाव बचा पायें ॥ म ॥२॥

सोने का प्याला सज्ज करें, उसमें शिक्षा की सुधा भरें।
सिंहनी का दूध न कॉसे में, टिकता कवियों के कथन खरे।
पी दूध शेर बनके गरजें, कर्मों के गीदड़ भग जायें ॥ म॥ ३ ॥

जो पारसमणि को छू जाता, वह लोहा सोना बन जाता।
पर अगर जंग हो लोहे पर, फिर तो वह पलटा नहिं खाता।
इस मन का जंग हटा करके, बन सोना जग को चमकाये . म॥ ४॥

यों प्रभु की महिमा गायें हम, पर्यूषण पर्व मनायें हम।
सब ही को शीघ्र खमा करके, अन्तर्मन शुद्ध बनायें हम।
धन मुनि ! गुलज़ार भिवानी में चोमासा यह दौड़ा जाये ॥म॥५॥

: ७ :

प्रार्थना

(तर्ज–भैया मेरे राखी के................)

भगवन् ! मेरे कर्मों के बन्धन को तुड़ाना,
भगवन् ! मेरी अर्जी पै गौर फरमाना ॥ ध्रुव ॥

कर्म नचाते इस चेतन को, हैं भटकाते इस चेतन को ।
टिकने एक पलक नहिं देते, मेरे प्यारे पावन मन को ॥
कर दिया इसको दिवाना २ ॥ भ० ॥ १ ॥

जब मैं तेरी सेवा में लगता, मस्ताना बन मुझको ठगता ।
ज्यों-ज्यों चाहता इसे पकड़ने, आगे से आगे यह भगता ॥
रहता न इसका ठिकाना २ ॥ भ ॥ २ ॥

काम को लाता क्रोध को लाता, शुद्धात्मा को मलिन बनाता ।
धन मुनि ! अपने दिल की कहानी, तेरे आगे साफ सुनाता ॥
दया जरा दिखलाना २ ॥ भ० ॥ ३ ॥

: ८ :

चरन की धूल

(तर्ज–चाहे दूर हो चाहे पास हो ....)

चाहे फूल हूं चाहे शूल हूं, मैं तो तेरे चरन की धूल हूं ।। ध्रुव ।।

फूल हूं तो भी तेरा ही हूं मैं,
शूल हूं तो भी तेरा ही हूं मैं ।
अपना समझ के निकट बुलाले,
अपने चरण में मुझको बिठाले ।।चाहे फूल हूं।।१।।

तूने कहा था जो बने मेरा,
तो मैं बनूंगा बेशक तेरा ।
मैंने जगत के ठोकर मारी,
बैठा लगाकर तेरे से यारी ।। चाहे फूल हूं ।।२।।

अब भी क्यों दर्शन मिलता नहीं है ?
सुख का सुमन क्यों खिलता नहीं है ?
क्रोध की ज्वाला जलती है काहे,
लोभ की वेलें फलतीं हैं काहे ।।चाहे फूल हूं ।।३।।

लगता पता ना प्रभु ! तू लगादे,
ज्ञान का दीपक दिल में जगा दे ।
धन का तो सच्चा त्राण तू ही है,
प्रान तू ही भगवान् तू ही है ।। चाहे फूल हूं।।४।।

: ६ :

चरण का दास

(तर्ज-चाहे दूर हो ......)

चाहे दूर हूं चाहे पास, हूं मै तो प्रभु के चरण का दास हूं ।।ध्रुव।।

जग की गुलामी कर-कर हारा, सुख की स्पृहा मे दुख को उभारा ।
चारों ही गति के चक्र लगाए, दुख जो सहे वे कहे भी न जाए ।
।।चाहे दूर हूं ।। १ ।।

प्यारे सुगुरु ने पंथ दिखाया, सोया पड़ा था आके जगाया ।
प्रभु की शरन मे लाके बिठाया, लगता है अब जग सपने की माया
।।चाहे दूर हूं ।। २ ।।

सुख का तो इसमे नाम नहीं है, भ्रमवश लालापान सही है ।
है यह जीना रजनी-बसेरा, पड़ता उठाना सब ही को डेरा ।
।।चाहे दूर हूं ।। ३ ।।

डेरा लगे कब मुक्ति-महल में, झूलूँ मै पल-पल अचल सहल मे ।
मुनिधन के मन एक ही आशा, पूरी करेंगे प्रभुजी पिपासा ।
।।चाहे दूर हूं ।। ४ ।।

: १० :

प्रभुगुनमाला

(तर्ज:—ढूंढो-ढूंढो रे साजना !)

पहनो-पहनो रे बन्धुओं ! पहनो हे बहनो ! प्रभु के गुनों की माला
यह माला, यह माला है दुनियाँ में आला रे,
या में चम-चम, हाँ ! या में चम-चम चमके तेज प्रभुवाला ॥
हो पहनो-पहनो ! ॥ ध्रुव ॥

इस माला के आगे लगती, फीकी-सी ग्रहमाला
(वह) बाहर का हरती अन्धेरा, (यह) करती आतम-उजाला ॥यह १॥

इस माला का एक-एक मनका, मनको धुलानेवाला
आगम-वेद-पुराणादिक में, गौर से मैंने निहाला ॥यह माला॥२॥

इस माला में है यह खूबी, इसको पहननेवाला
मोह-माया से मुड़जाता है, बनता है दीनदयाला ॥यह माला ३॥

खन्दक—गजसुकुमाला दिकने, पहनी थी यह माला
भिक्षुने भी माला यही धर, त्याग में जीवन ढाला ॥यह माला ४॥

प्रभुगुनमाला पहन के हम भी, खोलें शिवपुर-ताला
घनमुनि ! जन्म-मरणमिटजाए, पायें सुख सुविशाला ॥यह. ५॥

: ११ :

पंथ दिखाया

(तर्जः-अब रात गुजरने वाली है ......)

मै भटक रहा था जंगल में, मुझे पंथ दिखाया सतगुरु ने, २।
अंधेरी-अमावस छाई थी, अहो! चांद उगाया सतगुरु ने २॥ध्रुव॥

मैं तरस रहा था खाने को, जन्मों की भूख बुझाने को-बुझाने को।
बड़ी महर हुई! ज्ञानामृत का, प्याला पिलाया सतगुरु ने, २।
मैं भटक रहा था ॥ १ ॥

गहरी निद्रा मे सोया था, मैंने होश-कोश सब खोया था, २।
मेरे खुले अचानक भाग्य अहो! आकर के जगाया सतगुरु ने, २।
मै भटक रहा था ॥ २ ॥

मै सुख की सांस न लेता था, दुख के दरिये में बहता था २।
मेरी धन्य घड़ी! सुख सागर में, लाकर के झुलाया सतगुरु ने, २।
मैं भटक रहा था ॥ ३ ॥

मैं बना बनाया ढंगर था, मेरे अक्षर भैंस बराबर था २।
दे करके धनमुनि! सीख अजब, मुझे मनुष्य बनाया सतगुरु ने, २
मैं भटक रहा था ॥ ४ ॥

मैं गूँगा था मुझे बैन दिये, मैं अन्धा था, मुझे नैन दिए २,।
बहरा था पकड़ के कान अहो! गुरु-मन्त्र सुनाया सतगुरु ने, २।
मैं भटक रहा था ॥ ५ ॥

: १२ :

भीखन के गुन

(तर्ज–तुम ज्योतिपुञ्ज बन आए ······)

गुरु भीखन के गुन गाएँ, गाएँ-गाएँ-गाएँ-गाएँ
अन्तर्ज्योति जगाएँ, गुरु ॥ ध्रुव ॥

धैर्य गज़ब था शौर्य गजब था, भीखन का गाम्भीर्य गज़ब था।
शुद्धि गजब थी बुद्धि गजब थी, किस-किसको बतलाएँ ॥गुरु॥१॥

तेरह में से संत रहे पट, हिला न फिर भी अजब हृदय पट।
चलते रहे वीर प्रभु के बट, इंजिन बन मन भाए ॥ गुरु ॥ २ ॥

गुरु ने कितने भय दिखलाए, चारों ओर बाँध लगवाए।
किंतु शेर रुकने नहिं पाए, सच्चे तत्त्व बताए ॥ गुरु ॥ ३ ॥

चर्चाएँ करते ही रहते, कड़वी-मीठी समचित्त सहते।
किन्तु क्रोध में कभी न बहते, रसना गा नहिं पाए ॥ गुरु ॥ ४ ॥

अन्वेषण पूरा करते वे, गड़बड़ में न कभी पड़ते वे।
पापभीरुता आत्मिक शुद्धि, आज नजर नहिं आए ॥ गुरु ॥ ५ ॥

अजब बुद्धि के हेतु बहुत है, जिनमें अद्भुत ज्ञान निहित है।
चमत्कार होता सुनने से, हेम ने जय को सुनाए ॥ गुरु ॥ ६ ॥

आज भिक्षु चरमोत्सव आया, छोटा-सा यह भजन बनाया।
धनमुनि ! भक्तिलीन होकर हम, परमानन्द मनाएँ ॥ गुरु ॥ ७ ॥

: १३ :

पालता ही चल

(तर्ज–नागोरी बलदा ने)

आज्ञा गुरुदेववाली पालता ही चल ।
अपने अहंकार को तू टालता ही चल ॥ध्रुव॥

आज्ञा अविचल जो पालेगा, अहंकार जो टालेगा ।
सच्चा मोक्ष तू पावेगा, होश संभालता ही चल ॥आज्ञा १॥

सेनापति की आज्ञासार, सैनिक करते हैं स्वीकार ।
तूं भी अपने मनको मार, जीवन ढालता ही चल ॥आज्ञा २॥

अंधा लकड़ी के आधार, घड़ियां घण्टाघर के लार ।
होकर गुरु का आज्ञाकार, जन्म सुधारता ही चल ॥आज्ञा ३॥

हाथी-घोड़ा-मोटर कार, चलते ड्राइवर के अनुसार ।
तू भी अब अपनी रफ्तार, गुरु पै डालता ही चल ॥आज्ञा ४॥

गुरु हैं ब्रह्मा-विष्णु-महेश, गुरु हैं परमातम-परमेश ।
उनका अमृत मय उपदेश, धनमुनि धरता ही चल ॥आज्ञा५॥

: १४ :

सफल बनाले !

(तर्ज–भैया ! मेरे राखी के ......)

भैया ! तेरे जीवन को सफल बनाले !
भैया ! मेरी शिक्षा पर ध्यान लगाले ! भैया ! ॥ ध्रुव ॥

मानव-जीवन है अनमोला, हीरों से भी जाता न तोला।
देव तरसते इसके खातिर समझ न पाता जग यह भोला।
तू समझ के लाभ कमाले ! कमाले ! भैया ! ॥ १ ॥

कल्पवृक्ष से यह नहीं तुलता, भौतिक साधन उससे मिलता।
इसके फलने से चेतन का, तार तुरत उस प्रभु से जुड़ता।
अन्तरज्योति जगाले ! जगाले ! भैया ! ॥ २ ॥

जो अन्तर की ज्योति जगेगी, झूठी माया दूर भगेगी।
प्यारे प्रभु के चरण-कमल में, फिर तो सच्ची प्रीति लगेगी।
सच्चा प्रेमी कहाले ! कहाले ! भैया ! ॥ ३ ॥

सच्चे प्रेम बिना नहीं तरना, तरना हो तो सच्चा बनना।
धनमुनि कहता लकड़ी की ही, नैया का होगा उद्धरना।
लोहे का बोझा हटाले ! हटाले ! भैया ! ॥ ४ ॥

: १५ :

ज्ञान का फल

(तर्ज:-है अपना दिल तो अवारा)

यही तो ज्ञान का फल है ! न दुख में भूल जाना रे ।
यही तो ज्ञान का फल है, न सुख मे फूल जाना रे ॥ ध्रुव ॥

दुख-सुख आते ही रहते हैं, जोर लगाते ही रहते हैं ॥
रंग दिखाते ही रहते हैं, शिक्षा एक ही देते हैं ॥
धैर्य में भूल जाना रे ! यही तो ज्ञान का फल है ॥ १ ॥

राम मे भी दुःख आये, कृष्ण में भी दुःख आये ।
बचने वीर भी न पाए, हरिश्चन्द्र को भी गाएँ ॥
सभी ने धैर्य ठाना रे ! यही तो ज्ञान का फल है ॥ २ ॥

जन्मता है वही मरता, खिलता है वही सिकुड़ता ।
चढ़ता है वही तो गिरता, ऊगता है वही छिपता ॥
ज्ञानियों ने बखाना रे ! यही तो ज्ञान का फल है ॥३॥

गई चीज़ को न रोना, भावी पै न भान खोना ।
राजी "है" उसी में होना, सुखों की नींद सोना ॥
गीत प्रभु ही का गाना रे । यही तो ज्ञान का फल है ॥ ४ ॥

राज्य रोने से न मिलता, पेट रोने से न भरता ।
शांति से ही जीव तरता, धन ! फिक्र काहे करता ॥
खाले ! धीरज का खाना रे ! यही तो ज्ञान का फल है ॥ ५ ॥

: १६ :

एक दिन

(तर्ज:-मुझको बता मेरे प्रभु !)

करले खयाल अय दिला ! चलना पड़ेगा एक दिन।
मेड़ियां-मन्दिर छोड़ के, मरना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥ध्रुव॥

जीना है बन्दे ! चार दिन, रहना सभी का दोस्त बन।
जो तू करेगा दुश्मनी, तो डरना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥१ ॥

अपने धरम पर हर समय, रहना तू हो के सावधान।
सारा हिसाब आगे जा, पढना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥ २ ॥

पलड़ा झुकेगा धर्म का, तो तू झुलेगा मोक्ष में ।
वरना तो नरक-निगोद मे, सड़ना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥३॥

रक्खे हैं तूने जो ये जोड़, साथ न आयेंगे लाख-करोड़।
अगले जन्म को जब तुझे, तुरना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥४॥

धन की सलौनी सीख सुन, बन जा पवित्र प्यारे मन !
भीषण भव-जल से तुझे तरना पड़ेगा एक दिन ॥ क ॥ ५ ॥

: १७ :

आचरण

(तर्ज-मुझ को बता ")

तरने की चाह है अगर, बातें बनाना छोड़ दो !
करके दिखाना सीखलो। कह के दिखाना छोड़ दो ! ध्रुव ॥

बातें बनाते हो लाख टन. करने को किन्तु न एक कन।
कैसे तरेगी आत्मा, मुँह को फुलाना छोड़ दो ! त० ॥१॥

माप रहे तुम लाख गज, देते न लेकिन दो गिरह।
कैसे हो फिर इतबार अब, ढौंग रचाना छोड़ दो ! त० ॥२॥

रुपये निन्नानवे आचरन, एक रुपइया है बोलना।
अगर नहीं है आचरन, तो एक बजाना छोड़ दो ! त० ॥३॥

करते हो जो कुछ धर्म तुम, चुपके से कर लिया करो !
लेकिन जगत के सामने, उसको बताना छोड़ दो ! त० ॥ ४ ॥

बाहर-अन्दर एक-सा रहना है धन ! इन्सानियत।
खाने-दिखाने के दांत दो, रखना-रखाना छोड़ दो ! त० ॥५॥

: १८ :

आमदनी और खर्च

(तर्ज- इक परदेशी.......)

ध्यान आमदनी पै लगाया करोजी !
आंखें मींच पूँजी ना उड़ाया करोजी ! ॥ध्रुव ॥

कुँए सूख जाते जो नहीं हो आमदानी,
पूँजी हुई पूरी बस ! खत्म है कहानी ॥
सोचे बिना खर्च ना बढ़ाया करोजी ! आँखें ॥१॥

खर्चे ही खर्चे से कई बरबाद हो गये,
सुने और देखे हैं जो दिन-रात रो रहे ।
ऐसे बरबाद न हो जाया करोजी ! आँखें ॥२॥

देखो ! दिन-रात में चौबीस घंटे आते,
एक साँस पूँजी को खाए ही खाए जाते ।
दो घंटे तो कम से कम कमाया करोजी ! आँखें ३॥

ध्याया करो ध्यान टिकाया करो मन को,
तपस्या की आग में तपाया करो तन को ।
बुराइयों से आतमा बचाया करोजी ! आँखें ॥४॥

काँटों की शय्या में भैया ! सोना अब छोड़ दो !
फूलों की शय्या से धनमुनि ! मन जोड़लो !
गीत यह मस्त होके गाया करोजी ! आँखें ॥ ५ ॥

: १६ :

मेहमान बनकर रहो !

(तर्ज–क्या जाने किस वेष में बाबा !·······)

सबसे मिल जुल रहना जगमे, बन कर के मेहमान रे।
क्या जाने किस वक्त में बाबा ! निकल चलें ये प्रान रे ॥ध्रुव॥

कौन दोस्त है ? कौन है दुश्मन ? अपना कौन पराया ?
तू तू और मैं मैं का तुमने, बाजा व्यर्थ बजाया ॥ हो० २ ॥
मत रक्खो ! मत रक्खो दिल छोटा इसे,
बनालो खूब महान रे ॥ क्या जाने ॥ १ ॥

लाख मिलें चाहे कोटि मिलें, चाहे अरब-खरब मिल जायें।
लेकिन धन से शांति न होती, सभी शास्त्र यों गायें ॥हो० २॥
वह होगी, वह होगी जब तुम मानोगे,
सबको मित्र समान रे ॥ क्या जाने ॥ २ ॥

सत्रह वेला लूट–लूट भारत को जिसने खाया।
अन्त समय उस गजनीपति के, आँखों से जल आया ॥हो० २॥
पापों की, पापों की गठड़ी ले सर,
चुपके-से किया प्रयान रे ॥ क्या जाने ॥३॥

नौ पहाड़ियां नंदनृपति की, आखिर रह गईं जल में।
बीस कोटि बीसल की डूबी, मरा इसी हल-चल में ॥ हो० २॥
धनमुनि की, धनमुनि की सुन सीख सलौनी,
समता धरो सुजान रे ॥ क्या जाने ॥ ४ ॥

: २० :

अपनी भूलें

(तर्ज:-चन्दन बाला)

अपनी भूलें, हाँ ! हाँ ! क अपनी भूलें,
देखो ! तुम अपने आप ॥ मै कहता हूं ॥
मुक्तिपुरी का, हाँ ! हाँ ! क २, रास्ता यह बिल्कुल साफ ॥ मैं० ॥

अपनी भूल देखने वाला, सदा सचेतन रहता।
दिल में उसके सरलभाव का, दरिया हरदम बहता।
कूड़ कपट का, हां ! हां ! क २, लगता नहीं ज्यादा पाप ॥मैं० १॥

शांतभाव एकान्त स्थान में, दिल को जरा टिकाओ।
क्या-क्या भूलें हुई ? सभी का मन में चित्र बनाओं !
एक-एक का, हाँ ! हाँ ! क २, करना फिर पश्चात्ताप ॥ मैं० २ ॥

अगर दूसरा भूल बताए, तो गुस्सा मत लाओ !
मानों उसे हितैषी फिर से, उस रास्ते मत जाओ !
दुर्गुण सारे, हां ! हां ! क २, भागेंगे हो चुपचाप ॥ मैं ३ ॥

लेकिन वह जीना क्या जीना, जो भूलें हों फिर-फिर।
बार-बार कहलाने वाला, कहलाता है डंगर।
डंगर बनकर, हां ! हां ! क २, न बिगाड़ो अपनी छाप ॥मैं० ४॥

एक बात मै और कहूंगा, सुनलो धन ! धीरज धर।
औरों क़ी भूलें मत पकड़ो, जौंक-मक्खियाँ बन कर।
चलनी वाला, हां ! हां ! क २, धन्धा भी है अभिशाप ॥मैं०५॥

: २१ :

भगवान् बुलाते हैं

(तर्ज.–तुझे मेरे गीत बुलाते हैं · ·)

आजा अरे रे !! इन्सान ! तुझे भगवान् बुलाते हैं,
क्यों होता है जग में हैरान ? तुझे ॥ ध्रुव ॥

जगत-पिता परमेश्वर प्यारे, दुखियों के एक सहारे।
खबर नहीं कितनों के बेड़े, अब तक पार उतारे ॥
करना चाहते तेरा भी कल्यान ॥ तुझे ॥ १ ॥

स्वर्ग भी देखो ! नरक भी देखो ! पशुयोनि भी देखी।
मर्त्यलोक मे दर-दर घूमा, किन्तु न पाई कहीं नेकी ॥
असली नेकी के वे ही एक स्थान ॥ तुझे ॥२॥

जन्म हरेंगे मरण हरेंगे, चिन्ता-शोक हरेंगे।
अजर करेंगे अमर करेंगे, अपनी ही पदवी देंगे॥
कहलाएगा तू भी भगवान् ॥ तुझे ॥ ३ ॥

इस दुनियाँ में शान्ति नहीं है, कहना मेरा सही है।
चल-चल प्यारे ! प्रभु की शरण में, देरी का काम नहीं है ॥
धनमुनि ने सुनाया यह ज्ञान ॥ तुझे ॥ ४ ॥

: २२ :

श्मशान बुलाते हैं

(तर्ज:-तुझे मेरे गीत बुलाते हैं ... ...)

कर ज्ञान अरे इन्सान ! तुझे श्मशान बुलाते हैं।
वे चाहते बनाना मेहमान ॥ ध्रुव ॥

मेड़ी बनाले मन्दिर बनाले, चाहे बगीचे झुलाले।
हाट बनाले हवेली बनाले, चाहे झरोखे झुकाले ॥
अन्त हम ही बनेंगे तेरा स्थान ॥ तुझे ॥ १ ॥

राजा कहाले मन्त्री कहाले, चाहे तू सेठ कहाले।
लीडर कहाले प्लीडर कहाले, टीचर या प्रीचर कहाले ॥
अन्त मुर्दे की मिलेगी तुझे शान ॥ तुझे ॥ २ ॥

हाथी पै चढ़ले घोड़े पै चढ़ले, चाहे तू मोटर पै चढ़ले।
रेलों पै चढ़ले जहाजों पै चढ़ले, चाहे विमानों पै चढ़ले ॥
अन्त लठिया पै होगा रे प्रयान ॥ तुझे ॥ ३ ॥

सूती पहनले ऊनी पहनले, रेशमी चाहे पहनले।
रे रे **धनमुनि** ! देशी पहनले, चाहे विदेशी पहनले ॥
अन्त नंगा सोयेगा श्मशान ॥ तुझे ॥ ४ ॥

: २३ :

मैं-मैं का बाजा

(तर्जः-मोहन हमारे मधुवन में ......)

गुणगान अपने-आप अपने गाया न करो !
मैं-मै का बाजा मुँह से बजाया न करो ! ध्रुव ॥

मैं हूं पढ़ा मैं हूं लिखा, मेरे बड़े विचार ।
मिलने वाले हर समय, रहते खड़े दो-चार ।
ऐसे व्यर्थ रबाब, जमाया न करो ! मै-मैं ॥ १ ॥

चल रहा समाज आज मेरी सैन में ।
मै नहीं आता कभी किस ही की कैन में ।
मन ही से नवाब, यों बन जाया न करो ! मै-मैं ॥२ ॥

पढ़ता हू आधी रात जा, औरों के दुःख में ।
कब ही न दिल मे फूलता संपत् के सौख्य में ।
लप-लप ऐसे जीभ, चलाया न करो ! मै-मैं ॥ ३ ॥

नफरत मुझे होने लगी, दुनियां के काम से ।
कांपता है दिल मेरा, पापों के नाम से ।
धर्मीपन का ढोंग, यों दिखाया न करो ! मैं-मैं ॥ ४ ॥

धनमुनि कहता, अगर गुन हैं तुम्हारे में ।
फैलेगी अपने-आप खुशबू विश्व सारे में ।
भ्रमरों को दे आह्वान, बुलाया न करो ! मैं-मैं ॥ ५ ॥

: ७४ :

आना–जाना

(तर्ज–इचक दाना ......)

आना-जाना आना-जाना, यही जगत कहलाना ।
आता एक दूसरा फौरन, होता इधर रवाना ॥ ध्रुव ॥

आने वाला कहता मेरा, निश्चल यही ठिकाना ।
अजर बनूंगा अमर बनूंगा, कभी न मुझको जाना ॥
हो ! जाने वाला रोता-रोता, कहता हाय ! ठगाना ॥आ०॥ १ ॥

कुछ भी नहीं कमाया मैंने, जो था वह खरचाना ।
पता न कितनी लम्बी मंजिल, होगा मुझको जाना ॥
हो ! क्या खाऊंगा-क्या पिऊंगा ? आगे मुल्क बैगाना ॥ आ०॥२॥

इस माया-सागर के अन्दर, मोह-जाल फैलाना ।
इससे बचने वाला मच्छा, बोलो कौन सयाना ?
हो ! बड़े-बड़े फंस मरे इसी में, शास्त्रों का फरमाना ॥आ०॥ ३ ॥

आँखों वाले अन्धे होते, बहरे कानों वाले ।
हाथों वाले लूले होते, लंगड़े पैरों वाले ॥
हो ! किसे सुनायें कौन सुने अब, धन का सच्चा गाना ॥आ०॥४॥

: २५ :

क्यों खो रहा है ?

(तर्ज—फूलिये की मां——)

हीरे जैसी जिन्दगानी खो रहा है क्यों ?
बुरे पाप के बीज ओ बे ! बो रहा है क्यों ? ध्रुव ॥

तूने चीनी कितनी खाई, कितनी खा गया मिठाई ।
फिर भी जीभ से तू भाई, जहर विलो रहा है क्यों ? ॥ही० १॥

तूने दूध मनों पी डाला, तूने दही मनों खा डाला ।
फिर भी मन तेरा मटियाला, काला हो रहा है क्यों ? ॥ही० २॥

तूने घी भी काफी खाया, लेकिन दिल चिकना न बनाया ।
कर-कर हिंसा पाप कमाया, अब फिर रो रहा है क्यों ? ॥ही० ३ ॥

तज दे ! बातों की सफाई, तज दे ! हाथों की सफाई ।
करले अन्दर की सफाई, धनमुनि ! सो रहा है क्यों ? ॥ही० ४॥

: २६ :

किस को पकड़ें ?

(तर्ज—इचक दाना—...)

किसको पकड़ें ? किसको पकड़ें ? पंथ अनेक पड़े हैं।
पंथ-प्रणेता अपने-अपने, अड्डे जोड़ खड़े हैं ॥ ध्रुव ॥

किस ही को जाकर के पूछें, कहते हम ही सच्चे।
शास्त्र हमारे संत हमारे, किसी तरह नहीं कच्चे ॥
हो ! तरना हो तो आ जाओ ! हम तारणहार खरे हैं ॥कि० १॥

यों अपनी तारीफों के पुल, बांध रहे हैं सारे।
बात-बात में अपनी ही, खूबी के लगाते नारे ॥
हो ! इतने में भी बस ! नहीं होती, कहते और बुरे हैं ॥कि० २॥

आज दर्शनी बनें कर्षणी, दुनियाँ बन रही पानी।
अपने-अपने खेतों के हित, हो रही खींचा-तानी ॥
हो ! साच-झूठ का ख्याल कहां है, इर्ष्या-द्वेष भरे हैं ॥कि० ३॥

औरों का खण्डन करने में, मज़ा आज जो आता।
शायद अपने मत के मण्डन में, उतना नहीं आता ॥
हो ! इसीलिये तो मुक्तिपुरी के, ताले आज जड़े हैं ॥कि० ४॥

प्रभुवाणी में स्वश्लाघा और, परनिन्दा नहीं होती।
इसीलिए तो वीतरागता की, जलती है ज्योति ॥
हो ! धनमुनि ज्योति वही जलाने, हो तल्लीन जुड़े हैं ॥कि० ५॥

: २७ :

क्या सिखाया ?

(तर्ज— क्या कमाया ३ जी——)

क्या सिखाया ? क्या सिखाया ? क्या सिखाया जी ?
बोलो ? इस विज्ञान ने आ, क्या सिखाया जी ? ॥ ध्रुव ॥

बैठ विमानों में अहो ! उड़ना सिखा दिया,
मोटर—रेल—जहाजों पर चढ़ना सिखा दिया।
किन्तु मित्रता कैसे करना, यह न सिखाया जी ॥बोलो०॥ १ ॥

स्पीकर—फोन—रेडियो देकर बहरे कर दिये,
चश्मों पर चश्मे लगा कर अन्धे कर दिये।
सवारियां दे पैरों का पावर छिनाया जी ॥बोलो०॥ २ ॥

बीस-बीस अरबों रुपयों का पानी कर दिया,
बम बना कर के प्रलय को घर में धर लिया।
किस समय वे फूट पड़ें, कुछ पता न पाया जी ॥बोलो०॥ ३ ॥

आज की दुनियां को खा सकते हैं चार बम,
काफी है दो दिन का टाइम करने को खतम।
धनमुनि ने विज्ञान का नक्शा दिखाया जी ॥बोलो०॥ ४ ॥

: २८ :

फूलों में कांटे

(तर्ज—तेरा तीर——...)

आगे प्यार पीछे खार, यही तो संसार है।
फूलों की कलियों के नीचे कांटों की बहार है॥ ध्रुव॥

फूल लेने भोले लोग जाके हाथ मारते।
चुभ जाते हैं कांटे तब तो हा! हा! भी पुकारते २॥
इचरज होता फिर भी हाथ मारने तैयार हैं॥ फूलों०॥ १॥

जल जाते हैं बच्चे कई गर्म दूध पीने पर,
डरके मारे छाछ को भी फिर वे पीते फूंक कर॥
लेकिन जल कर भी न समझती दुनियां अजब अपार है॥फूलों०२॥

कर रहे पुकार ज्ञानी भोग हैं किंपाकफल।
खाते ही मर जाना होगा, जी न सकोगे एक पल २॥
मत चाटो तुम! मधु से लिपटी तीखी यह तलवार है॥फूलों०३॥

कितनाही समझादो लेकिन लोगों का नहीं ध्यान है।
वे ही घोड़े और वे ही दौड़ने मैदान हैं २।
धनमुनि! अब कैसे होगा दुनियां का उद्धार है॥ फूलों० ४॥

: २६ :

हवा का झौंका

(तर्ज— एक परदेशी········)

मौत की हवा का झौंका एक आएगा,
जिन्दगी का वृक्ष तेरा टूट जाएगा ॥ध्रुव॥

अड़ोसी-पड़ोसी कई खुशियां मनाएँगे,
प्रेमीलोग कई आँख आंसू भी बहाएँगे,
हंसे चाहे रोएँ तीर छूट जायेगा ॥ जिन्दगी ॥ १ ॥

बिल्ली के हाथ चढ़ी चुहिया का जोर क्या ?
बुगले के मुँह में चढ़ी मछली की दौड़ क्या ?
लगते ही चोट घड़ा फूट जाएगा ॥ जिन्दगी ॥ २ ॥

जन्मधारी कोई भी न आज तक अचल रहा।
चला कोई चल पड़ेगा पंथ सदा चल रहा ॥
क्या करेगा ? खर्चा यदि खूट जायेगा ॥ जिन्दगी ॥ ३ ॥

रास्ते के वासते सामान कुछ जोड़ ले !
भौतिक-सुखों से भैया ! मुँह को तू मोड़ ले !
राजसी-महलों मे प्रभु नहीं पाएगा ॥ जिन्दगी ॥ ४ ॥

पैसे के वास्ते प्रभु को जग भूलता।
कोई एक पैसा छोड़ प्रभुपद में भूलता।
धनमुनि ज्ञानभरा गीत गायेगा ॥ जिन्दगी ॥ ५ ॥

: २० :

भावी का चक्र

(तर्ज—नगरी-नगरी ·····)

चलता-चलता चल जाएगा, भावी का चकरिया।
क्या ताकत है किसी ही की, जो रह जाए अमरिया ॥ध्रुव॥

सारी ही दुनियाँ को इसने कर डाला हैरान है २,
बड़े-बड़े वीरों का इसने तोड़ दिया अभिमान है २।
रामायण और महाभारत का जाहिर है जिक्रिया ॥ च० ॥१॥

रघुपति को वन में भटकाया, सीता को हरवा दिया २,
लक्ष्मण के शक्ति लगवाई, रावण को मरवा दिया २।
महाभारत की हत्याओं का सब को है फिक्रिया ॥ च० ॥२॥

एक हजार वर्ष तक जिसने, सच्चा संयम पाला था २,
ढाई दिन में उसको इसने नरककुंड में डाला था २।
सारे ही तप-जप के ऊपर लगवादी सिफ़रिया ॥ च० ॥३॥

किस टाइम में किससे क्या कुछ करवालेगा पता नहीं २,
झूठा है अभिमान किसे कब रुलवा देगा पता नहीं २।
धनमुनि ! कहता करो अदा उस मालिक का शुक्रिया ॥च०॥४॥

: ३१ :

चर जायेगी

(तर्ज—नगरी-नगरी —)

चरती-चरती चर जाएगी, सब ही को बकरिया ।
लगगई है पत्तों के ऊपर, इसकी रे नजरिया ॥ध्रुव ॥

दुनियाँ सारी घड़ी दो घड़ी, खाकर बस तो करती है २,
चरती ही रहती है यह तो, लेकिन साँस न भरती है २।
रह जाए रोता ही चाहे, बेचारा गडरिया ॥ च० ॥ १ ॥

कदम उठाकर धरते-धरते, पता न यह क्या कर देगी २,
हंसते-हंसते किसका जीवन, किस रास्ते से हर लेगी २ ।
रह जाएगा तोल बीच ही, तोड़ेगी तकड़िया ॥ च० ॥ २ ॥

करना है सो कर ले पहले, पीछे होगा कुछ भी नहीं २,
कर क्या सके विनायक बाबा, जब गाड़ी ही उलट गई २ ।
हो हल्ला करने से क्या, जब कट गई रे गठड़िया ॥च०॥ ३ ॥

अपनी दौलत देख-देख कर, क्यों मगरूरी लाता है २,
औरों की हानि पर धनमुनि ! क्यों खुशियां दिखलाता है २ ।
पता नहीं किस कड़ बैठेगी, तेरी रे उडेंड़िया ॥ च० ॥ ४ ॥

: ३२ :

क्या था और क्या है ?

(तर्ज— इचक दाना ···)

फिरा जमाना-फिरा जमाना, लोगों ध्यान लगाना।
क्या था भारत ? क्या है अब ? और क्या होगा न ठिकाना ।।ध्रुव॥

छात्र विदेशी भारत आते, ऊँची डिग्री पाने।
आज विदेशों भारत जाता, डिग्री को अपनाने ॥
हो! पता नहीं भारतियों के दिल, कैसा भूत भराना ॥फि०॥१॥

सादा खाना सादा पीना, रहन-सहन भी सादा।
राजमन्त्री कुटिया में रहते, खर्च न करते ज्यादा ॥
हो ! आजमन्त्री-लोगों का खर्चा, जाता नहीं बखाना ॥फि०॥२॥

एकपतिव्रत-प्रण से होता, आगे व्याह सुहाना।
आज तलाकों की हलचल का, बड़ा हुआ पैमाना ॥
हो! ब्रह्मचर्य की घट रही महिमा, कहना सोलह आना ॥फि०॥३

भ्रातृ-प्रेम अद्भुत था भाई, जो कोई रहने आते।
ईंटें और रुपइया देकर, अपने तुल्य बनाते ॥
हो ! लूट-लूट कर आज, भाईयों को चाहते हैं खाना ॥फि०॥४॥

बाजारों में ढ़ेर मोतियों के, फिर भी नहीं चोरी।
नहीं छोड़ते आज भारती, जूतों की भी जोड़ी ॥
हो! सही ही प्रमाणिकता तो **घनमुनि,** मानो ! हुई रवाना॥फि०॥५

: ३३ :

मिट्टी का खेल

(तर्ज –जीते लकड़ी मरते लकड़ी ˙ ˙)

स्वर्ग मिट्टी नरक मिट्टी, मृत्युलोक भी मिट्टी का।
दुनियाँवालों ! इस दुनिया में खेल है सारा मिट्टी का ॥ध्रुव
सबसे पहले इस चेतन ने, जिस्म बनाया मिट्टी का।
खाना-पीना और पहनना, सभी समझाया मिट्टी का।
फिर दिल बहलाने हाथों में, लिया खिलौना मिट्टी का।
फड़दी से फिर बना ब्याह कर, युगल सलौना मिट्टी का।
फिर धन पाने दौड़ लगाई, धन भी प्यारा मिट्टी का ॥दु०॥१॥
घर चिनवाने फिर सारा, सामान जुटाया मिट्टी का।
बजरी-सीमेन्ट-ईंटें–चूना, लोह लगाया मिट्टी का।
घर को बसाने चक्की चूल्हा, फिर मंगवाया मिट्टी का।
थाली-लोटा-हाँड़ी-कुंड़ा, लाके बसाया मिट्टी का।
करने सजावट फिर फर्नीचर, ला-विस्तारा मिट्टी का ॥दु०॥२॥
साफ-सूफ रहने को साबुन-सोड़ा-पाउडर मिट्टी का।
खाने हवा जगत की, वाहन लिया जो सुन्दर मिट्टी का।
जीने की साधन औषधियां, रस उनमें भी मिट्टी का।
मरने की साधन औषधियाँ, विष उनमें भी मिट्टी का।
मिट्टी की महिमा क्या गायें, सकल पसारा मिट्टी का ॥दु०॥३॥
आत्मा पर भी पुण्य-पापमय, लगा पलस्तर मिट्टी का।
उसको दूर हटाओ भैया ! मर्म समझ कर मिट्टी का।
हट जाये वह तो मिट जाये, आकर लगना मिट्टी का।
अलख-निरजन पद मिल जाये, जहां न उड़ना मिट्टी का।
इसी टोह में बैठा धनमुनि लेकर गारा मिट्टी का ॥दु०॥४॥

: ३४ :

परदेशी पंछी

(तर्ज— परदेशी पंछी रे——)

परदेशी पंछी रे, क्यों बैठा पांख पसार ? ।।ध्रुव।।

इस पिंजरे का कुछ न भरोसा, आई बिल्ली तोड़ मसोसा रे।
बेपरवाही अगर रखी तो, खाएगा तू बेशक मार ।। क्यों ।।१।।

बिल्ली की कुछ खबर न लगती, किस टाइम में आके झपटसो रे!
पक्षिराज भी बड़े-बड़े, हो गए हैं इसके शिकार ।। क्यों ।।२।।

मौका है भैया! मेवे तू खाले! अपने हृदय को मजबूत बनाले रे!
फिर लड़ कर के बिल्ली का, करदे तू शिघ्र संहार ।। क्यों ।।३।।

प्रानी पंछी पिंजरा तन है, तप-जप मेवा बिल्ली मरन है रे।
धनमुनि ने खुद को समझाने, कर दिया भजन तैयार ।।क्यों०।।४।।

: ३५ :

धन के पीछे

(तर्ज— नगरी-नगरी——)

धन के पीछे अँधी होकर, दुनियां दौड़ी जा रही,
पाप-धर्म अन्याय-न्याय की कुछ परवाह न ला रही ।।ध्रुव।।

चोरी करती जारी करती, हिंसा का न शुमार है २,
बात-बात मे झूठ बोलती, जब करती व्यापार है २ ।
भूली सब कुछ रटना हरदम, धन की एक लगा रही ।।धन।।१।।

सर्दी सहती, गर्मी सहती, सह लेती बरसात को २,
भूख प्यास का ख्याल न करती, नहीं गिनती दिन-रात को २ ।
और कहे क्या ? धन की भूखी, हवा जेल की खा रही ।।धन।।२।।

क्या धन से सुख हो ही जाता, नहीं-नहीं जी ! कभी नहीं २ ।
धनी लोग भी तड़फ रहे हैं, एक पलक भी चैन नहीं २ ।
सुख से खा-पी सो नहीं सकते, चिंता उन्हें सता रही ।।धन।।३।।

इसीलिये कहते हैं; ज्ञानी, आंख ज्ञान की खोल लो ! २,
तृष्णा तज कर घड़ी दो घड़ी, नाम प्रभु का बोल लो ! २ ।
धनमुनि ! जीवन-धन की पूँजी, पल-पल घटती जा रही ।।धन।।४।।

: ३६ :

दुखियारी दुनियां

(तर्ज—पिंजरे के पंछी रे --)

दुखियारी दुनियाँ रे, यहां सुखी न देखा कोय।
जिसे भी पूछी दुःख-कहानी, दिया उसी ने रोय ॥ध्रुव॥

तनहानि से दुखी है कोई, धनहानि से दुखी है कोई रे।
मानहानि से दुखी बना कोई, सुख से रहा न सोय ॥ यहां ॥१॥

खर्चा ज्यादा है न कमाई, व्यापारी कहते यों सदा ही रे।
जमींदार सरकारी, रुख से, अँखियाँ रहे भिगोय ॥ यहां ॥२॥

नेतागण हरदम भय खाते, खुल्ले कहीं न जाने पाते रे।
पता न उन की जीवन-नैया, कब दे कोई डुबोय ॥ यहां ॥३॥

पिता दुखी सुत कहा न करता, नारी दुखी पति प्रेम न धरता रे।
सास दुखी बहुएँ लड़-लड़ के, रही महातम खोय ॥यहां॥४॥

भोगी दुखी दुखी है रोगी, फंसे ममत में दुखी हैं योगी रे।
मन को मारे बिना किसी को, सुख धन ! कैसे होय ॥यहां॥५॥

: ३७ :

वे तरेंगे

(तर्ज— मैं राही भटकने वाला हूं ......)

जो मन का मैल मिटायेंगे, वे भवजल से तर जायेंगे।
जो दिल को पाक बनायेंगे, वे भवजल से तर जायेंगे॥
तर जायेंगे, तर जायेंगे, वे अजर-अमरपद पायेंगे॥ ध्रुव॥

नहीं बात नई लड़ना-भिड़ना, है बात नई लड़ के मिलना।
जो लड़ के फिर मिल जायेंगे॥ वे०॥ १॥

लड़ते हैं बच्चे आपस में, फिर मिलते फौरन आपस में।
बच्चों से सबक पढ जायेंगे॥ वे०॥ २॥

क्या हो गया जो अपमान किया, क्या हो गया जो कटु बोल दिया।
बन ज्ञानी गम खा जायेंगे॥ वे०॥ ३॥

अपराधी को माफी देंगे, निज भूल की माफी जो लेंगे।
नहा-धो निर्मल बन जायेंगे॥ वे०॥ ४॥

जीना यह चार दिनों का है, मुश्किल धन। नर तन मौका है।
मौके का लाभ कमायेंगे॥ वे०॥ ५॥

: ३८ :

खमत खामणा

(तर्ज—भैया मेरे ! राखी के बंधन को ...)

पर्युषण का मौका है लाभ कमालो !
सच्चे मन से आपस में आज खमालो ॥ ध्रुव ॥

बाप मरे त्यों आप मरोगे, जो न हृदय को साफ करोगे।
तो न पता नरतन को खोकर, किस योनि में जाके गिरोगे।
ज्ञान की ज्योति जगालो–जगालो ! पर्युषण ॥ १ ॥

भैक्षव–शासन हाथ चढ़ा है, समझ रहे तुम भाग्य बड़ा है।
संत-सती समझाते तुमको, फिर भी चलता क्यों झगड़ा है ?
यह झगड़े की आग बुझालो–बुझालो ! पर्युषण ॥ २ ॥

आपस में सब जाति-सगे हो, इस झगड़े से जाते ठगे हो।
हर बातों में होती है हानी, स्याने हो किस राह लगे हो।
गांठों को अब सुलझालो–सुलझालो ! पर्युषण ॥ ३ ॥

किस का लेना किस का देना, किसका झगड़ा किसको रहना।
चार दिनों की चमक-चांदनी, स्वीकारो धनमुनि का कहना।
दिल को साफ बनालो–बनालो ! पर्युषण ॥ ४ ॥

: ३६ :

महावीर-जयन्ती

(तर्ज— तेरा कैसे हो कल्यान?........)

महावीर की महिमा खुश हो गायें हम,
मिल-जुल वीर जयन्ती आज मनायें हम ।। ध्रुव ।।

साढ़े बारह वर्षों में, ली सिर्फ दो घड़ी निद्रा।
वह जागरूकता प्रभु की, अपनायें तज कुछ तन्द्रा।
ज्योति जगायें हम ।। मिल-जुल ।। १ ।।

ग्वाले ने कीलें ठोकीं, खर ने फिर उन्हें निकाला।
प्रभु राग-रोष नहिं लाये, वह समता उनकी आला।
धर तर जायें हम ।। मिल-जुल ।। २ ।।

संगम ने तकलीफें दी; करती वे तन को कंपन।
प्रभु रहे मेरुवत् निश्चल, पल-पल कर जन का चिन्तन।
धैर्य बढ़ायें हम ।। मिल-जुल ।। ३ ।।

प्रभु के उपदेश अनूठे, शास्त्रों में भरे पड़े हैं।
उन सबको अमल मे लायें, यदि उन के भक्त खरे हैं।
भक्ति दिखायें हम ।। मिल-जुल ।। ४ ।।

सत्तत्त्व समझ में आया, वह दुनियाँ को समझायें।
प्रण करके आज सभी हम, धन्न! वीर-जयन्ती मनायें।
जय-जय पायें हम ।। मिल-जुल ।। ५ ।।

: ४० :

मधु-बिन्दु

(तर्ज— नगरी-नगरी······)

कटती-कटती कट जायेगी, तेरी रे टहनियां।
दो-दो चूहे काट रहे, क्यों भूला रे चेतनिया ! ॥ध्रुव॥

आंख खोल कर देख जरा, तेरे नीचे कुआँ भारी है २,
मुंह फाड़ दो बैठे अजगर, चार बड़े फण धारी हैं २।
इधर लूटना चाहता हाथी तेरा रे जीवनिया॥ कटती॥ १॥

काट रही तन इधर मक्खियाँ, क्यों न समझने पा रहा २,
तुच्छ शहद की बूँदों पर क्यों, रे मूरख ! ललचा रहा २।
बैठ विमान ले चलूं, मैं हूं तेरा रे स्वजनिया॥ कटती॥ २॥

मधु का लोभी किंतु न माना, आखिर डाली कट गई २,
बुरी तरह से मरा जगत की, दशा यही तो रही २।
समझाने को धनमुनि गाता, नन्हा-सा भजनिया॥कटती॥३॥

: ४१ :

आजादी का मूल-मन्त्र

(तर्जः—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ....)

आजादी के मूल मन्त्र को जो कोई पढ़ जायेगा,
सही रूप में आजादी का स्वाद उसी को आएगा ॥ ध्रुव ॥

सत्य-अहिंसा-संगठन से, गांधी जी ने काम लिया २,
बिना लड़ाई इस सोने की चिड़िया को आजाद किया २।
अमर हुआ इतिहास जगत में जुग-जुग गाया जायेगा ॥आ०॥१॥

लेकिन तत्त्व अमोलक तीनों, दुनियां भूली जा रही २,
हिंसा-झूठ-फूट के अन्दर, दिन-दिन झूली जा रही २।
नहीं सोचती इन चीजों से जग में अपयश छाएगा ॥ आ० ॥ २ ॥

प्रजा राज्य को धोखा देकर, माल कमाना चाहती हैं २,
लूट प्रजा को सरकारें भी, काम बनाना चाहती हैं २ ।
दोनों तरफ ठगी हैं, कौन ठगेगा ? कौन ठगाएगा ? ॥आ० ॥३॥

आशा थी कुछ सुख होगा, पर सुख के दर्शन है कहाँ ? २,
दिन दूनी दुख की आवाजें, आती हैं हर रोज यहां २।
लेकिन बिना दवा के कैसे, मर्ज मिटाया जाएगा ॥ आ० ॥ ४ ॥

लेक्चर देकर रस्म अदा, करने से होगा कुछ भी नहीं २,
धरो अहिंसा-सत्य-एकता, जो बनना आजाद सही २।
असली आजादी का झण्डा खुश हो धन लहरायेगा ॥आ०॥५॥

: ४२ :

दुनियाँ

(तर्ज—छलिया मेरा नाम....)

दुनियाँ इसका नाम, छलना इसका काम।
जो भी आ फंसता है इसमें, होता वही हराम ॥ध्रुव॥

जहां देखो वहां दगाबाजियाँ, जहां देखो वहां धोखा,
झूठ तोल है झूठ माप हैं, झूठा लेखा-जोखा।
प्यारी नर ही चाम, सबको चाहिये दाम ॥ जो भी ॥ १ ॥

देख लिए हैं साफेवाले, देखे पगड़ीवाले,
नंगे सर भी देख लिए, कई धोली टोपी वाले।
सबको धन से काम, शहर भले हो ग्राम ॥ जो भी ॥ २ ॥

ठेकेदार धर्म के भी, ऊपर से रंग दिखाते,
भाषणों में श्रोता लोगों को, आत्मिक-तत्त्व बताते।
लेकिन व्यर्थ तमाम, (वे) अन्दर चाहते नाम ॥ जो भी ॥ ३ ॥

कुँए भाँग पड़ गई पी जल, सारे हुए दीवाने,
चोरों की पल्ली है दुनियाँ, किसको शाह बखानें।
घनमुनि ! बन निष्काम, पहुंचो अब निजधाम ॥ जो भी ॥४॥

: ४३ :

रिश्वत के बयान

(तर्ज— एक परदेशी मेरा……)

पूजा हो रही है मेरी स्थान-स्थान में,
फैल गई मैं तो सारे ही जहान में ॥ ध्रुव ॥

चलता नहीं मेरे बिना मास्टरों का काम है,
डाक्टरों का निकल जाता मेरे आगे राम है २ ।
टी० टी० ठेकेदार भी हैं मेरी छान में ॥ फैल गई ॥ १ ॥

अड्डे हैं खास मेरे पुलिसों के थाने,
लाइसेन्स परमिट कण्ट्रोल की दुकानें २ ।
कोर्ट भी है त्यार मेरे सम्मान में ॥ फैल गई ॥ २ ॥

दुनियाँ लगाये चाहे कितने ही नारे,
राज कर्मचारी बने मेरे पियारे २ ।
बदनामी को लाते न जरा भी ध्यान में ॥ फैल गई ॥ ३ ॥

ब्याह-शादियों में भी है मेरा बोल-बाला,
मठों-मन्दिरों में भी जा हाथ मैंने डाला २ ।
मस्त है पूजारी मेरे गीत-गान में ॥ फैल गई ॥ ४ ॥

: ४४ :

रोते को हंसाना और हंसते को रुलाना,
खेल बांए हाथ का है जेल से छुड़ाना २।
कामधेनु गाय हूं सुखों के दान में ॥ फैल गई ॥ ५ ॥

असली है नाम मेरा रिश्वत न जाली,
कहलाती भेंट कहीं कहलाती डाली २।
पगड़ी व सलामी भी किसी जबान में ॥ फैल गई ॥ ६ ॥

सरकार ज्यों-ज्यों मुझे चाहती निकालने,
त्यों-त्यों मै बढ़ रही हूं दुनियां के आंगने २।
मेरे आगे हारे सारे ही मैदान में ॥ फैल गई ॥ ७ ॥

सादगी सच्चाई जग में जब तक न पाऊँगी,
समझा दो! भक्तों को तबतक मै न कभी जाऊंगी २।
सुनो प्यारे धनमुनि! सुनाऊ कान में ॥ फैल गई ॥ ८ ॥

: ४५ :

बंदा तेरा नाम

(तर्ज—छलिया मेरा नाम)

वंदा तेरा नाम, कर नेकी के काम!
वदी के रास्ते चलनेवाला होता है वदनाम ॥ध्रुव॥

वदी के रास्ते चलकर तूने, कितने धक्के खाये?
जनम-जनम कर बुरी तरह से, मर-मर कष्ट उठाये।
जो चाहे आराम, (अब) पापी दिल को थाम ॥ वदी ॥१॥

आंख मीच कर चलने वाला, आखिर ठोकर खाता,
जहर हलाहल पीने वाला, कभी न जीने पाता।
जो करता वद काम, जाता दुर्गति-धाम ॥ वदी ॥ २॥

राम-राम रटती है दुनियाँ, कृष्ण-कृष्ण हर वेला,
रावण और कंस को सारे, देते आज धकेला।
नेकी से हरि-राम, पाए सुयश प्रकाम ॥ वदी ॥ ३॥

वदी उसे कहते हैं जो, अपने को नहीं सुहाती,
नेकी की व्याख्या थोड़े में, जो अपने मन को भाती।
धन का सुन पैगाम, कर नेकी निष्काम ॥ वदी ॥ ४॥

: ४६ :

चौरासी के जंगल में

(तर्ज— दिल लूटने वाले जादूगर······)

इस चौरासी के जंगल में, तूं कब तक भटका जाएगा ?
फुटबोल की माफिक अय चेतन ! तू कब तक ठोकर खाएगा ? ध्रुव॥

है देव जो ठोकर नहीं खाता, वदा खाकर के सम्भल जाता ।
बंदों में क्या वह बंदा है, जो ठोकर खाए ही जाता ॥
बतलादे जरा ! क्या सम्भलेगा, या योंही भूला जाएगा ? इस १॥

इससे बढ़ करके सम्भलने का, अवसर फिर हाथ न आएगा ।
सम्भलेगा वह सुख पाएगा, भूलेगा वह पछतायेगा ॥
खोना या कमाना दो हाजिर, तू खोएगा या कमाएगा ? इस २॥

दुनियां यह कैद अनादि है, शिवनगरी में आजादी है ।
आजादी के सुख अमित कहे, यहां कुछ भी नहीं बरबादी है ॥
आजादी-बरबादी दो हैं, तू बोल ! किसे अपनाएगा ? इस ३॥

कदली-तरु सम इस चोले को, तप-त्याग का चाकू लेकर के ।
फिर-फिर के काटता जाएगा, परवाह कष्ट की नहीं करके ॥
धनमुनि ! वह केले खाएगा, जन्मों की भूख मिटाएगा ॥इस४॥

: ४७ :

बचजा !

(तर्ज— रुकजा ! रुकजा ! ओ जानेवाले······)

बचजा ! बचजा रे !

पापों से तू बचजा ! मैं तो तुझको बचानेवाला,
एक जोगी हूं मैं दूसरा कोई नहीं ।
पीले ज्ञानभरा मेरा एक प्याला ॥ ध्रुव ॥

भुगतेगा चौरासी, पापों में फंसेगा गर ।
पहुंचेगा शिव-मन्दिर, कर लेगा धर्म अगर ॥ बचजा ॥ १ ॥

फल धर्म के मीठे हैं, कड़वे है पापों के ।
अमृत नहीं मिल सकता, मुख में से सॉपों के ॥ बचजा ॥ २ ॥

बनती हैं कई चीजें, पशुओं के चमड़े से ।
हो सकता धर्म बड़ा, इस नर के चमड़े से ॥ बचजा ॥ ३ ॥

पापों से जो न बचा, प्रभु शरन में जो न जँचा ।
तो हीरा हार दिया, धनमुनि ने भजन रचा ॥ बचजा ॥ ४ ॥

—००<>०<>००—

: ४८ :

दो स्वाद

(तर्ज— एक रात में दो-दो चाँद खिले······)

इस जीवन में दो स्वाद भरे, एक मीठा है एक कड़वा है।
मीठे की भूखी दुनियाँ है, कड़वा तो आखिर कड़वा है ॥ध्रुव॥

चाहने से मीठा नहीं मिलता, मिठी चीजें खानी होंगी।
खाने से कड़वी चीज अहो ! रसना यह मीठी नहीं होगी ॥इस १॥

आशा धर आम्र-फलों की जो, तुम बीज आक के बोवोगे।
अकडोड फलेंगे जब आकर, तब हाथ मसल कर रोओगे ॥इस २॥

चीनी के बदले जहर मिला, जो खुश हो सीरा खाओगे।
तो खाकर के पछताओगे, तुम तड़फ-तड़फ मर जाओगे ॥इस ३॥

इतना-सा केवल कहना है, जो जीवन मिष्ठ बनाना है।
तो धनमुनि ! मीठे बन जाओ, तर जाओगे सच गाना है ॥इस४

: ४८ :

मधुकर बनजाऊँ

(तर्ज— वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया——)

प्यारे प्रभु के चरन कमल में, मधुकर बन जाऊँ प्यारा।
मधुर पराग-पान कर गूँजूं, और गूँजा डालूं जग सारा ॥ध्रु व॥

पावन मनमन्दिर के अन्दर, प्रभु को शीघ्र बिठाऊँ मैं।
बाहिर कभी न जाने दूँ, कर सच्ची भक्ति रिझाऊँ मैं।
चमक उठे मनमन्दिर मेरा, दुनियाँ देखे अजब नजारा ॥प्यारे॥१

प्रभु के आने से इस मन मे, पाप न रहने पाएँगे।
आया देख पुलिस का अफसर, चोर भागसब जाएंगे।
निरुपद्रव हो फिर मैं प्रभु को, पूजूँगा बन करके पुजारा ॥प्यारे॥२

पूजा करते-करते मेरा, भेदभाव मिट जाएगा।
प्रभुमय बन कर मेरा चेतन, खुद ही प्रभु कहलाएगा ॥
धनमुनि! परमानंद-परमपद, प्रकटित होगा विगतविकारा ॥प्यारे॥३

: ४६ :

डरना क्या

(तर्ज— जब प्यार किया तो डरना क्या ?)

मरने से मन में डरना क्या ? रो रो के आँसू झरना क्या ?
जन्म के साथ जुड़ा है मरना, फिर इसका भय धरना क्या ।।ध्रुव।।

देश नहीं कोई प्रान्त नहीं है, गांव नहीं कोई शहर नहीं है।
मरने बिना कोई घर भी नहीं है, फिर दुख की आहें भरना क्या
मरने से मन में डरना क्या ? १ ।।

जन्मे को आखिर मरना सही है, शंका को इसमें स्थान नहीं है।
सुप्रीम कोर्ट का निर्णय यही है, अब अपील का करना क्या
मरने से मन में डरना क्या ? २ ।।

जन्म मरण से दुनियाँ की गाड़ी, चलती है हर रोज अगाड़ी।
मरना अगर्चे न रहे जारी, फिर गाड़ी का चलना क्या
मरने से मन में डरना क्या ? ३ ।।

मरना बिगड़ा तो जन्म ही बिगड़ा, मरना सुधरा तो जन्म ही सुधरा।
धर्म से भरलो जो मरने का पलड़ा, तो धन मुश्किल तरना क्या
मरने से मन में डरना क्या ? ४ ।।

: ५० :

सामायिक-सम्मेलन

(तर्ज—एक परदेशी मेरा——)

मौका है सामयिकें बढ़ाये जाओजी!
सम्मेलन को सफल बनाये जाओ जी! ध्रुव ॥

असल में सामायिकों का मतलब यही है,
दो घड़ी तक समभाव रखना सही है।
जीवन नैया समता से तराये जाओजी! सम्मेलन ॥ १ ॥

बिना साधपने के न मोक्ष कभी पाता,
सामायिक नमूना साधपने का कहाता।
ध्यान एक मोक्ष पै टिकाये जाओ जी ॥ सम्मेलन ॥ २ ॥

सामायिक में खुले मुँह बोलना नहीं है,
सामायिक में बिना देखे चलना नहीं है।
आतमा को पाप से बचाये जाओजी ॥ सम्मेलन ॥ ३ ॥

वक्त न फिजूल खोना आज व्यर्थ बात में,
हो सकती सामायिकें भी तीस दिन-रात में।
करो और औरों से कराये जाओजी ॥ सम्मेलन ॥ ४ ॥

सामायिक की महिमा घन शास्त्र में बखानी,
पूनिये की सुनो जरा ध्यान से कहानी।
आतमा को धर्म में रंगाये जाओजी ॥ सम्मेलन ॥ ५ ॥

: ५१ :

छोड़ दो !

(तर्ज – एक परदेशी मेरा)

सच्ची सीख मानके शराब छोड़ दो !
ज्ञानी बनो आदत खराब छोड़ दो ! ध्रुव ॥

आती है बदबू शराबियों के मुँह से,
उठते विकार हा ! शराबियों की रूह से २ ।
त्याग करो व्यर्थ के जवाब छोड़ दो ! सच्ची ॥ १ ॥

सड़ने के बाद चीज बनती शराब है,
जीवों का पिंण्ड हाय ! हाय ! यह शराब है २ ।
प्याला पीकर बनना नवाब छोड़ दो ॥ सच्ची ॥ २ ॥

जलता है कलेजा अरे ! पीने से शराब के,
हो जाते सुराख अन्दर पीने से शराब के २ ।
बुरी जान पीने का स्वभाव छोड़ दो ! सच्ची ॥ ३ ॥

रहता नहीं ज्ञान इस शराब के नशे में,
बन जाता बे मान नर शराब के नशे में २ ।
मां-बहिनों पर होता दुर्भाव छोड़ दो ! सच्ची ॥ ४ ॥

कुछ नहीं कुत्ता घोड़ा और फिर हाथी,
तर जाओगे धनमुनि ! न होना इसके साथी २ ।
दूसरों को देना भी सुझाव छोड़ दो ! सच्ची ॥ ५ ॥

: ५२ :

दुर्लभ चिन्तामणी

(तर्ज—जब प्यार किया तो डरना क्या)

नर चोला फिर-फिर नहीं मिलना,
खोया चिन्तामणी नहीं मिलना।
लेना हो तो लेलो जी खुशबू,
फिर-फिर फूल नहीं खिलना ! नर ॥ ध्रुव ॥
सीटें इसकी नहीं है ज्यादा,
ग्राहक इसके हद से भी ज्याद।
पूरा हो कैसे सबका इरादा,
सुरतरु सहज नहीं फलना ॥नर चोला॥१॥
जिन के घर यह वृक्ष फला है,
पक रहा उनका प्राय गला है।
खा नहीं सकते न सकते खिला हैं,
कैसे हो संकट से टलना ॥नर चोला२॥
नाम के नर तो बढ़ते ही जाते,
संख्या में आगे चढ़ते ही जाते।
किन्तु गुणों से गिरते ही जाते,
हो रही पशुओं से तुलना ॥नर चोला३॥
भाइयों ! अपनी चादर धोलो !
ज्ञान-चरन से पावन हो लो।
धनमुनि ! अतर आँखें जो खोलो,
हो सुख सागर में झुलना ॥नर चोला४॥

: ५३ :

ज्ञान का तीर

(तर्जः—नैन का चैन चुरा कर ले गई——)

ज्ञान का तीर लगा है जब से, खुल गये मेरे भाग हो !
रंग-रंगीली इस दुनियाँ से, छूट गया अनुराग हो ! ध्रुव॥

चाहे पीऊँ खाऊँ चाहे, चाहे जागूं सोऊँ चाहे !
चाहे बैठूं उठूं चाहे, चाहे बोलूं चलूं चाहे ।
किन्तु हर क्षण उस प्रभु की, सुन रहा हूं राग हो ! ज्ञान १॥

तन न मेरा धन न मेरा, है सदन रजनी-बसेरा ।
जिसे कहता मूर्ख मेरा, नष्ट होता उसे डेरा ।
किसके लिए अब मैं लगने दूँ, मन ममता का दाग हो ! ज्ञान २।

क्रोध अहि को शान्त करके, मान गज को मार करके ।
कपट की झपटों से टलके, लोभ अरि से खूब लडके ।
सोया विश्व समस्त जगाऊँ, जाग-जाग खुद जाग हो ! ज्ञान ३।

जाग कर जग को जगाना, राह सच्ची ला चढ़ाना ।
सबसे बढ़कर धर्म है यह, आगमों का मर्म है यह ।
दीप से दीप जला कर, धनमुनि ! सुदृढ़ करु वैराग हो ! ज्ञान४।

: १ :

मारवाड़ी भजनमाला

सोरठा—महावीर महाभाग, समरी नैं सानन्द मन।
रचूं धरी अनुराग, भजन मारवाड़ी भला॥

प्रार्थना

(तर्ज—केण विलमायो म्हारो मोडियो जती)

प्यारा प्रभु! म्हारै घर आय जावोनी!
वेड़ा पार लगाय जावोनी! ध्रुव॥
म्हारै रे घर में छा रह्यो अंधेरो,
झिगमिग ज्योति जगायजावोनी! प्यार १॥
चोर अठारै लारै लाग्या,
यॉ सूं म्हारा घर नै बचायजावोनी! प्यार २॥
वेटा-वेटी हो रह्या कुपातर,
यां नै आय प्रभु! समझायजावोनी! प्यार ३॥
विणज न बिल्कुल चालै म्हारै,
थे कर महर चलायजावोनी! प्यार ४॥
पथ अनेक जगत में चालै,
मुगति रै पंथ चढ़ायजावोनी! प्यार ५॥
मौनी वण अब प्रभु! मत वैठो,
साचो-साचो ज्ञान सुणायजावोनी! प्यार ६॥
परम दयालु थे जग में वाजो,
दया वालो दृश्य दिखायजावोनी! प्यार ७॥
धनमुनि थांरै शरण पड्यो है,
शरणागतरी लाज रखायजावोनी! प्यार ८॥

: २ :

पार तिरां

(तर्ज—लग जावै तावड़ियो——)

महावीर री महिमा गाय, नरतन सफल करां !
महावीर रो ध्यान लगाय, भवजल पार तिरां !
हो ! तिरग्या लाखां तिररह्या कांई,
तिरसी संशय नांय ॥ नरतन सफल करां ॥ध्रुव॥

ज्ञान महावीर-सो ध्यान महावीर-सो,
म्हारै देखण में नहिं आयो, हो भाई !
सत्त्व महावीर-सो तत्त्व महावीर सो,
इण जुग में और न पायो, हो भाई !
हो ! जायो अद्भुत नान्हड़ो काँई,
धन-धन त्रिशला माय ॥ नरतन ॥ १ ॥

मीठी चक्री की खीर, खीरसागर को नीर,
यां सूं मीठी प्रभु री वाणी ॥ हो भाई !
सुणतां भागै भरम जागै ज्योति परम,
बणै आत्मा फटिक समाणी ॥ हो भाई !
हो ! अज्ञानी ज्ञानी बण्यां,
ज्यांरो वर्णन शास्त्रा मांय ॥ नरतन ॥ २ ॥

प्रभुरो अद्भुत प्रभाव साथै उन्दर-बिलाव,
अहो! केकि-भुजंगम; भूल्या ॥ हो भाई!
सिंह-बकरी मिल्या घोड़ा-भैंसा खिल्या,
अहो! वैरभावना भूल्या ॥ हो भाई!
हो! सदा शान्त वातावरण कांई,
दीठां नयण ठराय ॥ नरतन ॥ ३ ॥

महिमा मोटी-सी है जीभ छोटी-सी है,
अहो! किणविध आपां गांवां ॥ हो भाई!
प्रभुरी श्रद्धा धरां भवसागर तिरां,
धनमुनि कहे शिवसुख पावां ॥ हो भाई!
हो! नोखा में संवत्सरी-दिन,
लाग्या रंग सवाय ॥ नरतन ॥ ४ ॥

: ३ :

भीखणजी रो नाम

(तर्ज—शूरां सिंवरोनी राम........)

स्वामी भिखणजी रो नाम, सिंवरो सुबह अरु शाम।
सरसी सारा वंछित काम, बेगी मुगति मिलसी ॥ ध्रुव ॥

दीक्षा भरजोबन में लीधी, छाण शास्त्रां री कीधी।
साफ गुरुवां नैं कह दीधी, पोल कीकर चलसी? स्वा ॥ १ ॥

खासी चाली चर्चा-बात, नहीं मान्या रुघनाथ।
जद छोड़ चाल्या साथ, भिक्षु स्वामी हुलसी ॥ स्वा ॥ २ ॥

धमक्यां घणी ही दिखाई, भिक्षु डरिया नहीं राई।
श्रद्धा साची समझाई, लाखां तिरिया-तिरसी ॥ स्वा ॥ ३ ॥

खूब हुआ गहघाट, लाग्या संत-सत्यांरा ठाट।
आज वांरै नवमें पाट, गणिराज तुलसी ॥ स्वा ॥ ४ ॥

पूरा हुआ दोय सौ वर्ष, तेरापंथ ने सहर्ष।
इणही कारण सूं इण वर्ष, भारी मेला मणसी ॥ स्वा ॥ ५ ॥

दर्शन केलवा में करणा, भिक्षु स्वामी ने सिंवरणा।
तप-जप घणा-घणा आदरणा, ज्ञानज्योति जलसी ॥ स्वा ॥ ६ ॥

ढाल छोटी-सी बणाई, गाम असाढ़े धनमुनि गाई!
सुण श्रद्धालु भाई-बाई, मनमें भगति भरसी ॥ स्वा ॥ ७ ॥

: ४ :

तेरा पंथ

(तर्ज—माढ म्हांनै प्यारो लागैजी ...)

तेरा पंथ सुप्यारोजी आपांरो आधार तेरा,
भवजल तारणहार ॥ तेरा ॥ ध्रुव ॥

ना कोई थांरो ना कोई म्हांरो, ओ ! है प्रभुजी रो पंथ ।
इण में चाल्यां निश्चय आसी, जन्म-मरण रो अन्त ॥ते॥१॥

राजपंथ ओ ! मुगतिपुरी में, सीधो-जाय ।
इण पर चालण वाला प्राणी, परमेश्वर बण जाय ॥ ते ॥-२ ॥

वीर जिनेश्वर मुगति पधारया, फिर आयो कलिकाल ।
काल प्रभावे शिवमारग में, बिछवा लाग्या जाल ॥ ते ॥ ३ ॥

भवि-जीवां रै भाग-जोगसूं, प्रगट्या भिक्षुस्वाम ।
दीक्षा लेकर आगम वांच्या, जाच्या बण धृतिधाम ॥ ते ॥४॥

शास्त्र प्रामाणै संजम न पलै, वीनाविया गुरुदेव ।
पिण ना तेल तिलां में लाधो, जद निकल्या ततखेव ॥ ते ॥५॥

बगड़ी शहर में रामनमी-दिन, भारी लागी भीड़ ।
गुरु खुद आया आंसू बहाया, पिण न डिग्या बड़-वीर ॥ते॥६॥

तेरह साधां 'केलावापुर' में लीधो सजम-भार ।
वर्ष दोय सौ आज पूराणा, आनन्द हर्ष आपार ॥ ते ॥ ७ ॥

जयजिन-शाशन-जय-गुरुभिक्षु-जय-जय तेरापंथ ।
बालोतरा में धनमुनि-भाखै जय तुलसी गणकंत ! ते ॥८॥

: ५ :

गुरु गुण

(तर्ज़— केण बिलमायो म्हारो मोडियो जती)

गुरुआं रा गुण गाए लो कनी,
मन आनन्द मनायलो कनी ! ध्रुव ॥

गुरुगुण गायां ज्योति जागै,
ज्ञान री ज्योति जगायलो कनी ! गुरुआं ॥१॥

गुरुगुण गायां लाभ घणो है,
साचो लाभ कमायलो कनी ! गुरुआं ॥२॥

गुरुगुण गायां विनय वधै है,
विनय-विवेक बधायलो कनी ! गुरुआं ॥३॥

गुरुगुण गायां करम खपै है,
कर्मां री कोड़ खपायलो कनी ! गुरुआं ॥४॥

गुरुगुण गायां जय-जय होवै,
जीत-नगारा बजायलो कनी ! गुरुआं ॥५॥

गुरुगुण गायां तन-मन फूलै,
गा-गा गुण फुलायलो कनी ! गुरुआं ॥६॥

गुरुगुण गा-गो तिरया अनेकां,
आपणी भी नावड़ी तिरायलो कनी ! गुरुआं ॥७॥

गुरुगुण सागर में भर चाँ-चाँ,
जनमांरी प्यास बुझायलो कनी ! गुरुआं ॥८॥

धनमुनि ! गुरु गुण गंगा में न्हा,
मन नैं विमल बणायलो कनी ! गुरुआं ॥९॥

: ६ :

संतांरा दर्शन

तर्ज—वाणी रे संतांरी—·—)

दर्शन संतांरा म्हांनै प्यारा लागै,
खेल दुनियाँ रा सब खारा लागै ॥ ध्रुव ॥

संतांरा दर्शन नगद नारायण,
और सब काम उधारा लागै ॥ दर्शन ॥१॥

संतारा दर्शन मीठा सीरा,
दुनियाँ रा सीरा फीका गारा लागै ॥दर्शन॥२॥

संतांरा दर्शन मोत्यांरी माला,
(तो) दुनिया सारी कांकरां री माला लागै ॥दर्शन॥३॥

सूता जग नैं संत जगावै,
छोडण जद ज्ञान रा फुँहारा लागै ॥दर्शन॥४॥

भूख भगतां री सारी ही भागै,
संतांरा सनूरा जद भंडारा लागै ॥दर्शन॥५॥

अमृतवाणी संत जद बरसै,
आतमा मे ज्ञानगुलक्यारा लागै ।दर्शन॥६॥

साचा संत मिल्यां सू धनमुनि!
लेखै मिनखां रा जमारा लागै ॥दर्शन॥७॥

म्हानै तो गुरु कालू मिलिया,
प्यारा वांरा आज भी नजारा लागै॥दर्शन॥८॥

: ७ :

संतजी

(तर्ज मनवा नांय विचारी ......)

संतजी ज्ञान सुणावै रे,शरणागत भगतांरा बेड़ापार लगावैरे।।ध्रुव।।

गांवाँ-नगरां फिरै घूमता, फक्कड़ दावै रे।
रंक-राव एक भावे वरतै, भेद न ल्यावै रे ।। संतजी ।। १ ।।

आठ पहर साठूं ही घड़ियाँ, सुख में जावै रे।
सदा दीवाली संतां रै, होली नहिं आवै रे ।। संतजी ।। २ ।।

आशा ही आशा में दुनियाँ, डूबी जावै रे।
उदासीनपदलीन संत, ईश्वरपद पावै रे ।। संतजी ।। ३ ।।

बड़भागी भगतां रै, संत पाहुणा आवै रे।
ले दो आंगल रोटी, मोटी निधि दे जावै रे ।। संतजी ।। ४ ।।

संत-शरण में तेल तिलां ज्यूं, जो रमजावै रे।
अजर अमर पद में वै धनमुनि, मौज उड़ावै रे ।।संतजी।।५।।

: ८ :

भजनी री वंसरी

(तर्ज—हरिगुण गाय लै रे ……)

भजन री वंसरी रे, भगतां रै घर वाजै,
भजन रा नाद सूं रे भगतां रा घर गाजै।
सदा मगन हो वीच में रे भाई ! प्रभुजी आप विराजै ॥ ध्रुव॥

घड़ी दो घड़ी जाप सूं रे दुनियाँ जावै धाप।
भगतां रै होतो रहे रे भाई ! सांस-सांस में जाप ।। भजन ॥ १ ॥

दुनियाँ रे लगता रहै रे, मोह-माया रा लेप।
कमल-फूल दांई रहै रे भाई ! भगत सदा निरलेप ॥भजन॥२॥

एक दूसरां रा सदा रे, दुनियाँ देखै दोष।
दोषां स्यूं गुण खींचता रे भाई ! भगत धरै संतोष ॥भजन॥३॥

तेरी-मेरी कर रही रै, दुनियां एकण सांस।
तूं-मैं भूल्या भगतजी रे, ज्यांरै घट में प्रभु को वास ॥भजन॥४॥

भाड़ो देवण देह नैं रे रोटी खाय जरूर।
(पण) ठण्डी-ताती नहीं करै रे, घट प्रगट्यौ अनुभव नूर ॥भजन॥५

भगतां नैं करणी पड़ै रे, चाहे घर-संभाल।
पिण अंतर न्यारा रहै रे जिम, धाय खिलावै वाल ॥भजन॥६

सोहरो भगत कहावणो, पिण वणणो दोहरो सोय।
फिर भी भगत वण्यां विनारे, धन! तिरणो कदे न होय॥ भजन ॥७

: ६ :

चानणो

(तर्ज—झड़ाको माला रो……)

चानणो संतां कर दीन्हों, चानणो गुरुवां कर दीन्हों।
घाल ज्ञान रो काजलियो, अन्धारो हर लीन्हो ।। ध्रुव ।।

अब म्हे समझण लागग्या, है अन्दर म्हांरै ज्ञान ।
मृगला बण कर भटक्यां म्हांरो, कदे नहीं कल्याण ।।चानणो।।१।।

अब म्हांनै दीखण लगी, है आत्मा गुण री खान ।
इण सूं बध कर दूसरो, कोई तारक नहीं जहान ।। चानणो।।२।।

साफ-साफ दीखै खड्या, अब घर में डाकू चार ।
म्हे बेपरवाह सो रह्या, वै लूंट रह्या भण्डार ।। चानणो ।। ३।।

दुनियाँ खारी जहर है, अब गई समझ में बैठ ।
सुख शिवपुर रा अमृत है, पण पायां बधसी पैठ ।। चानणो ।।४।।

मुक्तिमार्ग दो है खरा, धन! ज्ञान-क्रिया सुखकार ।
ज्ञान गुरां करवा दियो, अब क्रिया सूं बेडा पार ।।चानणो ।।५।।

: १० :

ज्ञानी गुरु

(तर्ज - केण त्रिलमायो म्हारो मोडियो जती)

ज्ञानी गुरु ज्ञान सुणाय रह्याजी,
मुगति रो पंथ दिखाय रह्याजी ॥ ध्रुव ॥

सोहनी सूरत, मोहनी मूरत,
देख-देख जन सुख पाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ १ ॥

गहरी-गहरी ज्ञान री बातां,
खोल-खोल हद समझाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ २ ॥

शब्द-शब्द में तत्त्व भरयो,
गुरु जग जंजाल दिखाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ ३ ॥

मीठे स्वर सूं भजन रसीला,
गाय-गाय रंग लगाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ ४ ॥

श्रोता जन चित्राम बण्या बांने,
अमृत का-सा गुटका आय रह्या जी॥ ज्ञानी ॥ ५ ॥

मन ही मन गुरुवां रा गुण गा,
करमां री कोड़ खपाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ ६ ॥

दुर्व्यसनां ने छोड़ रह्या केई,
अद्भुत धर्म कमाय रह्याजी ॥ ज्ञानी ॥ ७ ॥

धनमुनि रै मन हर्ष न मावै,
रोम-रोम विकसाय रह्याजी ज्ञानी ॥ ८ ॥

: ११ :

प्रभुजी रो नाम

(तर्ज—तैने हीरा-सा जनम——)

जीवड़ा ! ले लैनी प्रभुजी रो नाम, ऊमर या थांरी ओछी हो रही
तूं तो करलै धरम रा काम, ऊमर या थॉरी ओछी हो रही
॥ ध्रुव ॥

चौरासी में फिरतां-फिरतां, मिनखादेही पाई।
प्रभु भजणै रो मौका भोला ! नयणां क्यूं नींद थांरै छाई ?
॥ ऊमर ॥ १

जो सोवैला तो खोवैला, भारी रतन अमोल।
उठ कर जल्दी बांध गांठड़ी, संतांरा सुणलै ! साचा बोल
॥ ऊमर ॥ २ ॥

पुरुष बणै पुरुषोत्तम, नर ही नारायण कहवावै।
इसो किसो है काम जिको, इण नरतन सूं होण नहिं पावै
॥ ऊमर ॥ ३ ॥

दुनियाँ री बातां में तो तूं, साठूं घड्या लितावै।
दोय घड़ी भी धर्म-ध्यान में, थां स्यूं लगाई नहीं जावै
॥ ऊमर ॥ ४ ॥

थोड़ो-घणो जितो भी होवै, करलै धनमुनि ! जाप।
सिर पर थांरै फण फूलायां, देख ! खड्यो है कालो सांप
॥ ऊमर ॥ ५ ॥

: १२ :

तृष्णा री बेड़ी

(तर्ज— तैंने हीरा-सा जनम .....)

तृष्णा री बेड़ी तोड़द्यो क्नी, मानो ! मानो ! मंतांरी मीठी सीख।
थांरै मुगति हुवैला नजदीक ।। तृष्णा री बेड़ी ।। ध्रुव ।।

तृष्णा री बेड़ी स्यूं जकड्या, थे दौड़ो दिन-रात ।
आछी-भूण्डी मूल न देखो, एक लालच री थांरै बात ।।तृष्णा।।१।।

भूल रह्या थे सध्या-पूजा, भूल रह्या थे माला।
भूल रह्या थे कथा-वारता, करम कमाय रह्या काला ।।तृष्णा।।२।।

खाणी रोटी पहरणा कपड़ा, चाहे कोड़ कमास्यो ।
तो भी मरती विरियां कपड़ा, खांपण रा दो का दो ही पास्यो।।तृ०।३

पहाड़ मिलै सोना-चांदी रा, तो भी मन नहीं धापै ।
तृष्णा अमित अनन्त कही है, इण नै कहोजी ! कुण मापै ।।तृ०।।४

लाभ वध्यां सूं लोभ वधै, ऐ शास्त्र-वचन है खुल्ला ।
किणविध आग बुझै जद तांई, पड़ता रहै जी ! उणमें पूला ।।तृ०।।५

फिक्र करो अगली पीढ्यां रो, या भी मूर्खाई।
एक पलक रो है न भरोसो, श्वासा आई के नहीं आई ।।तृष्णा।।६।।

त्रस करणै स्यूं शान्ति मिलैला, ज्ञानी संत बखाणै ।
धनमुनि भाखै इण स्यूं आगै,थे जाणो राम थांरो जाणै।।त०।।७।।

: १३ :

मिनख जमारो

(तर्ज— माढ ------)

मिलियो मिनखजमारो जी, मुँहगो लाखां मोल ॥ ध्रुव ॥

मिनखादेही पाय के रे, मत जाज्यो कोई फूल।
मिनखपणो आयां बिना रे, फूल्यां हुवैला भूल ॥मिलियो॥१॥

इण दुनियाँ रा सकल पदारथ, है मिनखां रै हेत।
तिम मिनखां रा मन प्रभु खातै, समझो! होय सचेत ॥मिलियो॥२॥

भजन-स्मरण और ज्ञान-ध्यान है, मिनखां रा रहलाण।
सत्य-शील-संतोष-दया स्यूं, मिनखां री पहिछाण ॥मिलियो॥३॥

आंधा भी आंधा सुझांखा भी आंधा, जो प्रभु दर्शन नांय।
अणपढ़ मूरख पढ़िया भी मूरख, जो प्रभुचिन्तन नॉय॥मिलियो॥४॥

बोला भी बोला सुणता भी बोला, जो न सुण्यो गुरु ज्ञान।
गूंगा भी गूंगा बोलता भी गूंगा, जो न कर्यो प्रभुगान॥मि॥५॥

लूल्हा भी लूल्हा, सहाथा भी लूल्हा जो न सुपातर दान।
पंगु भी पंगु पगवाला भी पंगु, जो न सुपंथ अभियान ॥मि॥६॥

सार इतो ही है कहणै रो, मिनखपणो अपणाय।
साचा मिनख बणो रे भायां! धनमुनि रह्यो समझाय। मि॥७॥

: १४ :

धरम—धन

(तर्ज— हरिगुण गायलै रे !)

धर्म-धन लूंट ल्यो रे ! सतगुरु रह्या लूँटाय ।
चाले जितरी गांठड़ी रे भाई ! बांधो थे सुख पाय ॥ध्रुव॥

धन लूंट्यां बाजै सही रे, लूंटेरा जग मांय ।
पण थे उलटा बाजस्यो रे भाई ! साचा धरमी शाह ॥ ध० ॥१॥

धन लूंट्या संसार में रे, मालिक दुखिया थाय ।
अठे लूंटावे हाथ सूं रे भाई ! सतगुरु हर्ष सवाय ॥ ध० ॥२॥

पांती लेवै धन तणीं रे, घर रा मेम्बर आय ।
इणरी पाती नहीं हुवे रे भाई ! मालिक चाह्यो खाय ॥ ध० ॥३॥

वो धन बांट्या स्यूं घटै रे, ओ धन वधतो जाय ।
वो पहुचावें नरक में रे भाई ! ओ शिवपुर ले जाय ॥ध०॥४॥

धर्मकूट म्हे कर रह्या रे, सुगुरु तणे सुपसाय ।
घनमुनि! जल्दी लूंटल्यो रे भाई ! अवसर फिर-फिर नांय ॥ध०॥५॥

: १५ :

वेलां

(तर्ज— माढ—…)

वेलां बीती जावैजी, ल्योनी ! लाभ कमाय ।।वेलां ।।ध्रुव।।

वेलांरा बाह्या थका रे, मोतीड़ा बण जाय।
थे परमाद करो मती रे, संत रह्या समझाय ।। वेलां ।। १ ।।

जीवन चंचल है सही रे, ज्यूं बिजली झबकार।
पोणा हुवै तो मोती पोल्यो, इणरो के इतवार ।।वेलां ।। २ ।।

नरतन पारसरतन है, रतनां रो सिरदार।
लोह तणो थे सोनो बणाल्यो ! है म्हांरी मनुहार ।।वेलां।। ३ ।।

आगै कोडां वर्षां तांई, करता हा तप घोर,
अब कुण्डै में रत्न पड्या है, चेतोनी ! चतुर-चकोर ।।वेलां।।४।।

कलजुग-कलजुग कोई मत कह्ज्यो, है सतजुग ही आज।
धनमुनि ! साचो धरम मिल्यो है, तारण-तरण जहाज ।।वेलां।।५।।

: १६ :

जमानो

(तर्ज— झड़ाको माला रो लाग्यो ......)

जमानो कलजुग को आग्यो, जमानो कलजुग को आग्यो।
सदाचार घट गयो जगत में, दुराचार छाग्यो ॥ ध्रुव ॥
हिंसा बधी झूठ हद करग्यो, आम हुवो व्यभिचार।
चोरी री चरचा ही छोड़ो ! चालै चोर बाजार ॥ जमानो ॥१॥
खरी बात तो लागै खारी, हां-हां आज सुहात।
बड़ा आदमी बण्यां पूतलो, हांजीड़ां रै हाथ ॥ जमानो ॥ २ ॥
साचा नैं पग-पग सीदाणो, झूठां रै हर मोज।
बेईमान बण रह्या बाघू, ओ कलजुग रो चोज ॥ जमानो ॥ ३ ॥
आगै धन रै तीजै हिस्से स्यूं करता व्यापार।
अब तिगुणो सिर मेल्ह दिवालो, बाघू जाय बाजार ॥जमानो॥४॥
जात-भाई स्यूं आगै धरता, पूरो-पूरो प्रेम।
अब भाई रै नीचै आयां, नहिं भाई रै खेम ॥ जमानो ॥ ५ ॥
खोल दूध स्यूं देतां आगै, रुपिया लिया उधार।
अब उधार देतां हो समझो ! शुरु हुई तकरार ॥ जमानो ॥६॥
दिन-दिन बुद्धि बिगड़ रही है, कलयुग रै दरबार।
डेरा-डांडा शीघ्र उठाकर, धनमुनि ! करो विहार ॥ जमानो ॥७॥

: १८ :

संसार रा दुःख

(तर्ज— पनजी मूंडे बोल !···)

सुणज्यो भाई रे !
संसारी नैं सुख सुपने नाहींरे ॥ सु ॥ ध्रुव ॥

सब सूँ पहली संसारी नै, दुःख रोट्यां रो लागे रे।
चिन्तातुर हो रोट्यां खातिर, इत-उत भागै रे ॥ सुणज्यो ॥ १ ॥
रोट्यां ह्वै तो दुख कपड़ा रा, चहियै बढिया-बढिया रे।
कपड़ा ह्वै तो चहियै गहणा, रतनां जड़िया रे ॥ सुणज्यो ॥२॥
गहणा ह्वै तो दुख हेली को, चहियै रंग-रंगीली रे।
हेली ह्वै तो रमणी चहियै, छैल-छबीली रे ॥ सुणज्यो ॥ ३ ॥
परणै प्यारी निकलै खोटी, तो नित छातो बालै रे।
तड़का-भड़का करै, न सुख स्यूं रोट्याँ घालै रे ॥ सुणज्यो ॥४॥
कदा सुपातर मिलै कामणी, तो तन रोग दबावै रे।
नही संतान है लारै, इम जीवड़ो घबरावै रे ॥ सुणज्यो ॥ ५ ॥
रोग मिटै कदा टाबर ह्वै तो, पाल-पोष परणाणां रे।
सगा-सम्बन्धी करै रूसणा, पड़ै मनाणा रे ॥ सुणज्यो ॥ ६ ॥
सगा कदाचित भला हुवै तो, निकलै पूत कुपातर रे।
सीख देवतां सिर में मारै, जूत फड़ा-फड़ रे ॥ सुणज्यो ॥ ७ ॥
कदाच बेटा हुवै कह्या में, पिण बूढापो आई रे।
सुद्ध-बुद्ध सारी खोवै, मौंचो दे पकड़ाई रे ॥ सुणज्यो ॥ ८ ॥
कदाच परवश न पड़ै तो पिण, काल खड़ो सर सांधी रे।
धन- वच सुण परभवरो भातो, ल्यो कुछ बांधी रे ! सुणज्यो ॥९॥

: १८ :

कमाई करलै !

(तर्ज – चामड़ै री पूतली भजन कर है !——)

कमाई करलै रे ! कमाई करलै ! चौरासी रा प्राणिया कमाई करलै !
अरे बटाऊ वाणिया कमाई करलै ! ध्रुव ॥

दया कमालै दान कमालै ! सत्य-शील-संतोष।
मान मारलै लोभ मारलै ! और मारलै रोष ! कमाई ॥ १ ॥

ज्ञान करलै आतमारो ! आतमा रो ध्यान।
छाण करलै धरम री ! मिलै ला भगवान ॥ कमाई ॥ २ ॥

छोड़ दे तूं चालबाजी ! चाल सीधी राह !
तेरी—मेरी भूलज्या ! हुवैली वाह—वाह ॥ कमाई ॥ ३ ॥

केन्द्र है कमाई रो, ओ नरअवतार।
मौको है लगाकर दाव, करलै वेड़ापार ! कमाई ॥ ४ ॥

हाथ नहीं आवै फेर, खोयोड़ो रतन।
सुण धनमुनि की सीख, करलै पहली ही जतन ! कमाई ॥ ५ ॥

: १६ :

माथै ऊपर मौत

(तर्ज— दयाधर्म का डंका दुनियाँ में—······—)

तूं किसै भरोसै भूल्यो है, थारै माथै ऊपर मौत खड़ी ॥ ध्रुव ॥

आ छायां रै मिष डोलै है, ऊमर रा पड़दा खोलै है ।
अमृत में विषड़ो घोलै है, सूकावै बाड़ी हरी-भरी ॥ तूं ॥ १ ॥

आ रोग रूप ले आ जावै, बण सांप-गोहिरो खा जावै ।
हो शस्तर शीश उड़ा जावै, रह जावै लारै फौज चढ़ी ॥तूं॥ २ ॥

सुखियां रो सुख नहीं सहन करै, दुखियां पर भी नहिं दया धरै ।
मौको पा सबका होश हरै, चाहे रोवै दुनियाँ पड़ी-पड़ी ॥तूं॥३॥

आ आयां पाछै न खावण दै, नहीं बिल्कुल जीभ चलावण दै ।
नहिं सैनां स्यूं समझावण दै, दुनियाँ में इणरी धाक बड़ी ॥तूं॥४॥

इण खाया राजा-राणां नें, नहीं छोड्या जोध-जवाना नैं ।
मारया मानी-मरदानां नैं, धन! भजलै प्रभुनै दोय घड़ी ॥तूं॥५॥

: २० :

छोटी-सी ऊमर

(तर्ज— फागण आयो रे......)

ऊमर छोटी-सी, ऊमर छोटी-सी,
क्यूं मोटा-मोटा पाप कमावै रे ? ध्रुव ॥

तीसी ढली ढली चालीसी, पच्चासी में चालै रे ।
साठी बुध न्हाठी होवैला, क्यूं नहीं न्हालै रे ? ऊमर ॥ १ ॥

आगै बड़ा-बड़ेरा लाखां-क्रोड़ां वर्षां जीता रे ।
अब सौ भी कुण जीवै, जीव्यां हुवै फजीता रे ॥ ऊमर ॥ २ ॥

बेटा-पोता-पड़पोतां री, क्यूं तूं चिन्ता ल्यावै रे ?
थांरो भी नहीं पलक भरोसो, कद मर जावै रे ॥ ऊमर ॥ ३ ॥

दो पइसा घी स्यूं रोटी, खावण रो थांरै सरतर रे ।
जी ! संतोषी-जीवन, खोटा धंधा मत कर रे ! ऊमर ॥ ४ ॥

घड़ी दो घड़ी जितो हो सकै, धर्म-ध्यान तूं करलै रे !
संतां री सेवा कर, साचो पथ पकड़ लै रे ! ऊमर ॥ ५ ॥

धर्मी बाज्यां गरज न सरसी, सरसी धर्म कमायां रे ।
धनमुनि साचा-साचा, प्रभु रा वचन सुणाया रे ॥ ऊमर ॥ ६ ॥

: २१ :

थोड़ो-सो जीणो

(तर्ज़— कोरो काजलियो----)

जीणो थोड़ो-सो, जीवड़ला आँख उघाड़ ! जीणो ॥ ध्रुव ॥

परपोटो पाणी तणो, फूटै नहीं लागै बार।
टूटै पीपल-पानड़ो, जीणै रो इसो विचार ॥ जीणो ॥ १ ॥

बाप मरया दादा मरया, कांई मरग्या पड़दादाह् ।
पीढ्यां री पीढ्यां खपी, क्यूं बैठो बेपरवाह् ? जीणो ॥ २ ॥

अवसर बीत्यो जा रह्यो, तूं चेत सकै तो चेत !
रोवैला बैठो पछै, चिड़ियां चुगजासी खेत ॥ जीणो ॥ ३ ॥

जगत चक्रीणो काल रो, ओ निशिदिन चाल्यो जाय।
जनम्यां ने छोड़ै नहीं, अणजनम्यां प्रभुपद पाय। जीणो ॥४॥

करसूं-करसूं कररह्यो, तूं मरसूं-मरसूं छोड़।
पण मरणो छोड़ै नहीं, धन । शास्त्रां तणो निचोड़ ॥ जीणो ॥५॥

: ७२ :

रोकड़

(तर्ज —सरोता कहाँ भूल आई प्यारे ननदोइया ! ·······)

थे रोकड़ रोज यूं मिलावो भविजीवां ! ॥ ध्रुव ॥

कितनी आज में करी समाई, कितनी फेरी माला ?
कितनी करी ठगाई मुख सूं, कितनी बोली गालॉ ? थे ॥ १ ॥
कितनी आज दया में पाली, कितनी हिंसा धारी ?
कितनो आज साच हूं बोल्यो, कितनी गप्पाँ मारी ? थे ॥ २ ॥
कितनो आज तीजो व्रत पाल्यो, कितनी कीवी चोरी ?
कितनो शील धरयो कितनी मुझ, बुद्धि विषय में दौड़ी ?थे॥३॥
कितनी आज करी सतसंगति, कितनो पर हित दौड्यो ?
कितनो व्रत-पचखाण वधायो, कितनो मूल ही तोड्यो ? थे॥४॥
जमा की कलमां लिखो जमा में, नामा की नामा में ?
गड़बड़-गोटो मूल न राखो, जिम दुख न पड़ै थामै ॥ थे॥५॥
दिन-दिन नामा की कलमां नैं, हलकी करता जावो ।
खूब वधाओ जमा की बाजू, जिम अविचल सुख पावो ॥थे॥६॥
द्रव्य-रोकड़ में गड़बड़ है तो, हथकड़ियाँ पड़ जावै ।
कदाच न पड़ै पिण इणमें तो, पोल चलण नहिं पावै ॥ थे ॥७॥
लेखो राई-राई को भाई ! परभव में पूछीजै ।
तुलसी प्रभु सुपसाये धनमुनि, ढाल रची मन रीझै ॥ थे ॥८॥

: २३ :

सांधपणौ री मौज

(तर्ज— इण लंकागढ़ में·······—)

थे सांधपणो ल्यो ! सांधपणैं में मारी मौज है ॥ ध्रुव ॥

खाण-पीण को फिक्र न करणो, ना कपड़ा को फिक्र ।
हाट-हवेल्यां की नहीं चिन्ता, एक धर्म को जिक्रजी ॥ थे ॥ १ ॥

कामणियां रा करड़ा-कांटा, पड़ै न कुपचन सहणाजी ।
बेटा-पोता पल्ला न ताणै, सदा मगनमन रहणाजी ॥ थे ॥ २ ॥

व्याह-सगाई पड़ै न करणा, ना मोसाला भरणा ।
कांण-मोकांण पड़ै ना जाणा, मरयां न आंसु भरणांजी ॥ थे ॥३

क्रोड़ाँपति भी लटका कर-कर, पगां में माथा रगड़ै ।
फक्कड़ दावे रहै साधुजी गरजां करणी न पड़ैजी ॥ थे ॥ ४ ॥

इक मन नैं वश करकै धनमुनि! सदा उड़ावैं मौजां ।
सुखे-सुखे शिव-महलां पहुंचै, मोड़ कर्म की फौजां जी ॥ थे ॥ ५

: २४ :

कांई कमायो ?

(तर्ज—हरिगुण गाय ले रे——)

कमाई कांई करी रे, पाकर नरअवतार ?
भलाई कांई करी रे, पाकर नरअवतार ?
दुनियाँ लाभ कमा रही रे भाई ! तूं भी आंख-उघाड़ ॥क॥ध्रुव॥

केई तपस्या कररह्या, केई पालरह्या है शील ।
पल-पल सफल बणारह्या, केई धर्म करै बिन ढील ॥कमाई॥१

ज्ञान सिखावै जगत नैं रे, केई सिखावै ध्यान ।
कल्पवृक्ष साचा बणी रे भाई ! केई सिखावै दान ॥कमाई॥२॥

भूल्या-भटक्यां नैं कई रे, सीधी सड़क चढाय ।
मुक्तिपुरी पहुंचा रह्या रे वांनै, किणविध भूल्या जाय ॥कमाई॥३॥

मिनखादेही पायकै रे, जो यूं ही मर जाय ।
सचमुच वै माणस नहीं रे भाई ! कीड़ां तुल्य-कहाय ॥कमाई॥४॥

धनमुनि ! तूं पिण आपणा रे, खाता वही संभाल ।
जमां रकम कितनीक है रे, थांरै नामै किती निहाल ॥कमाई॥५॥

: २५ :

मोती पोयलै !

(तर्ज—एक परदेशी ...)

धर्म री गंगा में हाथ हाथ धोय लैनी रे !
चानणो हुयो है मोती पोय लैनी रे ! ध्रुव ॥

धर्म कल्पवृक्ष है तूं चाह्या फल तोड़ लै !
कामकुम्भ हैं तूं मन चाह्या लाड्डू फोड़ लै !
(है) कामधेनु दूध ताजा चोय लैनी रे ! चानणो ॥ १ ॥
अमर बणावै धर्म अमृत समान है,
मोक्ष पहुंचावै धर्म अजब विमान है।
एक बार बैठ जरा जोय लैनी रे ! चानणो ॥ २ ॥
मुट्ठी बांध आवणो पसार हाथ जावणो,
जिसो बीज बोवणो विसोही फल पावणो।
धर्म वालो बीज अब बोय लैनी रे ! चानणो ॥ ३ ॥
पाप कर लेवणो न कोई बड़ी बात है,
रोवणो बीं पाप नै बड़ी-सी एक बात है।
प्रभुजी रै आगै जरा रोय लैनी रे ! चानणो ॥ ४ ॥
धनमुनि ! आतमा रो अर्थ पिछाण लै !
जाण नैं री बातां सब अबकै ही जाण लै !
धर्म वाला तत्त्व ने बिलोय लैनी रे ! चानणो ॥ ५ ॥

: २६ :

कहणी–करणी

(तर्ज.—नेह लगाड़ी राम ने जपो !——)

कहणी-करणी एक सरीखी, आज न नजर चढ़ै ।
लप-सप जीभ चलाती दुनियां, दौड़ी यूं ही फिरै ॥ ध्रुव ॥

चोरी बुरी है जारी बुरी है, सब कोई उच्चरै ।
पण छोड़ो ! इम कहण रै साथै, चुप्पो तुरत मरै ॥ कहणी ॥१॥

मरण हुवै जद शमशाणॉ में, हद वैराग चढै ।
पण घर पहुंच्यां पहली-पहली, पाछो ही उतरै ॥ कहणी ॥२॥

पैला नै प्रतिबोधण दुनियां, वातॉ बहुत करै ।
पण अपणा अचरणां री पोथी, बिरला खोल पढ़ै ॥कहणी॥३॥

ज्ञानी भी देख्या, ध्यानी भी देख्या ।, मौनी संत शिरै ।
पण मांही-बारै एक सरीखा, आज कठै निकलै ॥ कहणी ॥४॥

प्रेम-सच्चाई-समता-संयम, जे संतोष धरै ।
धनमुनि ! हरदेशे हरवेषे, वै संसार तिरै ॥ कहणी ॥ ५ ॥

: २७ :

आतमा री नींद

(तर्जः—केण बिलमायो म्हारो मोडियो जती)

आतमा री नींद उड़ायल्यो कनी,
आतमा स्यूं आतमा जगायल्यो कनी ! ध्रुव ॥

आतमा ही तालो आतमा ही चाबी,
तालै के चाबी लगायल्यो कनी ! आतमा री ॥ १ ॥

आतमा ही नावड़ियो है आतमा ही नावड़ी,
नावड़ी नैं पार लगायल्यो कनी ! आतमा री ॥ २ ॥

आतमा हकीम अरु आतमा ही रोगी,
रोगी को इलाज करायल्यो कनी ! आतमा री ॥३॥

आतमा ही गुरुणी है आतमा ही चेली,
चेली रो भरम मिटायल्यो कनी ! आतमा री ॥४॥

आतमा ही दुनियां आतमा ही मुगति,
दुनियां नैं मुगति बणायल्यो कनी ! आतमा री ॥ ५ ॥

धनमुनि ! आतमा नैं आतमा स्यूं समझो !
अजरअमरपद पायल्यो कनी ! आतमा री ॥ ६ ॥

: २८ :

दाग मत लगावो !

(तर्ज—केण विलमायो——)

आतमा रै दाग लगाइज्यो मती !
ऊजली नै मैली थे बणाइज्योमती ! ध्रुव ॥

आतमा है थांरी असली सोनो,
सोनेमें थे खोट मिलाइज्यो मती ! आतमा रै ॥१॥

आतमा है थांरी अमृत कूपी,
अमृत में जहर रलाइज्यो मती ! आतमा रै ॥२॥

आतमा है थांरी धर्म री गुदड़ी,
पाप की खोली चढ़ाइज्यो मती ! आतमा रै ॥३॥

आतमा है थांरी ज्ञान की दीवली,
फूंक मार इणनैं बुझाइज्यो मती ! आतमा रै ॥ ४॥

धनमुनि ! आतमा है मुगतिरी पावड़ी,
चढ़ जाओ फेर पाछा आइज्यो मति ! आतमा रै ॥५॥

: २६ :

आतमा नैं ज्ञान में उतारो !

(तर्ज—केण बिलमायो ——)

आतमा नैं ज्ञान में उतारल्यो कनी !
मिनखजमारो सुधारल्यो कनी ! ध्रुव ॥
खाय-खाय दुनियां रा माल सब खाया,
अब गम-खाणो धारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ १ ॥
पीय-पीय दुनियां रा रस सब पीया,
अब शमरस संभारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ २ ॥
बोल-बोल कांटा मोकला बिखेरचा,
अब ले बुहारी बुहारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ ३ ॥
आंधा बण-बण ऊंधा ही हल्या,
अब थे आंख उघाड़ल्यो कनी ! आतमा नै ॥ ४ ॥
मैं-मैं करता खूब ही थे नाच्या,
अब इण "मैं" नैं मारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ ५ ॥
दुनियां रा थोकड़ा तो घणा ही चितारचा,
आतमा रा थोकड़ा चितारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ ६ ॥
धनमुनि देवै सीख सलूणी,
आतमा रो तत्त्व विचारल्यो कनी ! आतमा नैं ॥ ७ ॥

: ३० :

आँख खोल लै !

(तर्ज— हरिगुण गाय लै रे ! ......)

आँख अब खोल लै रे ! ऊग गयो दिन कार ।
पाप-पुण्य तोल लै रे ! पड़ी ताकड़ी त्यार ॥ आँख ॥

सोतां-सोतां बीतग्या रे, जन्म अनन्त उदार ।
फिर-फिर हेला दे रह्या रे भाई ! सतगुरु चौकीदार ॥आंख॥१॥

वैरयां री सैना बड़ी रे, सिर पर रही पुकार ।
जो आलस नहीं छोड़सी रे भाई ! तो हो जासी हार ॥आंख॥२॥

सत्य-शील-संतोष का रे, हाथां लै हथियार ।
काम-क्रोध-मद-लोभ नैं रे भाई ! मार-मार झट मार ! आंख॥३॥

जीत-नगारा वाजसी रे, बण जासी अविकार ।
मोक्ष हुसी घर आंगणै रे भाई ! सीख सुगुरु की धार ! आंख॥४॥

लाखां हीरां नहिं मिलै रे, मानव को अवतार ।
भ्रम को पड़दो तौड़ दै रे धन ! होसी बेड़ा पार ॥ आंख ॥५॥

: ३१ :

मावां नैं सतावो !

मावां नै सतावो मत भोला भाईड़ां।
मावां नैं भूरावो मत भोला भाईड़ां ! ध्रुव पद ॥

आछो नहीं है सताणो, आछो नहीं है झूराणो।
कह्णो साधुवां रो मानो ॥ भोला भाईड़ां ! १ ॥

थांनैं कित्ता दोहरा पाल्या, थांनै कियां-कियां संभाल्या।
वै दिन क्यूं बिसारै चाल्या ? ॥ भोला भाईड़ां ! २ ॥

आला आपकै बिछाया, थांनैं सूका में सुवाया।
उठ-उठ रात नै चुंघाया ॥ भोला भाईड़ां ! ३ ॥

थांनैं हाथां में हुलराया, थांनैं गोदूयां में खिलाया।
लोर्‌यां दे-देकर परचाया ॥ भोला भाईड़ां ॥ ॥ ४ ॥

थांनैं बेठणो सिखायो, थांनैं बोलणो सिखायो।
थांनैं चालणो सिखायो ॥ भोला भाईड़ां ! ५ ॥

आप लूखी-सूकी खाई, थांनैं ल्या-ल्या दूध-मलाई।
चोटी पकड़-पकड़ कर पाई ॥ भोला भाईड़ां ! ६ ॥

इण विध पाल-पोष परणाया, घर की सूंपी सगली माया।
अब थे आपै बारै आया ॥ भोला भाईड़ां ! ७ ॥

थांनैं नार्‌यां लागै प्यारी, थांनैं मावां लागै खारी।
शर्म न आवै बोलो गाली ॥ भोला भाईड़ां ! ८ ॥

खोटो मावां को संताप, इण सूं लागै मोटो पाप।
धन की सीखड़ली है साफ ॥ भोला भाईड़ां ! ९ ॥

: ३२ :

अब तो भजन कर !

(तर्ज—डोकरड़ी हे ! राम……—)

डोकरड़ा रे ! अब तो भजन कर भोला !
तूं मत कर निकमां रोला ॥ डोकरड़ा रे ॥ध्रुव॥

माथो तो थांरो डगमग हालै रे,
बाल हुआ सब धोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥१॥
आंख्यां सूं तनै पूरा नही दीसै रे,
बड़ गया अन्दर डोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥२॥
दांतां स्यूं तूं बण गयो बोखो रे,
कान हुया थांरा बोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥३॥
पग भी थांरा टिकण न पावै रे,
खाय रह्या झकझोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥४॥
घर वाला थारी सेवा न सारै रे,
मारै कुबचन ठोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥५॥
सुणता भी अणसुणता बणै रे,
बोलता बणै रे अबोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥६॥
ठण्डी-बासी तनै रोट्यां देवै रे,
सोवण टूट्या खटोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥ ७॥
कहतां ही झट घुरघुर करता रे,
आय फिरै थांरै दोला ॥ डोकरड़ा रे ! ॥८॥
धनमुनि ! अब तो और न चारो रे,
लै प्रभुनाम अमोला ! ॥ डोकरड़ा रे ! ॥६॥

: ३३ :

मंगल मनावां !

आवो सहेल्यां ! आपां मंगल आज मनावां हे !
मंगल आज मनावां मिल-जुल, गुरुदर्शन नैं जावां हे आ ॥ध्रुव॥

आख्यां फाड रह्या हा पल-पल, कद गुरुदर्शन पावां हे ।
बै गुरु आज पधारया चालो, लेवण साहमाँ जावां हे ! आ ॥ १

साहमां जाकर भक्ति-भाव स्यूं स्वागत-गीत सुणावां हे ।
धूम-धाम स्यूं शहर में ल्याकर, बाजोटै बैठावाँ हे ! आ ॥ २

सुणां सरस उपदेश फेर उठ, सविनय शीश झुकावां हे
हाथ जोड़ फिर अन्न-पाणी री, प्रवर भावना भावां हे ! आ ॥३

भावना भाकर रहां सूझता, आयां शुद्ध बहिर वां हे ।
पिण गुरुवांरै खातर बिल्कुल, अन्न-पाणी न बणावां हे ! आ ॥४

जीम-जूठ फिर गुरुसेवा में, आसण जाय लगावाँ हे ।
सीखां चर्चा-बात धरम में, वक्त अमोल बीतावां हे ! आ ॥ ५

धर्म-दलाली कर-कर औरांनै भी कुछ समझावां हे ।
बणा स्वधर्मी भाई-बहिनां, मोटो लाभ कमावां हे ! आ ॥ ६

भाग-जोग स्यूं गुरुजी आया, त्याग-बैराग बधावाँ हे ।
सहि आरंभ-समारंभ छोडां, भवजल स्यूं तिरजावां हे ! आ॥७

: ३४ :

सोना रो सूरज

(तर्ज—फागण आयो रे —)

सूरज सोना रो । सूरज सोना रो, ऊग्यो ज्ञानी गुरुदेव पधार्या रे ।
मेहलो दूधाँरो । मेहलो दूधांरो बरस्यो मोटा मुनिराज पधारया रे॥धुव

आज आपणै आंगणियें में, साचा सुर-तरु फलिया रे ।
भाग-जोग सूं मन चाह्या, गुरुदर्शन मिलिया रे ॥सूरज॥ १॥
खाणो-पीणो, न्हाणो-धोणो, सोणो नहीं सुहावै रे ।
गुरुदेवां री सेवा मे, मन जाणो चावै रे ॥ सूरज ॥ २ ॥
सत-सत्यां बिण श्रावक सारा, होय रह्या हा ढीला रे ।
अब काठा करलेसी, गुरुजी बड़ा रंगीला रे ॥ सूरज ॥ ३ ॥
मीठी-मीठी वाणी सुण कर, दुनियाँ दौड़ी आसी रे ।
बैठ गुरुजी अजब ज्ञान री, झड़ी लगासी रे ॥ सूरज ॥ ४ ॥
सदा समायक करणै रो अब, म्हे तो बंधो लेस्यां रे ।
सूत्र-बखाण सुणण में, सब स्यूं आगै रहस्यां रे ॥ सूरज ॥ ५॥
घर-धंधा चलता ही रैवै, के यां में मुरझाणो रे ।
इसड़ा ज्ञानी गुरुवां रो, हुवै, कद-कद आणो रे ॥ सूरज ॥ ६॥
कह्णै री के बात करां, ज्यादा सूं ज्यादा सेवा रे ।
सेवा स्यूं पावांला आपां अविचल मेवा रे ॥ सूरज ॥ ७ ॥

: ३५ :

माफी

(तर्ज:—तावड़ा ! धीमो पड़जारे !)

गुरांसा ! माफी दे दीज्यो !
भूलां-चूकां भगतांरी,थे सारी सहलीज्यो ! ध्रुव॥
विनय-सहित करणो चाहीजै, संता स्यूं बरताव ॥ गुरांसा !
होणी भूल सहज है पण थे, हो दिल रा दरियाव ॥ गुरांसा ! १
बिना बुलायां नहीं बोलणो, संतां रै बिच बोल ॥ गुरांसा !
मोकल मूंहा बोल पड़ांम्हे, थे समझीज्यो मोल ॥ गुरांसा ! २
चर्चा-बात पूछतां गुरु रो, रखणो पूरो मान ॥ गुरांसा !
हुयो हुवै अविवेक कदाचित, थे मत दीज्यो ध्यान ॥ गुरांसा ! ३
गुरु आयां स्यूं आसण छोड़ी, करणो विनय सुरीत ॥ गुरांसा
बेपरवाही बरती ह्वै तो, थे खमज्यो धर प्रीत ॥ गुरांसा ! ४
करड़ी भी गुरु-सीख-मानणी, मीठी अमी समान।
कदा न सहकर म्हे रूस्यातो, थें हो मेरु महान ॥ गुरांसा ! ५
मन चाही नहिं हुयां गोचरी, कदाच आयो रोष ॥
मुख स्यूं अक-बक बोल गया म्हे, थे धरज्यो संतोष ॥गुरांसा!६॥
गलत्यां रो नहिं पार गुरुजी ! कही कितीयक जाय।
बारंबार खमाआं थांनैं, नीचो शीश नमाय ॥ गुरांसा ! ७ ॥
जल्दी पाछा दर्शन दीज्यो, म्हे जोवांला बाट।
जावो जठै लगाज्यो गुरुजी ! नित-नित नवला ठाट ॥गुरांसा !८॥

: ३६ :

वेगा आवजो !

(तर्ज— भैरूंजी री······—···)

म्हारा ज्ञानी हो गुरुवर ! किरपा कर दरसण वेगा देवजो !
म्हारा धीमा हो गुरुवर ! (धनराजजी हो स्वामी)
बालोतरै वेगा-वेगा आवजो ! ध्रुव॥

म्हारा-सा ! पॉचूं महाव्रत थांरा निर्मला,
म्हारा-सा ! पतली थे पाड़ीजी कषाय ।
म्हारा-सा ! पॉचूं इन्द्रंया नै विचारो वश करी,
म्हारा-सा ! एक मुगती री थांरै चाय ॥ म्हारा ॥ १ ॥

म्हारा-सा ! दोष वंयालीस टालो वहिरतां,
म्हारा-सा ! बावन थे टालो अणाचार ।
म्हारा-सा ! दोष मांडला रा पॉचूं टालनै,
म्हारा-सा ! समता स्यू करो थे आहार ॥ म्हारा ॥ २ ॥

म्हारा-सा ! पीहर थे साचा छहूं काय नां,
म्हारा-सा ! जीर्तानै वैठा भय सात ।
म्हारा-सा ! आठूं मदांनै काळ्या कूट नैं,
म्हारा-सा ! नवविध ब्रह्मचर्य धरो साख्यात ॥ म्हारा ॥ ३ ॥

म्हारा-सा ! भारंडपंखी री थांनै ओपमा,
म्हारा-सा ! वायरा ज्यूं थांरो रे विहार ।
म्हारा-सा ! परिपांरी परवाह थांरै मन नहीं,
म्हारा-सा ! विचरो थे करवा उपकार ।

म्हारा-सा ! वाणी मिसरीसम मीठी थांहरी,
म्हारा-सा ! झीणो घणो जी थांरो ज्ञान ॥ म्हारा ॥ ४ ॥
म्हारा-सा ! गुणांरा सागर थे छोटी जीभड़ी,
म्हारा-सा ! किणविध म्हे करांरे बखाण ।
म्हारा-सा ! थांरै तो देश घणा है विचरवा,
म्हारा-सा ! म्हारै तो थांरो ही आधार ॥ म्हारा ॥ ५ ॥
म्हारा-सा ! जासो जठै ही थांरै रंगरली ।
म्हारा-सा ! म्हारी पण लीज्यो वेगी सार ।
म्हारा-सा ! बालोतरा रा श्रावक बीनवै,
म्हारा-सा ! चरणां में माथो रे झुकाय ।
म्हारा-सा ! खमज्यो जो म्हांसू कोई हुओ अविनय,
म्हारा-सा ! पद थांरो बड़ो रे कहाय ॥ म्हारा ॥ ६ ॥

: ३७ :

विदाई

(तर्ज—राणाजी आया ......)

विदाईवालो गीत अब गावां !
चालो वहनां संतांनैं पहुंचावां ! ध्रुव ॥

संत पाहुणां एक दिन जावै,
जाणां हां फिर क्यूं आख्यां जल ल्यावां ॥ विदाई ॥ १ ॥

देनां विदाई कण्ठ न चालै,
उठै नहीं पग चाहे जोर लगावाँ ॥ विदाई ॥ २ ॥

मन तो चाहे साथ ही जावां,
(पण) जाकर भी कहो दूर कितीयक जावां ? विदाई ॥ ३ ॥

दोय घड़ी रो है अब मेलो,
कुण जाणै कद दरसण फिरती पावां ॥ विदाई ॥ ४ ॥

भूल-चूक री माफी मांगां,
गुरुदेवां नैं वारंवार खमावां ! विदाई ॥ ५ ॥

मुखड़ै रा दो शब्द सुणी नैं,
शक्ति सारु व्रत-पचखाण वधावा ! विदाई ॥ ६ ॥

सेवा रो है सार इतो ही,
नेम-धरम धर भवजल सूं तिरजावां ! विदाई ॥ ७ ॥

: ३८ :

चेतै आस्यो

(तर्ज—ओल्यूं डी आवै——)

चेतै थे आस्यो । चेत थे आस्यो म्हांस्यूं भूल्या न जास्यो ।
चाहे देशां-विदेशां चल्या जास्यो, ज्ञानी गुरुजी ! चेतै ॥ध्रुव॥

सोहरो ! जीमायो गुरुजी ! भूल्यो न जावै,
(तो) दोहरो कूट्योड़ो चेतै आवै । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ १ ॥

थे म्हांनैं हद ज्ञान सुणायो,
म्हारो जीवन सफल बणायो । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ २ ॥

सीखड़ली थांरी म्हे न बिसरस्यां,
(तो) पल-पल मन में समरस्यां । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ३ ॥

(पण) लारै स्यूं किणरा दरसण करस्यां,
(तो) किणरा म्हे चरण पकड़स्यां । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ४ ॥

कुण म्हांनै सूत्र-बखाण सुणासी,
(तो) कुण म्हांनैं ज्ञान सिखासी । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ५ ॥

गोचरी पाणी म्हे किणनैं लेजास्यां,
(तो) हाथां स्यूं किणने बहिरास्यां । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ६ ॥

आप तो जावण री करी त्यारी,
अब अर्ज सुणीज्यो एक म्हांरी । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ७ ॥

मौको लगाकर दरसण दीज्यो,
म्हारै शहर में पगल्या कीज्यो । ज्ञानी गुरुजी ! ॥ ८ ॥

: ३६ :

दरसण दीज्यो !

(तर्ज— एक परदेशी ......)

भूल मत जाज्यो म्हांने चेतै कीज्योजी !
वेगा-वेगा आय म्हांनैं दरसण दीज्योजी ! ध्रुव ॥

म्हां सूं तो कदेई आप भूल्या नहीं जावोला,
पल-पल घड़ी-घड़ी याद घणा आवोला।
आप भी संभाल म्हांरी जल्दी लीज्योजी ! वेगा ॥ १ ॥

मीठो ज्ञान आप रो घणो ही याद आवैला,
खरो धर्मध्यान भी घणो ही याद आवैला।
इसो रंग फेर भी लगाता रहिज्योजी ! वेगा ॥ २ ॥

काल की सी बात है ओ चौमासो चल्यो गयो,
दिन भी विहार को ओ आज आ खड़ो हुओ।
अब सुखे-सुखे आप गुरु ! विचरीज्योजी ! वेगा ॥ ३ ॥

म्हे तो हां गृहस्थी म्हारै लारै घणां लफरा,
एक पछै एक रहवै नित नया झगड़ा।
सेवा नहीं हुई आप माफ कीज्योजी ! वेगा ॥ ४ ॥

: ४० :

कद देसो ?

(तर्ज— उड-उड रे—...)

कद देसो ? म्हांरा ज्ञानी गुरां-सा ।
दरसण पाछा कद देसो ? ध्रुव ॥

अब तो आप सिधाय रह्या हो,
गुरुजी थै जाय रह्या हो, गुरुजी ! दरसण ।
आपरा दरसण लागै प्यारा ।
भवजल तारणहारा गुरुजी ! दरसण ॥ १ ॥
भागां-जोगां आप पधारया ।
आतम कारज सारया । गुरुजी !
ज्ञान-ध्यान रा ठाट लगाया ।
हिरयां में दीप जगायां, गुरुजी ! दरसण ॥ २ ॥
नगर-निवासी श्रावक सगला,
पाछा जल्दी चावां थारां पगला । गुरुजी ! दरसण॥३॥
म्है दरसण री भावना भास्यां,
नित उठ काग उडारयां । गुरुजी !
जिण दिन थांरा दरसण पास्यां,
रोम रोम हुलसास्यां । गुरुजी !
दूधांरा म्है मेह वरसास्यां,
सोनारो सूरज उगास्यां । गुरुजी ! दरसण ॥ ४ ॥

: १ :

चन्दनमुनि द्वारा रचित गीतिकाएँ

एक बात कहनी है

(तर्ज— कहनी है एक बात ···)

कहनी है एक बात मुझे, उन भोले दुनियादारों से।
संभल के रहना कदम-कदम पर, दम्भी दुर्व्यवहारों से ॥ ध्रुव ॥
देखो जहां सफेदी ऊपर, पर अन्दर दिल काला है।
शीतलता ऊपर से अन्दर, हाय ! धधकती ज्वाला है।
अपने ही मतलब के खातिर, आज जगत मतवाला है।
अन्दर कोठा खाली ऊपर, किन्तु लटकता ताला है।
ठगविद्या के किस्से, पढ़ते ही होंगे अखबारों से ॥ संभल ॥१॥
पहन नई चप्पल एक बाई, मुनिदर्शन को आती है।
बाहिर चप्पल खोल मकॉ में, जाकर शीश झुकाती है।
वापिस बाहिर आई तो बस, चप्पल नजर न आती है।
कौन ले गया मेरी चप्पल, खड़ी-खड़ी चिल्लाती है।
बाहिर खोल गई क्यों ? भोली, ठहरी जन फटकारों से ॥संभल॥२॥
दुकानदार ताला देकर, अपनी दुकान में सोता है।
साढ़े तीन बजे वह पीड़ित, लघु शंका से होता है।
ताला खोल गया बाहिर, वापिस आकर जब टोहता है।
गुम गल्ला हो गया, शीश पर हाथ लगाकर रोता है।
गजब ! चोर पकड़े नहिं जाते, क्यों नहिं पहरेदारों से ॥संभल॥३॥

: २ :

चलती गाड़ी से पेटी, बाहिर फैंकी एक भाई की।
चेन खींच कर ट्रेन खड़ी की, मदद न मिली सिपाही की।
पकड़ा गया चोर स्टेशन पर, पर पेटी में माल नहीं।
प्रश्नावली से भरी डायरी, मालिक की संभाल नहीं।
पिण्ड छुड़ाना है मुश्किल, इन पुलिसों के सरदारों से ।।संभल।।४।।
मीठे धर्म नाम से भी कुछ, श्रद्धालु फँस जाते हैं।
ऊपर के आडम्बर से, असलीयत जान न पाते हैं।
बुद्धिमान भी इश चक्कर में, कभी-कभी आ जाते हैं।
खाते हैं जब ठोकर, तब कर मल-मल के पछताते हैं।
कितने ही धोखा खाय, मन्दिर-मस्जिद गुरुद्वारों से ।।संभल।।५।।
फूंक-फूंक कर पग देने का, लोगों! समय आज का है।
चालाकी का आडम्बर का, कृत्रिम साज-बाज का है।
प्यारा कोई है न किसी का, प्यारा है अपना मतलब।
प्यारा भी खारा लगता है, अपना काम बन गया जब।
चन्दन! गगन गूँजता है बस, नैतिकता के नारों से ।।संभल।।६।।

: ३ :

कोई-कोई

(तर्ज— एक परदेशी——)

संत-संगति में आता कोई-कोई रे।
प्रभुगुणगान गाता कोई-कोई रे ॥ ध्रुव ॥

खबर न पड़ती सुबह और शाम की। -
मिलता न वक्त कौन फेरे माला राम की।
अपना स्वरूप ध्याता कोई-कोई रे ॥ प्रभु ॥ १ ॥

स्वार्थ का जमाना झूठ दुनियाँ में छा गया।
पाप की न भीति घोर कलिकाल आ गया।
काम सत्य से चलाता कोई-कोई रे ॥ प्रभु ॥ २ ॥

काम-क्रोध-लोभ से घिरी है सारी दुनियाँ।
सत्य-शील-प्रेम से फिरी है सारी दुनियाँ।
किये कौल को निभाता कोई-कोई रे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥

बच्चा भी तो माला तोड़ सकता है हाथ से।
कंकरी ले घड़ा फोड़ सकता है हाथ से।
एकता का रस पिलाता कोई-कोई रे ॥ प्रभु ॥ ४ ॥

मंझदरिये में गोता खारहा जमाना।
मिलता न तीर दुःख पारहा जमाना।
चन्दन-सा पार पाता कोई-कोई रे ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

: २६ :

बताओगे क्या ?

(तर्ज—एक परदेशी ....)

इतनी-सी बात क्या हमें बताओगे ?
जाते-जाते साथ में क्या लेते जाओगे ? ध्रुव ॥

चलती का नाम गाड़ी कहती है दुनियाँ ।
आये दिन सुख-दुःख सहती है दुनियाँ ।
दुविधा से कब छुटकारा पाओगे ? जाते-जाते ॥ १ ॥

जैसा बीज वैसा फल मिलता है जग को ।
दूसरा न कोई हल मिलता है जग को ।
काले कारनामों को कहां छिपाओगे ? जाते-जाते ॥ २ ॥

जानने से लाभ क्या जो करते न बिलकुल ।
पढ़ने से लाभ क्या जो स्मरते न बिलकुल ।
बुरी आदतों से कब बाज आओगे ? जाते-जाते ॥ ३ ॥

सत्य को न मौका दोगे नरतन पाके ।
धर्म को भी धोखा दोगे भक्त कहलाके ।
आखिरी में मार बेशुमार खाओगे ? जाते-जाते ॥ ४ ॥

सीधी यह सीख संत चन्दन की मानिये !
अपने समान सारे जीवों को जानिये !
मीठे-मीठे फल तत्काल पाओगे ॥ जाते-जाते ॥ ५ ॥

: ४ :

कुछ भी न पाया

(तर्ज— एक परदेशी——)

क्यों न पाया दुनियाँ में खूब पाया रे।
खुद को न पाया कुछ भी न पाया रे ॥ ध्रुव ॥

पाया नरतन काया कंचन-सी पा गई।
पाया आर्यदेश अच्छी विभुता भी पा गई।
सद्गुरु न पाया कुछ भी न पाया रे ॥ खुद ॥ १ ॥

सद्गुरु भी सच्चे अच्छे भाग्य से हैं मिल गए।
बिना टक्के-पैसे ज्ञान-शास्त्र का सुना रहे।
सुनने न पाया कुछ भी न पाया रे ॥ खुद ॥ २ ॥

सुनने भी पाया तत्त्वज्ञान गुरु पास में।
सत्य है यों दिल भी टिका है विश्वास में।
(पर) धारने न पाया कुछ भी न पाया रे ॥खुद॥ ३ ॥

धारा है जिन्होंने पार दुनियाँ से वे गए।
चन्दन सवक सच्चा दुनियाँ को दे गए।
भेद को मिटा के सब कुछ पाया रे ॥ खुद ॥ ४ ॥
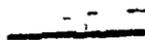
: ५ :

बहाए चलो!

(कव्वाली)

प्रेम अपने से प्रतिपल लगाए चलो!
एक ही लय में खुद को बहाय चलो! ध्रुव ॥

वाणी कहती है कुछ तन भी करता रहा,
किन्तु मन और ही कुछ सुमिरता रहा,
इस त्रिवेणी में एकत्व लाए चलो! १ ॥

तीन मिलकर के जो एक हो जायेंगे,
देखना फिर ये दुखड़े कहाँ जायेंगे,
इन विकल्पों से खुद को बचाए चलो! २ ॥

अपने में ही सभी को समाया अगर,
आयेंगे दूसरे फिर न कोई नजर,
विश्वमैत्री की वंशी बजाए चलो! ३ ॥

शांति समता कितनी है गाऊँ मैं क्या?
स्वाद अनुभव का शब्दों में लाऊँ मैं क्या?
लेके अनुभव सहज शांति पाए चलो! ४ ॥

मुक्ति होगी कभी भी नहीं देह में,
जो बनें हम विदेही तो हैं गेह में,
चन्दना! इस दशा को बढ़ाए चलो! ५ ॥

: ६ :

विष को अमृत में परिणति

(तर्ज—भला करने वाले……)

अमृत गर मिले तो अमृत ही पियेजा !
विष को भी परिणत अमृत में कियेजा ! ध्रुव ॥

अमृत का तो पीना सभी को सुहाता,
किसे भी हलाहल का पीना न भाता।
कड़वी भी घूंटें समय की लियेजा ! विष ॥ १ ॥

यही तो मजा जिन्दगी का है प्यारे !
बिगड़े हुओं को जो फिर से सुधारे।
ताकत जो हो साथ कुछ-कुछ दियेजा ! विष ॥ २ ॥

सुख का सही अर्थ जाना न जाता,
दुख का भी मतलब बखाना न जाता।
दोनों के विच से गुजरता जियेजा ! विष ॥ ३ ॥

आनन्द चन्दन को तब ही मिलेगा,
समता का गुल जब हृदय में खिलेगा।
जहाँ से मिले गुण वहाँ से लियेजा ! विष ॥ ४ ॥

: ७ :

स्वामीजी री बोलमां

(तर्ज— भेरूंजी री—...)

स्वामीजी ! संवत अठारह से, सतरै सई
स्वामीजी ! अषाढ़ी पूनम श्रीकार
म्हारा भिक्षु हो बाबा ! पूरी तो करज्यो म्हारी बोलमां।
केलवा रा हो भिक्षु ! पूरी तो करज्यो म्हारी बोलमां।
वर्धमान रा बेटा ! पूरी तो करज्यो म्हारी बोलमां ॥ ध्रुव ॥१॥
स्वामीजी ! क्रांति रा चरणां स्यूं थे चालिया
स्वामीजी ! स्वीकारयो संयम खांडा धार ॥ म्हारा ॥ २ ॥
स्वामीजी ! गहरी नजरां सूं आगम जोइया
स्वामीजी ! तत्त्वां रा सूक्ष्म काढ्या तार ॥ म्हारा ॥ ३ ॥
स्वामीजी ! ताता तूफानां सूं थे नहीं डरया
स्वामीजी ! शास्त्रां री कायम राखी कार ॥ म्हारा ॥ ४ ॥
स्वामीजी ! पोता चेला म्हे थांरै वंश रा
स्वामीजी ! थे म्हारे दादागुरु रै थान ॥ म्हारा ॥ ५ ॥
स्वामीजी ! तिण सूं राखां म्हे थांरी मानता
स्वामीजी ! आया हां लेकर अरमान ॥ म्हारा ॥ ६ ॥
स्वामीजी ! क्रोध सतावै आवै देह में
स्वामीजी ! मान नहीं छानों बैठे जाय ॥ म्हारा ॥ ७ ॥

स्वामीजी ! माया री काया में तपती घणी
स्वामीजी ! लोभा कुल मनड़ो अकुलाय ॥ म्हारा ॥ ८ ॥
स्वामीजी ! विषयां ने जहर वखाणै जीभड़ी
स्वामीजी ! अमृत-सा मानी दौड़ै मन ॥ म्हारा ॥ ६ ॥
स्वामीजी ! आंख्यां पर ईर्ष्या रो पड़दो पड्यो
स्वामीजी ! तप रो तो नाम सहै नहीं तन ॥ म्हारा ॥ १० ॥
स्वामीजी ! ऊपर रूपालो कालो मांयलो
स्वामीजी ! किणविध होवैला वेड़ा पार ॥ म्हारा ॥ ११ ॥
स्वामीजी ! चन्दन को मोटो थांरो आसरो
स्वामीजी ! पापां रो करज्यो प्रतिकार ॥ म्हारा ॥ १२ ॥

: ८ :

प्रेम-भक्ति

(कव्वाली)

प्रेम दरिया में खुद को बहाया नहीं,
जिन्दगी का मजा तूने पाया नहीं ॥ ध्रुव ॥
देह का प्रेम सच्चा कहाँ प्रेम है,
प्रेम आत्मा से करना सही प्रेम है,
गति प्रभु प्रेम का तूने गाया नहीं ॥ १ ॥ जिन्दगी ॥
तू रहा दौड़ता बस यहीं के लिए
धन रहा जोड़ता बस यहीं के लिए,
जो कमाना था वो धन कमाया नहीं ॥ २ ॥ जिन्दगी ॥
जो प्रगट है नहीं सूक्ष्म भी भेद है,
समझ पाता न तू बस यही खेद है,
हाय ! अज्ञान पर्दा हटाया नहीं ॥ ३ ॥ जिन्दगी ॥
संत कहते हैं अब भी जरा ध्यान दे,
आर्षवाणी को चन्दन ! जरा स्थान दे,
फिर न कहना कि मुझको जताया नहीं ॥ ४ ॥ जिन्दगी ॥
जिन्दगी का मजा तूने जाया नहीं ॥

लेखक की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

हिन्दी	मूल्य	प्राप्तिस्थान
१. सच्चा धन	३७ पैसे	श्री जैन श्वे. ते. सभा, मालेर-कोटला (पंजाब)
२. प्रश्न-प्रकाश	६० पैसे	श्री जैन श्वे. ते. महासभा, ३, पौर्च्यूगिज- चर्च स्ट्रीट कलकत्ता—१
३. चमकते चाँद	३० पैसे	
४. ज्ञान-प्रकाश	१. ०० रु.	श्री जैन श्वे. ते सभा मीनासर (राजस्थान)
५. ज्ञानके गीत	१. ०० रु०	
६. एक आदर्श-आत्मा	२८. पैसे	श्री यदनचंद-संपतराय बोरड दुकान नं० ४०, धानमण्डी श्रीगंगानगर (राजस्थान)
७. सोलह सतियां	३. ०० रु०	
८. मनोनिग्रह के दो मार्ग	१. ५० रु०	
९. लोक-प्रकाश	१. २५ रु०	श्री जैन श्वे. ते. सभा बालोतरा (राजस्थान)
१०. जैन-जीवन	६२ पैसे	श्री जैन श्वे. तेरापंथी सभा गंगाशहर बीकानेर (राजस्थान)
११. चौदह नियम	५ पैसे	दलसुखराय सोहनलाल हिरावत चूरू
संस्कृत		
१२. गणिगुणगीतिनवकम्		
गुजराती		
१३. तेरापन्थ एटले शु?		

	मूल्य	प्राप्तिस्थान
१४. धर्म एटले शुं ?	६२ पैसे	नेमीचन्द-नगीनचन्द जंवेर
१५. परीक्षक बनो !	७५ पैसे	चन्द्रमहल
		१३०, शेखमेमन स्ट्रीट बंबई-१
उर्दू		
१६. जीवन-प्रकाश		श्री जैन श्वे. ते. सभा
		नाभा (पंजाब)

लेखक की अप्रकाशित रचनाएँ

संस्कृत

१. देवगुरुधर्म-द्वात्रिंशिका
२. प्रास्ताविक-श्लोकशतकम्
३. एकाह्निक-श्रीकालुशतकम्
४. श्रीकालुगुणाष्टकम्
५. श्रीकालुकल्याणमन्दिरम्
६. भाविनी
७. ऐक्यम्
८. श्री भिक्षुशब्दानुशासनलघु-वृत्तितद्धितप्रकरणम्

गुजराती

९. गुर्जरभजनपुष्पावलि
१०. गुर्जरव्याख्यानरत्नावलि

हिन्दी

११. वैदिकविचारविमर्शन
१२. संक्षिप्त-वैदिकविचारविमर्शन
१३. अवधान-विधि
१४. संस्कृत बोलने का सरल तरीका
१५. दोहा-संदोह
१६. व्याख्यानमणिमाला
१७. व्याख्यानरत्नमञ्जूषा
१८. जैनमहाभारत आदि बीस व्याख्यान
१९. उपदेशसुमनमाला
२०. उपदेशद्विपञ्चाशिका

राजस्थानी

२१. धनबावनी
२२. सवैयाशतक
२३. औपदेशिक ढालें
२४. प्रास्ताविक ढालें
२५. कथाप्रबन्ध
२६. छः बड़े व्याख्यान
२७. ग्यारह छोटे व्याख्यान
२८. सावधानी रो समुद्र

पञ्जाबी

२९. पञ्जाब पचीसी

मा० रामरत्नपाल सिंहल के प्रबन्ध से—
सुमित्रा प्रिंटिंग प्रेस भिवानी में प्रकाशित।

श्री गणेश वन्दना

तर्ज : धन २ जुगल सिंह सरदार

दोहा- गण नायक हो गजबदन, गुण गवरी पुत्र महान।
प्रथम पूजा आपकी, करता सकल जहान॥

टेक- जय श्री गजानन महाराज, भक्त के मान बढ़ाने वाले
मान बढ़ाने वाले, बुद्धि-ज्ञान बढ़ाने वाले॥ जय०

बैठे मुकुट शीस पर धार, हो सब देवन में सरदार।
करते भक्तों का उद्धार, हो रिध सिध बढ़ाने वाले॥ जय०
जनम गवरजा से पाये, करमें फरसा बहुत सुहाये।
रिध सिध दोउ चँवर डुलावें, मुषक वाहन कहाने वाले॥ जय०
शंकर सुवन गवरजा लाल, हो तुम भक्तों के प्रतिपाल।
मोर गल पुष्पन की माल, भोग श्रीफल के पानेवाले॥ जय०
है म्योराज[illegible] नेरा मोका, फिर रह जागा मन में धोका।
बेड़ा पार भजन से होगा, कहे गुरु ज्ञान बताने वाले॥ जय०

|| ओउम् ||

भक्त पुकार

दोहा– असुर सँहारन भक्त उबारन– सतके खेवन हार।
बली लगावो आनकर– पड़ी नाव मझ धार ||

तर्ज - आना सुन्दर श्याम

टेक || भारत में फिरसे आना– हो नटवर नागरीया
करो रक्षा भूल न जाना– हो नटवर नागरिया || भारत० ||

बड़े बड़े पापी पैदा होंगे करम धरम सब अपना खोके–
आकर इनको मिटाना || हो नट || भा० ||

भारत भूमी मात हमारी– लगती है ये सब को प्यारी
चाहता दुष्ट दबाना || हो नट || भा० ||

राखो याद भूल नहीं जाना– चक्र सुदर्शन संगमें लाना
है बिजय दुसमन पर पाना || हो नट || भा० ||

और दूसरा नहीं सहारा– करो तेज चक्र की धारा
भारत की शान बचाना || हो नट || भा० ||

स्योराम दास कहे तेरा सहारा– पतित पावन नाम तुम्हारा
अरजीपे ध्यान लगाना [illegible] || भा० ||

: * :

भगवती वन्दना

तर्ज : कारज रघुवर का सारा है

दोहा- जय माता भगवती, तू शक्ति की अवतार।
कृपा करो जिस दास पे, ता मिटजा कष्ट अपार॥

टेक- जगदम्बे मात भवानी, ज्योति अटल तुम्हारी है।
ज्योति अटल तुम्हारी है, लीला अजब तुम्हारी है॥ जग०

जिसने धरा तुम्हारा ध्यान, मेटे संकट बड़े महान।
राखो भक्तों की शान, महिमा बड़ी तुम्हारी है॥ जग०

करते राम लखन ने पूजा, पाकर आज्ञा रण में जुझा।
फिर क्या बतलाऊँ दूजा, विजय पाई भारी है॥ जग०

जब जब होता भूमि पर भार, माता होती सिंह सवार।
खड्ग खप्पर करमें धार, होती रण को तैयारी है॥ जग०

करता दास स्योराम पुकार, माता हैं तेरा आधार।
मेरी गलती करो सुधार, गुरु आज्ञा सर धारी है॥ जग०

: * :

॥ ओ३म् ॥

कृष्ण वंदना

(तर्ज-- होगई आधी रात)

दोहा-- लाज हमारी राखीयो-- मुरलीधर घन श्याम ;

पतित पावन आप हो- निर्बल के बल राम ॥

टेक-- नन्दजी के लाल। मुरलीवाला - राधा पती बलबीर ॥ लाज प्रभू तुम रखना ॥

द्रुपद सुता को पकड सभा में-- दुष्ट दुशासन लाया

करुँ सभामे नगन दुष्टने-- ऐसा मता ऊपाया ॥ आन बढाय खुद चीर ॥

विषराणे मीरा को भेज्या-- मारण मता उपाया-

भोग लगा चुचकार पिया जब- बात याद तेरे आया ॥ अमृतकर दिया नीर ॥

नरसी भगत की सुनी टेर जब- भात भरण खुद आया

रिधसिधी लिया साथ में- राधा को संग ल्याया ॥ हरी भक्तकी पीर ॥

कँस राजा की कुमती देखो- कैद भाण कर वाया

हुईथी सन्तान भाणके- सबको खुद मर वाया ॥ धर आये मनुस सरीर ॥

जब जब भीड पड़ी भक्तों पे- तुरत दौड़ कर आया

स्योराम दास पर कृपा करना- सरन तुम्हारी आया ॥ कृणबन्धावम्हानबीर ॥

: * :

॥ ओ३म् ॥

श्री पवन सुत बन्दना

(तर्ज- घन घन जुगल)

दोहा— अंजनी सुत हनुमान का, जो धरते उच्चा ध्यान।
मन इच्छा पूरी करे, रहे सुखी सदा इनसान ॥

टेक— जय श्री महावीर बलवान, राम के भक्त कहाने वाले।
भक्त कहाने वाले, राम के दास कहाने वाले ॥ जय श्री ॥

हुआ सीता माता का हरना, पड़ा खोज राम को करना,
कांधे चढ़ा राम का चलना, राम-सुग्रीव मिलाने वाले ॥ जयश्री ॥

सुधि लेन सिया की धाया, ना मन में कुछ घबराया,
मुंद्रिका जा पहूँचाया, माता को धीर बधाने वाले ॥ जयश्री ॥

जा दरस माता का पाया, कुशल सब राम का बतलाया,
फल देख मन ललचाया, माता से आज्ञा पाने वाले ॥ जयश्री ॥

रावण का बाग उजाड़ा, और अक्ष कुँवर को मारा,
पाई विजय राम का प्यारा, छिन मे लंक जलाने वाले ॥ जयश्री ॥

धन वीर बली मतवारे, तुम काम राम के सारे,
दास स्योराम तुम्हें पुकारे, संकट दूर हटाने वाले ॥ जयश्री ॥

: ❀ :

॥ ओ३म् ॥

कीर्त्तन १

(तर्ज : चुप चुप खड़े हो)

टेक- सोच सोच मनवा उमर बीति जात है,

प्रभुगुण भूल गया करे उत्पात है ॥

मोह माया में मन ललचाया, नाम प्रभू का याद न आया।

पल पल बीती जाती. काइ को भुलात है ॥ प्रभु०

ये ससार सपन की माया, अमर नही रहने की काया,

झूठा सब माया जाल, काहे गर्वात है ॥ प्रभु०

भाई बन्धु मित्र सुत नारी, है सब ये मतलब की यारी,

अन्त समय कोई जाता नहीं साथ है ॥ प्रभु०

राम नाम की पूँजी भरले, सुभ कर्म हाथों से करले,

आदम देह मोल मुस्किल पात है ॥ प्रभु०

मानो स्योराम गुरु की बानी, नही बात किसी से छानी,

भजन करे से मुक्ति होय जात है ॥ प्रभु०

: * :

॥ ओउम ॥

कीर्त्तन २

(तर्ज : भभूतो सिव व.गा मे)

भजन करो गोविन्द का, जो चाहते हो कल्याण।

गोविन्द का गोपाल का, करो सच्चा लगाकर ध्यान ॥

राम कहो या श्याम कहो, कहो दीन बन्धु भगवान ॥ भजन०

गिरवर धारी है यही. है भक्तो का महिमान ॥ भजन०

ब्रज विहारी है यही, श्री राधा पति घनश्याम ॥ भजन०

स्योराम दास तूॅ सोचले, तूॅ कहा गुरु का मान ॥ भजन०

: * :

॥ ओउम् ॥

कीर्त्तन ३

टेक- राधे गोविन्द बोलो, राधेगो विन्दा,

राधे गोविन्द बोलो राधे गोविन्दा ॥

गोविन्दा गिरधारी रे, भजो मन राधे गोविन्दा ॥ गो०

कारागार मे जन्म लिया था, मात पिता को बचन दिया था।

कंस को मारन हारी रे ॥ भज मन०

मात पिता की जेल छुडाई, कूद पडे कालीदह मांही।

नाग को नाथन हारी रे ॥ भजो मन०

देखो दुसासन अत्याचारी, द्रोपद की खैंची थी साड़ी।

द्रोपदी सभा में पुकारी रे ॥ भज मन०

देख द्रोपद के नैन जल धारा, चीर बढा दिया अपरंपरा।

खैंचत हार्यो बलकारी रे ॥ भज मन०

जल भीतर गजराज पुकारा, चक्र छोड ग्राह को मारा।

मिटी थी गज की ख्वारी रे ॥ भज मन०

राणे मीरा को जहर दिया था, भोग लगा चुचकार पिया था।

विष अमृत कर डारी रे ॥ भजो मन०

कदम की डाली झूला झूलना, सत्य धर्म पर पूरा तूलना।

संग में राधे प्यारी रे ॥ भजो मन०

रहो न्योराम प्रभू के सरणा, वचन गुरु का हृदय धरना।

टेर तो सुनेगा कभी थारी रे ॥ भजो मन०

: *

॥ ओ३म् ॥

भजन

(तर्ज : रेशमी शलवार)

दोहा- करार किया था गर्भ में, जब देखा नरक निशान।
बाहर आकर भूलगया, उस परम पिता का ध्यान॥

टेक- पलट गया है ध्यान, भोत नर नारी का,
भूल गये गुण-गान कृष्ण मुरारी का।

कर याद वो नरक निशानी तैं कोल किया था प्रानी,
करता है क्यूं मनमानी, कुछ सोच तो अभिमानी।
बात अगारी का॥ भूल गया०

तूं बाहर गर्भ से आया, फिर माया में भरमाया,
तुझे ख्वाना कौन किराया, और दूध कहां से आया।
अँग महतारी का॥ भूल गया०

फिर मस्त जवानी आई, ना समझी तैं भली बुराई,
त्रिया से प्रीत लगाई, विषयों में उमर गमाई।
प्रेम वश नारी का॥ भूल गया०

तेरी टेम तिसरी आई, कुने में खाट लगाई,
ना करता कोई सुनाई, फिर होती मोत दूख दाई।
बस लाचारी का॥ भूल गया०

फिर इता भोत पछताना, गया वख्त हात नही आना,
छुट जागा पीना खाना, आखिर मे होगा जाना।
रीत संसारी का ॥ भूल गया॰

फिर भी सोच ले प्यारा, ना दूजा और सहारा,
जाना है भव से पारा, वो सागर की मझधार।
पास ले पारी का ॥ भूल गया॰

गुरु कहे ज्ञान कर मन में, क्यो भूला माया धन मे,
रहो मगन स्योराम भजन मे, वो व्यापक सभी भवन मे।
रुप बिहारी को ॥ भूल गया॰

: * :

॥ ओ३म् ॥

भजन

(तर्ज : मेरा दिल जो पुकारे)

टेक- मेरी राखो लाज गिरधारी मैं आया शरण तिहारी।
बता जाऊँ मैं कहाँ. साथी तेरे सिवा ना ॥

गर्भ वास मे कोल किया वात भुलाया,
बाहर आया फैली माया मात लडाया,
करती काजल टीकी अँग, अँगुली पकडे रहती सग।
मेरा किया लाड बडा भारी ॥ बता॰

मोह माया में भूल गया, धोखा खाया,
आई जवानी मस्तानी काम सताया।
भूल्या नाम भगवान, छूट्या मात पिता का ध्यान,
एक लागी तिरीया प्यारी ॥ बता०

फिर बैरी बुढ़ापा आया, रंग रुप गमाया,
सिर हुई सफेद माथा डेरा अजगर लगाया,
पलटे पुत्र मित्र अरु वाम हुआ याद तेरा जब नाम।
आई बात याद मेरे सारी ॥ बता०

पांव हिलेना कान सुनें न, आंखो आई अन्धेरी,
फिर सभी दुतकारन लागे, रात कटे कब तेरी.
हुआ ऐसा मेरा हाल, सुनो दीन के दयाल।
अब रखना लाज हमारी ॥ बता०

कृपाकर के नाथ मुझे अपनाना,
बालक जान दया करके शरण बताना,
है तेरे ही आधार करो नैया भव से पार।
श्योराम है शरण तुम्हारी बता०॥

: * :

|| ओउम ||

भजन

(फैशन का दुनिया)

दोहा : ताल लगेना साज बिन सुर बिन सुना गाना ।
भले बुरे का परखना धन है तुझे जमाना ॥

टेक : पलटा सब का ध्यान सजनों टेम के अनुसार देख्या ।
मनमानी सब कर लगगे छोटा बडा ईकसार देख्या । छोटा० ॥ मन०

कली : था एक दिन वो जमाना मोटा वस्त्र मोटा खाना
ना था साबुन सेन्ट का लाना रहता चेहरा लाल देख्या
अब खान लगे सब बिसकुट रोटी सारा काम बेताल देख्या ॥ सारा ॥मन०

कली : और हाल बतादू सारा भेद खालकर न्यारा न्यारा
दूध पावडर खाते सारा मेज,टेबल का प्रचार देख्या
सिगरट बाडी चारा सजनो सबसे मोटा प्यार देख्या ॥ सबसे ॥ मन०

कली : हो कैसे स्वागत का आना सारे पावडर क्रीम से रुप बनाना
खाना पसन्द भातका दाना और आम का अचार देख्या
धोबी धूवाया कपडा पहनले टम्परेरी बहार देख्या ॥ टेम्परेरी ॥ मन०

कली : दिया छोड फिकर खाने का चाहीय टिकट सिनेमा जानेका
ताल लगे नागीन गाने का हो मन मे खुशी अपार देख्या
हाफ टेम मे विसकुट रोटी खानेका बहार देख्या ॥ खानेका ॥ मन०

कली : सजे सूट बूट नकटाई सिगरेट ले मुख में सीलगाई
खाना पसन्द होटल का भाई संग दोसतीका प्यार देख्या
बिल का फोटू पुरा उतरज्या खरचे का नही विचार देख्या ॥ खरचे ॥ मन०

कली : जादा नहीं ठीक बताना मुसकल होगी देख जमाना
है झूठा स्योराम तेरा मगज खपाना ना लगती कुछ पार देख्या
चलना होगा देख जमाना टेम के अनुसार देख्या ॥ टेमके ॥ मन०

: * :

॥ कृष्ण महिमा ॥

(तर्ज—जिया बेकरार है)

नैया मझधार है, तूंही खेवन हार है।
तेरे बिना कृष्ण कन्हैया, ना कोई आधार है॥

द्रोपदी दुष्टों ने घेरी, अबला तुम्हें बुलाया हो,
गरुड छोड कर पैदल भाग्या तुरत वहाँ पर आया है,
बढ गया चीर अपार है, मानी दुशासन हार है,
॥ तेरे बिना० ॥

हिरनाकुश प्रहलाद भक्तको, भारी त्रास दिखाया हो,
झूठे पडगे जतन सभी, ना जानी तेरी माया हो,
नर सिंह रूप तुम धार हैं, दिया असुर को मार है,
॥ तेरे बिना० ॥

ब्रज भूमि मे आये आप इन्द्र का मान घटाया हो,
क्रोध होय इन्द्र जल बरस्या, चाहता ब्रज डुबाया हो,
लिया करपे गिरधर धार है, इन्द्र मानी हार है,
॥ तेरे बिना० ॥

मुझ मूरख पर करो दया प्रभु, अवगुण सभी भुलाना हो,
पडी नैया मझधार बीच मे प्रेम की बलि लगाना हो,
स्यो राम करे इन्तजार है, सच्चा तेरा दरबार है,
॥ तेरे बिना० ॥

॥ कीर्त्तन ॥

(तर्ज—कठे से आई सूंठ)

बन्दा करले भजन हरि का, फेर पछितायगा,
पछितायगा, यह टेम न पायेगा ॥ टेक ॥

सीताराम राम राम, राधेश्याम श्याम श्याम ।

है घमण्ड झूठा ये तेरा, तूं तन माटी काले रया,
जब भंवर निकल ज्या तेरा, माटी काम न आयगा,
॥ सीता राम राम राम० ॥

करो दूर भरम ये मनका, है नहीं भरोषा तनका,
ये मेल है दो दिन का, फेर धोखा खायगा ।
॥ सीताराम० ॥

भाई बन्धु सुत नारी, सब है मतलब की यारी,
जब आवे काल सवारी, हँस अकेला जायगा ।
॥ सीताराम० ॥

जब अन्त समय तेरा आवे, मुख बोल बन्द हो जावे,
मन की मन में रह जावे, ना कुछ कहने पायगा ।
॥ सीताराम० ॥

स्योराम भरम तज मनका, ले शरण गुरु चरणन का,
ना छोड़ो परण भजन का, बेड़ा पार लंघायगा ।
॥ सीताराम० ॥

—(०)—

॥ भजन ॥

(तर्ज—रथ थारो कड़के)

मेरी नैया पड़ी मझधार, पार प्रभु आ करना। टेर।

मोह माया मे होके अन्धा, काम किया सब गंदा गंदा,
कर भूल्या काल करार, पार प्रभु आ करना ॥
। मेरी नैया० ॥

आवागमण मेरा चित नही धरना, दूर अन्धेरा मेरा करना,
हो दीनो के दातार। पार प्रभु आ करना ॥
॥ मेरी नैया० ॥

द्रोपद को दुष्टा ने घेरी, सुनके टेर करीना देरी।
आये थे गरुड़ विसार, पार प्रभु आ करना ॥
॥ मेरी नैया० ॥

बडे बडे तारे पापी पारधी अर्जुन के तुम बने सारथी।
महाभारत युद्ध मझार पार प्रभु आ करना
॥ मेरी नैया० ॥

प्रहलाद भक्त को दर्शन दीन्या, ध्रुव को अपनी शरण में लीन्या
क्यूं भूले मेरी बार, पार प्रभु आ करना।
॥ मेरी नैया० ॥

ना कोई दूजा और सहारा, पतित पावन नाम तुम्हारा।
रहा दास स्योराम पुकार पार प्रभु आ करना ॥
॥ मेरी नैया० ॥

॥ बेटी को उपदेश ॥

॥ दोहा ॥

आज तक हमथे तेरे, बेटी पिता और मात ।
आज हुये सासू सुसर, लाज इन्हो के हाथ ॥
लाज इन्हों के हाथ है करना, सेवा धरम तुम्हारा है ।
अपने धरम का पालन करना, ये उपदेश हमारा है ।

॥ बेटी माता पिता से कहती है ॥

पिताजी मै पालन करु, जो दिया आप उपदेश ।
धरम के है रक्षक सदा, श्री ब्रह्मा विष्णु महेश ॥
श्री ब्रह्मा विष्णु महेश, अपना धरम निभाउँ मै ।
आशीर्वाद हो अमर आपका, ऐसा मान बढाउँ मैं ॥

हे ईश्वर परमात्मा, विनय बारम्बार ।
वर कन्या चिरंजिवी रहे, रहे सुखी सभी परिवार ॥
रहे सुखी सभी परिवार, विनय यही हमारा है ।
बनमाली रखना हरियाली, ये सब बाग तुम्हारा है ॥

०००

|| ओउम् ||

|| भक्त पूरणमल ||

दोहा : स्याल कोटके बिचमे- हुये सुनेभान महाराज
थो पतिवर्ता रानी ईन्छरा- किया धरमका राज ,
किया धरमका राज पुत्रना- रानीके बातलाता है || नारानीके
देख खाली गोद फिकर मन रानीके न्युँ छाया है || देख

|| (तर्ज राधेश्याम) ||

हे प्रभो दयाके सागर- क्या तरफ हमारे ध्यान नहीं क्या
क्या ऐसीभारी खता हुई जो- हुई एक सन्तान नही ||
क्या कमी तुम्हारे आई है- ये दुग्र तुम्हारे सुनहोगा ||ये
वृध अवस्था आन लगी- ईस राजका मालिक कुन होगा ||
हाथ जोड वजीर कहे ये रेख करम की है माता || ये
अगर है ईन्छा यही आपकी- एक उपाय नजर आता ||
राजा का दूजा सादी करो ओर नही कुछ चारा है || ओर
भगवान करे सन्तान होय- ये चमके ताज हमारा है ||
जब देख्या ख्याल वजीर काये- रानीकोधीरज आया है | रानी
दिलमे हुया अधीन रानीको- राजासे फरमाया है ||

|| दोहा ||

हाथ जोडे रानी खडी- सुनो पति महाराज
सादी दूजा करलीजीये नही मेरे ईतराज ||
नहीं मेरे इतराज प्रभो- य धरम निभाना होगा
भगवान करे सन्तान होय- य ताज सुहाना होगा |

|| राधेश्याम ||

कहे राजा सुनो रानी- य करना कोई जरुर नही ||
एक पति वरता को छोडके सादी करना- मेरे मजुर नहीं ||

करम धरम मरियाद तजे- य नही समझ मे आया है
हो तजने से पाप इन्है- य वेदो ने वतलाया है ।।
हठ छोडो रानी मानो- ना मेरे ईममे सुख होगा ।।
अध वस्था सादी करना- और भी ज्यादा दुख होगा ।।
करम रेख जो लिखय विधाता- ना कोई मेटन हारा है ।।
होन हार होकर ही रहता- नही चले कुछ चारा है ।।

|| वारता ||

सजनो राजाने मोत ईनकार किया मगर रानी ईच्छरा का हट देखकर राजाको मजूर करना पडा और दूसरा सादी कर रानी नुनाको विहा लाता है और ईधर रानी इच्छरा को गर्भ धारण हो जाता है ,और पुत्र पैदा हुवा जिसका नाम पूरण रखा जाता है और पूरणका जनम नक्षत्र पण्डितो को दिखलाता है तो एक भारी दसाका यग मीला वोक्या के पुरण के १२ साल होने से पहले आप पूरण का दर्शन नही करसकते जदि दर्शन किया जायगा तो अपना राजपाट तन-धन नष्ट हो जायगा सजनो पण्डितो की य वात सुनकर राजा सुलेमान पूरण को एक भवरेमें १२ सालके लिय अलग भेज देता है और खाना-पीना दासी तथा पढाई शिक्षा का पूरा प्रबन्ध करदेता है और १२ साल जब पूरा हुवा पूरण को भवरे से निकाला गया राजा या परजा भात खुसया मनाई फिर पूरण दरवार मे पिताके पास आता है और चरणा मे धोक लगाता है तो राजा सुलेमान मारे खुसिके फुल्यानई समाता है और उमग भरे मनसे क्या कहता है ।।

|| दोहा ||

राजा अति आनन्द हुवा करे प्यार पुत्रके साथ
धुम धामसे सादी करूँ खुव सजाउ वरात
खुव सजाउ बरात करू खुशी पुरी मनकी पूरण
आलीस्यान तने महल बनादूं आनन्द खूव करो पूरण

॥ राधेश्याम ॥

जो भी करें गे हुकम पिताजी उसको पूरा निभाउगा
करो माफ एक बात पिताजी सादी नही कराउ गा ॥
मातु पिता की सेवा करके जनम सफल बनाउ गा
पूरण हरदम दास आपका चरणों मे शीश झुकाउगा
दो मुझे अब हुकुम पिताजी दरस माता का पाउमे
जनम सफल होय हमारा धोक चरणों मे लाउमे ॥
कहो पिताजी किस माता पे पहला फरज हमारा है ।
जैसे कहो करुगा वैसा दाता का य राज दुलारा है ॥

॥ दोहा ॥

जा पूरन मेरे लाडले भोत खुसिके साथ
भोत दिनो मे लगरहा तेरी माता मिलन की आस ।
तेरी मात मिलन की आस पहले छोटी माता पे जाना
दर्शन करछोटी म का फिर इन्छरा के महला आना

वारता

मानो पूरण पिता का अज्ञापाकर पहले छुटी माता नुना के महल जाता है ओर महलमे जाकर मा मा आवाज लगायाहै पर नुनादे पूरण का आवाज सुनकर पापका रूप धार लेती है ओर अज्ञानता मे चुर हो जाती है ।

॥ राधेश्याम ॥

पुरण महलो मे जाके मा मा आवाज लगाया है
पुत्र तेरा पूरण माता दरस करन को आया है ॥
बारा साल बदीत हुये ना पाया दर्श है माता का
करमकी रेख निराली है नाटलता लेख विधाता का ॥
अब दो जलदी दर्शन माता नैन हमारे तरस रहे ॥
सुध लीनी करतार आजये प्रेम के आसू बरस रहे ॥

वाज सुनी जब पूरण की झाकी से रूप निहारा है ।।
हो गई मति भॅग रॅग फेर रूप पाप का धारया है ।।
पोशाक जरीकी पहर सबी और नक सख टूम सजाई है ।।
काजल टीकी चूप दात में होठों पे लाली लगाई है ।।
कर सोला सींगार नूना ज्यालम रूप बनाया है
हीरा पन्ना मोती सचा सोनेपे झल काया है ।।
करी सीचाई इत्र की वो भूखी और बात की थी
पास पूरण के खडी हुई भरी नजर पाप घात की थी ।।
हाथ पकड़ वा न्यू बोली ना मेरे समझ में आता है ।।
उलटा दोस चढाता पूरण मोसी कह बतलाता है ।।
भोत दिनों से थी आशा वो फूल आज मे पाया है ।।
खील्या फूल गुलसन का पूरण भवरा देख लूभाया है ।।

।। दोहा ।।

काम नशे को दूरकर करो मात होससे बात
पुत्र आया दर्श को फेरो सरपे हाथ
फेरो सरपे हाथ मात मेरा जनम सफल हो जायगा
माता पुत्रपे पाप धरे थम धरती का हिल जायगा ।।

।। दोहा ।।

माता वोही होत है जो राखे गर्भ स्थान
नहीं तुझेय ख्याल है तू पूरण नादान
तू पूरण नादान तुझे य रंग चावका ख्याल नहीं
मानो गे तो सुख भोगेगा ना मरन तलक की टाल नहीं

।। तरजा ।।

फिर भी सोच समझले पूरन ईसमे तेरी भलाई है
ना माने तू कहन मेरातो कजा सीस तेरे छाई है ।।
ना छोडू में मान धरमको ना य धर्म हमारा है

मरने का अफसोस नहीं ये दुनिया कालका चारा है ॥
करम धरमका ख्याल करो क्यूँ मती हुई है भँग माता
जोवन जवानी या मस्तानी दो छिनका है रँग माता ॥

॥ वारता ॥

सजनों पूरण मोसीका गलत विचार देखकर बड़ा दुखी हुवा और सोचने लगा की अबतो यहाँसे चला जाना ठीक है तो सजनों पूरण अपना हाथ छुडाकर वहाँसे चलदेता है और नूना अपने महलसे त्रिया चरित्र फैलाती है और पूरण को मरवाने का रास्ता खोजती है।

॥ दोहा ॥

केस खिन्डालिया सीसके किया वदन वेहाल
आभूपण वस्त्र सभी कर दिया ताल वे ताल ॥
कर दिआ ताल वे ताल नूना भारी जाल विछाया है
त्रिया चरित्र लगी दिखाने ना चाल किसीको पाया है ॥

॥ राधेश्याम ॥

करी रोशनी वन्द महलकी गमला फूल तुडाया है
अपने हथसे मार झॅंफ्टा गातमें लहु चमकाया है ॥
ऐसी हालत देख वान्दी ने राजा तुरत वुलाया है
फोरन राजा आये महलमें रानी से वतलाया है ॥
ये क्या गजव हुवा रानी क्यू महल मे घोर अन्धेरा है
फूटे गमला फूल सजावट क्यूँ विगर्या ढग ये तेरा है ॥

॥ दोहा ॥

नूना तव कहने लगी सूनो पति महाराज
नहीं वताने जोग है आती मुझको लाज ॥
आती मुझको लाज पुत्र तेरा पूरण यहाँ पर आया था
किया मोत उत्पात मेरेसे विलकुल ना सरमाया था ॥
वार २ लिया नाम तेरा मैं तो भी नो डर खायाँ था

जबरन करके मेरे साथमै ईज्जतपर हाथ लगाया था ।।
अब जीना मेरा ठीक नही ये सब दुनिया सुन पायगी
इस जीनेसे मरना अच्छा ना नूना मुख दिखलायगी ।।

।। दोहा ।।

समझाया पुत्रको बार बार ये बेटा तुम्हारा धरम नही
माता से बदनीत निहारे खोटा इससे कोई करम नही
एक न मानी बात मेरी वो बिलकुल ना सरमाया था
लिया बार २ मै नाम तेरा वो तो भी ना डर खाया था
अब जीना मेरा ठीक नही ये राज दुनिया सुन पायेगी ।।

।। दोहा ।।

मेरी समझ में आती नहीं राणी रहो खामोस
पूरण जैसे पुत्र को झूठा लगाती दोस
झूठा लगाती दोस पूरण ऐसा पुत्र नही रानी
नही पूरणका दोस कोई ये है सब तेरी शैतानी ।।

।। वारता ।।

सजनों ! राजाको पूरा विश्वास था कि पूरण ऐसा पुत्र नहीं मगर करम रेख का जोग टल नहीं सकता क्यूँ की पूरणका जनम इमी लिये भगवान ने दिया था के तुमारा नाम अमर रहेगा योग धारन करके और दुनिया यश गायेगी तो ये वारता नहीं होनेसे पूरणको अमर पद कैसे मिलता इस लिये राजाकी बुद्धी हीन हुई और नूनाकी बाता का विश्वास कर पूरणको कतलका हुकम दे देता है और जल्लादो हाथ गिरफ्तार करा देता है और पूरणका हाथ पाव काट कूपमें गिराने की आज्ञा दे देता है यह बात माता ईन्छरा को मालूम पाया तो मारेदुखके बदनमें आग झलक उठी और दरबार में आजाती पूरणके गलेसे लिपट भारी रूदन मचाती है तो पूरण माता को धीर बन्धाता है ।

॥ दोहा ॥

होनहार होके रहे ना पाया किसीने पार
रेखा टली ना टले जो करते जतन हजार
जो करते जतन हजार साचको आँच नहीं है माता
मोसीकी मति भंग हुई अब पूरण रामशरण जाता ॥
कतल करन पूरणमलको जल्लाद पकड ले जाता है।
हाहाकार मचावे ईन्छरा लाल मेरा कहाँ जाता है ॥
करो हिर्दय मे ज्ञान माता ना पेम तुम्हारा जायेगी।
कर ईश्वरका ध्यानमात फिर दर्श पूरण का पायेगी ॥
कब बेटा दर्शन होगा क्या सत्य कहना तुम्हारा है।
क्या मुझको मालुम होगा ये मेरा राज दुलारा है ॥
सत्यनाम ॐ कार मात जो सब को पालन हारा है।
पूरण को हो दरस माता का चले दूधकी धारा है ॥

॥ वारता ॥

सजनो ! पूरण जाते २ माताको यह वचन दे देता है और माता ईन्छरा को कुछ सतोष हुवा और भगवान के अन्दर प्रेम लगा लेती है और यही विनती करती है हे भगवान मेरे पुत्र पूरणकी रक्षा करना आपके बिना कोई सहारा नही आप निरबलके बलराम है आप बडे २ असुर संहारे है और भक्तो को उबारा है तो क्या मेरी दुखिया की आप नही सुनोगे मेरा पुत्र आपकी शरण मे है और इसकी लाज आपको है तो सजनो आशीरबाद में बडी ही ताकत होती है और उसको जरुर सहायता मिलती है तो सजनो जल्लाद पूरणको लेजाते है और हात पाव काट कुवेमें गिरा देते है और वापीस लोट आते है इधर भगवान कृपा और माता के आशीरवाद से गुरु गोरखनाथ कुवे पर आजाते है और बालटी कुवेमे पानी निकालने के लिये गिरायी तो पूरण बालटीमे फंस जाता है और गुरु गोरखनाथ

पूरणको निकाल लेता है और पूरणका रुप और लक्षण देखगुरु गोरख को बडी माया लगी तो पूरणके हाथ पाव पूरा कर देता है और पूरणको घरजानेको कहा तो वह इनकार कर देता है और आखरी गुरु गोरखनाथ पूरणका कान छेद देता है तो कानसे दूध धार निकली यह देखकर गुरु गोरखको बड़ी खुशी हुई यह तो कोई पूरा तप धारी है—तो पूरण के ऊपर सब चेलों से बढ़कर प्यार हो गया करते २ बारह साल व्यतीत हुए—तो एक दिन गुरु गोरखनाथ पूरणकी परीक्षा लेने के वास्ते चीनमुल्क मे भिक्षा मांगन रानी सुन्दर के पास भेजता है क्योंकि सुन्दर के द्वार पर जो साधू आता था उसको विना मारे सुन्दर किसी को नही जाने देती तो यह सोचकर पूरण को भेजा था क्योंकि गुरु को पूरा विस्वास था के पूरण का सुन्दरी कुछ नही कर सकती और सदा के लिये साधू महात्मा का उद्धार हो जायगा ।

॥ छन्द या राधेश्याम ॥

पूरण सच्चा दास गुरु का आज्ञा पा चल आया है
रानी सुन्द्रा के महल में जाकर अलख जगाया है
अलख नाम सुन सुन्द्रा ने हाथ कोरडा ठाया है
कजा आन तेरे सीस चढ़ी व्यू काल तुझे यहाँ ल्याया है
सन्मुख आकर पूरन के जब देख्या रूप निराला है
खामोश हुई वेहोस हुई रानी सुन्द्रा खाय तीवाला है
थोडी देर मे होस हुआ फिर मन उसका ललचाया है
बान्दी २ आवाज दिया भर मोती थाल मंगाया है
पूरण कहे सुनो माता ये मोती हमारे काम नहीं
साधू को तो चाये भिक्षा अन्न से बढ़कर दान नहीं
दो भिक्षा जल्दी माता ना गुरु हमारा मारेगा
करे कामना पूरी तेरी गुरु ही कारज सारेगा ॥

ले जोगी भिक्षा लेज्या   गुरु तेरे पास फिर आउंगी
नाना भाँति मेवा मिठाई   अपने संग में लाऊं मैं

॥ वारता ॥

तो सज्जनो ! पूरण भिक्षा लेकर गुरु के पास आ जाता है, और सुन्द्रा भी नाना भाँति मिठाई मेवा भेट लेकर गुरु गोरखनाथ के पास जाती है, और जो कहना था कहा तथा गुरु गोरखनाथ ने जो देना था दिया और वापिस लौटाया। पूरण को साथ ले गोरखनाथ वहाँ से चल दिया और पूरण को स्यालकोट जाने की आज्ञा दी। क्योंकि, माता को पूरण ने वचन दिया था कि एकवार फिर आपका दर्शन करूंगा। इसीलिये गुरु पूरण को भेजता है और पूरण चलकर अपने पिता के बाग में आता है। वहाँ गाछ के नीचे आसन लगा बैठ जाता है। वह बाग जिस दिन पूरण घर से निकला था सूख गया था और पूरण के आते ही हरा हो गया था। दादुर, मोर कोयलिया कूकने लगी, फूल खिल उठे। यह देख माली को बड़ी खुशी हुई। दौड़ कर बाग में आता है तो क्या देखता है, एक साधु सोया है तथा बाग में अजब बहार है। माली दौड़ कर राजा के पास जाता है और सारा हाल कह सुनाता है पर राजा सुलेमान पूरण को नहीं पहचानता, पर पूरण राजा को पहचान चरणों में धोक लगाने को उठा तो राजा क्या कहता है और पूरण क्या कहता है—

तरज हरियाना ॥
(आप अकेला जीना चाहता)
दोनों का मिलना

राजा   उलटा दोष चढ़ाते बाबा—हो साधू ब्रह्मचारी।
पूरण   है बड़ा राजा दुनियां में धरमी इंसाफी भारी ॥

रा० कौन जगह से आया बाबा, कौन जगह पर डेरा ।
पू० साधु के घर वार नही, जंगल में रहे बसेरा ॥
रा० रुप आपके मिलते जुलते, पुत्र एक था मेरा ।
पू० है ईश्वर के खेल, रुप मिलते हैं भोत घणेरा ॥
रा० बिना मोत के मरण हुआ, चढ आई भोत करडाई ।
पू० शास्त्र मेरा कहता है अभी, मरा पुत्र तेरा नाही ॥
रा० भारी जुलम किया था उसने, बदी ने मोत बुलाई ।
पू० था इसाफ हाथ आपके, क्या कुछ गलती पाई ॥
रा० छोटी माँ से पाप किया, न्यू आग बदन में लागी ।
पू० किया कौन इसाफ आपने, माया पुत्र की त्यागी ॥
रा० मेरे राज मे चोरी जारी, करना है दस्तूर नहीं ।
परजा पुत्र एक है मेरे, पाप मुझे मजूर नही ॥
पू० त्रिया चरित्र को चाल पाईना, हो के राजा खास तने ।
कैसे जननी धीर धरेगी, कर दिया सत्यनाश तने ॥
हो राजा विश्वास तने, शिक्षा का धरम हमारा ।
आवे रानी दासी बाग मे, मेटू भरम तुम्हारा ॥
बुड्ढे वजीर को ल्याना सग मे, था जो आज्ञा कारी ।
जिस माता से पाप हुआ, वो आवे सग महतारी ॥
पूरा हो इंसाफ धरम का, हाल तुझे मालुम होगा ।
करने मे इन्साफ कभी ना, ऐसा फेर जुलम होगा ।

॥ वारता ॥

यह बात सुन राजा को कुछ ज्ञान हुआ तब उसी समय सब को बाग में बुला लेता है। तो पूरण राजा से कहता है कि महाराज आप दासी को कुछ भय दिखा कर पूछिये तो पाप का भंडा अभी फूट जायगा। सज्जनों! राजा ने अपनी कटार निकाल कर दासी से कहा कि दासी सच कहो नूना और मेरे

पुत्र का क्या माजरा था. तुम्हे मात गुनाह माफ है, वरना तेरा सर उडाया जायगा। तो सज्जनों! दासी ने साफ बतला दिया। महाराज! मेरी खता माफ हो, पूरण का कोई दोष नहीं, सब रानी नूना की शैतानी थी, क्योंकि रानी पाप का रुप धारण कर पाप कमाना चाहा, मगर पूरण ने मजूर नहीं किया। इसीलिये पूरण बेखता मारा गया। यह सुन राजा को बड़ा दुख हुआ और लगा विलाप करने। राजा ने कहा कि इस नूना को जिन्दा जमीन में गाड दो, यह बड़ी दुष्ट है मेरे आँखों का तारा छिपा दिया, मेरे ताज को जला दिया। तब पूरण क्या कहता है—

॥ छन्द ॥

कुछ करो वदन मे शोक पिता जी, यह पूरण पुत्र तुम्हारा है।
जो लिखा विधाता लेख पिताजी, ना कोई मेटन हारा है॥
मा नुना का दोष नहीं, और ना कुछ दोष तुम्हारा है।
ईश्वर के आधीन सभी, जो माया अपरम्पारा है॥
था ध्यान यही मा नूना का, पूरण सा पुत्र हमारा हो।
हो इच्छा पूरी माता की, पूरण सा राजदुलारा हो॥
सुन खुशी हुई मा इच्छरा को क्या पूरण पुत्र हमारा है।
रुप निहारा पूरण का तो, चली दूध की धारा है॥
मा बेटे का मिलन हुआ, ना कर सकता यह वर्णन मै।
भरम सभी का दूर हुआ, फिर ध्यान लगा हरि चरणन मे॥
देख तपस्या पूरण की, हुआ हर्ष सभी को भारा है।
धन्य २ तेरे गुरु गोरख को, रख्या लाज हमारा है॥
हो जोग अमर पूरण तेरा, यह आशिर्वाद हमारा है।
हो चर्चा जहा पर भक्तजनों की, आये लेख तुम्हारा है॥

(राधेश्याम)

मात पिता को दे दर्शन, चरणों में शीष झुका कर के।

पूरण अन्तर्ध्यान हुआ, फिर मिल्या गुरु मे जाकर के ।।
सच्ची शक्ति सच्ची भक्ति, छिपती नहीं छिपाने से।
होता है यह जाहिर तभी, सच्चे गुरु के पाने से ।।
सती पुरुष और नार सती, यह कोई २ विरला पता है।
ताकत इनकी मोत बडी है. ब्रह्मा तक थरराता है ।।
इसीलिये है पद ऊँचा, भक्त पुरुष महानो का ।
वेद पुराण सभी बतलाते, लेख कवि विद्वानो का ।।
स्योरामदास गुरु कृपा से, पूरण की कथा बनाई है।
आखों देखी बात नहीं, जैसी सुनने मे आई है ।।
इतना तो फरक जरुरी है, हर सभा मे गाये रोक नहीं ।
जो कथा पुरानी पूरण की, वो सभा मे गाने योग नहीं ।।
इसीलिये किया प्रचार इसे, जो सेवा मे फरमाया है ।
कथा पूर्ण करता हूं यहा, ना अन्त लेख का पाया है।।

दोहा— पूरण वहा से पूर्ण हुआ, थी उसकी हर मे लय ।
ईच्छा पूर्ण सबकी करी, बोलो भगत की जय ।।

(समाप्त)

॥ ॐ ॥

* भक्त प्रह्लाद कथा *

दोहा—कथा आरम्भ होत है, सुनो सजन धर ध्यान।
कथा भक्त प्रह्लाद की, सत्य धर्म की खान॥

॥ वारता ॥

सज्जनो! आपकी सेवा मे भक्त प्रह्लाद की कथा यानी सत्य धर्म का वर्णन करता हूँ। एक समय प्रहलाद का पिता हिरण्य-कश्यप ब्र्‌ह्मा जी का घोर तप किया, जिससे ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर हिरण्यकश्यप से वर मागने को कह। हिरण्यकश्यप ने ब्रह्मा जी से वर मागा कि मैं न दिन मे मरूँ न रात में, न भीतर मरुँ न बाहर। न नर से मरुँ न नारायण से. न अस्त्र से मरुँ न शस्त्र से, बारह महिना की साल मे मरुँ नहीं। ब्रह्मा जी ने कहा 'एवमस्तु'। वरदान पाकर हिरण्यकश्यप अपने राज में आकर खुशी मनाता है और अहकार मे भर जाता है। अपने पुत्रप्रहलाद को बुलाकर कहता है कि बेटा जाओ जो मेरे राज में भगवान का नाम लेता है. उसे मना कर दो, और कहो हिरण्यकश्यप का नाम जपे।

(तर्ज – रेशमी शलवार)

टेक—सच्चा धरलो ध्यान चतरभुज धारी का।
करे दुखों का नाश प्रेम पुजारी का॥

हिरणाकश्यप गरमाया, वरदान ब्रह्मा से पाया।
परजा को मोत सताया, और राम नाम छुड़वाया ॥
हठ कुम्हारी का ॥ टेक ॥

पुत्र प्रहलाद तुम जाओ बन्द राम नाम करवाओ।
कुम्हारी को समझाओ, कहो बाहर नगर से जाओ ॥
वचन बलकारी का ॥टेक ॥

प्रहलाद कुम्हारी घर आया, उसे मोत घण समझाया।
हुकम पिता ने फरमाया, बन्द राम नाम करवाया ॥
परजा सारी का ॥ टेक ॥

कुम्हारी न्यू समझाया, तुझे बचा कौन बहकाया।
सब है ईश्वर की माया, क्यू हिरणाकश्यप गरमाया ॥
ज्ञान कुम्हारी का ॥ टेक ॥

॥ दोहा ॥

प्रहलाद भक्त कहने लगा, कुछ हुआ मात मुझे ज्ञान।
मेरा भरम मिटाय दे, कहां रहता भगवान ॥

तो मे मो मे खड़ग खम्ब मे, और रोम रोम है वास।
सुमिरन करे प्रेम से तो, होय दुखों का नाश ॥

॥ वारता ॥

सज्जनों! कुम्हारी प्रहलाद को शिक्षा दे रही है। उधर कुम्हार भट्टी में आग गिराता है, वह भट्टी बहुत दिन आगे लगाई गई थी, उस भट्टी मे एक बिल्ली ने हांडी के भीतर बच्चा दे दिया था, यह बात किसी को मालूम नहीं थी। आग लगाते ही भट्टी गरम हुई तो बिल्ली के बच्चे किराने लगे और कुम्हार को बडा अफसोस हुआ तो भागकर कुम्हारी के पास आता है, जिस समय प्रहलाद कुम्हारी के पास बैठा था। तो कुम्हार क्या कहता है—

|| दोहा ||

कुम्हार आय कहने लगा, सुनो कुम्हारी बात ।
भोत घणा अनरथ हुआ, तो हुआ भोत उत्पात ||

|| राधेश्याम ||

कर सब काम त्यार मैने, भट्टी मे आग लगाई है ।
म्याऊ म्याऊ आवाज सुने, भट्टी मे बलिया ब्याइ है ।।
हे कुम्हारी अब क्या होगा, जी मेरा घबराता है ।
ईश्वर इनकी रक्षा करना, तुम्ही पिता और माता है ।।
कहे प्रहलाद सुनो कुम्हारी, जो बच्चा यह बच जायेगा ।
गुरु मान तुझे भक्ति करूँ फिर भरम मेरा मिट जायेगा ।।

|| दोहा ||

हाथ जोड कुम्हारी खड़ी, धर्यो प्रभू का ध्यान ।
लाज आज प्रभु राखिये दीनबन्धु भगवान ।।
दीनबन्धु भगवान नाम, भक्तों का उठ जायेगा ।
फिर मै भी तजूगा प्राण आज यह बच्चा जो मर जायेगा ।।

|| दोहा ||

दुख भरी वाणी सुनी, राखी भगत की लाज ।
हण्डया काची राखदई, लागी नही अवाच ||

|| राधेश्याम ||

तीन चार दिन बीत गये, सब बर्त्तन पक कर त्यार हुआ ।
भट्टी का फिर मुख खोला, सब बच्चों जिन्दा बार हुआ ।।
सब बर्त्तन पक कर लाल हुआ, एक हन्डिया कच्ची पाई है ।
सच्ची भक्ति देख प्रहलाद, चरणों में धोक लगाई है ।।
कहे प्रहलाद सुनो माता, मै प्रण पिता का तोडूगा ।
जब लग मेरी रहे जिन्दगी, हरि से नाता जोड़ूगा ।।

माता मै भारी भूल किया, और धोखा भारी खाया है।
पिता की आज्ञा पालन करके. भारी पाप कमाया है ॥
अब माता मुझे आज्ञा दो, घर अपने को जाऊ मैं।
दो आशीर्वाद पुत्र को, पिता को जा समझाउ मै ॥

॥ दोहा ॥

खुशी कुम्हारी को हुई, फिर दिया आशीर्वाद।
करना रक्षा पुत्र की, त्रिभुवन पति रघुनाथ ॥

(तर्ज—रेशम की शलवार)

घर को प्रहलाद चल आया, और मन में भोत पछताया।
पिता ने जुल्म कमाया, बन्द राम नाम करवाया,
नाम असुरारी का ॥ सच्चा घरलो० ॥

घर जा प्रहलाद पियारा, तजा हुक्म पिता का सारा।
हुआ क्रोध हिरणकस्यप भारा, तू जाता दुष्ट अब मारा ॥
घमन्ड मुरारी का ॥ सच्चा घरलो० ॥

जरा ध्यान पिताजी करना, ना छोड़ू प्रभू का शरणा।
न रुके अगन में जरना जो मन चाहो सो करना,
सत् कुम्हारी का ॥ सच्चा० ॥

नादान मुझे समझाता, क्या शर्म तुझे नहीं आता।
किसको कहता है माता, उपदेश हमे बतलाता।
मति मारी का ॥ सचा० ॥

॥ दोहा ॥

हिरणाकस्यप मन सोचता, करना चाहिये उपाय।
प्रहलाद को समझाय कर, कहा पढन को जाय ॥

॥ वारता ॥

सज्जनों! हिरन्यकश्यप ने सोचा कि प्रहलाद को कुम्हारी का सच्चा विश्वास हो गया है, यह अब तुम्हारी आज्ञा नही मानेगा।

अब इसको पाठशाला भेजना ठीक है। वहाँ गुरु से कह कर इसका उपदेश यानि कुम्हारी की दी हुई शिक्षा खत्म करनी है। तो सज्जनों! हिरन्यकस्यप गुरु को समझा देता है और प्रहलाद को पढ़ने भेज देता है। तो भक्त प्रहलाद पाठशाला में जाता है और लड़कों को उपदेश देना शुरु कर देता है।

॥ दोहा ॥

सच्चा भाव छुटता नहीं, कोई करलो जतन हजार।
प्रहलाद पढण को चल दिया, आज्ञा पालन हार॥

॥ तर्ज राधेश्याम ॥

प्रहलाद पढने को जाय वहाँ, सब लड़कों को बहकाता है।
पढना लिखना छुड़ा दिया है, एक राम का नाम सिखाता है॥
मालुम हुआ गुरुजी को, प्रहलाद को आ धमकाता है।
पढ़ना लिखना बन्द किया; और किसका नाम सिखाता है॥
कहे प्रहलाद सुनो गुरुजी, एक राम ही नाम अधारा है।
सच्चा नाम उसीका है जो, सबको पालन हारा है॥

॥ दोहा ॥

पण्डित जी महाराज को, आन करि फरियाद।
राजन तेरे पुत्र ने; सब किया काम बरबाद॥

॥ राधेश्याम ॥

राजन तेरे पुत्र को मैं: भोत घणा समझाया है।
यह नहीं मानता बात मेरी सब लड़का बहकाया है॥
पढना सबका छुड़ा दिया एक नाम तो वो ही रटाता है।
समझाने पर नहीं मानता, उलटा हमें धमकाता है॥
संभालो पुत्र अपना राजन, और नहीं समझ में आती है॥

॥ दोहा ॥

सुन पन्डित की बात को, गया सन्नाटा छाय।
दिया हुकम जल्लाद को, गिरा पहाड़ से देवो मराय ॥

॥ बारता ॥

सज्जनों! प्रहलाद की सच्ची भक्ति देख कर और गुरुजी की बातें सुन कर हिरण्यकश्यप को बड़ा क्रोध आया। उसने सोचा यह शैतान तुम्हारी आज्ञा पालन कभी नहीं करेगा। इससे अच्छा इसको मरवा देना चाहिये। क्यों कि यह शैतान मेरा अपमान करता है, तथा दूसरो का मान करता है। तो सज्जनों! हिरण्य-कश्यप जल्लादो को हुक्म देता है कि इसको ऊँचे पहाड़ से गिरा कर मार दो, हमारी आँखों से हमेशा के लिए दूर कर दो। जल्लाद प्रहलाद को पकड़ कर एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले जाते हैं। प्रहलाद यह देख कर मन में भगवान को याद करता है। हे दीनबन्धु! आप भट्टी मे से बिल्ली के बच्चो को मेरी आँखों के सामने बचाया, तो क्यों मेरा उद्धार नहीं होगा? अब आपके शिवाय मेरा कोई सहारा नहीं है।

(तर्ज—रेशमी शलवार)

पकड़ प्रहलाद पहाड़ पर लाया, प्रहलाद देख घबराया।
फिर प्रभु से ध्यान लगाया, मै तेरी शरण में आया ॥
अरज भिखारी का ॥ सचा० ॥
पड़ी दुख भरी टेर सुनाई, प्रभु तुरंत करी चढ़ाई।
करि आन भगत की सहाई, औ नारद बीणा बजाई ॥
भगत मुरारी का ॥ सचा० ॥
फिर प्रहलाद माता पे आया, सब अपना हाल बताया।
फिर मालूम असुर को पाया, प्रहलाद जिन्दा घर आया ॥
क्रोध अहंकारी का ॥ सचा० ॥

जल्लादो फिर इसको ले जाओ जमुना मे जाय गिराओ।
या हाथी से मरवाओ, चाहे लाके जहर पिलाओ।
यही नास अनारी का ॥ सचा० ॥

जल्लादों ने सब कर्म कमाया, नही भक्त मरण मे आया।
आ हिरणाकुश को बतलाया, सुन मन में भीत घबराया ॥
काम लाचारी का ॥ सचा० ॥

॥ वारता ॥

सज्जनों ! हिरण्यकश्यप जल्लादो की बात सुनकर बहुत दुखी हुआ और सोचने लगा कि इस दुष्ट को कैसे मारा जाय। तब अपनी बहन होलिका को बुलाता है, होलिका आकर अपने भाई से पूछती है।

कहो क्या बात है भाई, क्यो आज मुझे बुलवाई।
क्या ऐसी आफत आई, जो तुरत मुझे बुलवाई ॥
भेद हो सारी का ॥ सचा० ॥

प्रह्लाद करे शैतानी, यह करता है मनमानी।
चलता है सीख बिरानी, है करना खत्म निशानी ॥
अत्याचारी का ॥ सचा० ॥

सज्जनों ! होलिका अपने भाई का दुख सुन कर प्रह्लाद को बहुत समझाया मगर प्रह्लाद ने भूआ का उपदेश नहीं माना तो होलिका क्रोध में होकर प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश कर जाती है। होलिका को घमण्ड था कि उसे ब्रह्मा जी का शीतल चीर वरदान में मिला था। वह चीर ओढने से उसे अग्नि की तपत नहीं लगती थी। पर भगवान की कृपा से वह चीर होलिका के बदन से उड कर प्रह्लाद के बदन मे लिपट गया। होलिका जल कर खत्म हो जाती है और प्रह्लाद वापिस आता है।

यह देख हिरण्यकश्यप को बड़ा दुख हुआ और सोचने लगा कि इस दुष्ट को मैं अपने हाथ से मारूँगा। वह एक लोहे का खम्भ गरम करता है और प्रहलाद से कहता है।

॥ दोहा ॥

प्रहलाद हठ को छोड़ दे, और कहा हमारा मान।
ना, बाथ भरो इस थम्भ के, देखूँ तेरा भगवान॥ १॥

॥ दोहा ॥

हठ पिताजी छोड़ूं नहीं, इस नाम पे है अरमान।
तो में मो में खड़ग खम्भ में, है व्यापक भगवान॥

(तर्ज—राधेश्याम)

मैं सच्चे गुरु का पायक हूँ, ना खम्भ से मैं घबराऊँगा।
है मेरा यह परण पिता जी, राम से तुझे मिलाऊँगा॥
है मुझे विश्वास पूरा, अब आपका भरम मिटाऊँगा।
है अखिरी प्रणाम पिताजी, शरण राम की जाऊँगा॥

॥ दोहा ॥

प्रहलाद उठकर चल दिया, चल्या कदम दो चार।
देख्या खम्भ को आँख से, जाण जलता अँगार॥
लाल खम्भ को देखकर, गई उदासी छाय।
भरम मिटावण भगत का, दी खम्भ पे किड़ी चलाय॥

॥ तर्ज—राधेश्याम ॥

कीड़ी चलती जब देखी, हुआ हर्ष भगत को भारी है।
झट थम्बे के बाथी भरली, हिम्मत हिरणाकुश हारी है॥
हो क्रोध हिरणाकुश ने, फिर फाड़ थम्ब को डारा है।
थम्ब से प्रकटे नरसिंह रूप, हिरणाकुश को ललकारा है॥

जो था वरदान तुझे ब्रह्मा का, वो टेम तू सभी मिला लेना।
वचन ब्रह्मा का झूठा है यह कभी जुबाँ से ना कहना॥

॥ वारता ॥

सज्जनों! प्रहलाद ने लाल थम्भ से बाथ भर लिया, तो हिरण्यकश्यप को बड़ा क्रोध आया। और क्रोध में भर कर उस थम्भ को फोड़ देता है। भगवान नरसिंह रुप धारण कर थम्भ से प्रकट हुये। हिरण्यकश्यप को अपनी गोदी में लेकर बोले—तुम्हारा वरदान याद करो, जिस पर तुमने इतना अहँकार किया है। हिरण्यकश्यप का भ्रम मिट गया तब वह कहने लगा।

॥ दोहा ॥

हिरणाकुश कहने लगा, सब ठीक तो है महाराज।
आज मेरी मुक्ति हुई, तो धन है मेरा भाग॥

(तर्ज—राधेश्याम)

हे प्रभो दया के सागर, इतनी कृपा और करना।
मैं भारी अत्याचार किया, वो क्षमा नाथ मुझको करना॥
प्रहलाद आपका भक्त प्रभो, उसे कष्ट दिया था मैं भारी।
वरदान पाय कर घमण्ड हुआ, प्रभो मति गई थी मेरी मारी॥
अब हुआ नाथ विश्वास मुझे, मैं शरण आपकी जाता हूँ।
हो अमर नाम भक्तों का, बस इतनी नाथ मैं चाहता हूँ॥

॥ दोहा ॥

हिरणाकुश यह कह कर, तज्या है अपना प्राण।
हाथ जोड़ प्रहलाद ने, धर्यो प्रभू से ध्यान॥

प्रभू तब कहने लगे मत होना पुत्र उदास।
अमर नाम तेरा रहे, जब तक बेद इतिहास ॥

भक्त कथा वरणन किया, गुरु कृपा अनुसार।
हो गलती दास स्योराम की, तो करना आप सुधार ॥

समाप्त

॥ कीर्त्तन धुन ॥

(१)

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

(२)

गोबिन्द हरे गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीन दयाल हरे।

(३)

सिया राम हरे राधेश्याम हरे,
प्रभु भक्तन के सुख धाम हरे ॥

(४)

राम कृष्ण गोपाल दामोदर, हर माधव मधु सूदनम्।
काली मर्दन कंश निकन्दन, देवकि नन्दन तुम शरणम् ॥

(५)

जय जय सिया राम,
जय सिया राम, जय जय सियाराम।

कलियुग केवल नाम आधारा

सुमरि सुमरि नर उतरहिं पारा ॥

सुमरे जो नर सच्चा नाम,

जय सिया राम० ॥

जा पर कृपा राम की होई,

ता पर कृपा करे सब कोई।

सच्चे का है सहायक राम,

जय सिया राम० ॥

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना,

जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।

तुलसी दास करी पहचाना,

जय सिया राम० ॥

॥ भजन मीरा ॥

चरखा परे हटाले जी, मेरी सुरत राम से लागी।
सुरत राम से लागी. मेरी लगन राम से लागी ॥ टेर ॥

काहे से कातु कातना, उमर मेरी है काची।
दोनू पैरों बाध घूंघरु, सत गुरु आगे नाची ॥ चरखा० ॥

काहे से कातू कातना, ना कोई मने वाड़ी।
हमे ओर की क्या पड़ी, मैं आपही फिरूँ कुंवारी ॥ चरखा० ॥

चरखा छोड़ा पीढ़ी छोड़ी, छोडा कातनी सूत।
सग की तो सहेली छोड़ी, छोड़ा सास का पूत ॥ चरखा० ॥

मीरा माता से कहे, सुन माता मेरी भागी।
भजन करें से कुल सुधरना, कर भजन बड़भागी ॥चरखा०॥

—(०)—

॥ गजल ॥

मुझे है काम ईश्वर से, जगत रुठे तो रुठन दे ।टेर।

कुटुम परिवार सुत दारा, माल धन लाज लोकन की।
हरी का भजन करने सें, अगर छूटे तो छूटन दे ॥

बैठ संगत में सन्तन की, करुँ कल्याण मैं अपना।
लोग दुनिया के भोगों में, मौज लूटे तो लूटन दे ॥

प्रभू का भजन करने की, लगी दिल में लगन मेरे।
प्रीत संसार विषयों से, अगर टूटे तो टूटन दे ॥

धरी सर पापकी मटकी, मेरे गुरु देवने झटकी।
वो ब्रह्मानन्द ने पटकी, अगर फूटे तो फूटन दे ॥

—(०)—

॥ भिलनी की टेर ॥

रामा-रामा रटते-रटते, हो गई रे बावरिया।
रघकुल नन्दन कब आवोगे, भिलनी की डगरिया ॥टेर०॥

मैं सवरी भिलनी की जाई, भजन भावना जानु रे।
रामा तोरे दर्शन खातिर, वन में जीवन पालू रे॥
अब क्यों प्रभु मेरे भूल गये हो दासी की झुपड़िया॥ १॥
॥ राम० ॥

रोज सवेरे वन में जाकर, फल चुन-चुन कर लाऊ रे।
अपने प्रभु के सन्मुख रख कर, प्रेम से भोग लगाऊँ रे॥
मीठे-मीठे बोरन की मै भर लाई छावरिया॥ २॥
॥ राम० ॥

स्याम सलोनी माधुरी मूरत, दिल के बिच बसाउँ रे।
पग पंकज की रज वर मस्तक, चरणो में सीस नवाऊँ रे॥
चरण कमल से निरमल कर दो, दासी कि डगरिया॥ ३॥
॥ रामा० ॥

तेरे दरसन की प्यासी, मैं अबला एक नारी हुँ।
दरसन बिना दो तरसे नैना, सुनलो बहुत दुखारी हूँ॥
राम रुप से दरसन दे दो, डालो एक नजरिया॥ ४॥
॥ राम० ॥

॥ कृष्ण भजन ॥

कृष्ण कृष्ण मैं पुकारु, तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया, गोविन्द माधो स्यामने॥ टेर॥

खम्भ से प्रह्लाद को, तुमने उबारा आन कर।
द्रौपदी की लाज राखी, कौरव दल के सामने॥ १॥ कृष्ण॥

गजका तुमने फन्द छुडाया, गिरह को जल में मारकर।
विष अमृत मीरा का कीना सब भक्तों के सामने ॥२॥ कृष्ण ॥

काली नाग को नाथ लाया, गेंद दरिया में डार कर।
कंस को तुम मार गिराया, भरी सभा के सामने ॥३॥ कृष्ण ॥

बंसी वाले तेरी बंसी तू सुना दे आन कर।
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बसर के सामने ॥४॥ कृष्ण ॥

हे प्रभो इस दास को तुम, दरस दिखादो आन कर॥
इस लिये धूनी लगाई, तेरे दर के सामने ॥५॥ कृष्ण ॥

—(०)—

॥ कीर्त्तन ॥

बोल हरि बोल हरि, हरि हरि बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल ॥ टेर ॥

सीताराम सीताराम सीताराम बोल ॥१॥
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम बोल ॥१॥

रघुपति राघव राजा राम पतीत पावन सीताराम।
मुरली मनोहर सुन्दर श्याम, भज मन मेरे राधेश्याम ॥२॥

नटवर नागर दीन दयाल, बंसी वाले ब्रज गोपाल।
गोविन्द हरे गोपाल हरे. जय जय प्रभु दीन दयाल हरे ॥३॥

नाम प्रभु का है सुख कारी, पाप कटेंगे छिन में भारी।
ना लगता कुछ तेरा मोल ॥ बोल हरि० ॥ ४ ॥

सबरी अहिल्या मदन कसाई, नाम जपने से मुक्ति पाई।
नाम की महिमा है वे तोल, ॥ बोल हरि ॥५॥

जो चाहे भव सागर तरना, मिट जागा जीना मरना।
पाप की गठड़ी सिर से खोल ॥ बोल हरि ॥ ६ ॥

भजले रे मन कृष्ण मुरारी, नटवर नागर गिरिवर धारी।
नाम का अमृत पी नित घोल ॥ बोल हरि० ॥ ७ ॥

क्यों विषयों में मन को लगाया, पालन हार को दिल से भुलाया
जीवन माटी में ना घोल ॥ बोल हरि० ॥ ८ ॥

दुनिया है यह गोरख धन्दा, भेद समझ या कोई-कोई बंदा।
ब्रह्म स्वरूप तराजू तोल ॥ बोल हरि ॥ ९ ॥

—(०)—

॥ कीर्तन ॥

बोल म्हारी रसना हरि हरि राम ॥ टेर ॥

खाना पीना भोत मन लागे, राम भजन में मरी मरी राम ॥
गर्भवास में भक्ति कबूली, बाहर आके फिरी-फिरी राम ॥
चुन-चुन कलियां बाग लगाया, मालन तोड़े फली फली राम ॥
अटपटी बातां आछी लागे, सुभ कर्मों से टरी टरी राम ॥
राजा हो-हो पाप कमाने, भजन की वरिया डरी-डरी राम ॥
मेरे तेरे में बंधी फिरत है, मोह ममता में घिरी-घिरी राम ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सुवा पढ़ावत गनिका तरी-तरी
राम ॥

॥ भजन ॥

॥ दोहा ॥

धन सच्चा वो जानिये, जो प्रभु का नाम ॥
और सब धन झूट है, नही आता वखत पर काम ॥

मुसाफिर क्यूँ गरभाया रे, लोभी क्यूँ गरभाया रे।
दो दिन का महमान, अमर ना रहेगी काया रे ॥ टेक ॥
अदम देह मुश्किल से पाया कुछतो करो विचार।
करना चाहिये शुभ करम, तेरा होज्या बेरा पार ॥
साथ ना जागी माया रे ॥ मुसाफिर ० ॥

झूठा माया जाल है, और झूटा सब ससार।
झूठी है या जोवन जवानी, दो दिन की बहार ॥
फेर सब ही पछुताया रे ॥ मुसाफिर ० ॥

कुण ल्याया कुण ले गया, संग धन सम्पति परिवार।
अन्त समय कोई काम न आवे भाई बंधु सुत नार ॥
झूठी है सब माया रे ॥ मुसाफिर ० ॥

प्रम करो हरि भजन में, जो चाहते कल्याण।
बार बार तुझे समझाऊँ, मान स्योराम अज्ञान ॥
गुरु ने न्यू फरमाया रे ॥ मुसाफिर ० ॥

॥ भजन गूजरी ॥

॥ दोहा ॥

पास यशोदा मात के, गुजरी करे पुकार ।
पक्का छलिया चोर है, तेरा लाला नन्द कुंवार ॥

मखन म्हारो खा गयो ए, यसोदा मन मोहन चित चोर ।
मन मोहन चित चोर, यो तो सौ चौरा को चोर ॥टेर ॥

कान्हा चोरी ना करे, क्यू मचाती शोर,
माखन मिश्री घरा भतेरा, झूठा बनाती चोर ।
माखन तेरो ना खायो ए, मेरा लाला नन्द किशोर ॥१॥

झूठी मैं एक ना कहूँ करो यसोदा गोर,
माखन म्हारो खाय हमेसा, है यो पक्का चोर ।
माखन म्हारो खा गयो ए यशोदा, मन मोहन चित चोर ॥२॥

के तुं गुजरी बावली क्यूँ चढाती त्योर ।
मेरा कान्हो गऊ चरावे जाता उठके भोर ।
॥ माखन तेरो ना खायो ए० । ३॥

आधी रात मझार मे, जा बड़े यो घर मे चोर ।
माखन मलाई सारी खाज्या, मटकी देता फोड़ ।
॥ माखन म्हारो खा गयो ए० ॥४॥

जा घर अपनेगू जरी, ज्यादा सुनूं ना ओर।
साची तेरी जब जानूगी, ल्यावे पकडके चोर।
॥ माखन तेरो ना खायो ए० ॥५॥

गूजरी घर मे आगई, चल्यान कुछ भी जोर।
सारी रात में पहरा देके पकडूगी यां चोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥६॥

आधी रात मझार में, जा पहुँचा नन्द किशोर।
गूजरी देख्या आवता, फिर लुकी कुण की ओर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥७॥

धीरे धीरे भीतर गया, किया न कुछ भी शोर।
हाथ मटकिया ठाय लई, जब गूजरी पकडा चोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥८॥

रोवण सा मुखडा किया, कहता नन्द किशोर।
आज आज मने छोड गूजरी, फेर ना आऊँ ओर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥९॥

क्यूँ नैना आँसू भरे, क्यूँ मचाता शोर।
यसोदा के पास ले आवे, पक्का बनाऊँ चोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥१०॥

पकड कृष्ण को गूजरी, चली यसोदा ओर।
देख तेरो यो कान्हो माता, पक्का छलिया चोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥११॥

पल्ला उठा कर देखती, माता कँवर की ओर।
साठ वर्ष का बूढ़ा बन गया, घर का गूजर चोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥१२॥

गूजरी माफी मागती, कर अपन को जोर।
धन है प्रभु लीला तेरी, धन है नन्द किशोर।
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥१३॥

बाल लीला वर्णन किया, गुरु कृपा का जोर।
स्योराम दास कहे धन गूजरी, आये घर नन्द किशोर॥
माखन म्हारो खा गयो ए० ॥१४॥

—o)—

॥ स्त्री उपदेश ॥

हे तुम नारी जाती, अब तो बनो हुशियार,
सब मे ऊँचा ताज तुम्हारा, जाने सब ससार। टेक॥

सगीत

वो जमाना आज नहीं है, ख्याल जरुर होना चाये,
जैसा बदले रंग जमाना, ढग वैसा होना चाये,
काम पडे पर हिम्मत राखो, कायर नही होना चाये,
जब तक पार बसावे अपनी, धरम नही खोना चाये,
विपता दुख नादारी मे, निराश नहीं होना चाये,
है हिम्मत का राम हिमाती, विश्वास नहीं खोना चाये.
हुशियारी से चलने से हो, सुखी सभी परिवार। हे तुम।

जो कर्त्तव्य तुम्हारा है वो, नेम अनुसार होना चाहिय,
अपने बडों की सेवा करना, पति से प्रेम होना चाहिय,
पति आज्ञा को पालन करना, ना मर्याद खोना चाहिय,
आमदनी से खर्चा ज्यादा, कभी नहीं होना चाहिय,
गहना जेवर तिवल जरी की, ना बस इनके होना चाहिय
साफ सुथरे कपडे पहरो, मैला ना होना चाहिय,
इतना जब तक नही सोचोगी, होगा नही सुधार। हे तुम०।

एक बात फिर तुम्हे समझाउ, ज्ञान जरुर होना चाहिय,
जब जाती हो पिता के घर से कभी नही रोना चाहिय,
है यह सिस्टम गलत तुम्हारा, ऐसा नही होना चाहिय,
शुभ कर्मो मे आती जाती, अशुभ नहीं होना चाहिय,
बनो तुम जिससे शक्तिशाली, ऐसा प्रचार होना चाहिय,
कमजोरी को त्याग. पैदा बीरता होनी चाहिय,
नारी थी झाँसी की रानी, अंग्रेजो ने मानी हार। हे तुम०

तुम घर की लक्ष्मी कहलाती, शुभ करम होना चाहिय,
धरम करम और सन्ध्या अर्पण, शक्ति सारु होना चाहिय,
गृहस्थ आश्रम सबसे बडा है, पालन पूरा होना चाहिय
छोटा बड़ा गरीब धनी का, सवाल नही होना चाहिय,
सब से मिल जुल रहो प्रेम से, भेद नहीं होना चाहिय,
स्योराम दास की अरजी है, कुछ हरि भजन होना चाहिय,
सबको पालन हार वही है. करता पूरा [illegible] हे तुम०।

❀ श्री महावीराय नमः ❀

बारह मासा

सम्वाद श्री नेमनाथ जी श्री राजुल जी

लेखक :- वैद्य श्रीलाल जैन ।

❀ सर्वाधिकार सुरक्षित ❀

प्रकाशक :- वैद्य श्रीलाल जैन ।
हिसार (पंजाब)
भूतपूर्व गढ़ी जैनी, तहसील हाथरस,
जिला अलीगढ़, (U. P.)

प्रथम संस्करण १०००] १६५७ [मूल्य विनय पूर्वक पाठ

❀ दो शब्द ❀

इस बारह मासा के अन्दर श्री राजुल जी ने प्रत्येक मास के उपसर्गों के कष्टों का वर्णन करके श्री नेम नाथ जी भगवान को तप संयम से पृथक करने के लिए पूर्ण रूप से भयभीत किया परन्तु श्री नेमनाथ भगवान ने प्रत्येक शब्दों का भली प्रकार खंडन करके आत्म ज्ञान का उपदेश दिया जिस से श्री राजुल जी को वैराग्य प्रगट होगया और उन्होंने दीक्षा ले ली।

इस बारह मासे का जो कोई नित्य प्रति पाठ करेगा वह अवश्य ही मन इच्छा फल को प्राप्ति करेगा।

एक दिन मैंने ब्र० श्री फिरोजीलाल जी को यह बारह मासा सुनाया। उन्होंने इसको सुन कर कहा कि इसको अवश्य छपवाना चाहिये मेरे भी भाव थे परन्तु बिना किसी प्रोत्साहन के ऐसे शुभ कार्य के लिए कटिबद्ध होना कठिन होता है। उस समय श्री जगत सिंह भी बैठे थे उन्होंने भी इसको छपवाने का काफी अनुरोध किया। अतः छपवाना आरम्भ कर दिया।

निवेदक:– वैद्य श्रीलाल जैन, हिसार।

भूतपूर्व गढ़ी जैनी, जिला अलीगढ़!

卐 वीराय नमः 卐

॥ श्री नेम जी के चरणों में ॥

दोहा-प्रथन देव अरिहंत के चरण कमल शिर नाय ।
बारह मासा नेम का लिखूं भाव दरशाय ॥

❀ भजन-मांड ❀

स्वामी जग को समझ असार, जिन दीक्षा धरी ॥टेक
मात पिता दिये त्याग केरे जिनने कीनो प्यार । भ्रात
सहोदर भैन को अरु छोड़ी घर की नार ॥ जिन ॥
भव भव में भटकत फिरेरे पाये रूप अपार । अपनी
अपनी सब कहे कोई न लागो लार ॥ जिन ॥ नाते
वृथा जान केरे त्यागो सब संसार । कर्मन को नाशन
चले सच्चा इनका विचार ॥ जिन ॥ काम क्रोध मद
लोभ से रे इनने ठानी रार । तप के डंडा से इन्हें
मार किया विस्मार ॥जिन॥ जो मुनियों की रीत है रे
सो सब लीनी धार । छयालिस दोष विचार कर पीछे
करत अहार ॥ जिन ॥ गुरु की महिमा क्या कहूँ रे
ये जग तारन हार, श्री महोविया का प्रभु बेड़ा करना
पार ॥ जिन ॥

बारह मासी

श्री नेमी नाथ भगवान की

❀ श्री नेमी नाथ जी श्री राजुल संवाद ❀

॥ बहर बारह मासी ॥

उग्रसैन की कुमरि नेम के चरणों शिर नायो ।
दोऊ कर लीने जोर बचन फिर ऐसे फरमायो ॥
चूक क्या मोपे पड़ी भारी । इकली तजिकर नाथ आप
चल दीने गिरनारी ॥ नाथ मति मुझको कलपाओ ।
द्वादश मास विपन में स्वामी कैसे भुगताओ ॥

सवाल श्री राजुल का

आषाढ़ में तप क्यों नहीं साधो दूल्हा बन आये । कृष्ण
मुरारी सहित श्री बलभद्र जी लाये ॥ विचारो अपने
मन माहीं । छप्पन कोट संगमें यादव सज बरात आई ॥
प्रभू अब मुझको बिसराओ ॥ द्वादश ॥

जवाब श्री नेमनाथ जी का

सुनकर इतने वचन नेम श्री राजुल समझावें मात

पिता सुत दारा कोई काम नहीं आवें ।। जगत में रैन को है सपनो । जैसे जल की बूंद बराबर थिरतन नहीं अपनो ।। वृथा क्यों चित में दुख पाओ ।। द्वादश ।।

सवाल श्री राजुल का

श्रावण में व्रत लीजे नहीं घनघोर घटा आवे । रिम झिम बरसे मेह चमक कर दामिन डर पावे ।। मचामें मोर शोर वन में । कोयल कूह कू करे पपइया बोले बागन में ।। सतावे काम आन तुमको । कैसे उससे जंग करोगे बतलाओ मुझको ।। नाथ तुम याहीं बिरमाओ

।। द्वादश मास ।।

जवाब श्री नेमी नाथ जी का

काल बली परचंड जगत में डर इसको भारी । राजा योगी रंक बचो नहीं इससे तप धारो ।। करे ये काम कहा मेरो । जन्माजन्म भुगत कर देखो राजुल बहु-तेरो ।। नहीं कुछ श्रावण भय कारी । इस चेतन का राखन हारा कोई न बल धारी ।। वृथा क्यों चित्त में दुख पाओ ।। द्वादश मास ।।

सवाल श्री राजुल का

वरषा होय रैन अंधियारी भादों भय कारी। चले पवन झकझोर दुख तन को देगी भारी॥ पिया निश कैसे बिताओगे। पड़े बदन पर बूंद ध्यान अपना विसराओगे॥ नाथ नहीं शिव नारी पाओ॥ द्वादश॥

जवाब श्री नेम जी का

या जग में सुख नेक न राजुल सोच करो मनमें। लख चौरासी योनि भुगत कर पायो ये तन मै॥ फिरौ मैं चारो गति माहीं। रोग शोक अति सह्यो मिटो मेरो जन्म मरन नाहीं॥ कहा बरषा से डर पाओ॥द्वादश॥

सवाल श्री राजुल का

आसोज मास अखीरी वरषा जोर जतावेगी। पड़े जोर की धूप जेठ को मात दिखावेगी॥ पवन भी जोर करै भारी। शरदी गर्मी वरषा एक संग आवे अपुढारी॥ तपस्या कैसे करो बन में। मानो मेरी कहन नाथ तप कीजे महलन में॥ विनय मेरी चित्तमें लाओ॥द्वादश॥

जवाब श्री नेमीनाथ जी का

कैसे चित डिगावेगो मेरो सुनि राजुल नारी। करूं तपस्या घोर बनूंगो मैं मुनि वृत धारी॥ उपसर्ग आवें कितने ही। शान्त भाव कर रहूँ सहूँगा तन पर उतने ही॥ नहीं मैं इनसे डरता हू। तीन लोकके मांहि अकेला जगमें फिरता हूँ॥ धीर क्यों नहीं चित में लाओ॥ द्वादश मास॥

सवाल श्री राजुल का

कार्तिक मास पिया सब कामिन भवन सजावेंगी। रचि पचि चित्र विचित्र लगावे मंगल गावेंगी॥ करें शृङ्गार सभी अपनों। अपने अपने पिय को बुलावें मुझे पड़े झपनों॥ विचारो अपने तुम मनमें। दिवला जोर धरेगी भामिनि तड़पोगे छिन में॥ मती तुम मुझको ठुकराओ॥ द्वादश मास॥

जवाब श्री नेमीनाथ जी का

जियरा तड़पे उनको राजुल तन अपनो जाने।

मुद्गल भिन्न भिन्न ये चेतन सब दुनियां माने । जगत के झूठे सब नाते । भ्रमति फिरे जग में वो चेतन इन को अपनाते । सत्य तुम कहन मेरी मानो । हंस करे पय जल को न्यारो ऐसे पहचानो । ज्ञान कुछ हृदय में लाओ ॥ द्वादश मास ॥

सवाल श्री राजुल का

मंगसिर महीना के लगते ही हिमऋतु आवेगी । शीतल पवन चले चहुँ ओरी तुम्हें सतावेगी ॥ नाथ जब तुम दुख पाओगे । बढ़े क्षुधा का रोग कहां से भोजन खाओगे । विचारो अपने मन माहीं, अंग शिथल हो जाय तपस्या फेर बने नाहीं । वृथा क्यों मन को भटकाओ ॥ द्वादश मास ॥

जवाब श्री नेमनाथ जी का

हाड़ मांस का पिंजरा इसको देह कहे अपनी । मल अरु मूत्र पीव अति यामें भरे पड़े सजनी ॥ भूख भोजन से गई न इसकी । नाशवान् ये अंग करे तारीफ नारि जिसकी ॥ शीत का क्या मुझको डर है । इससे नेह

तजो मुनि राजुल कीटन का घर है ।। मती तुम मुझको बहकाओ ।। द्वादश मास ।।

सवाल श्री राजुल का

शर्दी पड़े पोह के लगते जोर करे भारी । कहां से लाओ सौर औढ़ने पवन चले न्यारी ।। शीत जब तुम्हें सतावेगो । धूनी रमा भगाओ शर्दी पातक लागेगो ।। पिया हट अपनी ठानोंगे । कोमल थारो अंग उपसर्ग लखिकर भागोगे ।। वचन मेरो उर चित लाओ ।। द्वादश मास ।।

जवाब श्री नेमी नाथ जी का

शर्दी लगे मुझे जब राजुल तुम को समझाऊं । राग रोष से नाता जोड़ूं इन्द्रिन अपनाऊं ।। दिशा के वस्तर धारुंगो । तप की अग्नि जलाय मान शर्दीके मारुंगो । विचारो अपने मन माहीं, पवन चले निशवासर मुझे परवाह कछु नाहीं । वृथा क्यों चित में दुख पाओ ।। द्वादश मास ।।

सवाल श्री राजुल का

माघ तुषार पड़े अति भारी सोचो मन पिया। गिर के ऊपर करो तपस्या धड़केगो जिया। काहा बस तन का चलता है। पानी तक जम जाय जिस घड़ी पाला पड़ता हैं। ठिठुर कर जाय पड़ो अवनी, जोग भंग हो जाय किस तरह पाओ शिव वरनी। कहन मति मेरी विसराओ ॥ द्वादश मास ॥

जवाब श्री नेमनाथ जी का

बेशक पड़े तुषार माघ में पवन चले भारी। क्षमा शील की छान छवा कर बैठूंगो नारी॥ तजूं मैं राग द्वेष सारो। पुद्‌गल जीव अलग कर देखो किस को लगे जाड़ो॥ शान्ति हृदय मैं धारूंगो। करूं तपस्या घोर अष्ट कर्मों को जारुंगो॥ ज्ञान कुछ हृदय में लाओ॥ द्वादश मास॥

सवाल श्री राजुल का

लागेगो फागुन मास जवे मिल गावेगी होरी। दे दे

ताल मृदंग बजावे लेकर ढप गोरी ।। लेयकर रंग की पिचकारी । भरो गुलाल सबन की झोरी खेले नर नारी ।। खेलने तुम से आवेंगी । भूल जाउ तुम सब तप करनो होली ठानेगी ।। किस तरह उनको धमकाओ ।। द्वादश मास ।।

जवाब श्री नेमी नाथ जी का

होली खेलूंगो सुनि राजुल तुम को समझाऊं । पांच सखिन के संग रंग अपने में रंगवाऊं ।। अनेकन नाच नचाऊंगो । लेकर उनको संग धूर कर्मन की उड़ाऊंगो ।। जिन्होंने दुख दीने भारी । अपनी राखूं टेक वरूंगो प्यारी शिव नारी ।। जाल क्यों झूठा फैलाओ ।। द्वादश मास ।।

सवाल श्री राजुल का

लागे चैत बसंत पिया सब फूले फुलवारी । नव पल्लव दे विटप लगे शोभा वन की भारी ।। पिया मन सब के हुलसावें । नर नारिन के वृन्द नगर से देखन को आवें ।। कृष्ण जी आवेंगे वन में । बाल गुपाल सहित

सब खेलें खुश होकर मन में ॥ हंसी मति अपनी करवाओ ॥ द्वादश मास ॥

जवाब श्री नेमीनाथ जी का

सोच विचार करो कुछ राजुल मन अपने माहीं। आदि अनादि से बन ये फूले नई वस्तु नाहीं ॥ लगे क्या प्यारी यह नीको। चार दिना के बाद यही बन लागेगो फीको ॥ इसे तुम अच्छा बतलातीं। जरा मूल से जाय देखने फिर क्यों नहीं आतीं ॥ वृथा क्यों मन में ललचाओ ॥ द्वादश मास ॥

सवाल श्री राजुल का

ग्रीष्मता वैशाख मास की कैसे सहो पीया। शीतल जल की प्यास लगेगो तड़पेगो जीया ॥ धूप से देह जले थारी। ऐसे बनें कठोर आपने प्रीत तजी सारी ॥ दया नहीं दिल में लाते हो। दीनादाथ छोड़ दामी को बन को जाते हो ॥ नाथ मति मुझको विसराओ ॥ द्वादश मास ॥

जवाब श्री नेमीनाथ जी का

शांत चित्त हो करूं तपस्या ग्रीष्मता भागे। धर्म के प्याले से, सुनि राजुल प्यास नहीं लागे॥ वचन कैसे मानूं तेरो। भव २ लीनों देख जगत मे कोई नहीं मेरो॥ वृथा क्यों मोह वढ़ाती है। जन्म मरन जाय छूट धर्म क्यों नहीं अपनाती है॥ सहज में मुक्ति को पाओ॥ द्वादश मास॥

सवाल श्री राजुल का.

जेठ में धर्म सधै पिया कैसे सोच करो मन में। लूह चलें विकराल अग्नि जव वाढ़ेगी तन मे॥ ध्यान जब खंडित होवेगो। ऐसा कठिन महा वृत स्वामी कैसे निवहेगो॥ झुकाऊं चरनन में शिर को। अवहु नाथ कछु नाय विगरो लौट चलो घर को॥ पीया क्यों नाहक दुख पाओ॥ द्वादश मास॥

जवाब श्री नेमीनाथ जी का

लूहों का डर मुझे दिखावे सोच नहीं करती। तप

संयम के आगे बतादे किस किस की चलती ॥ जगत की सब झूंठी माया । भव भव में दुख देय आपने जिसको अपनाया ॥ कहन तुम मेरी को मानों । जन्म मरन जाय छूट फेर या जगमें नहीं आनों ॥ मनुष तन मुशकिल से पाओ ॥ द्वादश मास ॥

जवाब कवि का

बारह मास नेम को जाकर राजुल समझाये । अलग अलग महिनों के सुख दुख बहु विध बतलाये ॥ मिटा जब राजुल का भीया । दीक्षा लीनी धार अष्ट कर्मों का नाश कीया ॥ ज्ञान गुरु नमि सागर पायो । श्री-महोबिया जैन ने ये बारह मासा गायो ॥ पढ़े इसको चित दे कोई अष्ट कर्म नश जायं परम पद पावेगा सोही। सर्वजन मिलकर के गाओ ॥ द्वादश मास ॥

❀ शुभ-सूचना ❀

इस पुस्तक को छपवाने में २५) श्री स्वरूपसिंह गुलाबसिंह जैन ने सहयोग दिया।

इस बारह मासा के अतिरिक्त और भी बहुत से छंद, कवित्त, सवैया, भजन, गीत और एक जीवधर चरित्र जो चिरंजीलाल नत्थाराम हाथरस निवासी की तर्ज पर दो भागों में बना रक्खा है। छपने बाकी हैं, यदि पाठकों ने इसे अपनाया तो शीघ्र वह भी छपवाने शुरू कर दिये जावेंगे। यह बारह मासा नित्य पाठ में लाभार्थ सिद्ध हुआ है इस लिए आप लोगों तक पहुँचाया है कि लाभ उठावें।

पता :-

वैद्य श्रीलाल जैन, रामलीला कटला, हिसार (पंजाब)।

अथवा वैद्य श्रीलाल रामस्वरुप जैन,

मु० गढ़ी जैनी डा० हाथरस ज़ि० अलीगढ़ (यू पी)

मुद्रक:- हरीश्चन्द्र "महता" के प्रबन्ध से—

सू र ज प्रिं टिं ग प्रे स,

गली जवाहर लाल, बाजार वकीलान, हिसार में छपा।

भजन संग्रह

सम्पादक—
चक्रेश्वरकुमार जैन मित्तल

श्री दि० जैन वीर पुस्तकालय,
श्री महावीरजी (राजस्थान) मूल्य १)२५

भजन-संग्रह

[अनेक कवियो के चुने हुए अनुपम भजन, आरती, चालीसे, बारहमासे का मन मोहक संग्रह]

सम्पादक—

चक्रेश्वर कुमार जैन 'मित्तल'

प्रकाशक—

श्री दिगम्बर जैन वीर पुस्तकालय,

मङ्गलसैन जैन विशारद,

श्रीमहावीरजी (जयपुर) राजस्थान।

नवीन संस्करण
वीर निर्वाण
सं० २४९१

महावीर जयन्ति
मई १९६५

मूल्य १.२५

मुद्रक—रमनलाल बंसल
पुष्पराज प्रेस, मथुरा।

भूमिका—

श्री चक्रेश्वर कुमार जैन द्वारा सम्पादित 'भजन संग्रह' में आधुनिक शैली के भक्ति-गीतों का संकलन किया गया है। आजकल लोगों की जिह्वा पर चित्र-जगत के गीत मिठाई के स्वाद की तरह लगे हुए हैं। शब्दों से भावस्मरण होकर मन पर कुसंस्कार अथवा सुसंस्कार आरोपित होते है। जब कोई व्यक्ति सिनेमा के किसी श्लील-अश्लील गीत को गाता-गुनगुनाता है, तब वह गीत के दृश्यांकन को अजाने ही अन्तर्मानस-पट पर देखता है और मानसिक अनाचार को अन्तर्मुक्त करता है। वह नतिक पतन को सूचना है। इस प्रकृति को निषेध द्वारा उन्मूलित नहीं किया जा सकता किन्तु उन्हो छन्दों की लय पर शब्द विन्यास बदला जाकर सुरुचि पूर्ण गीत दिये जा सकते हैं। प्रस्तुत संग्रह में यही प्रयत्न किया गया है। जिनकी जिह्वा पर फिल्मी गीतों ने बल पूर्वक स्थान बना रखा है वे उसी धुन में इन भक्ति के गीतों को पढ़ें और अपनी सुरुचि का संवर्धन करें।

महावीर जयन्ति
तारीख १३ अप्रैल '६५

—विद्यानन्द मुनि

समर्पण !

जिनकी भक्ति में वशीभूत होकर तथा जिनकी शुभ कामनाओं
सहित शुभ आशीर्वाद पाकर प्रस्तुत संस्करण को
आधुनिक ढङ्ग का भक्ति-श्रोत बना सका।
उन श्री दि० जैन मुनि श्री १०८ पूज्य विद्यानन्दजी
महाराज के कर-कमलों में सवन्दनीय—

—चक्रेश्वरकुमार जैन 'मित्तल'

❀ विषय सूची ❀

❋ भजन-संग्रह ❋

भजन नं० १ स्तुति चौबीसों भगवान की

आओ दिखाए हम शुभनगरी, भारत देश महान की।
आदिनाथ से वीर प्रभू तक, चौबीसो भगवान की ।।टेक।।
नगर अयोध्या है ये देखो, ऋषभनाथ ने जन्म लिया,
है सम्मेद शिखर ये तीरथ, 'अजितनाथ' निर्वाण हुआ।
पुरी श्रावस्ती नगरी में, सभव ने आके जन्म लिया,
शुक्ला छट वैशाख अयोध्या, श्री अभिनंदन ज्ञान हुआ।
फिर देखो सम्मेद शिखर ये, सुमतिनाथ निर्वाण की ।आदि०
'पदम' पुरी कोशाम्बी मे, कार्तिक तेरस को आये,
वाराणसी मे 'सुपार्श्व' नाथ है, सुप्रतिष्ट के घर आये।
चन्द्रपुरी मे 'चन्द्र' हैं जन्मे, रत्न देवो ने वरषाये,
काकन्दी मे 'पुष्प दन्त' ने जन्म लिया सब हरषाये।।
चैत वदी अष्टम ये मिलता शीतल' जन्म स्थान की। आदि०
यहाँ सुशोभित सिंहपुरी, 'श्रेयांसनाथ' अवतार लिया,
चम्पापुरी मे 'वासुपूज्य' आये तब, मगलाचार हुआ।
'विमलनाथ' को कम्पिला मे, माघ सुदी छट ज्ञान हुआ,
नगर अयोध्या को फिर देखो. 'अनंतनाथ का जन्म हुआ।।
रतनपुरी है सुन्दर नगरी धरम' के तप कल्याण की।आदि०
हस्तिनापुर है जग मे नामी, 'शान्तिनाथ' अवतार लिया,

'कुन्थनाथ' को मगसिर शुभ,दशमी को केवल ज्ञान हुआ ।
देखो तीजी बार शिखर जी 'अरहनाथ' निर्वाण हुआ,
'मल्लिनाथ' की जनकपुरी है, जन्म सु तप और ज्ञान हुआ ।।
जन्मे भूमि कुशाग्र सु नगरी, 'मुनिसुब्रत' भगवान की । आदि०
जनकपुरी ही मे भगवन, 'नमिनाथ' का जन्म हुआ,
चढ़ गिरनार तपस्या कीनी, 'नेमनाथ' को ज्ञान हुआ ।
बाराणसी या काशी जी में जन्म जी 'पारसनाथ हुआ,
'सन्मति' कुन्डल पुर में जन्मे, पावापुर निर्वाण हुआ ।।
जीवन सफल 'कैलाश' हो तेरा, भजमाला इस नाम की ।आदि०

भजन नं० २ सुख और दुख

दुख भी मानव की सम्पति है, तू क्यो दुख से घबराता है ।
दुख आया है तो जाएगा
सुख आया है तो जाएगा
दुख जाएगा तो सुख देकर
सुख जाएगा तो दुख देकर
सुख देकर जाने वाले से रे मानव, क्यो भय खाता है ।
सुखमें है व्यसन–प्रमाद भरे
दुखमे पुरुषार्थ चमकता है
दुखको ज्वाला मे पडकर ही
कुन्दन - सा तेज दमकता है
सुख मे सब भूलें रहते है, दुख सब की याद दिलाता है ।
सुख संध्या का वह लाल क्षितिज
जिस के पश्चात् अन्धेरा है

दुख प्रातः का झुटपुटा समय
जिसके पश्चात् सवेरा है
दुख का अभ्यासी मानव ही सुख पर अधिकार जमाता है।
दुख के सम्मुख जो सिहर उठे
उनको इतिहास न जान सका।
जो दुख मे कर्मठ, धीर रहे
उनको ही जग पहचान सका।
दुख एक कसौटी है, जिस पर मानव परखा जाता है।
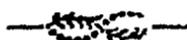
भजन नं० ३

चाल—चाहूँगा मै तुझे शाम सवेरे (फिल्म-दोस्ती)

ध्याऊँगा मै तुम्हे शाम सवेरे, जपूँगा हरदम नाम को तेरे।
तेरी शरण रहूँगा ॥टेर॥
रागी न तू, द्वेषी न तू, सच्चा हितु एक है तू।
तार तार मुझ तार भव पार तार ॥१॥ तेरी शरण ·
सुख है अनन्ता, बल है अनन्ता, ज्ञान अनन्ता, दर्श अनन्ता।
तार तार मुझे तार, भव पार तार ॥२॥ तेरी शरण
किए निरजन, तुमने है अन्जन, पार किये है दुष्ट अधम जन।
तार तार मुझे तार, भव पार तार ॥३॥ तेरी शरण ··
शरण है 'शिव' राम तेरी, नाथ हरो विपद् मेरी,
तार तार मुझे तार, भव पार तार ॥४॥ तेरी शरण

भजन नं० ४

चाल—मेरे महबूब तुझे (फिल्म-मेरे महबूब)

मेरे भगवान मुझे आज है तेरी ही शरण

पड़ा मझधार हूँ मैं-सागर का किनारा दे दे
अपने हाथों का मुझे हे नाथ सहारा दे दे ।।टेक।।
मोह मिथ्यात की घनघोर घटा है छाई,
और अज्ञान का तूफान उठा है भारी।
हाय मैं डूब चला कसी मुसीबत आई,
अब हे नाथ करो रक्षा कृपा के धारी।
कृपा अपनी का मुझे एक इशारा दे दे।। १
कौन है तेरे सिवा जिसकी शरण में जाऊँ,
गति चार और चौरासी में हूं भटका स्वामी।
ऐसा कोई न मिला जिसको विपत्ति सुनाऊं,
बीतरागी है तू ही और दया निधि नामी।
हे नाथ मुझे ये भव का किनारा दे दे।। २
तुमने अंजन को किया है हे नाथ निरजन,
और भवपार किये है लाखों ही अधर्मी।
महिमा तेरी ये सुनी है सकट मोचन
चरणों मे आन पड़ा दास तेरा दुष्कर्मी।
दया दृष्टि का शिवनाथ नजारा दे दे ।। ३

भजन नं० ५

चाल—ये चाँद सा रौशन चेहरा (फिल्म-काश्मीर की कली)
सिद्धार्थ का राज दुलारा, त्रिशूल की आंख का तारा।
कुंडल पुर की शोभा, महावीर नाम है प्यारा।
ऐहसान बड़ा है तेरा, आदर्श हमें है दिखाया ।।टेक।।
भर योवन दीक्षा धारी, है राज को ठोकर मारी।
छोड़ करके कठिन तपस्या है तन की ममता टारी।

अहसान बड़ा है तेरा, तूने सोता विश्व जगाया ॥१॥
यज्ञों मे हिंसा भारी करते थे पापा चारी।
हिंसा है दूर हटाई, तू वीर बडा उपकारी।
अहसान बडा है तेरा, तूने धर्म दया बतलाया ॥२॥
तू वीतराग हितकारी, है लोका लोक निहारी।
तेरी स्याद्वाद है वाणी, सब झगड़ा मिटाने वाली।
अहसान बड़ा तेरा, है समता पाठ पढाया ॥३॥
प्रभु वीर अगर न आते, सिद्धात कर्म न बताते।
पाखंडो मे फस करके, सब जीव महा दुःख पाते।
अहसान बड़ा है तेरा, शिव राह हमें दिखलाया ॥४॥

भजन नं० ६

चाल-मैं इक नन्हों सा (फिल्म-हरिश्चन्द तारामती)

मैं इक अदना सा, मैं इक छोटा सा चाकर हूँ।
तुम हो दया के निधान, प्रभु जी मेरी अरज सुनो ॥टेक॥
जो अपराध किये है मैंने, जाये न सो उच्चारे।
वो तो स्वामी ज्ञानमें तेरे, झलक रहे है सारे।
मैं इक अदना सा, मै इक छोटा सा चाकर हूँ।
क्षमा करो जी भगवान, प्रभु जी मेरी अर्ज सुनो ॥१॥
मैंने सुना है तुमने है तारे, अजन पापी चोर।
पशु और पक्षी भी है उभारे. लखो जी मेरी ओर।
मै इक अदना सा, मे इक छोटा सा चाकर हू।
रक्खो जी मेरा ध्यान, प्रभु जी मेरी अर्ज सुनो ॥२॥
वीतराग है नाम तिहारा, नही है राग और द्वेष।

धर्मी तारे तारे अधर्मी, काटे है सबके क्लेश।
मैं इक अदना सा, मै इक छोटा सा चाकर हूँ।
मेरा भी करो कल्याण, प्रभु जी मेरी अरज सुनो ॥३॥

❀—०—❀

भजन नं० ७

चाल-आज कल में ढल गया (फिल्म-बेटी बेटा)

हम शरण में आगए वीर वर्द्धमान।
कीजे रक्षा नाथ जी, भक्त अपना जान ॥टेक॥
कर रहे जन्म मरण, दुख भरें चतु गती।
दुष्ट कर्म ने प्रभो, हाय रे मति हती।
कर्म फंदे से छुड़ा, हे दया निधान ॥१॥ कीजे रक्षा
वीत राग हो प्रभु, फिर भी तो दयाल हो।
विश्व ज्ञाता हो हितु, तुम तो बे मिसाल हो।
गुण अनन्त का तेरे, क्या करें बयान ॥२॥ कीजे रक्षा
भक्ति भाव से तेरी, नीच नर भी तर गए।
मनुष्य की तो बात क्या, है पशु उभर गए।
हैं भरे उदाहरण, देख लो पुराण ॥३॥ कीजे रक्षा
इसीलिए तो आज हम, कर रहे उपासना।
स्वीकार हो शिवराम अब, ये हमारी प्रार्थना।
प्राप्त शीघ्र हो हमें, आत्मा का ज्ञान ॥४॥ कीजे रक्षा

भजन नं० ८

चाल—तेरे मन की गंगा (फिल्म संगम)

दीनों का सहारा, महावीर नाम प्यारा, तू बोल मुख से बोल,

आयु जाय रे चली, चली, चली ॥ टेक
बचपन खोया खेल कूद मे, बीते दिन नादानी में।
विषय भोग मे लीन रहा तू, हाये मस्त जवानी मे ॥
खोऐ रत्न अमोल, आयु जाय रे चली १
पर निन्दा बकवाद वृथा में नाहक समय गवावे तू।
एक घडी भगवान भजे नही, धन को व्यर्थ लुटावे तू।
काहे मचावे रोल, आयु जाय रे चली ॥२
सत्य अहिंसा का कर पालन, तज मिथ्यात अन्याय तू।
पर-धन पर-वनिता पर अपना, मतना चित्त चलावे तू ॥
लोभ कीच न घोल, आयु जाय रे चली ॥३
जाना है परलोक तुझे अब, कुछ तो धर्म कमाले तू।
काल खड़ा शिवराम है सर पर, क्यो ना होश सम्भाल तू ॥
अब तो अखियाँ खोल आयु जाय रे चली ॥४

—:—

भजन नं० ६

चाल- वो दिन कहां से लाऊँ (फिल्म-भरोसा)
जिनराज आज तेरे चरणो मे हम है आये।
कोई हितू न पाया, हे नाथ तुम सिवाये ॥ टेक
कर्मो ने नाथ हमको, गति चार मे रुलाया।
कैसे करे बयाँ हम, जो कष्ट हैं दिखाये ॥ १
कोई जगह न ऐसी, बाकी रही है स्वामी।
जिस ठौर न मरे हों, जिस ठौर हम न जाये ॥ २
आवागमन के चक्कर, से हो गये है हैरां।
शक्ति मिले हमे वो, जो कर्म से छुडाये ॥ ३
तुमने कर्म निवारे, परमातम पद है पाया।

भूले हुए थे प्राणी, शिव पंथ पे लगाये ॥४
हमने सुना है तुमने, लाखो हैं तारे पापी।
हमको भी तार दीजे, शिवराम सिर नवाये ॥५

भजन नं० १०

चाल–जो वायदा किया (फिल्म-ताज महल)

तुम्हें कष्ट मेरा मिटाना पड़ेगा। कष्ट मिटाये सबके, मेरा तो भी दुख ये मिटाना पडेगा ॥ टेक
कर्म दुष्ट बैरी है मुझको सताते। चौरासी के अन्दर है नाच नचाते
नाथ जरा करके दया, कर्म हटाना, दुख ये मिटाना पडेगा ॥१
कभी नरक का है, नारकी बताते, पशु पर्याय के हैं, कष्ट दिखाते
सुर-नर हुआ-सुख न मिला-हुआ कष्ट पाना दुख ये मिटाना पडेगा२
दुष्ट भील तस्कर है पार उतारे, पशु और पक्षी है तुमने उभारे
बार मेरी ढील करी,क्यों जो नाथ बताना, दुख ये मिटाना पड़ेगा३
हे 'शिवनाथ' कृपा अब कीजे, मेरी भी तो टुक सुध लीजे।
दास तेरा अरज करे संकट हटाना, दुख ये मिटाना पड़ेगा ॥५

भजन नं० ११

(चाल–एक घर बसाऊँगा तेरे घर के सामने)

आसन जमाऊँगा तेरे दर के सामने।
धूनी रमाऊँगा तेरे दर के सामने ॥ टेक
तेरे दर्शन के बिना, मुझको तो आराम नहीं।
तेरी भक्ति के सिवा, मुझको कोई काम नही।
तेरे पूजन के लिए मुझ पै तो सामान नहीं।

और पूजन की विधि का भी तो मुझे ज्ञान नहीं।
हृदय दिखाऊँगा तेरे, दर के सामने ॥ १
तेरे दर्शन जो मिले धन्य ये मेरे भाग है।
कैसे रिझाऊँ तुम्हे, आप वीतराग है।
धन सम्पदा मांगू नहीं, यह तो मिट्टी धूल है।
सुख अगर दुनिया का चाहूँ, ये तो मेरी भूल है।
आशा मिटाऊँगा तेरे दर के सामने ॥ २
स्वर्ग के भोगो की भी मुझे नही है चाहना,
तेरे जैसा मैं बनूँ, बस यही है कामना।
नाथ 'शिव' स्वरूप का, पूरण विकाश हो,
जन्म मरन मे छूटूँ, शिवपुर का वास हो।
फिर जग मे न आऊँगा तेरे दर के सामने ॥ ३

भजन नं० १२

चाल-तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो (फिल्म-मै चुप रहूँगी)
तुम्ही हो स्वामी हितू हमारे।
हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥टेक॥
नही हो रागी नही हो द्वेषी, हो विश्व ज्ञाता परम हितैषी।
हो दीन जन के तुम्ही सहारे हितू न कोई सिवा तुम्हारे ॥१॥
हो वीतरागी फिर भी दया कर, तुमने उभारे है भील तस्कर।
पशु और पक्षी है तुमने तारे, हितू न कोई ॥ २ ॥
शरण तुम्हारी जो कोई आये, है कष्ट उसके तुमने मिटाये।
तुम्हीने सबके कारज सवारे, हितू न कोई ॥ ३ ॥
है तुमने तारे हजारो धर्मी, हाँ पार करदो ये इक अधर्मी।
शिवराम इतनी अरज गुजारे, हितू न कोई ॥४॥

भजन नं० १३

श्री भगवान् पार्श्वनाथ जी की स्तुति

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण।
पारस प्यारा, मेटो मेटो जी, संकट हमारा ॥टेक॥
निशदिन तुझको जपूँ, पर से नेहा तजूँ।
जीवन सारा, तेरे चरणों मे बोते हमारा ॥टेक॥
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे।
सबसे नेहा तोडा, जग से मुँह को मोड़ा, संयम धारा ॥१॥
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरी सदा, दुःख नही पावे कदा, सेवक थारा ॥२॥
जगके दुखकी तो परवाह नही है, स्वर्ग-सुखकी भी चाह नही है।
मेटो जामन-मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा ॥३॥
लाखो वार तुम्हे शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
'पंकज' व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया लागे खारा ॥४॥

—०*०—

भजन नं० १४

चाल- बने तो बन जाये जमाना दुश्मन (फिल्म-दूल्हा दुल्हिन)

है भाग्य उदय पाये, प्रभु के दर्शन,
है तन मन ये सारा मेरा ये अर्पण ॥टेक

धन्य है पांव मेरे दरवार तेरे आये,
सफल हैं नेन मेरे दीदार तेरे पाये।
है हाथ भी सफल ये करेगे जिन अर्चन ॥१

है धन्य शीश मेरा चरणो मे झुका ये।
रसना सफल भई है जिन गुण सु गा के ॥
ये शान्त मुद्रा लख कर है शान्त मेरा मन ॥२

अष्ट द्रव्य लेकर चरणो मे चढाऊँ।
शुभ भावनाएँ भाके शिवानन्द पाऊँ।
मैं लोकालोक देखूं लहूँ ज्ञान दर्पण ॥ १

भजन नं० १५ वीर जयन्ति

चाल-हमने जफा न सीखी (फिल्म-जिन्दगी)
प्रभु वीर की जयन्ति आओ मनाये भाई।
तिथि चैत की सुतेरस मंगल घड़ी है आई ॥टेक
कुंडलपुरी के राजा, राय सिद्धार्थ के घर।
त्रिशला के कूंख से थी, जिसने झलक दिखाई ॥ १
जब धर्म नाम पे थी, बहती लहू की नदियां।
महावीर ने तब आकर, करी जुल्म की सफाई ॥ २
सद्धर्म है अहिंसा, प्रभु वीर ने बताया।
औ फिलासफी कर्म की, अद्भुत् हमे दिखाई ॥ ३
कान्तवाद से ही, होता विरोध जग मे।
झगड़ा मिटाने वाली, बानी हमे सुनाई ॥ ४
समता का पाठ जिसने, संसार को पढाया।
परमात्म पद के पाने, की युक्ति थी सुझाई ॥ ५
उपकार जो किये है, कैसे उन्हे सुनाये।
शिवराम वीर महिमा, जाये न हमसे गाई ॥ ६

भजन नं० १६

चाल-मोरी छम छम बाजे पायलिया (फिल्म-घूँघट)
मोरी पार लगादो नावरिया, तोरी शरण है सावरिया ॥टेक

अष्ट कर्मो ने हाय सताया मुझे,
गति चार चौरासी रुलाया मुझे।
भू जल अग्नि हुआ, वायु वनस्पति हा,
धारी इक इन्द्रिया काया स्थावरिया ।।१
जैसे मुश्किल से मिलता है चिन्तामणि,
जैसे पर्याय पाई कभी त्रस तनी।
हाँ दो इन्द्री भया, ते चौइन्द्री थया,
भया लट और कीड़ा मे भावरिया ।।२
कभी पचइन्द्रिय होकर पशु जो हुआ,
छेदन भेदन व बंधन का है दुख सहा।
खाई नरको की मार, जहां कष्ट अपार,
मोरी पापों की डूबी जी गागरिया।
कभी स्वर्ग मिला तो भी न पाया चन,
हा मनुष्य गति है प्रकट दुःख दैन।
ऐसे भ्रमता फिरा, कही सुख न मिला,
मैंने शिवपुर की पाई न डगरिया। ४

भजन नं० १७

चाल-अहसान तेरा होगा मुझ पर (फिल्म-जगली)

अहसान तेरा महावीर प्रभु, हम कैसे बताये जमाने को।
उपकार किये है जो तुमने, वे कैसे सुनायें जमाने को ।।टेक
धर्म कर्म था नष्ट हुआ जब, आचार जगत का बिगड़ चला।
तब आपका था शुभ जन्म हुआ, उद्धार जगत कर जाने को ।।१
यज्ञ में लाखो पशुओं का, बलिदान यहाँ जब होता था।
तब आपने सद् उपयोग दिया, उस जुल्म सितमके मिटाने को ।। २

थी द्वेष की अग्नि भड़क रही, जब धर्म के नाम पे लडते थे।
तब स्याद्वाद परचार किया, मत भेद जगत का मिटाने को ॥३
भटक रहे थे जब भव वन मे, अज्ञान अंधेरा छाया था।
तब ज्ञान का था प्रकाश किया, 'शिव' राह हमे दिखलाने को ॥४

भजन नं० १८

चाल–चाहे कोई मुझे जंगली कहे (फिल्म-जंगली)

चाहे कोई हमे दीवाना कहे, कहने दो जो कहते रहे।
हम वीर के मतवाले है अरे, माना करो ॥ टेक
वीर स्वामी, की ही भक्ति, मन अपने बसी दिन रैन।
प्रभु दर्शन, के बिना तो, नही हमको पडे टुक चैन।
जय वीर' यही, ध्वनि गूंज रही ॥ १
प्रभु पूरे है हमारे, आज सभी अरमान।
नाचे क्यो न, माचे क्यो न हमे मिले है भगवान।
धन्य - धन्य प्रभु, तिहुँ लोक विभु ॥ २
आज आँखों में समाया, रूप प्यारा ये अभिराम।
झुक-झुक के रुक-रुक के, 'शिवराम' करो प्रणाम।
वीर भक्ति करें, भव सिन्धु तरे ॥ ३

भजन नं० १६

चाल-बन्दा परवर थाम लो जिगर (फिल्म-फिर वही दिल लाया हूँ)

कीजिए इधर, मेहर की नजर, बन के दास मै आया हूँ।
चरणो मे, आपके प्रभो, अर्ज यही इक लाया हूँ ॥टेक
कर्मों ने हाँ, दुःख जो दिया, पार नही है उसका।

लख चौरासी योनि के अन्दर, बार अनन्ता ही भटका ।
अब तो तेरी शरण गही, कष्ट हरण इक नाथ तू ही ।
भिखारी तेरे द्वार का, प्यासा हूँ दीदार का ॥१ अर्ज यही···
तुमने अञ्जन किये निरञ्जन, दुष्ट अधम है तार दिये ।
सिंह और शूकर, गज और कूकर, भव से है पार किये ।
मेरी बिरिया ढील है क्यों, यह जरा 'शिव' नाथ बतादो ।
आसरा दरबार का, तेरी ही सरकार का ॥१ अर्ज यही···

भजन नं० १०

त्रिशला अवतारी रे ।
चाँदनपुर में प्रगट भये प्रभु सङ्कट हारी रे ॥ टेक ॥
हे ! सिद्धार्थ घर जन्म लियो प्रभु, वर्द्धमान महावीर ।
बाल्यकाल मे करी तपस्या, बन गये सन्मति वीर ॥
दुनिया तब से तेरी पुजारी रे । चाँदनपुर० ।
हे ! चाँदनपुर में गाय ग्वाल की, नित चरने को जावे ।
देव-कृपा से दूध गाय का, टोले पर झर जावे ॥
ग्वाला है अचरज मय भारी रे । चाँदन० ।
हे ! देश २ के यात्री आवे, मन में लेकर भक्ति ।
मन - चाहे कारज हों पूरे, प्रभू आपकी शक्ति ॥
लीला सब देवन से न्यारी रे । चाँदन० ।
हे ! सेवक प्रभू द्वारे पर आया, मन में आशा भारी ।
अपना सम प्रभु मोहे बनालो, मेटो दुविधा सारी ॥
हम सब शरण तिहारी रे । चाँदन० ।

भजन नं. ७१

चाल—वीन न वजाना (फिल्म सुनहरी नागिन)

आना नेमि आना वापिस मत जाना, कि हँसेगा जमाना।
मुझे है इन्तजारी, वड़ी है वेकरारी, कि दर्श दिखाना ।। टेक
गोरीपुर से व्याहन आये, छप्पन कोड जुडे यादव राय।
सङ्ग है मुरारी बारात लाये भारी, न जिसका ठिकाना ।।१
तोरण से रथ को है फेरा, नाथ वताओ दोष क्या मेरा ?
मैं नव भव की तिहारी, हूँ नारी मैं तो प्यारी।
न मुझे विसराना कि हँसे जमाना ।।२।।
पशु वँधे जो नाथ निहारे, मोड तोड गिरनार सिधारे।
मुझ पे दया कीजे, नाथ सुध लीजे, न मुझे ठुकराना ।।३।।
सुनो सखी री माता वहना, तारो सभी ये मेरा गहना।
मै भी दीक्षा धारूँ, कर्म निवारूँ, है सयम कमाना ।।४।।
शिवराम राजुल गई गिरनारी, करी तपस्या अगत सुधारी।
धन्य सतवन्ती, परम शीलवन्ती, है तेरा यश गाना ।।५।।

भजन नं. ७२

चाल—ऐ मेरे वतन के लोगो (राष्ट्र-गीत)

ऐ देश के वीर जवानो, जरा होश मे आवो प्यारे।
क्यो नही करवट वदलते, हम तुम्हे जगा कर हारे ।। टेक
मुश्किल से मिली है हमको सदियो के वाद आजादी।
अव चीन व पाकिस्तानी है करने लगे वर्वादी।
समझा था दोस्त जिन्हे वो दुश्मन वने हमारे ।। १
अव देश पडा सङ्कट मे, हर तरफ से आफत आई।
है फैल रही वेकारी, और भारी है महँगाई।

तुम भ्रष्टाचार मिटा दो—सब जनता यही पुकारे ।। २
कोई आज बने अधिकारी, वो भरते है घर अपना ।
जब बाड़ खेत को खाये, फिर कैसे होय पनपना ।
हा स्वार्थ के वश होकर, नही अपना फर्ज विचारे ।। ३
अब छोड़ के फिरकेदारी, मत अपना एक बनाओ ।
कोई हमपे करे गर हमला, तो सन्मुख तुम डट जाओ ।
'शिवराम' जगत में चमको, बन करके हिन्द सितारे ।। ४

भजन नं. २३

चाल—वतन की आवरू खतरे में है (राष्ट्र-गीत)

अहिंसा धर्म की रक्षा को तुम तैयार हो जाओ ।
पाप हिंसा मिटाने को धर्म तलवार हो जाओ ।। टेक
कही पे मांस की खातिर कत्ल है वेजवानों का ।
कत्ल चमड़े की खातिर है मशीनों पे हैवानों का ।
कही अण्डे मछलियाँ है हा भोजन नौ जवानों का ।
मांस - त्यागी मेरे हिन्दु, मेरे सरदार हो जाओ ।। १
कोई कहते अहिंसा ने, गिराया देश है भारत ।
यह बिल्कुल झूठ है साहिब, किया है फूट ने गारत ।
अहिसा के जमाने में, फला - फूला था ये भारत ।
जरा इतिहास को पढ करके, तुम होशियार हो जाओ ।।२
वो चन्द्रगुप्त सरनामी, अहिंसा के पुजारी थे ।
जो थे सम्राट भारत के, वो पक्के जैनाचारी थे ।
अमन था राज्य में उनके, ना कोई अत्याचारी थे ।
अशोक के राज्य जैसी, मेरी सरकार हो जाओ ।। ३

अहिंसा से तो गाधी ने, हमें दिलवाई आजादी।
करो तुम काम अब ऐसे, न होने पाये बर्बादी।
जीओ और जीने दो सबको, इसीसे होय दिलशादी।
नहीं 'शिवराम' सोने का समय बेदार हो जाओ ॥ ४

भजन नं. २४

चाल—अहसान तेरा होगा मुझ पे (फिल्म जङ्गली)

भगवान दया कर तू मुझ पे, मुझे शरण मे अपनी रहने दे।
मैं भटक रहा हूँ दुनियाँ मे, मेरी व्यथा तो मुझको कहने दे ॥ टेक
कर्मो ने है कलकान किया, परेशान किया मुझको भारी।
मैने कष्ट अपार है नाथ सहे, अब और तो कष्ट न सहने दे ॥१
कभी नरक गया था पशु बना मैं, तहाँ चैन न पाया एक घड़ी।
शिवानन्द का स्रोत हृदय मेरे, हे नाथ ! जरा तो बहने दे ॥२
मैं आतम-बल को था भूल रहा, है कर्म विचारे कौन अरे !
अब आतम-ध्यान की अग्नि मे, 'शिवराम' इन्हे तो दहने दे ॥३

भजन नं. २५

❀ रसिया ❀

महावीरा झूले पलना, नेक होले झोटा दीजो। महा० १
कोन के घर तेरो जन्म भयो है, कोन ने जाये ललना। नेक० १
काहे को तेरो बना रे पालना, काहे के लागे फुंदना। नेक० १
अगर चंदन को बना रे पालना, रेशम लागे फुंदना। नेंक० १
पैर मे घुंघरू, हाथ में झुंझना, आँगन में चाले चलना। नेंक० १
अन्दर से बाहर ले आवे, बाहर से अन्दर ले जावे।
नजर न लग जाये ललना। नेंक० १

भजन नं. २६

चाल—मुझे दुनिया वालो (फिल्म लीडर)

मुझे दुनिया वालो दीवाना न समझो,
मै पागल नहीं धुन समाई हुई है।
मै अपने प्रभु की हूँ सूरत पै शैदा,
छवि उनकी मन में तो छाई हुई है ॥ टेक
परम शान्त मुद्रा लगे मुझको प्यारी,
छवि वीतरागी जगत से है न्यारी।
तसवीर इनकी तो देखी है जब से,
तभी से तो मन मेरे भाई हुई है ॥ १
धरे हाथ पै हाथ बैठे है ऐसे,
कि कुछ करना इनको रहा है न जैसे।
कैसा ये देखो धरा पदम आसन,
कि नाशा पै दृष्टि लगाई हुई है ॥ २
ये तसवीर अपने मन मे बसा लूँ,
यही एक नकशा मै दिल में जमा लूँ।
ये है ध्यान आतम की शुद्धि का कारण,
कर्मो की इससे सफाई हुई है ॥ ३
मैं ध्याऊं इन्ही को इन्ही सा हो जाऊँ,
शिवपुर मे जाकर शिवानन्द पाऊँ।
कभी न कभी तो वो शिवपद मिलेगा,
यह परतीत मन मेरे आई हुई है ॥ ४

भजन नं. २७

तर्ज—बार-बार तोहे क्या समझाएँ पायल की झङ्कार (आरती)

वीरनाथ भगवान् हमारी, सुन लेना जी पुकार,
तेरे बिन स्वामी मेरा कौन करे उद्धार।
भटक चुका हूँ लख चौरासी आया तेरे द्वार,
तुम जग नामी, सङ्कट मोचन हार ॥ टेक
दुष्ट कर्म ये पापी, आये सँभल - सँभल,
कष्ट ये मुझको दे रहे, हाय! मचल - मचल।
लूट लिया है सारा मेरा ज्ञान दर्श भण्डार ॥ १
तेरे दर को छोड़ में, अब जाऊँ कहाँ,
तुझसा दयालु और मै, अब पाऊँ कहाँ।
वीतराग सर्वज्ञ तुम्ही हो, तीन लोक हितकार ॥२
चोर अञ्जन से, है पापी अधम तरे,
तेरी भक्ति से है सबके कर्म टरे।
अब 'शिवराम' शरण मे आया करदो बेड़ा पार ॥३

भजन नं. २८ (राजुल रुदन)

चाल—दो हसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे (फिल्म गंगा जमुना)
नौ जन्मों का जोड़ा बिछुड़ गयो री,
गजब भयो सजनी जुलम भयो री ॥ टेक
दुष्ट कर्मो ने सखी, भरतार मोरा छीन लिया।
छीन सुख चैन लिया, आधार मोरा छीन लिया ॥
पिया बिन तड़फे जिया, दिन रैन बिताऊँ कैसे।
नेमि हाय रूठ चले, उनको मनाऊँ कैसे ॥
आ करके वो तोरण से मुड़ गयो री ॥ १

शोर बरात का सुन वन्द पशु चिल्लाये।
उनको देखा जो दु:खी, भाव दया चित लाये ॥
मोड़ सिर से पटक, हाथ का कङ्गन तोडा।
जाय गिरनार चढ़े, मुझको बिलखती छोडा ॥
मोरी शादी का ठाठ बिगड़ गयो री ॥ २
प्रीति नव भव की मोरी, एक छिन मे तोरी।
नही बतलाया मुझे, भूल हुई क्या मोरी ॥
सौतन मुक्ति ने सखी, कन्थ हमारा मोहा।
जन्म दसवें में अरी, उनमे हुआ है बिछोहा ॥
मेरी आशा का गुलशन उजड़ गयो री ॥ ३
तारो गहना मेरा, मै भी धरूँगी दीक्षा।
भोग विषयों की नही, मुझको रही है इच्छा ॥
लाओ मेरे लिये, पीछी कमण्डल साडी।
चढ गिरनार करूँ, मै भी तपस्या भारी ॥
'शिवराम' जनम यह सुधर गयो री ॥ ४

भजन नं. २६ (पूजन रहस्य)

चाल—वो दिल कहाँ से लाऊँ (फिल्म भरोसा)

कैसे तुम्हें रिझाऊँ, हे नाथ! यह बतादो।
बस्तु क्या भेट लाऊँ, यह तो जरा जिता दो ॥ टेक
यह जानता हूँ तुमको, कुछ भी नही है इच्छा।
भावो की होवे शुद्धि, वह मार्ग तो सुझा दो ॥ १
नही चाहते हो तुम तो, नैवेद्य या मिठाई।
चरु ले चरण चढाऊँ, मेरी क्षुधा मिटादो ॥ २
दरकार है न तुमको, दीपक की रोशनी यह।
किया मोह नाश तुमने, मेरा मोह-तम भगादो ॥३

है काम वासना के, कारण यह फूल सारे।
किया नष्ट काम तुमने, मेरे काम को नशादो ॥ ४
चरणों में धूप खेके, करूँ प्रार्थना मैं इतनी।
जलाये हैं कर्म तुमने, मेरे कर्म जलादो ॥ ५
अक्षत उदक सु चन्दन, फल की न तुमको इच्छा।
पूजन का फल यह पाऊँ, 'शिव' फल मुझे दिलादो॥ ६

भजन नं० ३० (राजुल पुकार)

(प्रिय छात्र निर्मलकुमार जैन खातेगाँव द्वारा रचित)
चाल—लागी छूटे ना (फिल्म काली टोपी लाल रुमाल)

नैमि जाओ न देकर के गम लौट आओ पिया, तुम्हें मेरी कसम—टेक
ओ तुमको पुकारूं, वनके दीवानी मानो जी पिया।
नव भव की मेरी प्रीत न तुम ठुकराना रसिया।
नाम तेरा हा नाम तेरा रटूँ हरदम ॥ १
ओ तुम तो वसो गिरनार शिखर किया ढूँढूजी कहाँ।
राजुल रुदन करत है, 'निर्मल' आओ जी यहाँ।
शरण रखो मोहे शरण रखो, मेरा सुधरे जनम ॥ २

भजन नं० ३१ (लकड़ी का)

जनमें लकड़ी मरते लकड़ी अजब तमाशा लकड़ी का।
दुनियाँ वालो तुम्हें बताये जग है बासा लकड़ी का ॥
जिस दिन जनम हुआ था तेरा पलँग विछा था लकड़ी का।
तुझे झूलने को मंगवाया एक पालना लकड़ी का ॥
खेल खिलौने लकड़ी के हाथी घोड़ा लकड़ी का।
पकड़ २ कर खड़ा हुआ जब वो था रहलुवालकड़ी का॥

खेल खेलने एक दिन चाला गिल्ली डंडा लकड़ी का ।
पढन चला लकडी की पट्टी और कलम था लकड़ी का।।
तुझे पढ़ाने शिक्षक ने डर दिखलाया लकड़ी का।
पढ लिखकर जब ब्याहन चाला रेल का डिब्बा लकड़ी का ।।
हाथ में कंगन लकड़ी का और था श्रीफल लकड़ी का ।
सासूजी के द्वारे पर बंधनवार था लकड़ी का ।।
तोरन जिस पर मारा था वो बिछा पाटला लकड़ी का ।
भाँवर तेरी पड़ी माँहीं जब खंभ खड़ा था लकड़ी का ।।
ब्याह करके जब घर को लौटा दाव भूल गया लकड़ी का ।
तीन चीज का फिकर हुआ जब नोन तेल और लकड़ी का।।
बृद्ध भया तब चालन लागा पकड़ सहारा लकड़ी का ।
खत्म हुई दुनियाँ की झंझट टूटा जाला मकड़ी का ।।
चारों मिलकर कांधा लाया वह भी डोला लकड़ी का ।
धूँ धूँ का जल उठी चिता वह बना चबूतरा लकड़ी का।।
जनमें लकड़ी ।।

—:※:—

भजन नं० ३२

※ वीर स्वामी का विवाह ※

करके मर्दन मान का उबटन लगा कर चल दिये ।
पाँचों महा व्रतों का तन जामा सजा कर चल दिये ।।
धर्म दश लक्षण का सर सेहरा सजा कर चल दिये ।
कर में रत्नत्रय का वो कंगना बँधा कर चल दिये।।
शिव नार ब्याहन वीर बन दुल्हा दिलावर चल दिये ।।१।।
सम्वर के पहरेदार थे अम्बर के थे तम्बू तने ।

भावना बाहर के बिसमे बाहर दरवाजे बने।
सोलह कारण थे बराती अपने आसन पर तने।
बीच मे सरकार बैठे दिगम्बर बन्ना बने।
करके अगवानी को सुरपति सर झुका कर चल दिये ॥२॥

दुल्हा की जीवन बार की तैयारियाँ होने लगी।
कर्म के ईंधन मे अग्नि ध्यान से जलने लगी।
शील के चूल्हे पे अनुभव की कढ़ाई चढ गई।
मुक्तियाँ निज गुण की घृत आराधना मे तल रही।
चासनी सोहम में समता जल मिला कर चल दिये ॥३॥

पाँच सुमती तीन गुप्ती गोलियां गाने लगी।
भ्रम क्रोध मोह प्रमाद को वह सीग दिखलाने लगी।
लख निज कुटुम की हार कुमती नार खिसयाने लगी।
सुमती सखी शिव नार से घुल-घुल कर बतलाने लगी।
सुन गालियाँ चारो ही निज गर्दन झुका कर चल दिये॥४॥

अब ध्यान शुक्ल मझार शाखा चार जब होने लगे।
मुक्ति रानी के तभी शृंगार सब होने लगे।
पड़ चुकी भाँवर तो नेगाचार कम होने लगे।
दुल्हन चली तो घातियाँ रो-रो के जा खोने लगे।
बोले अघाती नाथ क्यो जल्दी मचा कर चल दिये ॥५॥

चारो अघाती प्रभु से कर जोड़ मृदु-वाणी करी।
ठहरो दुल्हा कुछ और नही कुछ हमने महमानी करी।
सुन प्रार्थना बढाय को ठहरे तो जिनवाणी खिरी ॥
मणिक फिर योग निरोग हो जब चौधवी सीढी चढ़ी।
सत्यं शिवं सुन्दरं को अपने संग लिवा कर चल दिये।।६॥

भजन नं० ३३

चाल—रेशमी सलवार (फिल्म नया दौर)

वीरनाथ भगवान जग हितकारी तू,
महिमा कही न जाय दुख परिहारी तू ।। टेक ।।

देश पड़ा था सोता अज्ञान नींद में सारा,
बढ़ी थी हिंसा भारी मचा था हाहाकारा,
हुआ अवतारी तू ।। १ ।।

तूने है आन बताया सद्धर्म अहिंसा प्यारा,
खुद जीवो और जीने दो ये था सन्देश तुम्हारा ।
दयालू भारी तू ।। २ ।।

स्याद्वाद समझाया मतभेद मिटावन हारा,
साम्यवाद सिखलाया सिद्धांत कर्म का न्यारा ।
पर हितकारी तू ।। ३ ।।

भूले हुए थे प्राणी मुक्ति मार्ग को सारे,
राह उन्हें दिखलाकर शिवधाम को आप सिधारे ।
'शिव' सुखकारी तू ।। ४ ।।

—::ॐ::—

भजन नं० ३४

चाल—रेशमी सलवार (फिल्म नया दौर)

भेष दिगम्बर धार—तू खुशहाली का ।
मजा कहा नहीं जाये इस कगाली का ।। टेक ।।

बच्चा हो या बच्चा उसे निंदिया आये अच्छी,
पास न होवे लंगोटी उसे चिन्ता हो फिर किसकी ।
न भय रखवाली का ।। १ ।।

छोडे जो परिवारा नही हो ममता उसे धन की,
तजे परिग्रह सारा फिर चाह मिटे सब मनकी।
न फिकर घरवाली का ॥ २ ॥

धन्य दिगम्बर साधु, नग्न है वन में रहते,
खडे-खडे इकवारा हाथ मे भोजन करते।
काम क्या थाली का ॥ ३ ॥

तज के सारी दुविधा, जो निज आतम ध्यावे,
धन्य जन्म है उनका वो 'शिव' आनन्द को पावे।
मुकतपुर वाली का ॥ ४ ॥

भजन नं० ३५

चाल—चौदहवी का चाँद हो (फिल्म चौदहवी का चाँद)

तुम सिद्धार्थ नन्द हो, त्रिशला के लाल हो,
कुण्डलपुरी के वीर तुम, स्वामी दयाल हो ॥ टेक ॥

जब मौज-शौक के लिये या धर्म नाम पे,
चलते हा वे जवानो पे खंजर दुधार थे।
उस जुल्म को मिटा दिया, रक्षपाल हो ॥ १ ॥

स्याद्वाद तत्व को, तुमने सुझा दिया,
एकान्तवाद को प्रभो तुमने भगा दिया।
सिद्धान्त कर्म के तुम्ही, वक्ता विशाल हो ॥ २ ॥

भेद ऊँच नीच का, तुमने मिटा दिया,
खुद ही वनो परमात्मा, रस्ता दिखा दिया।
हर एक इल्म का तुम्ही, रखते कमाल हो ॥ ३ ॥

तेरे समान हम बने, ये ही है भावना,
'शिवराम' इस लिये करे, शत वार वन्दना।
मेरे हाल पे प्रभो, अब तो कृपाल हो ॥ ४ ॥

भजन नं० ३६

चाल—मोरी छम-छम बाजे पायलिया (फिल्म घूँघट)

मोहे तज गये नेमि साँवरिया,
आज हुई मैं तो बावरिया ॥ टेक ॥

वो नौ भव के साथी, सहारे मेरे,
आके तोरन पे हाय वो वापिस फिरे।
रथ मोड़ लिया, कंगन तोड़ दिया,
गिरनारी की पकड़ी डागरिया ॥१॥

सजधज करके बैठी थी मैं तो सखी,
पिया दर्शन की थी आशा लगी।
हाय यह क्या हुआ, जो मुझको तज,
सखी फेरे फिरे न भाँवरिया ॥२॥

हा पशु जो पुकारे, दया आ गई,
मेरी नौ भव की प्रीति भुला दी गई।
सौतन मुक्ति ने हा कैसा जादू किया,
मेरी स्वामी ने लीनी न खाबरिया ॥३॥

सखी चल करके दीक्षा दिलादो मुझे,
साड़ी पीछी कमंडल मंगादो मुझे।
मत माँग भरो न सिंगार करो,
मैं जाऊँ गये जहाँ साँवरिया ॥४॥

धन्य-धन्य है धन्य तू राजुल मती,
'शिवराम' है सतियों में मोटी सती।
है संयम लिया घोर तप है किया,
मिली भवदधि तरण को नावरिया ॥५॥

भजन नं० ३७

दयाल प्रभु से दया माँगते है।
अपने दु.खों की हम दवा माँगते है॥ टेक ॥
नही हम-सा कोई, अधम और पापी।
सत कर्म हमने ना, किये है कदापी॥
किये नाथ हमने हैं, अपराध भारी।
उनकी हृदय से हम क्षमा माँगते है॥
प्रभु तेरी भगति मे मन यह मगन हो।
निजातम चिंतन की हर दम लगन हो॥
मिले सत संगम कर आत्मचिन्तन।
वरदान भगवान ये सदा माँगते है॥
दुनिया के भोगो की ना कुछ कामना है।
स्वर्ग के सुखो की ना कुछ चाहना है॥
यही एक आशा है, बन जायें तुम से।
'शिवराम' पैसा ना टका माँगते है॥

—:—
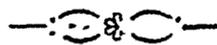
भजन नं० ३८

चाल—प्यार करले (फिल्म जिस देश मे गङ्गा)
प्यार करले धर्म से ही सुख पायेगा,
पार करले भव सिन्धु तरायेगा॥ टेक॥
काम नही आये कोई, तेरे सुत नारी ये,
पडे रह जाये तेरे, कोठी भँडार ये।
विचार करले तू अकेला ही जायेगा॥ १॥
आदत बिगाडी तूने अपनी अज्ञान से,

पाप कमाया तूने लोभ और मान से।
सुधार करले, नही तो पीछे पछतायेगा ॥
नर भव ये आया तेरे मुश्किल से हाथ है,
धर्म जैन पाया, सौभाग्य की बात है।
उद्धार करले ऐसा अवसर न पायेगा ॥ ३ ॥
हाथो से दान कर, नाम ले भगवान का।
'शिवराम' तू कल्यान कर, अपना जहान का ॥
प्रचार करले जग तेरा, यश गायेगा ॥ ४ ॥

—:※:—

भजन नं० ३६

चाल—सौ साल पहले (फिल्म जब प्यार किसी से होता है)
(प्रिय शिष्य कैलाशचन्द्र द्वारा रचित)

अहिंसा से हम को तो पहले भी प्यार था।
पहले भी प्यार था, आज भी है और कल भी रहेगा।
इसका जगत में सब से, ऊँचा मीनार था।
ऊँचा मीनार था, आज भी है कल भी रहेगा ॥टेक॥
प्रभू वीर अहिसा ही, सत्य की जोत जगाती है।
जो राही पथ से भटके, उनको राह बताती है।
उस पर तो चलने का सब को अधिकार था ॥ १ ॥
इसी अहिंसा को तो बापू, गाँधीजी ने अपनाया।
देश गुलामी में जकडा, उसको आजाद कराया।
जनता का पहले भी येही विचार था। आज० ॥ २ ॥
सत्य अहिसा जग में, सब से प्रेम बढ़ाती है।
भय का भूत भगाके ये शांति सुधा बरसाती है।
इसका तो पहले ही से देश में प्रचार था ॥ आज० ॥ ३ ॥

'कैलाश' अहिंसा से नेह जोडो, और इसे अपनाओ।
प्रभू वीर का शुभ सन्देशा, घर-घर मे पहुँचाओ।
जीवो जीने दो सबको, नियम ये सार था ।। आज० ४

भजन नं. ४०

चाल—नैन तुम्हारे मजेदार (फिल्म जङ्गली)
नाव पडी है मँझधार, आ बचाओ स्वामी।
मुझको तो तेरा है आधार, आ बचाओ स्वामी ।। टेक
बीच भँवर मे हाय ! फँस गई नैया।
तेरे सिवाये न कोई खिवैया।
तुम्ही बनो जी पतवार, आ बचाओ स्वामी ।। १
मिथ्यात्व के बादल है कैसे ये छा रहे।
तूफान भारी है, हम को डरा रहे।
छाया हुआ है अन्धकार, आ बचाओ ।। २
आया समुद्री है कर्म लुटेरा।
धन ज्ञान सारा हा ! लूटा है मेरा।
इसको भगा दो सरकार, आ बचाओ ।। ३
अञ्जन के तस्कर है तुमने उतारे।
पशु और पक्षी है तुमने उभारे।
ढील करो न मेरी बार, आ बचाओ ।। ४
'शिवराम' तेरी शरण मे है आया।
अपना निवेदन है तुमको सुनाया।
करदो जी मेरा उद्धार, आ बचाओ ।। ५

भजन नं. ४१

चाल—बेगानी शादी मे (फिल्म जिस देश मे गङ्गा)
निराली शान्ति पे हूँ मै तो दिवाना।
वीतरागी प्रभु झलक टुक दिखाना ।। टेक

दर्शन जो पाऊँ मै, धन्य कहाऊँ मैं।
फूला न अङ्ग में, अपने समाऊँ मै।
मङ्गल नायक हो, परम सहायक हो।
चिन्तामणि एक सब सुखदायक हो॥ १
आसन जमाया है, ध्यान लगाया है,
हाथ पे हाथ ये कैसा धराया है।
हमको बताता है, ये जितलाता है,
काम करना न कुछ भी बाकी रहता है॥ २
भूषण न कोई है, दूषण न कोई है,
हथियार तो इनके हाथ न कोई है।
न द्वेषी न रागी है, ये वीतरागी है,
मोह की सेना इनसे डर करके भागी है॥ ३
आदर्श स्वामी है, क्रोधी न कामी है,
लोभी न मानी ये जिनवर नामी है।
इनको जो ध्याता है, इनसा हो जाता है,
भक्ति से इनकी वो शिव-पद पाता है॥ ४

भजन नं. ४२ (राजुल विनय)

चाल—कोई बतादे दिल है जहाँ (फिल्म मैं चुप)

कोई बता दे नेमि कहाँ, गये सखीरी ले चल वहाँ।
मुझे मिलादे जरा तो चलके, नेमि पियारी गये है जहाँ॥ टेक
ब्याहन आये नेमि प्रभू तो, बारात वो भारी लाये थे।
छप्पन करोड़ जुडे यादव-गण, सङ्ग मुरारी आये थे॥ १
तोरण पै जब आये प्रभु तो, बँधे पशु चिल्लाये है।
देख दुखी उनको नेमि, वैराग्य हृदय मे लाये है॥ २
रथ को मोड़ा कंगना तोड़ा, वस्त्राभूषण डारे है।
छोड़ मुझे गिरनारी जाकर, पञ्च महाव्रत धारे है॥ ३

दया न मुझ पर आई उन्हें, अफसोस यही इक भारी है।
नवभव से मेरी प्रीति लगी, क्यो छिन में नाथ विसारी है।।४
मैं भी निज कल्याण करूँ, जग ये झूँठा सारा है।
धन्य सती तू है राजुल, शिवराम जो पन्थ चितारा है ।।५

भजन नं. ७३

चाल—ओ वसन्ती पवन पागल (फिल्म जिस देश)

हा ! गये गिरनार साजन जाओ री जाओ रोको कोई ।। टेक
लाये थे वरात भारी, थे मुरारी साथ मे,
म्हौर माथे पर बँधाया और कँगना हाथ मे।
है रँगीला मास सावन, जाओ री जाओ रोको कोई ।। १
शोर सुन पशुगण पुकारे, जो रुके थे राह मे,
कहा रथी ने घात होगा, इनका आपके ब्याह मे।
सुन लगे वैराग्य भावन, जाओ री जाओ रोको कोई ।। २
डार वस्त्राभरण सारे, जा चढ़े गिरनार पे,
प्रीति नव भव की थी मेरी, तज गये भरतार वे।
मैं करूँ अब भोग त्यागन, जाओ री जाओ रोको कोई ।। ३
छोड़कर अब जगत आशा, तज दिया परिवार है,
धन्य है 'शिवराम' राजुल, जिन किया तप सार है।
है सती का चरित्र पावन, जाओं री जाओ रोको कोई ।। ४

भजन नं ४४

चाल—तेरी राहो मे खडे है (फिल्म छलिया)

तेरे चरणो मे पडे है हम आन के।
स्वामी हम है भिखारी मुक्तिदान के ।।
प्रभु ज्ञान से भरपूर, पाया आनन्द सरूर।
वीतराग मशहूर, फिर भी हितु हो जरूर ।। टेक

धन और दौलत हम नही चाहे, सुरपति का भी पद नही चाहे।
चाह यही तुझसे ही हो जाऐं ॥ १
और नही कुछ भी है तमन्ना, सच्ची यह अरदास समझना।
होय नही भव बीच भटकना ॥ २
जब लग मुक्ति न आवे मेरी, और मिटे न भव की फेरी।
तब लग हृदय भक्ति हो तेरी ॥ ३
नाथ निवेदन हम ये लाये, कोई हविस न हमको सताये।
शिव-पद हमको अब मिल जाये ॥ ४

भजन नं. ४५

(प्रिय शिष्य कैलाशचन्द जैन द्वारा रचित)
चाल—तेरी प्यारी–प्यारी सूरत (फिल्म ससुराल)
ये प्यारी-प्यारी छवि तिहारी, सब ही के मन में बसी—
वीर भगवन् !
ये मन मोहक है छवि तिहारी, सब ही के मन मे बसी—
वीर भगवन् ॥ टेक
दर्श तिहारा जो पाता, भक्त तिहारा हो जाता,
भूल के दुखड़े अपने वो सारे, मस्ती में है खो जाना,
ये सबसे अनोखी सबसे निराली, सब ही के मन में बसी—
वीर भगवन् ॥ १
निर्विकार मूरत ये तेरी, मुक्ति की राह दिखाती है,
सत्य अहिसा और प्रेम का, मार्ग हमें दर्शाती है,
कही सुनी ना देखी हमने, सब ही के मन में बसी—
वीर भगवन् ॥ २
इक अभिलाषा हम लाए, मेहर तुम्हारी हो जाए,
ध्यान धरूँ मै जिस दिन, समय वो जल्दी आ जाए,

'कैलाश के मन मे भी आन वसो, सव ही के मन में बसी—
वीर भगवन् ॥ ३

भजन नं. ४६ (कीर्तन)

(प्रिय शिष्य बाबूलाल द्वारा रचित)

तुम करदो जी मेरा उद्धार, भगवन् वीर प्रभु ॥ टेक
चहुँगति अन्दर दुख वहु पाया, इसमें अपना कोई न पाया।
फिर मै आया तेरे द्वार, भगवन् वीर प्रभु ॥ १
दीनन के दुख टारन हारे, भक्त के कष्ट निवारन हारे।
अव मेरी ओर निहार, भगवन् वीर प्रभु ॥ २
वहुत अधर्मी तुमने तारे, अञ्जन जैसे पार उतारे।
अव ढील क्यों मेरी वार, भगवन् वीर प्रभु ॥ ३
वीच भँवर मे फँसी है नैया, तुम्ही स्वामी इसके खिवैया।
करदो जी वेडा पार, भगवन् वीर प्रभु ॥ ४
शरण मे तेरे जो कोई आया, 'वाबू' उसका कष्ट मिटाया।
जीवन के आधार, भगवन् वीर प्रभु ॥ ५

भजन नं: ४७

चाल—चौदहवी का चाँद हो (फिल्म चौदहवी का चाँद)

भक्ति वीर मे भरा जादू महान है।
भक्ति से भक्त हो गया भगवत समान है ॥ टेक
वीतराग है मगर तारण-तरण सही।
भवसिन्धु पार हो गया जिसने शरण गही ॥
जिसने लाखो हजारो का किया कल्याण है ॥ १
अञ्जन से चोर तर गये पापी महा अधम।
नर की तो कौन है कथा पक्षी पशु न कम ॥
जिनका प्रभू की भक्ति से हुआ उत्थान है ॥ २

जो सिंह दुष्ट था कभी पापी दुरात्मा।
वो ही तो वीर बन गया है परम आत्मा ॥
पूजक ही पूज्य होता है आगम प्रमाण है ॥ ३
ऐसा निहार के प्रभो चरणो मे आ पड़े।
तारक न कोई और है स्वामी सिवा तेरे ॥
'शिवराम' आज धर लिया तेरा ही ध्यान है ॥ ४

भजन नं. ४८

चाल—मोहे पनघट पर नदलाल छेड़ गयो रे (फि० मुगलेआजम)

मोहे नेमी बिलखती को छोड़ गयो री।
रथ तोरण पे आकर के मोड़ गयो री ॥ टेक
दया के भाव धारे, दुखिया पशु निहारे।
हाय ! कानन मे उनके, जो शोर गयो री ॥ १
नौ भव की प्रीति मोरी, एक छिन बीच तोरी।
वो तो हाय ! गिरनारी को, दौर गयौ री ॥ २
हा ! वस्त्र है उतारे, भूषण है भू पर डारे।
हाये ! हाथों का कँगना, वो तोड़ गयो री ॥ ३
बिना पिया घर न रहना, मेरा उतारो गहना।
एरी नेमी बताओ, किस ठौर गयो री ॥ ४
सखी री लाओ साड़ी, कमण्डल पीछी प्यारी।
मोरी चूरी सुहाग की, फोर गयो री ॥ ५
करूँगी मै भी तप को, तजूँगी भोग व्यसन को।
शिव - नारी से नेहा, वो जोर गयो री ॥ ६

भजन नं. ४९

चाल—तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ (फि० धूल का फूल)

प्रभू वीर का आसरा चाहता हूँ,
चरण में पड़ा हूँ शरण चाहता हूँ ॥ टेक

चारों हो गतियो मे भटका फिरा हूँ,
सदा मोक्ष मञ्जिल पे अटका रहा हूँ,
कही ना मिला सच्चे पथ का प्रदर्शक,
कृपा दृष्टि तेरी सदा चाहता हूँ। चरण मे० ॥ १
बीच भँवर में है मेरी नाव माँझी,
चहुँ ओर से चल रही है वो आँधी,
अरे कौन है जो आके पतवार थामे,
मिलादे तू साहिल यही चाहता हूँ। चरण मे० ॥ २
महर की नजर करदे मेरे वीर प्यारे,
तू भव से तिरादे मिटा कष्ट सारे,
'अभय' बन भिखारी खडा तेरे द्वारे,
मैं झोली मेरी पूरना चाहता हूँ। चरण में० ॥ ३

भजन नं. ५०

चाल—जब प्यार किया तो डरना क्या (फिल्म मुगलेआजम)
अब कर्म बली से डरना क्या—अब कर्म बली से डरना क्या,
है सामने मूरत वीर प्रभू की, उनकी छवी का कहना क्या,
अब कर्म बली से डरना क्या। टेक
मैना सती ने तुमको ध्याया, अपने पती का कुष्ट मिटाया।
सीता ने जब ध्यान किया तो, पावक का जल होना क्या ॥अब०
सेठ के मन मे पाप जो आया, सागर में श्रीपाल गिराया।
नौका उसकी पार लगाकर, शील की रक्षा करना क्या ॥ अब०
जो भी कोई शरणे आया, इच्छित फल को उसने पाया।
'अभय' यही विश्वास हृदय मे, ध्यान बिना अब जीना क्या ॥अब०

भजन नं. ५१

चाल—आ जाओ तड़पते है अरमा (आवारा)
गुण गाओ सदा उस नन्दन के,

त्रिशला जिसकी महँतारी है ।
वह भूमि महा पावन है जहाँ,
प्रगटे दुःख सङ्कट हारी है ॥
जब ज्ञान - दीपक बुझने लगा,
औ' मानव भी पथ भ्रान्त हुए ।
हमदर्द न था कोई भी यहाँ,
तब वीर भये अवतारी है ॥
जब वीर ने जग पे डाली नजर,
सुख शांति कहीं भी ना आई नजर ।
तब तजा मोह झूँठे जग का,
वैभव के ठोकर मारी है ॥
निज जीवन का उद्धार किया,
सारे जग का उपकार किया ।
लाखों को भव से तार दिया,
अब आज 'रतन' की वारी है ॥

भजन नं. ५२

चल दिया छोड़ घर-बार, कुटम परिवार, धारि मुनि बाना ।
समझाया वीर न माना ॥ टेक ॥
माता अति रुदन मचाती है, यों बार-बार समझाती है ।
बेटा कुछ दिन पीछे ही बन को जाना ॥ समझाया० ॥१॥
बोले माता क्यों रोती है, जो होनहार सो होती है ।
उठ गया मेरा इस घर से पानी दाना ॥ समझाया० ॥२॥
सिद्धारथ नृप समझाते यों, बेटा तुम बन को जाते क्यों ।
क्या घर में है कुछ कमी हमें बतलाना ॥ समझाया० ॥३॥
मेरी है वृद्ध अवस्था ये, घर की को करे व्यवस्था ये ।
ले राज-पाट तू सब पर हुक्म चलाना ॥ समझाया० ॥४॥

मेरा घर से कुछ काम नही, पल भर लूँगा आराम नहीं।
इस सोते हुए जगत को मुझे जगाना। समझाया० ॥ ५ ॥
यहाँ खून से होली खिलती है, हिंसा की ज्वाला जलती है।
यह दृश्य देख कर हृदय मेरा अकुलाना। समझाया० ॥ ६ ॥
पशुओ पर खंजर चलते है, लाखो यज्ञों में जलते है।
कहते इनको मिल जायगा स्वर्ग विमाना। समझाया० ॥ ७ ॥
हिंसा में धर्म बताते हैं, वेदो को खोल दिखाते है।
उन बेअक्लो की अक्ल ठिकाने लाना। समझाया० ॥ ८ ॥
'मक्खन' अघ के घन छाये है, भू-नभ सुमेरु थर्राये है।
मै भोगूँ कैसे भोग पडा मस्ताना। समझाया० ॥ ९ ॥

भजन नं० ५३

चाल—चलेगे तीर जब दिल पर तो अरमानों (फिल्म कोहनूर)
शेर—सौम्य गुण शान्ति मूरत है, सदा जो सौख्यकारी है।
लगी नासा पे दृष्टि है, चिदानन्द रूप धारी है।
वीतरागी हो तुम्ही, मैंने शरण आन लिया।
नही तुमसा दानी, प्रभु मैने यह जान लिया।
हमे महावीर जलवे ने मस्ताना बना डाला।
अरे उस मोहनी मूरत ने दीवाना बना डाला ॥ टेक ॥
न रागी है न द्वेषी है हितैषी हो कोई ऐसा।
सुना है देव दुनियाँ मे कई है पर नही ऐसा।
शरण मे जो कोई आया तो शिववाला बना डाला-हमें॥१
लाख खोजा लाख ढूँढा समझ मे न कोई आया।
खाक दुनियाँ की हमने छान ली पर नही पाया।
जो देखा दिलके परदे मे तो मतवाला बना डाला-हमें ॥२
देख रंगीनियाँ मत भूल जीवन की जो फानी है।

'अभय' सुन जो संभल पाया सीख तूने जो मानी है।
जो आया शरण में मुक्ती का परवाना बना डाला।
हमें महावीर के ।३॥

भजन नं० ५४

चाल—मैं तो तुम संग नैन मिला के (फिल्म मनमौजी)
मै तो तेरे चरणों में आके शरण गही स्वामी ॥ टेक ॥
दुष्ट कर्म ने मुझ को सताया, लख चौरासी में भटकाया
है दुख पाये चहुंगति जाके ॥ १ ॥
हो वीतरागी पर हितकारी, महिमा तेरी जग से न्यारी
गणधर भक्ति करे यश गा के ॥ २ ॥
अंजन जैसे तस्कर तारे, दुष्ट अधम-जन तुमने उभारे
पात्र भये सब तेरी कृपा के ॥ ३ ॥
अब शिवनाथ हमें निस्तारो, स्वामी अपना विरद निहारो
हार गया हूँ टेर लगा के ॥ ४ ॥

भजन नं० ५५

चाल—तेरा जादू न चलेगा ओ सपेरे (फिलम गैस्ट हाऊस)
प्रभु दर पे खड़ा हूँ मैं तेरे, अब काट दे तू जग के फेरे
सब कर्म खड़े मुझे घेरें, यह नयना है तुझको हेरे। टेक ॥
जग के मोह में मैं हूँ फँसा, कौन जो मुक्त कराये
रिषय कीच में मैं हूँ धँसा, कौन जो मुझको बचाये
दास तेरा अब तुझको पुकारे—प्रभु ॥१॥
दुख को ही सुख माना है मैंने सुमति कभी नही आई
सारा ही जग छाना है मैंने, शान्ति कहीं नही पाई
अब "अभय" खड़ा तेरे द्वारे—प्रभू ॥२॥

भजन नं० ५६

जिनभक्ति (भजन)

श्री जिनदेव के चरणों मे तेरा ध्यान हो जाता,
तो इस ससार सागर से तेरा कल्याण हो जाता ॥टेक॥

न वढती कर्म वीमारी, न होती जगत में ख्वारी।
जमाना पूजता सारा, गले का हार हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

परेशानी न हैरानी, दफा हो जाती मस्तानी।
धर्म का प्याला पी लेता, तो बेडा पार हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

रोशनी ज्ञान की खिलती, दिवाली दिल में हो जाती।
हृदय मदिर में भगवन का, तुझे दीदार हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

जमी पर बिस्तरा होता, तो चादर आसमान बनती।
मोक्ष गद्दी पर फिर प्यारे, तेरा घरवार हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

लगाते देवता तेरे, चरण की धूलि मस्तक पर।
अगर भगवान की भक्ति मे, तेरा ध्यान हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

भक्त जपता अगर माला, प्रभू की एक भक्ति से।
तो तेरा घर भी भक्तो के, लिए दरबार हो जाता ॥
श्री जिनदेव० ॥

भजन नं० ५७

चाल—जादूगर सैयाँ छोड़ मेरी (फिल्म नागिन)

डूब रही नैया, कोई न खिवैया, हे-हे जी दीनानाथ, तनक सहारा दो
तू ही प्रभु मेरा, दास हूँ मैं तेरा, रक्षा है तेरे हाथ, तनक सहारा दो
छाया अँधियारा सूझे न किनारा, मंजिल मेरी बड़ी दूर है
दीन दयाल करुणा सागर, नाम तेरा मशहूर है
तू ही तो निभावे साथ ॥ १ ॥
दास ये पुकारे अर्ज गुजारे, माला रटे तेरे नाम की।
देर करो मत, आओ जी स्वामी, विपत हरो 'शिवराम' की ॥
हे नाथ नमाऊँ माथ ॥ २ ॥

भजन नं० ५८

(प्रिय शिष्या जयमाला द्वारा रचित)

चाल–नगरी २ द्वारे २ (:फिल्म मदर इण्डिया)

जङ्गल-जङ्गल पर्वत-पर्वत ढूँ-ढूँ रे साँवरिया।
नेमी-नेमी रटते-रटते हो गई रे बावरिया ॥ टेक ॥
शौरीपुर से व्याहन आये, स्वामी नेमि कुमार री।
तोरण से रथ को है मोड़ा, जीव दया चित धार री।
मोड़-तोड़ गिरनार चढ़े तज जूनागढ़ नगरिया ॥ १ ॥
चूड़ी उतारो साड़ी उतारो-उतारो सब सुन्दर शृङ्गाररी
मतना माँग भरो तुम सखियो, जाऊँगी गिरनार री ॥
कोई चलके आज बतादो, गिरवर की डगरिया ॥ २ ॥
नौ भव बालम सङ्ग रखी है, छोड़ा क्यों इस जन्म में।
मुझ पर स्वामी दया न आई, वियोग लिखा क्या कर्ममें।
पल-पल मनवा रोवे छलके नैनों की गगरिया ॥ ३ ॥

तुमने बिसारा स्वामी मुझको, मैं भी त्यागूँ आपको।
हाथ कमंडल पीछी लेकर, मैं धारूँ वैराग को।
चरणों मे रह कर के संभालूँ,जीवन की गठरिया।।४।।
धन्य सती तू राजुल देवी, धारा आत्म ज्ञान है।
छेदन कर स्त्री लिंग तूने, पाया स्वर्ग महान है।
अब तो चेत अरी 'जयमाला' बीती ये उमरिया ।।५।।

भजन नं० ५६

चाल–ऐ मालिक तेरे वन्दे हम (फिल्म दो आँख बारह हाथ)

ऐ स्वामी तेरे भक्त हम, तेरी भक्ति से काटे करम।
सब पाप तजे, तेरा नाम भजे, हम अपना सुधारे जनम ।।टेक।।

हमें हर एक से प्यार हो, नही दुष्ट का अपकार हो।
गुणीजन को सदा, देख हर्षे हिया, प्रेम भावों का सचार हो।
हरे दुखिया का दुख दर्द हम, दूर दुनियाँ के करदे जुलम ।।१।।
है मन की यही कामना, हर मुश्किल का हो सामना।
कोई हो ना दुखी, रहे सब ही सुखी, हो दिन रात ये भावना।
वम्ब ऐटम को करदे खतम, माने दुनियाँ अहिंसा धरम ।।२।।
नित शास्त्रों का होवे पठन, "शिवराम" हो गुण का ग्रहण।
पर निंदा करे, सतसङ्ग करें, आतम तत्व का हो चिंतवन।
सारे नष्ट करे दुष्करम, जिससे मिल जाये पदवी परम ।।३।।

भजन नं० ६०

चाल—होठ गुलावी गाल कटोरे (फिल्म घर-ससार)

अश्वसेन के लाल–तुम्हारी अजब निराली शान—
ओय बलिहारी जावाँ।

हम है सारे, भक्त तुम्हारे, पार्श्व प्रभु भगवान—
ओय बलिहारी जावाँ ॥ टेक ॥
देखे देव जगत के हम सब, तुझसा देव नही है और
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी-ढूँढ चुके है हम सब ठौर।
कही नही पाया, जग भरमाया, होय रहा हैरान ॥१॥
कामदेव को नष्ट किया है, नही है किंचित माया मान।
क्रोध लोभ का नाम नही है, राग द्वेष का नही निशान॥
तप कर सारे, कर्म निवारे, पद पाया निर्वाण ॥२॥
परम शान्तमय इनकी मुद्रा, नग्न दिगम्बर है अधिकार।
इनकी मूरत जग से न्यारी, पद्मासन है ध्यानाकार।
ना कोई भूषण, ना कोई दूषण, है आदर्श महान् ॥३॥
परम अहिंसा तत्व है इनका, स्याद्वाद तुम सुन जाना।
साम्यवाद सिद्धान्त प्रभुका, 'शिवराम' कभी न विसराना।
इनको ध्यावे, शिवपद पावे, हो जावे भगवान ॥४॥

भजन नं० ६१

चाल—मेरा नाम राजू (फिल्म जिस देश में गङ्गा बहती)

भजो वीर स्वामी सुहाना है नाम।
भक्ति से पाओगे मुक्ति का धाम ॥ टेक ॥
स्वार्थकी दुनियाँ से दिलको हटाना, महावीर चरणो में चित्त लगाना
आदर्श अपना उन्ही को बनाना, गुण गान रहे नित ध्यान रहे।
हर आन रहे, ये जबाँ पे तराना।
जय वीर प्रभु, महावीर प्रभु, अतिवीर प्रभु का यश गाना॥१॥
मनुष्य जन्म को नही व्यर्थ गँवाना, परोपकार मे जीवन बिताना
निज और पर का विवेक जगाना।

अज्ञान हरो, पहिचान करो, निज ध्यान धरो,समय को कमानीं
भज नाम अरे 'शिवराम' तेरे सब काम सरे, हो मुक्ति को जाना-२

भजन नं० ६२

चाल – तेरी प्यारी २ सूरत को (फिल्म ससुराल)
तेरी प्यारी-प्यारी मूरतिया मुझको सुहानी लगे शांति भरपूर।
तेरी परम दिगंबर सूरतिया मुझको सुहानी लगे शांति भरपूर।
॥ टेक ॥

पद्मासन बैठे ऐसे, करना कुछ नाही जैसे।
हाथ नही हथियार है कोई, मारे दुष्ट कर्म कैसे।
राग द्वेष का नाम नही है ज्ञान मे भगवान पगे। शांति भरपूर-१
तेरे दर्श किया करूँ, शांति सुधा रस पिया करूँ।
तुमको निज आदर्श बनाके आतम आनन्द लिया करूँ।
मुझ मे-तुझ मे फर्क नही जब हृदय मे ज्ञान जगे। शांति भरपूर-२
तुमको जो नर ध्याता है, तुमसा ही हो जाता है।
भक्ति भाव से मेंढक भी तो सुर पदवी को पाता है।
'शिवराम' शरण मे जो भी आये, उसके सारे कर्म भगे। शांति-३

भजन नं० ६३

चाल—इक सवाल मैं करूँ (फिल्म ससुराल)
हूँ बेहाल क्या करूँ तुम कृपाल हो प्रभो।
मेरे हाल पे दयालु कुछ खयाल हो॥ टेक।
दुष्ट कर्म पडा ये पीछे, इससे कौन बचाये।
लख चौरासी योनि के अन्दर,नाना नाच नचाये॥
काल अनन्त निगोद मे बीता, जामन मरन सताये।
नरक वेदना कौन उच्चारे, घोर महा दुख पाये।।१

भूख प्यास और छेदन-भेदन कष्ट पशु पर्याये।
सर्दी-गर्मी बध और बंधन, भारी भार उठाये ॥
चाह-दाह में जरे हमेशा, यद्यपि देव कहाये।
गल की माला जब मुरझाई, मरन समय बिल्लाये।२
मनुष्य जन्म में रोगो-सोगी, निर्धन हो दुख पाये।
है कलहारी नारी घर मे, पुत्र मिला दुख दाये ॥
हो करक कलकान बहुत,'शिवराम' शरण मे आये।
कर्म से पिंड छुडादो स्वामी, तुमने कर्म खपाये। ३

भजन नं० ६४

चाल-जो वायदा किया वो निभाना पड़ेगा (फिल्म ताज महल)

प्रभू की शरण मे तुमको आना पडेगा
छोड़ के सारे द्वारे सुन मेरे प्यारे सर झुकाना पड़ेगा ॥टेक

अब तक भुलाया तूने भूल है भारी,
प्रभुकी लगन क्यों है दिलसे विसारी।
नेहा प्रभु से, लगाना पडेगा तुमको प्यारे लगाना पडेगा—१
कुटुम परिवार सबही मतलब के नाती,
आये बुलावा कोई बनेगा ना साथी।
मोह का पर्दा तुझे अपने दिल से भइया मेरे हटाना पडेगा—२
जिनको कहे तू अपना वो स्वारथ का मेला,
प्रभुके भजन बिन रहेगा अकेला।
वीर गुण गान तुझको गाना पड़ेगा तुमको आना पड़ेगा—३
अज्ञानता का छाया अन्धेरा,
'कैलाश' कर ले जीवन मे सवेरा।
ज्ञान का दीया तुझे अपने मन मे प्यारे जलाना पड़ेगा—४

भजन नं० ६५

चाल—वो दिल कहाँ से लाऊँ (फिल्म भरोरा)

किसको विपद सुनाऊँ, हे नाथ तू बतादे।
तेरे सिवा न कोई, जो कष्ट को मिटा दे॥ टेक॥
अपराध नाथ वेशक, मैने किये है भारी।
हो दीन के दयालु, उनकी मुझे क्षमा दे। १
यह कर्म दुष्ट मुझको, भटका रहे है दर-दर।
जीवन-मरण के दुख से, हे नाथ तू बचा दे। २
धन ज्ञान अपना खोकर परेशान हो रहा हूँ।
शांति हृदय में आवे, वो उपाय तो सुझा दे। ३
टाला नही है टलता, विधि का उदय किसी से।
'शिवराम' शोक चिंता, तू चित्त से हटा दे। ४

भजन नं० ६६

चाल—जो वायदा किया (फिल्म ताज महल)

परम शान्त मुद्रा है तेरी निराली
मूर्ती हजारों देखो ऐसी न मूरत कोई
परम ध्यान वाली (अजब शान वाली)। टेक
हाथ पे हाथ धरे बैठे ऐसे, करना न कुछ भी रहा न इनको जैसे।
कैसा अहा, ध्यान धरा, है नासा पे दृष्टि परम ध्यान वाली।१
हाथ नही हथियार है कोई, काम और क्रोध विकार न कोई।
राग तथा द्वेप जरा, नहीं दोष कोई परम ध्यान वाली।२
है ये आत्मा के ध्यान का नक्शा, ज्ञान वैराग्य की मिलती है शिक्षा
सीखो सदा, पाठ यहाँ जो सूरत ये देती परम ध्यान वाली।३
इनको जो ध्यावे, इनसा हो जावे, 'शिवराम' निश्चय परमपद को पावे
पूजो सदा, मन को लगा मिले स्वर्ग मुक्ति परम ध्यान वाली।४

भजन नं० ६७

(प्रार्थना)

चाल–ओ बसती पवन पावन(फि० जिस देशमें गंगा बहती है)

ओ जगत के शांति दाता, शांति जिनेश्वर, जय हो तेरी। ओ०

१–किसको मै अपना कहूँ, कोई नजर आता नही।
इस जहाँ में, आप बिन, कोई भी मन भाता नही।
तुम ही हो त्रिभुवन विधाता, शांति जिनेश्वर ॥ जय

२–तेरी ज्योति से जहाँ मे, ज्ञान का दीपक जला।
तेरी अमृत वाणी से ही, राह मुक्ति का मिला।
शीश चरनों में झुकाता, शांति जिनेश्वर ॥ जय...

३–मोह माया मे फँसा, तुमको भी पहचाना नही।
ज्ञान है न ध्यान दिल मे, धर्म को जाना नही।
दो सहारा मुक्ति दाता, शांति जिनेश्वर ॥ जय

४–बनके सेवक हम खड़े है, स्वामी तेरे द्वार पे।
हो कृपा तेरी तो बेड़ा पार हो ससार से।
तेरे गुण 'सुभाग' गाता, शांति जिनेश्वर ॥ जय...

भजन नं० ६८

[प्रिय शिष्य कैलाशचन्द्र द्वारा रचित]

चाल—(जयपुरी)

हो राय सिद्धरत राजदुलारे कुण्डलपुर फिर आइयो,
ये अंखियां तेरे दर्श की प्यासीं इनकी प्यास बुझाइयो ।टेक

इन्सानो हैवानों को जब, जाता बली चढ़ाया,
धर्म अहिंसा ध्वजा उठा कर, उनको आन बचाया।
फेसन खातिर अब पशु कटते इनको आन बचाइयो-हो इनको
तुमने था भूली जनता को, समता पाठ पढ़ाया,

खुद जीओ जीने दो सबको, तुमने था समझाया।
फिर से मीठी-मीठी वाणी हमको आन सुनाइयो-हो हमको
जग के लाखो जीवो का तुमने उद्धार किया था,
भटक रहे थे भव सागर मे, उनको पार किया था।
बीच भँवर कैलाश की नैय्या इसको भी पार लगाइयो–हो इनको

भजन नं० ६९ (जीवन की बाजी)

बाजी हार के जीवन की न जीत सका तृष्णा मन की।
मैं इच्छा के तारों पर नाचा, मै मन के इशारो पर नाचा।
सूख गई नस-नस तन की पर जीत सका न तृष्णा मन की॥ १
मन दौलत को जब ललचाया, मैं दुनिया लूट के ले आया।
आई झङ्कार छना-छन की, पर जीत न सका तृष्णा मन की॥ २
तन को रेशम पहनाने को, गहनो से इसे सजाने को।
जा खाल उतारी निर्धन की, पर जीत सका न तृष्णा मनकी॥ ३
मन मेरा अब तक भी न हुआ, दूर अन्धेरा यह न हुआ।
रही बूढे मे हूट बचपन की, पर जीत सका न तृष्णा मन की॥

भजन नं० ७० (दीपमालिका)

चाल–जरा सामने तो आओ छलिये (फिल्म जन्म २ के फेरे)

महावीर का पूजन करिये–वे मुक्त गये प्रभु आज है।
है पूर्ण बने परमात्मा, वे तीन जगत सरताज हैं॥ टेक
भाग्य जगा है आज तो मानो, पावापुरी उद्यान का।
दिन है मुबारिक आज ये सज्जनो वीर प्रभु निर्वाण का।
धन्य कार्तिक अमावश प्रभात है, बजे बाजे सब सजे साज है॥ १
यही तो दिन है ऐ प्यारे भाई, गौतम गुरु के ज्ञान का।

पर्व दिवाली है जग में नामी, वीर मुक्ति कल्यान का।
दीप-रत्न आहा जगमगात है,शब्द जय-जय करे सुरराज हैं।।२
निर्वाण लड्डु चलो चढाएँ, गायें सुयश महावीर के।
आदर्श लेकर शिवराम उनका, हम भी बनेंगे वीर से।
हम में उनमें न कुछ भी राज है,हम भी ऐसे हैं जैसे महाराज है-३

भजन नं० ७१

चाल—नगरी २ द्वारे २ (फिल्म मदर इण्डिया)

पार्श्व प्रभू जी पार लगादो, मेरो ये नावरिया।
बीच भँवर में आन फँसी है, काढो जी साँवरिया ।। टेक

धर्मी तारे बहुत ही तुमने, एक अधर्मी तार दो,
वीतराग है नाम तिहारा, तीन जगत हितकार हो।
अपना विरद निहारो स्वामी काहे को विरतिया ।। १

चोर भील चंडाल है तारे, ढील क्यों मेरी बार है,
नाग-नागिनी जरत उभारे, मंत्र दिया नवकार है।
दास तिहारा संकट में है, लीजो जी खबरिया ।। २

लोहे को जो कंचन करदे, पारस नाम पखान वो,
मै हूँ लोहा तुम प्रभु पारस,क्यों ना फिर कल्याण हो।
नाथ मिटा दो अब तो मेरी भव-भव की घुमरिया ।। ३

भटक रहा हूँ मैं भवसागर, आपका मुक्ति निवास है,
अपने पास बुलालो मुझको, एक ये ही अरदास है।
भूल रहा हूँ नाथ बतादो, शिवपुर की डगरिया ।। ४

भजन नं० ७२

चाल—वड़े प्यार से मिलना (फिल्म अनसुईया)

वडे चाव से करना प्यारे वीर प्रभु गुण गान रे।
पशु और पक्षी भी है जिनका मान रहे अहसान रे ॥ टेक ॥
जो उपकार किये हैं हम पे, कथन करें क्या उनका।
धर्म अहिंसा का दुनियाँ में, जिसने वजाया डंका।
खुद जीवो जीने दो सवको, ये सन्देश महान रे ॥ १ ॥
स्याद्वाद और साम्यवाद का, जिसका तत्व निराला।
आतम से परमातम होता, है सिद्धान्त विशाला।
कर्म फलासफी है लासानी, वीतराग विज्ञान रे ॥ २ ॥
ऐसे वीर परमउपकारी, महिमा जिनकी है जग से न्यारी।
तुम 'शिवराम' वनो उन जैसे, करके उनका ध्यान रे ॥ ३ ॥

भजन नं० ७३

चाल—वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया (फिल्म मिस मेरी)

कुण्डलपुर का श्री महावीरा, जग की आखो का तारा।
त्रिशला नन्दन,हरिकुल वन्दन, सिद्धार्थ का राजदुलारा ॥टेक॥
धर्म नाम पर हवन यज्ञ में, पशु वलियें दी जाती थी।
वेजवान पशुओ के खून से, होली खेली जाती थी ॥
दीन दुखी जीवों का भगवन, आकर तुमने कष्ट निवारा ॥ १ ॥
जव-जव तेरे भक्तो पर भी सकट कोई आया था।
वने तुम्ही हो सकट मोचन, तुमने कष्ट मिटाया था ॥
सीता मनोरमा चन्दना दृष्टान्त दे रहा ग्रन्थ हमारा ॥ २ ॥
तेरे इस उपदेश को भगवन, हम फिर भूले जाते है।
विचलित हुए धर्म से अपने इस कारण दुख पाते हैं ॥

सत्यमार्ग पर लाए हमें जो तुम बिन भगवन कौन हमारा ॥ ३
अन्धकार के बीते युग मे तूने शमा जलाई थी।
भक्त जनों की नैया भगवन तुमने पार लगाई थी ॥
मेरी नाव भी पार लगादो है कैलाश ने आन पुकारा ॥ ४

भजन नं. ७४

चाल—बार-बार तुझे क्या समझाऊँ (फिल्म आरती)
बार-बार तोहे शीश नवाऊँ, आऊँ तेरे द्वार।
पार्श्व प्रभू जो, कर दो भव-जल पार।
तुम बिन स्वामी, कोई न तारन हार ॥

१—पोस बदी दशमी का, शुभ दिन आया।
काशी मे प्रभू आपने, जन्म पाया।
अश्वसेन बामा नन्दन है, तेईसवे अवतार ॥ तुम बिन ··

२—नाग बचाये आग में जलते हुए।
नवकार सुनाया उनको, मरते हुए।
पद्मावती धरणेन्द्र बने, वह देवों के सरदार ॥ तुम बिन

३—योग लिया, घर-बार राज्य-सुख छोड़ दिया।
घोर तपस्या से, कर्म दल चूर किया।
केवल ज्ञान को पाकर स्वामी करते जग उपकार ॥ तुम

४—कमठ जीव ने आप पे, उपसर्ग किये।
जल बरसाया आप थे, जब ध्यान लिये।
पानी पहुँचा नाक तक, प्रभु खडे थे का उसग धार ॥ तुम

५—प्रभू चरनन मे मेरा, बस ध्यान रहे।
दिल की हर धड़कन मे, तेरा नाम रहे।
शिखर पे मोक्ष गये, 'सुभाग' की सुनो पुकार ॥ तुम

भजन नं० ७५

चाल—तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ (फिल्म धूल का फूल)
प्रभु वीर का आसरा चाहता हूँ, यही नाम हरदम रटा चाहता हूँ

(आकाश - वाणी)

प्रभु नाम को जो रटा चाहते हो।
तो दुनिया में फिर क्यो फँसा चाहते हो ॥ टेक

मुझे दुष्ट पापी कर्म है सताते।
कभी नरक का नारकी है बनाते॥
करूँ क्या मैं वर्णन जो दुख है दिखाते।
नरक - वेदना से बचा चाहता हूँ ॥ १ ॥

पशु की जो काया कभी मैंने धारी।
मरा भूखा प्यासा लदा बोझ भारी॥
छेदन की भेदन की मारे करारी।
प्रभु इन दुखों से छुटा चाहता हूँ ॥ २ ॥

गति देवता की अगर मैंने पाई।
झुरा देख कर के मैं सम्पत पराई॥
मैं छ मास रोया निकट मौत आई।
मैं सुर-पद न ऐसा लिया चाहता हूँ ॥३॥

मनुष्य-जन्म पाकर रहा तन का रोगी।
अनिष्ट और इष्ट सयोगी वियोगी॥
रहा रात-दिन मैं तो विषयों का भोगी।
चहुँ गति से होना रिहा चाहता हूँ ॥ ४॥

खतम जब तलक ना यह आवागमन हो।
तेरी भक्ति में मन ये निशदिन मगन हो।
'शिवानन्द' पाऊँ यह हरदम लगन हो।
कि तुझ जैसा मैं भी हुआ चाहता हूँ ॥५

भजन नं० ७६

चाल–दिल लूटने वाले जादूगर (फिल्म मदारी)

हम सब ने मिलकर आज यहाँ, प्रभु वीर तेरा गुन गाना है।
चरणो मे तुम्हारे बैठ के अपना, जीवन सफल बनाना है ॥ टेक
उपकार किये जग पर तुमने, हम कैसे उन्हें भुलायेगे।
जब तक इस तन मे श्वास चले, तेरा गुण गाये जायेगे।
तेरा नाम सदा सुखदाई है, यह सर्व जगत ने जाना है ॥ १
जिसने है तेरा जब नाम लिया, तब कष्ट मिटे उसके सारे।
हम पर भी प्रभु हो मेहर तेरी, झन्झट छूटे मेरे सारे।
प्रभु देख तुम्हारी छवि हमारा मन आज हुआ दीवाना ॥ २
रिश्ता नाता जग का झूँठा, यहाँ कौन बहन और भाई है।
तुम बिन इस दुनिया में भगवन, प्रभु कौन हमारा सहाई है।
कैलाश ने अब यह जान लिया, जग अपना नही बेगाना है ॥३

भजन नं० ७७

मन हो गया दीवाना देख के छवि,
दिल हो गया मस्ताना, देख के० ॥ टेक ॥

जिसने तुमसे नाता जोडा, विषय कषायों से मुँह मोड़ा।
कर दिया उद्धार तुमने उसका तभी ॥ १
तेरा हम कैसे गुण गाये, रवि को कैसे दीप दिखाये।
तेरा उपकार न भुलायेगे कभी ॥ २
दर्श तिहारा मैने पाया, खुशियो का भण्डार भराया।
हो गई आशाये मेरी पूरी सभी ॥ ३
आज तो हाथ सुअवसर आया, गुण कैलाश ने तेरा गाया।
तेरी जय - जयकार है करते सभी ॥ ४

भजन नं० ७८

दर्शन करके महावीरा चले जायेंगे ।
जब बुलाओगे तब ही आजायेंगे ।। टेक
तेरे दर्शन की जब मैं इन्तजारी करी,
हुआ दीदार तेरा मेरी शुभ घडी ।
याद सारी उमरिया किये जायेंगे ।। १
यह न पूछो कि यहाँ से किधर जायेंगे ।
वह जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ।।
हम भी माला तुम्हारी रटे जायेंगे ।
जिसके हृदय मे वीर तेरा ध्यान है ।। २
वो ही ज्ञानी गुणी वीर इन्सान है ।।
ध्यान महावीर जी का धरे जायेंगे ।। ३
टूट जावे न माला कही प्रेम की ।
वह रतन है कि मोती विखर जायेंगे ।। ४
आप मानो न मानो खुशी आपकी ।
हम मुसाफिर है कल अपने घर जायेंगे ।। ५

भजन नं. ७९

चाँदनपुर महावीर को शीश झुकाऊँ मैं,
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं ।
सुनता मेरी कौन है, किसे सुनाऊँ मैं ।।
जब से नाम भुलाया तेरा, लाखों कष्ट उठाये है ।
ना जाने इस जीवन अन्दर, कितने पाप कमाये है ।।
शर्मिन्दा हूँ आपसे क्या बतलाऊँ मै ।।

मेरे दुष्ट कर्म ही मुझको, तुमसे ना मिलने देते हैं।
जब मैं चाहूँ दर्शन पाना, रोक तभी वह लेते है।।
कैसे भगवन् आपके दर्शन पाऊँ मै ।।
मोह मिथ्या में पड़ कर स्वामी, नाम तुम्हारा भूला था।
जिसको समझा था सुख मैंने, वह दुख का गोरख धन्धा था।।
मोह माया को छोड़ कर शरण खड़ा हू मैं ।।
बीत चुकी सो बीत चुकी, अब शरण तुम्हारी आया हूँ।
दर्शन भिक्षा पाने को, दो नयन कटोरे लाया हूँ।।
मन में प्रभु अपने ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं ।।

भजन नं० ८०

सब मिल के आज जय कहो श्री वीर प्रभु की।
मस्तक झुका के जय कहो श्री वीर प्रभु को।। टेक
विघनों का नाश होता है लेने से नाम के।
माला सदा जपते रहो श्री वीर प्रभु को ।। १
ज्ञानी बनो दानी बनो बलवान भी बनो।
अकलङ्क सम बन के कहो जय वीर प्रभु की।। २
होकर स्वतन्त्र धर्म की रक्षा सदा करो।
निर्भय बनो अरु जय कहो श्री वीर प्रभु की ।। ३
तुझको भी अगर मोक्ष की इच्छा हुई है 'दास'।
उस वाणी पै श्रद्धा करो श्री वीर प्रभु को ।। ४

भजन नं. ८१

मन हर तेरी मूरतिया मस्त हुआ मन मेरा।
तेरा दर्श पाया, पाया, तेरा दर्श पाया ।। टेक।।
प्यारा-प्यारा सिहासन अति भा रहा, भा रहा।

उस पर रूप अनूप तिहारा छा रहा, छा रहा ॥
पद्मासन अति सोहै रे नैना निरख अति चित
ललचाया ॥ पाया तेरा० ॥
प्रभु भक्ति से भव के दुख मिट जाते है, जाते है।
पापी तक भी भवसागर तिर जाते हैं, जाते है ॥
शिवपद वोही पाया रे शरणागत में तेरी जो जीव
आया ॥ पाया तेरा० ॥
साँची कहूँ खोई निधि मुझको मिल गई, मिल गई।
उसको पाकर मन की अँखियाँ खुल गई खुल गई ॥
आशा पूरी होगी रे आशा लगाये 'वृद्धि' तेरे
द्वार आया ॥ पाया तेरा० ॥

भजन नं० ८२

प्रभु दर्श कर आज घर जा रहे है।
झुका तेरे चरणो मे सर जा रहे है ॥
यहाँ से कभी दिल न जाने को करता,
करे कैसे जाए बिना भी न सरता।
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे है ॥ प्रभु दर्श कर० ॥१
हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढाई।
यह खाली फकत जोर कर जा रहे हैं ॥ प्रभु दर्श कर० ॥२
सुना तुमने तारे अधम चोर पापी,
न धर्मी सही फिर भी तेरे है हामी।
हमें भी तो करना अमर जा रहे है ॥ प्रभु दर्श कर० ॥ ३ ॥
बुलाना यहाँ फिर भी दर्शन को अपने,
सुमन तुम भरोसे लगे कर्म हरने।

जरा लेते रहना खबर जा रहे है ।। प्रभु दर्श कर० ।। ४ ।।

भजन नं० ८३

अब तो बँधाओ मोरी धीर, हो वीर स्वामी ।
कब से खड़ा हूँ तोरे तीर, हो वीर स्वामी ।। टेक ।।
सागर से श्रीपाल निकाला, रैन मंजूषा का दुख टाला ।
आके हरी सब पीर, हो वीर स्वामी ।। १ ।।
सीताजी की अग्नि परीक्षा, करी आन देवो ने रक्षा ।
पावक से हुआ नीर, हो वीर स्वामी ।। २ ।।
रानी ने जब सेठ सताया, शूली पर था उसे चढाया ।
तुमने हरी दुःख पीर हो वीर स्वामी ।। ३ ।।
मानतुङ्गजी श्री मुनिराया, तालों में था बन्द कराया ।
झड़ पड़ी तुरन्त जंजीर, हो वीर स्वामी ।। ४ ।।
पिण्डी फटने के अवसर पर, तुमको ही ध्याया था मुनिवर ।
प्रकट हुए चन्द्र वीर, हो वीर स्वामी ।। ५ ।।
जिस जिसने प्रभु तमको चितारा, उसही का दुख तुमने टारा ।
'प्रेमी' हुआ है धीर हो वीर स्वामी ।। ६ ।।

वीर पालना भजन नं. ८४

मणियो के पालने में स्वामी महावीर झूलें ।
रेशम की डोरी पड़ी मोतियों में गुथवाँ लड़ी ।।
त्रिशला माताजी बड़ी देख कर हृदय में फूलें ।। मणि० ।।
चुटकी बजाय रही हस के खिलाय रही ।
राजा सिद्धारथ मगन होके राज-पाट में भूलें ।। मणि० ।।
कुण्डलपुरवासी सारे बोले है जय जयकारे ।
दर्शन कर प्रेम से महाराज के चरणों में झूलें ।। मणि० ।।

इन्द्रादि देव आये शीश चरणो मे झुकाये।
'किशना' के हृदय की मटकने लगी सारी चूले॥ मणि०॥

पद्मपुरी भजन नं. ८५

मुझ दुखिया की सुनले पुकार भगवन पद्म प्रभो॥ टेक॥
दीनो के हो तुम प्रतिपालक, धर्म के हो सचालक।
किये अनेको सुधार भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ १॥
चारो गति मे दुख वहु पाया, काल अनादि दुख मे गमाया।
आया तोरे दरबार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ २॥
नर्क गति की करुण वेदना, जन्म मरण कर्मन सङ्ग कोना।
मैं भोगे दु.ख अपार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ३॥
सदुपदेश दे लाखो तारे, अ जन जैसे अधम उभारे।
अब मेरी ओर निहार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ४॥
सेवक शान्ति शरणे आया, दर्शन करके पाप नशाया।
जीवन के आधार, भगवन पद्म प्रभो, मुझ० ॥ ५॥

भजन नं. ८६

हे वीर तुम्हारे द्वार पर एक दर्श भिखारी आया है।
प्रभु दर्शन भिक्षा पाने को दो नयन कटोरे लाया है॥
नही दुनियाँ मे कोई मेरा है आफत ने मुझको घेरा है।
प्रभु एक सहारा तेरा है जग ने मुझको ठुकराया है॥
धन दौलत की कछु चाह नही घरबार छुटे परवाह नही।
मेरी इच्छा तेरे दर्शन की दुनियाँ से चित्त घबराया है॥
मेरी बीच भँवर मे नैया है बस तू ही एक खिवैया है।
लाखो को ज्ञान सिखा तुमने भवसिंधु से पार उतारा है॥
आपस में प्रीत व प्रेम नही तुम बिन अब हमको चैन नही।

अब तो तुम आकर दर्शन दो त्रिलोकी नाथ अकुलाया है ॥
जिन धर्म फैलाने को भगवन कर दिया है मन धन अर्पन ।
नव-युवक मण्डल अपनाओ सेवा का भार उठाया है ॥

भजन नं. ८७

(चाल—फिल्म रतन)

जब तुम्हीं चले मुख मोड़ हमें यूँ छोड़ ओ पारस प्यारा ।
अब तुम बिन कौन हमारा ॥ टेक ॥
ये बादल घिर घिर आते है ।
तूफान साथ में लाते है ॥
व्याकुल होकर हमने तुम्हें पुकारा॥ जब तुम० ॥१॥
आखों मे आँसू बहते है ।
सब रो रोकर यूँ कहते है ॥
जब तुम्ही ने हमसे किया किनारा॥ जब तुम० ॥२॥
होटों पर आहें जारी है ।
दिल में बस याद तुम्हारी है ॥
ये राज भटकता फिरे है दर दर मारा ॥ जब तुम० ॥३॥

भजन नं. ८८

(चाल—कव्वाली)

क्यों न अब तक हमारी सुनाई हुई ।
जब चरणों से है लौ लगाई हुई ॥ टेक ॥
तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन ।
पार भव से किया उसको आनन्द घन ॥
क्यों न हम पर प्रभु रहनुमाई हुई ॥ क्यों० ॥ १ ॥

सेठ के पुत्र को सर्प ने था डसा।
उसके मन में तेरा ही विश्वास था॥
तेरे मन्दिर मे विष की सफाई हुई॥ क्यों॰ ॥ २ ॥
हुक्म राजा ने सूली का जब था दिया।
तब सुदर्शन ने वह हुक्म सर धर लिया॥
सबके दिल पर घटा गम की छाई हुई॥ क्यों॰ ॥ ३ ॥
सूली देने का सामान तैयार था।
उसके मन मे तो केवल तेरा ख्याल था॥
फिर तो सूली से उसकी रिहाई हुई॥ क्यो॰ ॥ ४ ॥
प्रेम चरणो से तेरे लगाया हुआ।
तेरा "पद्मा" मेरे दिल मे समाया हुआ॥
तेरे दर्शन से सबकी भलाई हुई॥ क्यो॰ ॥ ५ ॥

भजन नं. ८९

हमे वीर स्वामी तुम्हारा सहारा।
कुण्डलपुर के राजा सिद्धारथ प्यारा॥
जो दर्शन दिए फिर दुबारा भी देना।
वह त्रिशलावतीजो के आंखो का तारा॥ १ ॥
सुना करता था जो तारीफ स्वामी।
तो वैसा ही पाया नजारा तुम्हारा॥ २ ॥
अजब मुस्कराहट अजब शान तेरी।
अजब नूर प्यारा है स्वामी तुम्हारा॥ ३ ॥
जो छीना है दिलको न दिलको हटाना।
हटा लोगे दिल को न होगा गुजारा॥ ४ ॥
करो सेवकों की महावीर रक्षा।
है सब प्राणियो को सहारा तुम्हारा॥ ५ ॥

दया हम पे करना दया के हो सागर।
करोगे तुम्ही भव सागर से पारा ॥ ६ ॥
सिवा प्रेम के हम पे देने को है क्या।
झुका बस यह चरणों मे शीश हमारा ॥ ७ ॥
"किशनलाल" जैनी जन्म जन्म जारचे का।
बडे प्रेम से महावीर पुकारा ॥ ८ ॥

भजन नं० ६०

महावीर दया के सागर तमको लाखों प्रणाम।
श्री चाँदनपुर वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥
पार करो दुखियों की नैया।
तुम बिन जग में कौन खिवैया ॥
मात पिता न कोई भैया।
भगतो के रखवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ १ ॥
जब ही तुम भारत मे आये।
सबको आ उपदेश सुनाये ॥
जीवों के आ प्राण बचाये।
बन्ध छुड़ाने वाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ २ ॥
सब जीवो मे प्रेम बढ़ाया।
राग द्वेष सबका छुड़वाया ॥
हृदय से अज्ञान हटाया।
धर्म वीर मतवाले तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ३ ॥
समोशरण में जो कोई आया।
उसका स्वामी परण निभाया ॥
भव सागर से पार लगाया।
भारत के उजियारे तुमको लाखों प्रणाम ॥ महा० ॥ ४ ॥

'किशनलाल' को भारी आशा।
सदा रहे दर्शन का प्यासा॥
धर्म पुरा देहली मे वासा।
कहते बूरा वाले तुमको लाखो प्रणाम॥ महा०॥ ५॥

भजन नं. ६१

(चाल—रसिया)

भाइयो चलो सभी मिल, महावीर जी के दर्शन को।
दर्शन करने को, कर्म जंजीर कतरने को, भाइयो०॥ टेक॥
अतिशय क्षेत्र जगत विख्याता, चमत्कार तत्काल दिखाता।
ऋद्धि सिद्ध सब होय पुण्य भडारा भरने को॥
भाइयो चलो०॥ १॥
जयपुर राज्य जिला हिंडौना, चाँदन गाँव वीर जिन मौना।
तीर नदी गम्भीर महावीरा, रेल उतरने को॥
भाइयो चलो०॥ २॥
बनी धर्मशाला चहुँओरा, बीच बनो मन्दिर चौकोरा।
उन्नत शिखर विशाल बने है स्वर्ग पकडने को॥
भाइयो चलो०॥ ३॥
चरण पादुका बनी पिछाड़ी, नशिया कहते सब नर नारी।
इसी जगह निकली थी प्रतिमा, जग अघ हरने को॥
भाइयो चलो०॥ ४॥
छत्र चढावे चंवर ढुलावे, घृत के भर भर दीप जलावें।
पूजन पाठ भजन विनती जयकार उचरने को॥
भाइयो चलो०॥ ५॥
चैत सुदी मे होता मेला. लाखों गूजर मीना भेला।

जुडे हजारों जैनी भाई, भवसागर तरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ६ ॥
एकम बदी बैशाख हमेशा, रथ निकले श्री वीर जिनेशा ।
"मक्खन" भी वहाँ जाय, प्रभु का नाम सुमरने को ॥
भाइयो चलो० ॥ ७ ॥

भजन नं० ६२

पाये पाये जी वीर* के दर्शन पाये जिया हर्षाये ।
सब टले हमारे पातक पुण्य कमाये ॥ टेक ॥
भूले-भूले अब तक भटके अब ना भटका जाये ।
शिव सुखदानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये ॥
पाये० ॥ १ ॥
भवोदधि तारन तरन जिनेश्वर तुम ग्रन्थों में गाये ।
फिर भक्तों की नाव भँवर में कैसे गोता खाये ॥
पाये० ॥ २ ॥
विघ्न निवारो सकट टारो राखो चरण निभाये ।
फिर 'सोभाग्य' बढ़े भारत का घर घर मङ्गल गाये ॥
पाये० ॥ ३ ॥

भजन नं० ६३

व्याकुल मोरे नयनवा चरण शरण में आया ।
दर्श दिखादो स्वामी दर्श दिखादो ॥ टेक ॥
कर्म शत्रु तो घिर-घिर सिर पर आ रहे ।
भव सागर के दु.ख अनन्ता पा रहे पा रहे ॥

---

* 'वीर' की जगह 'पद्मा' भी बोला जाता है ।

इनसे वेग वचाओ रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटा दो स्वामी दु ख मिटादो ।। व्याकुल० ।।१।।
तीन भुवन में तुमसा स्वामी और न कोई पाते है।
स्वामी तुम विन गैर और नही पाते है, पाते है।।
पथ दिखलाओ रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटादो, स्वामी दु:ख मिटादो ।। व्याकुल० ।।२।।
सव जीवों का दुख से वेडा पार करो,पार करो ।
'सेवक' का भी स्वामी अव उद्धार करो, उ० करो।।
सव ही शीश नवावे रे अर्ज हमारी मानो।
दु:ख मिटादो, स्वामी दुख मिटादो ।। व्याकुल० ।।३।।

भजन न ६४

वीर क्या तेरी निरालो शान है।
देख के दुनियाँ जिसे हैरान है ।। टेक ।।
जाने क्या जादू भरा है आप में।
हर वशर को आपका ही ध्यान है ।। वीर० ।।१।।
सैकड़ों मीलो से आते है यहाँ।
दर्श विन तेरे दुनियाँ हैरान है ।। वीर० ।।२।।
जिसने जो हसरत तुम्हे जाहिर करी।
आपने पूरा किया अरमान है ।। वीर० ।।३।।
जो भी आया आपके दरबार में।
उसको मुँह माँगा दिया वरदान है ।। वीर० ।।४।।
जीव हिंसा को हटाया आपने।
सारे जीवो पर तेरा अहसान है ।। वीर० ।।५।।
रास्ता मुक्ति का बतलाया हमे।
तेरा ममनु सारा हिन्दुस्तान है ।। वीर० ।।६।।

कामधेन भी है ज्योती आप मे।
वो ही शक्ति आप में परधान है।। वीर० ।।७।।
है दया करना धर्म इन्सान का।
वीर स्वामी का यही फरमान है।। वीर० ।।८।
'राज' पर भी हो इनायत की नजर।
आपके सन्मुख खड़ा नादान है।। वीर० ।।९।।

भजन नं० ९५

म...वीर स्वामी, हो अन्तर यामी।
हो त्रिशला नन्दन, काटो भव फन्दन।।
बाले ही पन में, तप कीना बन मे।
दरश दिखाया, भूल न जाना।।
पार लगाना, कृपा निधाना।
महिमा तुम्हारी, है जग में न्यारी।।
सुधि लो हमारी, हो व्रत के धारी।
बन खण्ड तप करने वाले, केवल ज्ञान के पाने वाले।
सद् उपदेश सुनाने वाले, हिसा पाप मिटाने वाले।।
हो तुम कष्ट मिटाने वाले, पशुवन बन्धन छुड़ाने वाले।
स्वामी प्रेम बढाने वाले, हो तुम नियम सिखाने वाले।।
पूरण तप के करने बाले, भगतों के दुख हरने वाले।
पावापुर में आने वाले, स्वामी मोक्ष के जाने वाले।।

भजन नं० ९६

मैने छोडा सभी घरबार, भगवान तेरे लिये।
तुमको टीला खोद निकाला, मेहनत से यह छप्पर डाला।
रह सब परिवार।। भगवन० ।। १ ।।
जोधराज को तुमने बचाया, फिर मन्दिर उसने बनवाया।

जैनो आ रहे अपार ॥ भगवन० ॥ २ ॥
दवे पडे जब कोई न आया, तुम्हे न जाने दूँ मन भाया।
चाहे हो जाये तकरार ॥ भगवन० ॥ ३ ॥
चढ़े वहाँ जो मेरा नारियल, सोना चाँदी केशर तन्दुल।
थी यहाँ गऊ की धार ॥ भगवन० ॥ ४ ॥
जो तुम मन्दिर में जाओगे, प्रीत मेरी सब बिसराओगे।
हो जाऊँगा मै ख्वार ॥ भगवन० ॥ ५ ॥
वोवी बच्चे सब चिल्लाये, उधर खडी गैया डकराये।
मर जाये धरणि सर मार॥भगवन०॥६॥
असर किया वो ग्वाल रुदन ने, तभी वहाँ हितकार गगन से।
सुर द्वार कराई पुकार ॥ भगवन० ॥७॥
प्रतिमा यहाँ से जब यह जावे, गाडा को तू हाथ लखावे।
पहले छत्री करे तय्यार ॥ भगवन० ॥८॥
उसका सदा चढावा खाना, जब जाहे तब दर्शन पाना।
सदा रक्खे खुला दरवार ॥ भगवन०॥९॥

भजन नं० ६७

वीरा वीरा* मै पुकारूँ तेरे दर के सामने।
मन तो मेरा हर लिया महावीरजी भगवान ने ॥
मोहिनी छवि को दिखादो अब मेरे भगवन मुझे।
तेरी चरचा हम करेंगे, हर बशर के सामने ॥वीरा०
टवते श्रीपाल को तुमने बचाया है प्रभो।
द्रोपदी की लाज राखी कौरव-दल के सामने।.वीरा०
हारकर बनकर सरप जब खा लिया उस सेठ को।
सोमाने सुमरण किया महावीरजी के नाम को॥वीर०

* वीरा वीरा की जगह पद्मा २ भी बोला जा सकता है।

चित्त हम सबका भटकता, वीर के दीदार को।
कर जोड़ के देखा करूँ, मैं तेरे दर के सामने ॥ वीरा० ॥

भजन नं० ६८ (श्रद्धा के फूल)

एक प्रेम-पुजारी आया है, चरणों में ध्यान लगाने को।
भगवान तुम्हारी मूरत पर, श्रद्धा के फूल चढ़ाने को ॥
तुम त्रिशला के दृग-तारे हो, पतितों के नाथ सहारे हो।
तुम चमत्कार दिखलाते हो, भक्तों के मान बढ़ाने को ॥ १ ॥
तुमरे वियोग में हे स्वामी ! हृदय-व्यथा बढ़ती जाती।
भारत में फिर से आ जाओ, जिन-धर्म का रङ्ग जमाने को ॥२
उपदेश धर्म का देकर के, फिर धर्म सिखादो भारत को।
आओ एक बार प्रभु आओ, हिंसा का नाम मिटाने को ॥ ३ ॥
प्रभु तुमरे भक्त भटकते है, तेरे नाम को हरदम रटते है।
'त्रिलोकी' नित्य तरसता है, प्रभू आपके दर्शन पाने को ॥४॥

भजन नं० ६६

बीर स्वामी का सुन्दर अधर पालना।
सज रहा सिद्धारथ के घर पालना ॥ टेक ॥
जिसमें रेशम की सुन्दर पड़ी डोरियाँ।
सच्चे मोती लगाये—चहुँ ओरियाँ ॥
है सुशोभित यह सुन्दर अधर पालना ॥ वीर० ॥
भुल-भुला माता त्रिशलावती ले रही।
वीर के हाथ मे हँस के जब दे रही ॥
वीर का दिल रहा बेखतर पाला ॥ वीर० ॥२॥
देव इन्द्रादि मिल पुष्प बरसा रहे।
सारे नर-नारी हृदय मे हर्षा रहे ॥

देखने जा रहा हर वशर पालना ॥ वीर० ॥ ३ ॥
जन्म-उत्सव का दिन मिल मनाओ सभी ।
यह 'किशन' ने लिखा है अमर पालना ॥ वीर० ॥ ४ ॥

भजन नं० १००

जिस माया पर तू इतराये, आखिर में कुछ काम न आये ।
क्यो ना ध्यान लगाये, वीर से बावरिया ।
जाना देश पराये झमेला दो दिन का ॥ टेक ॥
जीवन तेरा है एक सपना, इस दुनियाँ में कोई न अपना ।
हंस अकेला जाये, वीर से० ॥ १ ॥
माता बहना चाची ताई, पिता पुत्र और भाई जवाँई ।
मतलब से प्रीत लगाये, वीर से० ॥ २ ॥
जो हैं तुमको सबसे प्यारे, मृतक देख तुमसे हों न्यारे ।
कोई सङ्ग मे न जाये, वीर से० ॥ ३ ॥
जिस तन को खूब सजाये, आखिर मिट्टी में मिल जाये ।
फिर पीछे पछताये, वीर से० ॥ ४ ॥
जिस माया पर तू इतराये, आखिर में कुछ काम न आये ।
यही पड़ी रह जाये, वीर से० ॥ ५ ॥
धर्म ही आखिर काम में आये, हरदम तेरा साथ निभाये ।
'त्रिलोकीनाथ' समझाये, वीर से० ॥ ६ ॥

भजन नं० १०१

जब तेरी डोली निकाली जायगी ।
बिन मुहूरत के उठाली जायगी ॥
उन हकीमो से ये कह दो बोल कर ।
दवा करते जो किताबे खोल कर ॥

यह दवा हरगिज न खाली जायगी ॥ १ ॥
क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार ।
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार ॥
मार कर गोली गिराली जायगी ॥ २ ॥
अय मुसाफिर क्यो पसरता है यहाँ ।
ये मिला तुमको किराये का मकां ॥
कोंठरी खाली कराली जायगी ॥ ३ ॥
जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया ।
मरते दम लुकमान भी यह कह गया ॥
यह घड़ी हरगिज न टाली जायगी ॥ ४ ॥
चेत "भैया" अब श्री जिनवर भजो ।
मोह रूपी नीद को जल्दी तजो ॥
वरना यह पूँजी उठाली जायगी ॥ ५ ॥

भजन नं, १०२

(चाल—तेरे कूँचे मे अरमानो को)

तेरे दरबार में स्वामी सहारा लेने आया हूँ ।
तेरे दर्शन को पाने की तमन्ना लेके आया हूँ ॥
घेरा मोहे अष्ट कर्मों ने, बचाओ आन कर मुझको ।
यही अरदास ले करके, तेरे चरणों में आया हूँ ॥ १ ॥
हृदय में भक्ति, दिल में प्रेम और नयनों में तुम मेरे,
और नयनो मे तुम मेरे ।
जरा तो देखले आकर, तेरे दर्शन का प्यासा हूँ ॥ २ ॥
आया हूँ द्वार पर तेरे, प्रभुजी मुक्ति बतला दो,
प्रभुजी मुक्ति बतला दो ।
दया कर तारो सेवक को, शरण तेरी में आया हूँ ॥३॥

भजन नं. १०३

(चाल—एक दिल के टुकडे हजार हुए)

यह दिन था मुबारिक शुभ थी घड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु।
तब नरक मे भी थी शांति पड़ी, जब जन्मे थे महावीर प्रभु ॥टेक॥
तिथि चैत सु तेरस प्यारी थी, वह धन्य कुण्डलपुर नगरी।
सिद्धार्थ पिता त्रिशला उर से, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥१॥
जब धर्म-कर्म था नष्ट हुआ, आचार जगत का बिगड़ चला।
तब शुद्धाचार सिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥२॥
जब यज्ञ मे लाखो पशुओ का, होता था बलिदान महा।
तब हिंसा दूर हटाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥३॥
जब कर्तावाद अज्ञान बढा, सिद्धार्थ कर्म को भूल गये।
तब स्याद्वाद समझाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥४॥
जब भटक रहे थे भव वन मे, शिवराह नजर नही आता था।
तब मुक्ति का मार्ग दिखाने को, वे जन्मे थे महावीर प्रभु ॥५॥

भजन नं. १०४ (वीर निर्वाण)

(चाल—चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है)

धन-धन कार्तिक अमावस प्रभात है।
चौदस की रात है, यह चौदस की रात है ॥ टेक ॥
पावापुरी वन दिल को लुभा रहा।
आनन्द बादल ये कैसा छा रहा।
जै-जैकार झड़ी लगी मानो बरसात है ॥ १ ॥

ऊषा है फूली सवेरा भी खो गया।
रात्रि भी खो गई, अँधेरा भी खो गया।
गगन मे बाजे बजे कोई करामात है ॥ २

गये आज मोक्ष में वीर भगवान जी ।
रत्नों की रोशनी देवों ने आन की ।
पर्व ये दिवाली चला देशों में विख्यात है ॥ ३ ॥

सभी ज्ञान केवल है गौतम ने पा लिया ।
वही 'शिव' रास्ता हमको दिखा दिया ।
खुशियां मनायें क्यों न खुशी की ये बात है ॥ ४ ॥

भजन नं. १०५ (श्रीमहावीरजी की महिमा)

वीर तुम्हारा ध्यान लगाकर, जिसने आन पुकारा है ।
पार हुआ भव दुख से वोही, जिसने लिया सहारा है ॥
चांदनपुर प्रभु निकस आपने, जग का काज सँवारा है ।
सच्ची भक्ति पूरा करती, मन का भाव विचारा है ॥
भवन विशाल दयाल विराजें, पीछे नदी किनारा है ।
अन्दर बाहर वेदी ऊपर काम सुनहरी न्यारा है ॥
लगा सामने पङ्खा खचे, गन्दी पवन बिनारा है ।
धूप की बत्ती घृत का दीपक, सन्मुख जले अपारा है ॥
चमक रत्न से रहा शिखर पर, बिजली बल्व उजारा है ।
चार मील कटले तक पक्की, सड़क बनी सुखकारा है ।
छहों धर्मशाला में जारी, जल निर्मल नल द्वारा है ।
अञ्जन से बत्ती खम्बों पर, जलें कतार कतारा है ॥
वीर चरण पर छतरी अन्दर, चढ़ै दूध की धारा है ।
देश देश के यात्री आते, रहता जय-जय जयकारा है ॥
फाटक ऊपर निशि दिन बजता, शहनाई नक्कारा है ।
घन घन घण्टा घड़ी घूंघरू, घड़नावल झङ्कारा है ॥
हारमोनियम, बाजा, तंबला गुणगायन गुञ्जारा है ।
दर्शन पूजन भवन भावना, रहती बारम्बारा है ॥

तीनों शिखर वीर का झण्डा, लहर लहर फहराया है।
स्याह लाल गुल वर्ण वर्ण का, दरशा रहा नजारा है।।
निकट रेल स्टेशन पर भी, स्वामी नाम तुम्हारा है।
नया कीर्तन "सुमत" आपका, सदा रचे मन हारा है।।
त्रिशला नन्दन पाप निकन्दन, इतना बोल हमारा है।
ऐसे पुण्य क्षेत्र के दर्शन, हमको हो हर लारा है।।

भजन नं. १०६ (महावीर की अमर कहानी)

सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो महावीर की अमर कहानी ।। सुनो ।।
तीस वर्ष का त्रिशलानन्दन सन्मति घर से निकला।
सिद्धार्थ नृप का प्रिय कुमार वह कर्म काटने निकला ।।
राज पाट परिवार त्याग के वह जङ्गल मे आया।
वाहर भीतर हुआ दिगम्बर ज्ञान ध्यान ध्याया ।। सुनो ।।
घोर तपस्या करके उसने बारह वर्ष बिताये।
कर्म काट के केवल पाया सब प्राणी हर्षाये।।
यज्ञो मे नर पशु मरते थे आकर शीघ्र वचाये।
मोह नीद से जगा जगाकर सम्यक् ज्ञान कराये ।। सुनो ।।
धर्म उपदेश देकर जग को सुख मे उसे बनाया।
स्याद्वाद का पाठ पढ़ा के हट का भूत भगाया ।।
मोक्ष - मार्ग बतला कर प्रभु ने प्राणी मुक्त कराया।
पाँवापुर के बीच सरोवर बन्धन तज शिव पाया ।। सुनो ।।
बापू ने भी शिक्षा ले देश मुक्त करवाया।
चला गया वो वीर मार्ग से लौट न जग मे आया ।।
सत्य अहिंसा ज्ञान रूप जो वीर ने धर्म बताया।
सिद्ध कहे सुज्ञो ने उसकी भक्ति से अपनाया ।। सुनो ।। सुनो ।।

भजन नं. १०७ (महावीर-भक्ति)

जो तेरी याद महावीर आती रहेगी,
तो कर्मों की उलझन भी जाती रहेगी।
बुरा यह हुआ जो मैं तुमसे अलहदा,
तुम्हारी जुदाई सताती रहेगी॥
यह मुमकिन नही मै तुम्हें भूल जाऊँ,
मेरी जान भी चाहे जाती रहेगी।
जमाना तो बदला मगर हम न बदले,
नजर तेरे कदमों में जाती रहेगी॥
जुदा आप मुझसे रहेंगे तो क्या है,
मेरी आरजू तो बुलाती रहेगी।
मेरे हाले दिल को सुना तो यूं बोले,
यह किरनों की झलकी तो आती रहेगी॥
नही छोडा तीर्थङ्करों को कर्म ने,
तेरी भी मुसीबत यह जाती रहेगी।
छिपा है जो सिद्धों में जाकर तू मुझसे,
नजर मेरी तुझ पै वही जाती रहेगी॥
मेरा दिल बना है तेरा डाकखाना,
खबर इसमें तेरी आती रहेगी।
गया छोड़ लिख कर पता तू जो अपना,
तेरा भेद वाणी बताती रहेगी॥
मैं पहुँचूँगा चरणों में जब वीरवर के,
जो उलफत हुई है जाती रहेगी।
खिंचा है जो नक्शा 'मुरारी' के दिल पर,
मिटेगा न दुनियाँ मिटाती रहेगी॥

भजन नं. १०८

मनोकामना

मेरे मन मन्दिर में आन पधारो, महावीर भगवान् ॥ टेक ॥

भगवान तुम आनन्द सरोवर।
रूप तुम्हारा महा मनोहर ॥
निशिदिन रहे तुम्हारा ध्यान, पधारो महावीर भगवान् ॥१॥

सुर किन्नर गणधर गुण गाते।
योगी तेरा ध्यान लगाते ॥
गाते सब तेरा यश गान, पधारो महावीर भगवान् ॥२॥

जो तेरी शरणागत आया।
तूने उसको पार लगाया ॥
तुम हो दयानिधे भगवान्, पधारो महावीर भगवान् ॥३॥

भक्त जनों के कष्ट निवारे।
आप तरे और हमको भी तारे ॥
कीजे हमको आप समान, पधारो महावीर भगवान् ॥४॥

आये है अब शरण तिहारी।
पूजा हो स्वीकार हमारी ॥
तुम हो करुणा दया निधान पधारो महावीर भगवान् ॥ ५ ॥

रोम रोम मे तेज तुम्हारा।
भूमण्डल तुमसे उजियारा ॥
रवि "शशि" तुमसे ज्योतिर्मान, पधारो महावीर भगवान् ॥६॥

भजन नं. १०९

(चाल—तुम्ही चले परदेश ! फिल्म—रतन)

क्यो ! वीर लगाई देर सुनी नहिं टेर हमे न उबारा।
दुनियाँ में कौन हमारा ॥

ये दुख के बादल छाए हैं,
हम बेवश है घबराए हैं।
अब तुम्हीं कहो कित जॉय कही न सहारा ॥ दुनियाँ०
हम माया पर इतराए है,
इस करनी पर पछताए हैं।
यह तुम्हीं देख लो वही होय दृग धारा ॥ दुनियाँ०
विषयों में हमें लुभाया है।
अज्ञान अँधेरा छाया है।
अब सूझ रहा है देव कही न किनारा ॥ दुनियाँ०
तुमने सब संकट तारे हैं,
हम से पापी तारे है।
हम किस गिनती में रहे हमें न सम्हारा ॥ दुनियाँ०
हम तेरा दृढ विश्वास किए,
'कुमरेश' हृदय में आशा लिए।
अड़ गए पकड कर यही तुम्हारा द्वारा ॥ दुनियाँ०

भजन नं. ११०

कुण्डलपुर के श्री महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर।
जय महावीर जय महावीर भज प्यारे तू श्री महावीर ॥ टेक
मुक्ति नायक श्री अति वीर जय जय जय वर्धमान गुणधीर ॥१
त्रिशला नन्दन गुण गम्भीर, राय सिद्धारथ के सुत वीर ॥२
मोह महानल को तुम वीर, कर्म जलद को हरण समीर ॥३
तप कर तोर कर्म जजीर, केवल ज्ञान लहा बलवीर ॥४
दे उपदेश हरी जग पीर, शिवपुर पहुँचे भव के तीर ॥५
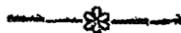
भजन नं० १११

पल पल बीते उमरिया मस्त जवानी जाए।
प्रभु गीत गाले गाले प्रभु गीत गाले ॥
प्यारा प्यारा बचपन पीछे खो गया खो गया।
यौवन पाकर तू मतवाला हो गया हो गया ॥
वार-बार नही पावे रे गङ्गा कहती है। प्यारे मौका है नहाले
गाले प्रभु० ॥
कैसे-कसे बाँके जग मे हो गये हो गये।
खेल-खेल के अन्त जमी पर सो गये सो गये ॥
कोई मगर नही आये रे, पंछी ये फूल रङ्गीले, मुर्भाने वाले
गाले प्रभु ॥
तेरे घर में माल मसाले होते है होते है।
भूख के मारे कई विचारे रोते है रोते हैं॥
उनकी कौन खबर लेरे जिनके नही तन पै कपडा रोटियो के
लाले, गाले प्रभु० ॥
गोरा-गोरा देख बदन क्यो फूला है।
चार दिन की जिन्दगानी पै भूला है भूला है ॥
जीवन सुभल बनाले रे केवल मुनि समझाये ओ जाने वाले
गाले प्रभु० ॥

भजन नं. ११२

नयनो में जिसके समा गई प्रतिमा श्री महावीर की।
तारो भरी रात थी सुन्दर वह ख्वाब था,
टीले की केवल खुदाई का ख्याल था।
ग्वाले की किस्मत जगा गई प्रतिमा श्री महावीर की ॥
जयपुर रियासत का शाही फर्मान था,

जब तोप का वो निशाना दिवान था।
शोले को ठण्डा बना गई प्रतिमा श्री महावीर की ॥

मन्दिर अनोखा वह तैयार होगा,
जिससे अधिक धर्म प्रचार होगा।
मन्त्री को सब समझा गई प्रतिमा श्री महावीर की ।।

जब बन्द किया सन् तितालीस का मेला,
नाजिम पुलिस भेज फिर तब ही खोला।
सुमत नृप को अतिशय दिखा गई प्रतिमा श्रीमहावीर की।।

भजन नं० ११३

(चाल—छुप-छुप खड़े हो जरूर कोई बात है)

गहरी-गहरी नदिया नाव बिच धारा है,
तेरा ही सहारा है २ ॥ १ ॥

डगमग करती है कर्मों के भार से,
मारग भूल रहे घोर अन्धकार से।
डूबती इस नाव का तू ही खेवनहार है,
तेरा ही सहारा है, २ ॥ २ ॥

अग्नि का नीर हुआ तेरे प्रताप से,
कुष्ठ रोग दूर हुआ तेरे नाम जाप से।
भव-भव दुख का तू ही मेटनहारा है,
तेरा ही सहारा है, २ ॥ ३ ॥

वीतराग छवि लगे तेरी अति प्यारी है,
चरणों पै जाऊँ नाथ बलि, बलिहारी है।
रूप तेरा देख कर 'शान्ति' चित्त धारा है,
तेरा ही सहारा है, २ ॥ ४ ॥

भजन नं० ११४

महावीर भोले भाले तुमको लाखो प्रणाम।
हो चाँदनपुर वाले तुमको लाखो प्रणाम॥
पार करो भक्तों की नैया, तुम बिन जग मे कौन खिवैया।
मात पिता ना कोई भैया, भक्तों के रखवाले तुमको० ॥ १ ॥
तुम ही जब भारत मे आये, सबको आ उपदेश सुनाये।
जीवो के आ प्राण बचाये, बन्ध छुडाने वाले तुमको० ॥ २ ॥
हर जीवो में प्रेम बढ़ाया, राग द्वेष सबका छुडाया।
हृदय में आ ज्ञान सिखाया, धर्म वीर मतवाले तुमको० ॥ ३ ॥
समोशरण में जो कोई आया, उसका स्वामी परण निभाया।
भव सागर से पार लगाया, भारत के उजियारे तुमको ॥ ४ ॥
'किशनलाल' को भारी आशा, सदा रहे दर्शन का प्यासा।
धर्मपुरा देहली में बासा, कहते बूरा-वाले तुमको० ॥ ५ ॥

भजन नं० ११५ (मनोभावना)

(चाल—कव्वाली)

मेरे भगवान मेरी यही आस है।
पार कर दोगे बेडा यह विश्वास है॥
मन के मन्दिर में आँखो के रस्ते तुझे।
मेरे भगवान लाना पडा है मुझे।
मेरे दिल से न जाना यह अरदास है॥ मेरे० ॥१॥
तेरे रहने को मन्दिर बनाया है मन।
तेरे चरणो पै अरपन किया तन व धन।
मेरे दिल से न जाओगे विश्वास है॥ मेरे० ॥२॥
प्रेम की डोर से बाँध करके प्रभो।
मन के मन्दिर मे रक्खूँगा तुमको प्रभो।

तुम्हें जाने का दूँगा न अवकाश ॥ मेरे० ॥३॥
कैसे आओगे जाओ तो त्रिशरा ललन ।
तुमको जाने न दूँगा मैं आनन्द घन ।
प्रेम बन्धन "पदमदास" के पास है ॥ मेरे० ॥४॥

भजन नं० ११६

चाँदनपुर के महावीर हमारी पीर हरो ।
जयपुर राज्य गाँव चाँदनपुर, तहाँ बनो उन्नत निज मदिर ।
तीर नदी गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥१॥
पूर्व बात चली यों आवे, एक गाय चरने को जावे ।
झर आये उसका क्षीर, हमारी पीर हरो ॥२॥
एक दिवस मालिक संग आयो, देखि गाय टीला-खुदवायो ।
खोदत भयो अधीर, हमारी पीर हरो ॥३॥
रैन माँहि तब सुपना दीना, धीरे धीरे खोद जमाना ।
है इसमे तस्वीर, हमीर पीर हरो ॥४॥
प्रात होत फिर भूमि खुदाई वीर जिनेश्वर प्रतिमा पाई ।
भई इकट्ठी भीर, हमारी पीर हरो ॥ ५ ॥
तब ही से हुआ मेला जारी, होय भीड़ हर सात करारी ।
चैत्र मास आखीर, हमारी पीर हरो ॥ ६ ॥
लाखो मेना-गूजर आवे नाचे कूदे गीत सुनावे ।
जय बोले महावीर, हमारी पीर हरो ॥ ७ ॥
जुड़े हजारों जैनी भाई, पूजन भजन करे सुखदाई ।
मन बस तन धरि धीर. हमारी पीर हरो ॥८॥
छत्र चवर सिंहासन लावे, भरि-भरि घृत के दीप जलावें ।
बोले जय गम्भीर, हमारी पीर हरो ॥ ९ ॥

जो कोई सुमरे नाम तुम्हारा, धन सन्तान बढ़े व्यापारा।
हाय निरोग शरोर, हमारी पीर हरो ॥१०॥
"मक्खन" शरण तुम्हारी आयो, पुण्य योग ते दर्शन पायो।
खुली आज तकदीर, हमारी पीर हरो ॥११॥

भजन नं० ११७

गायन (मेला चाँदनपुर)

कि मेला होय रहा चाँदनपुर दरम्यान ॥टेक॥
आ रहे यात्री दूर दूर से, ला रहे दीपक पूर पूर के।
गायन होय रहा चाँदनपुर दरम्यान ॥१॥
अक्षत चन्दन पुष्प जल से दाप धूप नंवेद्य व फल से।
होय रहा चाँदनपुर दरम्यान ॥२॥
मेल जोल से कन्त व कान्ता, प्रेम भाव से भव्य आत्मा।
जय जय बोल रहा चादनपुर दरम्यान ॥३॥
पद्मपुरी मे पद्मप्रभु जी, महावोर मे महावीर जी।
दुखड़ा खोय रहा चाँदरपुर दरम्यान ॥४॥
भवन विशाल वीर का लखकर, वीर प्रभु के चरण सुमर कर।
'सुमत' चित डोल रहा चादनपुर दरम्यान ॥५॥

भजन न० ११८

(रथ मे विराजमान भगवान के सामने गाने का भजन)

प्रभु रथ मे हुए सवार, नककरा बाज रहा ॥ टेक ॥
क्या ठुमक ठुमक रथ चलता है।
ये छत्तर शीश पर हिलता है॥
क्या छाई आज वहार। नक्करा ॥ १ ॥
किस छवि से नाथ विराज रहे।

नासा दृष्टि से छाज रहे ॥
अद्भुत बाजे सब बाज रहे।
सब बोलो जय जय जयकार। नक्कारा० ॥ २ ॥
ढोलक अरु बाजे नकारा है।
बाजे का स्वर अति प्यारा है ॥
तबले का ठुमका न्यारा है।
झाँझन की हो झङ्कार ॥ नक्कारा० ॥ ३ ॥
कहे "किशन" जारचे वाला है।
तेरे नाम पै वो मतवाला है ॥
सब पियो धरम का प्याला है।
हो भव सागर से पार ॥ नक्कारा० ॥ ४ ॥

भजन नं. ११९

पद्म प्रभु

म्हारा पद्म प्रभु जी की सुन्दर मूरत म्हारे मन भाई जी।
बैशाख शुक्ल पचम तिथि आई प्रगटे त्रिभुवन राई जी।
म्हारे मन भाई जी म्हारा पद्म० ॥ टेक

रत्न जड़ित सिंहासन सोहे, जहाँ पर आय विराजा जी।
तीन छत्र थाकाँ सिर सोहे, चौसठ चँवर ढराये जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥१

अष्ट द्रव्य ले थाल सजाकर, पूजा भाव रचाया जी।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥२

समवशरण में जो कोई आया, उसका परण निभाया जी।
जो कोई अन्धा लूला आया, उसका रोग मिटाया जी ॥
म्हारे मन भाई जी० ॥३

जिसके भूत डाकिनी आते, उसका साथ छुड़ाया जी।
लाखो जैन अजैनी भाई, जय जय शब्द उचारे जी॥
म्हारे मन भाई जी० ॥४

आन देव वहुतेरे सेये, प्रभु मिथ्यात छुड़ाया जी।
मूला जाट के बैठ के घट मे, नीव खोदने आया जी॥
म्हारे मन भाई जी० ॥५

फैली प्रभु की महिमा भारी, आते नित नर नारी जी।
ठाड़ी 'सेवक' अर्ज करे छै, जीवन मरण मिटाया जी॥
म्हारे मन भाई जी० ॥

भजन नं० १२०

जय बोलो जय बोलो, श्री वीर प्रभु की जय बोलो। टेक॥

जब दुनियाँ मे जुल्म बढा था, हिंसा का यहाँ जोर बड़ा था।
आप लिया अवतार, प्रभु की जय बोलो॥१॥
पुण्य उदय भारत का आया, कुण्डलपुर में आनन्द छाया।
हो रही जय जय कार, प्रभु की जय बोलो॥२॥
राय सिद्धारथ राजदुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे।
तीन लोक मनहार, प्रभु की जय बोलो॥३॥
भर यौवन मे दीक्षा धारी, राज पाट को ठोकर मारी।
करी तपस्या सार, प्रभू की जय बोलो॥४॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, जग का सब अंधेर मिटाया।
कीना धर्म प्रचार, प्रभू की जय बोलो॥५॥
पशु हिंसा को दूर हटाया, सबको 'शिव' मारग दरशाया।
किया जगत उद्धार, प्रभू की जय बोलो॥६॥

भजन नं० १२१

पद्म प्रभु

कभो याद करके फरियाद सुनके चले आओ हमारे पदमा ॥टेक
भक्ति भाव से पूजा रचाऊँ, मन मन्दिर में तुमको बिठाऊँगा
दुखी जान करके, अपना मान करके चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥१
अँधियारी रात में मैं हूँ किनारे, अब तो यह नैया है तेरे सहारे
क्षमा दान करके, अपना मान करके चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥२
तेरेही खातिर तो निकालाहूँ घरसे, अब दूर न होनाप्रभुमेरी नजरसे
हमने लिया शरण बेड़ा पार करना चले आओ हमारे पदमा
चले आओ हमारे पदमा ॥३
दर्शन दिखाके अब मुँह न मोड़ना, आशा लगायेहूँ दिलको न तोड़ना
बालक जान करके खेवन हार बनके चले आओ हमारे पदमा
चल आओ हमारे पदमा ॥४

भजन नं. १२२

सिद्ध क्षेत्र गायन—श्री सम्मेद शिखर

मेरे स्वामी शिखरजी दिखादो मुझे,
भव फन्द से नाथ छुड़ादो मुझे ॥टेक॥
भक्ति में लीन भक्त जन आते है रात दिन।
ले करके अष्ट द्रव्य को चरणों में कर नमन ॥
आठों कर्मों से नाथ बचादो मुझे।
मेरे स्वामी शिखरजी दिखादो मुझे ॥ मेरे० १
दास चरणन का मुझे अपना ही जानकर।

दोषों की क्षमा कीजिये अज्ञान मान कर ॥
नही मन से तू अपने भुलाये मुझे। मेरे० २
सम्यक्त शुद्ध भाव से आतम को रमा कर।
ससार दु.ख हार से "मङ्गल" को बचाकर ॥
अपना विरद दिखाके निभाना मुझे ॥ मेरे० ३

भजन नं० १२३

शान्तिनाथ स्तुति

छुडादो छुड़ादो छुड़ादो शान्तिनाथ।
सकट से मुझको बचादो शान्तिनाथ ॥ टेक ॥
सती सीता का शील बचाया, श्रीपाल को पार लगाया,
मैना सुन्दरी का भाग्य दिखाया,
दुखो से अब तो छुड़ाओ शान्तिनाथ ॥ छुड़ा०
श्वान भेक सब ही है तारे, सहते थे जो कष्ट अपारे,
सती सोमा के दुख निवारे,
हमको भी पार उतारो शान्तिनाथ ॥ छुड़ा०
सिंहासन सूलो से रचाया सेठ सुदर्शन पार लगाया,
अंजन के कर्मों को नसाया,
कर्मों से हमको छुडादो शान्तिनाथ ॥ छुडा०
सबका प्रभुजी कष्ट मिटाया, सन्मार्ग सबको दिखलाया,
"मङ्गल" भी है शरण मे आया,
आवागमन से छुडादो शान्तिनाथ ॥ छुड़ा०

भजन नं. १२४

सम्मेद शिखरजी

मै नो जाऊँ शिखर जी के बन्दन को,
बन्दन को स्वामी बन्दन को। मैं तो० ॥ टेक ॥

बीस जिनेश्वर मोक्ष गये है, दरश करत सब पाप क्षये है,
झट पट पाप निकन्दर को। मै तो० १
रस प्रभुजी की टोक जो सोहें, भक्ति करत मन को मम मोहें,
मै तो जाऊँ पूजन बन्दन को। मै तो० २
क्ति से जो दर्शन करते, नरक पशुगत दुख नहि भरते,
चलो दुष्ट करम के खडन को। मै तो० ३
'ङ्गलमय' वह पर्वत सारा, जय जय करत जहँ नर नारा,
है आनन्द छायो जिनवर को। मै तो० ४

भजन नं० १२५

मैं पूजूं पूजूं शिखर समेद महान ॥टेक॥
तीर्थङ्कर जिनराज बीस ने, लहो भक्त पद आन।
और मुनीश्वर विन गिन्ती के भये सिद्ध भगवान ॥
जनम जनम के पातक विनसे मिले और निर्वान।
वह वरदान चहे तुम 'जुगमन' की जो आप समान ॥

भजन नं० १२६

सखी चलो शिखर सम्मेद करन दर्शन को।
मोरे नैन रहे दिन रैन तरस परसन को ॥ टेक ॥
वहाँ बीस जिनेश्वर और मुनीश्वर महा मोक्ष पद पायो।
चौबीस जिनेश्वर अनन्ता इसी क्षेत्र शिव जायो ॥
यह धाम अनादि रहे आबादी यही नेम है जानो।
तीर्थंकार के मोक्ष मिलन का यही ठिकाना मानो ॥
करे वन्दना मन वच काय, सफल जन्म हो जायो।
पशु नरक गति नहिं डोले, नर सुर सुख बहु पायो ॥
परतिज्ञा जिन शासन में यह, कही भव्य दृढ लायो।
भव उनचासन तक वह प्राणी शिव रमणी पद पायो ॥

'जुगमंन' ने गुण शिखर महात्तम, हर्ष हर्ष उचारो।
श्री पार्श मुझ पर कृपा करके जनम मरण दुख टारो॥

भजन नं० १२७

मेरे प्रभू तू मुझको वता तेरे सिवा मैं क्या करूँ।
तेरी शरण का छोड़कर जग की शरण को क्या करूँ॥
कलियो मे बस रहे हो तुम फूलो मे खिल रहे हो तुम।
मेरे ही मन मे आ बसो, मन्दिर में जाके क्या करूँ॥
चन्द्रमा वन के आप हो, तारों में जगमगा रहे।
तेरी चमक के सामने दीपक जला के क्या करूँ॥
सारी उमर खतम हुई तेरी निगाहें ना फिरी।
कर्मो के फल को भोगता कैसे वसर किया करूँ।
वेकल हूँ नाथ रात दिन, चैन नही है आप बिन
हरदम चलायमान मन, इसका उपाय क्या करूँ।
शिक्षा यह मुझको दीजिये, अपनी शरण मे लीजिये
ऐसा प्रवन्ध कीजिये, सेवा मे ही रहा करूँ।

भजन नं० १२८

नमो देव देवम् महावीर प्यारे, महावीर प्यारे,
महावीर प्यारे
सदा सङ्कटो में तुम्ही हो सहायक,
अभय सम्पदा के तुम्ही हो प्रदायक।
तुम्ही हो पिता माता रक्षक हमारे॥ नमो देव०
तुम्ही दीन दुखियो के दुख के हो हरता,
तुम्ही सर्व जीवो के हो सुक्ख कर्ता।
तुम्ही दीन दुखियों के केवल सहारे॥ नमो देव०
तुम्ही ने श्रीपाल सागर से तारा,
तुम्ही ने तो अन्जन सा पापी उबारा।

मुझे भी करो नाथ जल्दी किनारे ॥ नमो देव० ॥
तुम्हीं ने सती सोम का सत बचाया,
तुम्हीं ने तो विषधर को माला बनाया ।
कहाँ तक बताये प्रभु गुण तुम्हारे ॥ नमो देव० ॥

भजन नं. १२६

पार्श्वनाथ

पार्श्वनाथ दुखहारी तुमको लाखों प्रणाम ॥ टेक ॥
हिंसादिक पापों ने घेरा, मन में किया विराट अँधेरा ।
सहायक कोई नही है मेरा,
तुम हो पर-उपकारी तुमको लाखों प्रणाम । पार्श्व०
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के हो प्यारे,
नाग नागनी जरते उभारे,
तुम हो सङ्कट हारी तुमको लाखों प्रणाम । पार्श्व०
भव से तारक नाम तुम्हारा, सुख को देना काम तुम्हारा,
मोक्ष - महल है धाम तुम्हारा,
तुम हो जग - हितकारी तुमको लाखों प्रणाम । पार्श्व०
श्रीपाल को पार किया ज्यों, अञ्जन का उद्धार किया ज्यों,
"मङ्गल" मुझे बिसार दिया क्यों,
तुम हो समता धारी तुमको लाखों प्रणाम । पार्श्व०

भजन नं. १३०

राजगिरी

जहाँ राजगिरी महावीर बन्दों ता भूमी ॥ टेक ॥
समोशरण महावीर विराजें,
द्वादशाङ्ग कथनी कर राजे ।
क्षेत्र पञ्चगिरी धीर बन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० १ ॥

पर्वत नीचे कुण्ड बने हैं,
कोई उष्ण कोई शीत धरे हैं।
ऐसे है गम्भीर वन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० २ ॥
दर्शन करते जहाँ नर नारी,
जिनवर की प्रतिमा सुखकारी।
मिट जा भव की पीर बन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० ३ ॥
विहार प्रान्त में तीरथ भारी,
'मङ्गल' दर्शन कर सुखकारी।
कटे करम - जञ्जीर वन्दों ता भूमी ॥ जहाँ० ४ ॥

भजन नं. १३१

राजगृही

पञ्च पहाड़ी प्यारी लगे, प्यारी लगे, बड़ी भारी लगे ॥टेक॥
पहिला विपलाचल जहाँ सोहे,
महावीर देखत मन मोहे।
समोशरण बड़ा भारी लगे ॥ पञ्च पहाड़ी० १ ॥
दूजा परवत रत्नागिर है,
दरश करे से सुक्ख मिलत हैं।
जैन सभा बड़ी भारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० २
उदयागिर परबत सुखकारी,
दर्शन करते जहाँ नर नारी,
जिनवर की जयकारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ३
चौथा परवत सोनागिर है,
भक्ति करे से पाप नसत है,
ऐसा वह हितकारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ४
गौतम गणधर ध्यान धरे है,
केवल ज्ञान सु ज्योती लहे हैं,

वैभार गिर सुखकारी लगे ॥ पंच पहाडो० ५
पाँचो परवत पाप हरन को,
'मङ्गल'मयी है सौख्य करन को,
ध्यान जहां बड़ा भारी लगे ॥ पंच पहाड़ी० ६

भजन नं० १३२ पावाँपुरजी

पावाँपुरजी महावीर हमारी पीर हरो ॥ टेक
ध्यान लगाया प्रभु जहाँ जाकर,
तपो भाव से करम भगाकर,
शुभ भारत तलधीर हमारी पीर हरो ॥ पावाँ० १
चारों तरफ कमल उगे है,
बीच मे नाथ ने ध्यान धरे है,
मोक्ष गये आखिर हमारी पीर हरो ॥ पावा २
जल मन्दिर की शोभा भारी,
दूर दूर के नर और नारी,
दर्श करें धर धीर हमारी पीर हरो ॥ पावाँ ३
'मङ्गल' भी दर्शन को आया,
दर्शन करके सुख बहु पाया,
निकलूँ जग के तीर हमारी पीर हरो ॥ पावाँ० ४

भजन नं० १३३ पावाँपुर

मैं बन्दू बन्दू पावांपुर के महाराज ॥ टेक
करम नष्टकर शिवपुरी पहुँचे भये लोक सरताज ।
चारों दिशा में कमल खिले हैं, बीच पाद जिनराज ।
श्रीमहावीर हो दुख 'जुगमन' हो तारण तरण जिहाज ॥

भजन नं० १३४ सम्मेद शिखर

यह हुक्म हुआ सावलियाजी का बाँह पकड मँगाया जी,
भले विराजे जी।
सांवलिया पारस नाथ शिखर पर भले विराजे जी,
देश देश का जातरी आया पूजन लेय चढाया,
आठ दरबले पूजन कीनी मन वाँछित फल पाया ॥ साव० १
यह टोक टोक कर ध्वजा विराजै झालर घटा बाजे।
झालर के झनकारे प्रभू अनहद बाजा बाजै ॥ सांव० २
तीन नाले तेरस चौकी मन वाछित फल पाया।
मन चित भल भल भले आनन्द पाया जी ॥ सांव ३
कोई मागै नाती पोता कै कोई मांगे दान।
जातरी मागै दरशन महा परशादे जो ॥ साव० ४
सुख मल मल को वदन आये महा सुख फल पाया।
चरण कमल का 'खुशालचन्द' को हरप २ गुणगायाजो ॥साव ५

भजन न० १३५ सोनागिरि

सोनागिरी क्षेत्र दिखाना मुझे।
अब तो सोनागिरी क्षेत्र दिखाना मुझे ॥ टेक
कर्म काट मुनी जहाँ से मोक्ष को गये,
पाँच कोडी पचास लाख मुनि जहाँ भये,
ऐसी भूमि के दरशन कराना मुझे ॥ सो० १
मन्दिर जहाँ जिनेन्द्र के सोहति अतीव है,
दर्शन को पाने से बन्ध कटते सदीव हैं,
ऐसे परवत के दर्शन कराना मुझे ॥ सो० २
नारायण कुण्ड भी हैगा जहाँ बना,
भौरे मे जिनवर ने शोभा को है लहा,

ऐसे प्रभु के दरशन कराना मुझे ॥ सो० ३
धर्मशाला जहाँ पर रमनीक है बनी,
विद्यालय भी विद्या को देता वहाँ धनी,
ऐसे क्षेत्र के दरशन कराना मुझे ॥ सो० ४
'मङ्गल' जो शरण तू अघ का नाश कर,
कुगति से बचते है जहाँ दर्श को पाकर,
ऐसे जिनवर के दर्श कराना मुझे ॥ सो० ५

भजन नं० १३६

श्री सिद्धचक्र का पाठ करो दिन आठ, ठाठ से प्रानी,
फल पायो मैना रानी,
मैना सुन्दरि इक नारी थी, कोढ़ो पति लखि दुखियारी थी,
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी ॥ फल० ॥ १ ॥
जो पति का कष्ट मिटाऊँगी, तो उभय लोक सुख पाऊँगी,
नहि अजागल-स्तनवत् निष्फल जिन्दगानी ॥ फल० ॥ २ ॥
इक दिवस गई जिन मंदिर में, दर्शन कर अति हर्षी उर मे,
फिर लखे साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी ॥ फल० ॥ ३ ॥
बैठी मुनि को करि नमस्कार, निज निन्दा करती बार-बार
भरि अश्रु नयन कही मुनि सों दुखद कहानी ॥ फल० ॥ ४ ॥
बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्ध चक्र का पाठ करो।
नही रहे कष्ट का तन में नाम निशानी ॥ फल० ॥ ५ ॥
सुनि साधु वचन हर्षी मैना, नहि होय झूठ मुनि के बैना।
करिके श्रद्धा श्री सिद्ध- चक्र की ठानी ॥ फल० ॥ ६ ॥
जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया है।
सबके तन छिड़का यंत्र-न्हवन का पानी ॥ फल० ॥ ७ ॥
गधोदक छिड़कत वसुदिन में, नहिं रहा कुष्ट किंचित तनमे।

भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी ॥ फल० ॥ ८ ॥
भव भोग भोगि योगेश भए श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये ।
दूजे भव मैना पावै शिव राजधानी ॥ फल० ॥ ९ ॥
जो पाठ करे मन वचन तन से, वे छूटि जांय भवबन्धन से ।
'मक्खन' मत करो विकल्प कहा जिनवानी ॥ फल० ॥ १०॥

चौदहवाँ अध्याय

जैन आरती सग्रह

श्री सिद्ध चक्र की आरती नं० १३७

जय सिद्धचक्र देवा जयै सिद्धचक्र देवा
करत तुम्हारो निशदिन मन से सुर नर मुनि सेवा । जय०
ज्ञानावर्ण दर्शनावरणी मोह अन्तराया ।
नाम गोत्र वेदनी आयु को नाशि मोक्ष पाया ॥ जय० ॥१॥
ज्ञान अनंत दर्श सुख वल अनन्त धारी ।
अव्याबाध अमूर्ति अगुरुलघु अवगाहन धारी ॥ जय० ॥२॥
तुम अशरीर शुद्ध चिन्मूरति स्वातम रसभोगी ।
तुम्हे जपैं आचार्योपाध्याय सर्वसाधु योगी ॥ जय० ॥३॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सुरेश गणेश तुम्हे ध्यावै ।
भविअल तुम चरणाम्बुज सेवत निर्भय पद पावैं ॥ जय० ॥४॥
संकट टारन अधम उदारन भवसागर तरणा ।
अष्ट दुष्ट रिपुकर्म नष्ट करि जन्ममरण हरणा । जय० ॥५॥
दीन दुखी असमर्थ दरिद्री निर्धन तन-रोगी ।
सिद्धचक्र को ध्याय भये ते सुर नर सुख-भोगी ॥ जय० ॥६॥

डाकिन शाकिन भूत पिशाचिन व्यंतर उपसर्गा ।
नाम लेत भगि जाय छिनक मे सब देवी दुर्गा ॥ जय० ॥७॥
वन रन शत्रु अग्नि जल पर्वत विषधर पचानन ।
मिटे सकल भय कष्ट, करें जे सिद्धचक्र सुमरिन ॥ जय ॥ ८ ॥
मैना सुन्दरि कियो पाठ यह पर्व अठाइनि मे ।
पति युत सात शतक कोढिन का गया कुष्ट छिन मे ॥ जय० ॥६॥
कार्तिक फागुण सात आठ दिन सिद्धचक्र पूजा ।
करै शुद्ध भावों से 'मक्खन' लहे वे पद पूजा ॥ जय० ॥१०॥

जैन आरती नं० १३८

ओम जय अन्तरयामी, स्वामी जय अन्तरयामी ।
दुखहारी सुखहारी, त्रिभुवन के स्वामी ॥ जय० टेक
नाथ निरञ्जन सब भजन सन्तन आधारा ।
पाप निकन्दन भविजन, सम्पति दातारा ॥ जय० १
करुणा सिन्धु दयानिधि जय जय गुणकारी ।
वाछित पूरण श्री जिन, सब जन सुखकारी ॥ जय० २
ज्ञान प्रकाशी शिवपुर बासी, अविनाशी अविकार ।
अलख अगोचर शिव मय, शिव रमणी भरतार ॥ जय० ३
विमल कुतारक कल मल हारक, तुम हो दीन दयाल ।
जय जय कारक तारक, षट् जीवन रिक्षपाल ॥ जय० ४
'न्यामत' गुण गावे पाप नशावे, चरण शिर नावे ।
पुनि पुनि अरज सुनावे, शिव कमला पावे ॥ जय० ५

आरती महावीर स्वामी नं० १३६

ओम जय सन्मति देवा, स्वामी जय सन्मति देवा ।
वीर महा अति वीर प्रभु वर्द्धमान देवा ॥ टेक
त्रिशला उर अवतार लिया प्रभु, सुर नर हर्षाये ।

पन्द्रह मास रतन कुण्डलपुर, धनपति वर्षाये ॥ १
शुकल त्रयोदशी चैत्र मास की, आनन्द करतारी ।
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाट रचे भारी ॥ २
तीन वर्ष लों रहे गृह मे, वन कर ब्रह्मचारी ।
राज त्याग कर भर जीवन मे, मुनि दीक्षा धारी ॥ ३
द्वादश वर्ष किया तप दुद्धर, विधि चक चूर किया ।
झलके लोकालोक ज्ञान मे, सुख भरपूर लिया ॥ ४
कातिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष वसे ।
पर्व दिवाली चला तभी से, घर घर दीप जले ॥ ५
वीत राग सर्वज्ञ हितैषी, शिव मग परकाशी ।
हरिहर ब्रह्मनाथ तुम्ही हो, जय जय अविनाशी ॥ ६
दीन दयाला जग के प्रतिपाला, सुर नर नाथ जजै ।
सुमरत विघ्न टरें इक छिन मे पातक दूर भजै ॥ ७
चोर, भील, चाण्डाल उवारे, भव दुख हरण तुही ।
पतित जान 'शिवराम' उवारो, है जिन शरण गही ॥८

महावीर स्वामी की आरती नं० १४०

करौ आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण थान की ॥ टेक
राग विना सब जग जन तारे, द्वेष विना सब कर्म विदारे ।
शील धुरन्धर शिव तिय भोगी, मन वच काय न कहिये योगी ।
रतन त्रय निधि परिग्रह हारी, ज्ञान सुधा भोजन व्रत धारी ।
लोक अलोक व्य पे निज माही सुखमय इन्द्रिय सुख दुख नाही ।
पंच कल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगम्बर अम्बर त्यागी ।
गुन मनि भूषण स्वामो जगत उदास जमन्तरजामा ।
कहै कहाँ लो तुम सब जानो, 'द्यानत' की अभिलाष प्रमानो ।
करौ आरती वर्द्धमान की पावापुर निर्वाण थान की ॥

आरती महावीर स्वामी नं. १४१

मै तो आरती उतारूँ महावीर की रे।
महावीर की रे, मुक्ति धीर की रे॥ टेक
हृदय पट खोल, मुक्ति तले हिंडोल।
मधुर नाम मुख खोल, मैं तो आरती उतारूँ।
मैं चरण पखारूँ महावीर की रे॥१
करके पूजन भजन सवेरो, शिखर विशाल की ले ले फेरी।
विनती खूब उतारूँ महावीर की रे।
मै तो आरती उतारूँ महावीर की रे॥ २
घर के काम सभी ठुकरा कर, बारम्बार यहाँ पर आकर॥
चरण छवि निहारूँ महावीर की रे।
मैं तो आरती ऊतारूँ महावीर की रे॥ ३

आरती पंच कल्याणक नं, १४२

आरती श्री जिनराज चरण की,
गुण छयालीस ठारह दोष हरण की॥ टेक
पहली आरती गर्भ पूर्ण की,
पन्द्रह मास रतन वर्षन की॥ आ०॥ १॥
दूसरी आरती जन्म करन की,
मति श्रुति अवधि सुज्ञान पुराण की॥आ० २
तीसरी आरती तपो चरण की,
पञ्च मुष्टिका लौंच करन की॥ आ० ३
चौथी आरती केवल ज्ञान परण की,
समोशरण धनपति चग्चन की॥ आ ४
पाँचवी आरती मोक्ष गमन की,

सुरनर मिल उछाह करन की ॥ आ० ५
जो यह आरती करे करावे,
'द्यानत' मन वाञ्छित सुख पावे ॥ आ० ६

(चौबीसो भगवान) आरती नं. १४३

श्री चौबीसो महाराज थारे चरणो में नमो नमो।
ऋषभ अजित संभव जिन स्वामी।
अभिनन्दन हो सुमत जग नामी ॥
पद्म प्रभु महाराज थारे चरणो मे नमो २ ॥१॥ चौ०
श्री सुपार्श्व चन्द्र प्रभु स्वामी।
पुष्प दन्त शीतल जग नामी ॥
श्री श्रेयांसनाथ महाराज, थारे चरणो मे नमो २ ॥२॥ चौ०
वासु पूज्य श्री विमल नाथ जी।
अनन्त धर्म श्री शांतिनाथ जी ॥
कुन्थनाथ महाराज, थारे चरणो मे नमो २ ।३॥ चौ०
अरह मल्लि मुनि सुव्रत नाथ जी।
नेमि नेमि वन्दों पार्श्वनाथ जी ॥
वर्द्धमान महाराज, थारे चरणो में नमो २ ॥४॥ चौ०
दास "कन्हैया" तेरा चेरा।
भक्तो को दो ज्ञान घनेरा ॥
सुमरे दास उमेदी आज, थारे चरणो मे नमो २ ॥५॥ चौ०

आरती श्री चाँदनपुर महावीर स्वामी की नं. १४४

जय महावीर प्रभो स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ॥
आम जय महावीर प्रभो ॥

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी ।
बाल ब्रह्मचारी व्रत पाल्यौ तपधारी ॥ (१)
ओम जय महावीर प्रभो ॥

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी ।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ॥ (२)
ओम जय महावीर प्रभो ॥

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यौ ।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परचार्यौ ॥ (३)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

यदि विधि चाँदनपुर मे, अतिशय दरशायौ ।
ग्वाल मनोरथ पूर्यौ दूध गाय पायौ ॥ (४)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

प्राणदान मन्त्री को, तुमने प्रभु दीना ।
मदिर ३ शिखर का, निर्मित है कीना ॥ (५)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी ।
एक ग्राम तिन दीनो, सेवा हित यह भी ॥ (६)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै ।
धन सुत सब कुछ पावै, सकट मिट जावै ॥ (७)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥

निशि दिन प्रभु मन्दिर मे, जगमग ज्योति करै ।
हरि प्रसाद चरणो मे, आनन्द मोद भरै ॥ (८)
ॐ जय महावीर प्रभो ॥
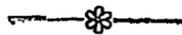
आरती पार्श्वनाथ भगवान की नं. १४५

जय पारस जय पारस, जय पारस देवा ।। टेक
माता तुम्हारी वामा देवी, पिता अश्व सेवा ।
काशी जी में जन्म लिया था, हो देवो के देवा ।।१
आप तेईसवे हो तीर्थंकर, भक्तो को सुख देवा ।
पाँच पाप मिटाकर हमरे, शरण देवो जिन देवा ।।२
दूजा और कोई न दीखे, जो पार लगावे खेवा ।
'नवयुवक मंडल' बना रहे, जो करे आपकी सेवा ।।२

आरती नं. १४

यह विधि मंगल आरति कीजै,
पञ्च परम पद भज सुख लीजै ।। टेक
प्रथम आरती श्री जिन राजा,
भवदधि पार उतार जिहाजा ।। यह०
दूजी आरति सिद्धन केरी,
सुतरत करत मिटे भव फेरी ।। यह०
तीजी आरति सूर मुनिन्दा,
जनम मरण दुख दूर करिन्दा ।। यह०
चौथी आरति श्री उवज्झाया,
दर्शन करत पाप पलाया ।। यह०
पाँचवी आरति साधु तुम्हारी,
कुमति विनाशन शिव अधिकारी ।। यह०
छटी ग्यारह प्रतिमा धारी,
श्रावक बन्दूँ आनन्दकारी ।। यह०
सातवी आरति श्री जिन वाणी,

"द्यानत" स्वर्ण मुक्ति सुखदानी ।। यह०

अरहन्त आरती नं. १४७

आरति श्री जिन राज तुम्हारी,
करम दलन सन्तन हितकारी ।।
सुर नर असुर करत सब सेवा,
तुम ही सब देवन के देवा ।। आ०
पञ्च महाव्रत दुद्धर धारे,
रागद्वेष परिणाम विडारे ।। आ०
भव भय भीत शरण जे आये,
ते परमारथ पन्थ लगाये ।। आ०
तुम गुण हम कैसे करि गावें,
गणधर कहत पार नहिं पावे ।। आ०
करुणा सागर करुणा कीजै,
"द्यानत" सेवक को सुख दीजै ।। आ०

मुनिराज आरती नं. १४८

आरति कीजै श्री मुनिराज की,
म उधारन आतम काज की ।।टेक।। आ०
जा लक्ष्मी के सब अभिलाषी,
सो साधन करदमवत नाखी ।। आ०
सब जग जीत लियो जिन नारी,
सो साधन नागिन बत छारी ।। आ०
विषयन सब जग जीत वश कीने,
ते साधन विषवत तज दीने ।। आ०

भुवि को राज चहत सब प्राणी,
जीरण तृण वत त्यागत ध्यानी ॥ आ०
शत्रु मित्र सुख दुख सम मानै,
लाभ अलाभ बराबर जानै ॥ आ०
छहों काय पीहर व्रत धारे,
सब को आप समान निहारे ॥ आ०
इह आरति पढ़ै जो गावै,
'द्यानत' सुरग मुकति सुख पावै ॥ आ०

जिनवाणी माता की आरती नं० १४९

जय अम्बे वाणी, माता जय अम्बे वाणी,
तुमको निशिदिन ध्यावत, सुर नर मुनि ज्ञानी ।।टेक
श्री जिन गिरते निकसो, गुरु गौतम वाणी,
जीवन भ्रम तम नाशन दीपक दरशाणी ॥ जय०
कुमत कुलाचल चूरण, वज्र सु सरधानी,
नव नियोग निक्षेपण, देखन दरयाणी ॥ जय०
पातक पङ्क पखालन, पुण्य परम वाणी,
मोह महार्णव डूबत, तारण नौकाणी ॥ जय०
लोकालोक निहारण, दिव्य नेत्र स्थानी,
जिन पर भेद दिखावन सूरज किरणानी ॥ जय०
श्रावक मुनि गण जननी, तुम ही गुण खानी,
"सेवक" लख सुख दायक पावन परमाणी ॥ जय०

चन्द्र प्रभु की आरती नं. १५०

म्हारा चन्द्र प्रभू जी की सुन्दर मूरत, म्हारे मन भाई जी ॥
सावन सुदि दशमी तिथि आई, प्रगटे त्रिभुवन राई जी ॥

अलवर प्रान्त मे नगर तिजारा, दरशे देहरे माँही जी ।।
सीता सती ने तुमको ध्याया, अग्नि मे कमल रचाया जी ।।
मैना सती ने तुमको ध्याया, पति का कुष्ट हटाया जी ।।
सोमा सती ने तुमको ध्याया, नाग का हार बनाया जी ।।
मानतुङ्ग मुनि तुमको ध्याया, तालों को तोड़ भगाया जी ।।
जो भी दुखिया दर पर आया, उसका कष्ट मिटाया जी ।।
अञ्जन चोर ने तुमको ध्याया, सूलो से अधर उठाया जी ।।
समोशरण में जो कोई आया, उसको पार लगाया जी ।।
ठाडो सेवक अर्ज करै छै, जामन-मरण मिटाओ जी ।।
नवयुग मण्डल तुमको ध्यावै, बेड़ा पार लगाओ जी ।।

आरती श्री चन्द्र प्रभु भगवान नं० १५१

जय चन्द्र प्रभु देवा, स्वामी चन्द्र प्रभु देवा ।
तुम हो विघ्न-विनाशक, पार करो खेवा ।।
मात सुलक्षणा, पिता तिहारे महासैन देवा ।
चन्द्रपुरी में जन्म लियो, स्वामी देवों के देवा ।। जय०

जन्मोत्सव पर प्रभु तिहारे, सुर नर हरषाये ।
रूप तिहारा महा मनोहर, सबही को भाये ।। जय०

बाल्य काल में ही प्रभु तुमने, दीक्षा ली प्यारी ।
भेष दिगम्बर धारा, महिमा है न्यारी ।। जय०
फाल्गुन बदी सप्तमी को प्रभु, केवल ज्ञान हुआ ।
खुद जीवो, जीने दो सबको, यह सन्देश दिया ।। जय०
अलवर प्रान्त में नगर तिजारा, 'देहरे' में प्रगटे ।
मूर्त्ति तिहारी अपने नैनन निरख निरख हर्षे ।। जय०
'शिखरचन्द' प्रभु दास तिहारा, निश दिन गुण गावे ।

पाप-तिमिर को दूर करो प्रभु, सुख-शान्ति आवे ॥
मेटो भव भव वासा, पार करो देवा ॥ जय०

निश्चय आरती नं० १५२

यहि विधि आरति करौं प्रभु तेरी,
अमल अबाधित निज गुण केरो ॥ टेक
अचल अखण्ड अतुल अविनाशी,
लोकालोक सकल परकाशी ॥ इह०
ज्ञान दर्श सुख बल गुण धारी,
परमातम अविकल अविकारी ॥ इह०
क्रोध आदि रागादि न तेरे,
जन्म जरा मृत कर्म न मेरे ॥ इह०
अवपु अबन्ध करण सुख नासी,
अभय अनाकुल शिव पद वासी ॥ इह०
रूप न-नख न भेषन कोई,
चिन्मूरति प्रभु तुमही होई ॥ इह०
अलख अनादि अनन्त अरोगी,
सिद्ध विशुद्ध सुआतम भोगी ॥ इह०
गुण अनन्त किमि वचन बतावे,
"दीपचन्द" भवि भावना भावे ॥ इह०

आरती पद्म प्रभु बाड़ा ग्राम नं० १५३

आरती करूँ प्रभु पद्म तुम्हारी ।
दर्शन से सुख मिले अपारी ॥ टेक ॥
जयपुर बाड़ा ग्राम कहाया ।

सब जन को दर्शन दिखलाया।
सुदी बैसाख पंचमी प्यारी ॥ आरती० ॥
दिगम्बर भेष सभी मन भाया।
पाप ताप सब दूर भगाया।
आरती घृत दीपक से उतारी ॥ आरती० २ ॥
छत्र तीन सिर ऊपर छाजे।
भामण्डल पिछवाड़ा विराजे।
दर्शन जन के प्रभु मन हारी ॥ आरती० ३ ॥
मूला जाट का कष्ट मिटाया।
पीड़ित जन शरणे जो आया।
दर्शन से दुख मिटे अपारी ॥ आरती० ४ ॥
भूत प्रेत बाधा न सतावे।
'मङ्गल' जो तुमको नित ध्यावे।
ऐसा स्वामी हो हितकारी ॥ आरती० ५ ॥

आरती श्री चन्द्र प्रभु की नं. १५४

आरति करो प्रभुवर की, करो जिनवर की, बोल शशिधर की,
आरति करो शशिधर की।
चिन्ह चन्द्र का धरने वाले, चन्द्र प्रभु जग के रखवाले।
चन्द हो आनन्द कन्द, सच्चिदानन्द रूप अघहर की,
आरति करो शशिधर की ॥
आप आठवें है तीर्थङ्कर, सुधाधार जय सकल कलाधर।
मूर्ती तुम्हारी दिव्य, भव्य, सर्वज्ञ रूप मनहर की,
आरति करो शशिधर की ॥
नमत देव मुनि नाग मनुज गन वज्रानन जय जय चंद्रानन,
चक्रेश्वर, देवेश्वर, हरिहर, सर्वेश्वर मुनिवर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आरति करो प्रभुवर की, करो जिनवर की, बोल शशिधर की,
आरति करो शशिधर की ॥

आरती चाँदनपुर महावीर चरण की नं० १५५

आरती करूँ महावीर चरण की ।
चाँदनपुर भव पीर हरन की ॥ टेक ॥
भक्ति मे गय्या निकट में आकर ।
मस्तक ऊपर दूध चढ़ाकर ।
अति विचित्र शोभा दर्शन की ॥ आरती० १
दीपक घृत का जो भर लाया ।
उमग उमग कर हर्ष मनाया ।
शान्ति मिली चरणन परसन की ॥ आरती० २
जोधराज ने जब प्रभु ध्याया ।
स्वामिन उसका कष्ट नशाया ।
ऐसी महिमा वीर चरण की ॥ आरती० ३
भाव सहित चरणो को पूजे ।
जाप जपै अरु मस्तक छूजे ।
"मङ्गल" कटे बाधा भव वन की ॥ आरती० ४

———

विविध

अथ अठाई रासा नं. १५६

बरत अठाईं जे करे ते पाव भव पार ।। प्राणी० टेक
जम्बू द्वीप सुहावणों, लख योजन विस्तार ।। प्राणी० १
भरत क्षेत्र दक्षिण दिशा पोदण पुर हित सारे प्राणी ।
विद्या पति विद्या, सोमा राणी राणी राम ।। प्राणी० २
चादण मुनि तहाँ पारणों, आये राजा गेह प्राणी ।
सोमा राणी आहार दे पुन्य, बढ़ो अति नेह ।। प्राणी० ३
तिस समय नभ देवता, चाले जात विमान प्राणी ।
जै जै शब्द भयो घनो मुनिवर, पूछियो ज्ञान ।। प्राणी० ४
मुनिवर बोले तुम राणी, नन्दीश्वर को जात प्राणी ।
जे नर करही स्वभाव सो, ते पावैं शिव कान्त ।। प्राणी० ५
यह बचन राणी सुनी, मन में भयो आनन्द प्राणी ।
नन्दीश्वर पूजा करे, ध्यावें आदि जिनेन्द्र ।। प्राणी० ६
कार्तिक फागुन साढ़ में, पाले मन बच देह प्राणी ।
विद्यापति सुन चेलियाँ, रच्यो अनूप विमान ।। प्राणी० ७

राणी वरजे राय को, तू तो मानुष भूप प्राणी।
मानुपोत्तर न लघ हो, मानुष जेती जात ॥ ८
सो विद्यापति ना रहो, चलो नन्दीश्वर दीप प्राणी।
जिन वाणी निश्चय सही तीन भवन विख्यात ॥प्राणी० ६
मानुपोत्तर गिरिसो मिले जापन जाय महीप प्राणी।
मानुपोत्तर को भेद तै परियो धारणा सिर मार ॥प्राणी१०
विद्यापति भव चूरियो देव भयो सूर सार प्राणी।
दीप नन्दीश्वर छिनक मे पूजा वसु विधि ठान ॥प्राणी ११
करी सुमन वच काय से, माला दई कर मान प्राणी।
आनन्द सो फिर घर आयो नन्दीश्वर कर जात ॥प्राण१२
विद्यापति का रूप कर, पूछे राणी बात प्राणी।
राणी बोली सुन राजा, यह तो कबहु न होय ॥प्राणी १३
जिन वाणी मिथ्या नही, निश्चय मन मे सोय ॥प्राणी ॥
नन्दीश्वर की जयमाला, राय दिखाई आन ॥ प्राणी १४
अब तू साँच्यो मोह जाणो, पूजन करी बहु मान।
राणी फिर तामो कहै, यह भव परसै नाहिं॥ प्राणी१५
पश्चिम सूर्य उदय हुए जिन वाणी शुचि ताहि।
राणी सो नृप फिर बोल्यो, बावन भवन जिनालय॥प्राणी१६
तेरह तेरह मे वन्दे, पूजन करी तत्काल प्राणी।
जयमाला तहाँ सौमिल, आयो हूँ तुझ पास ॥ प्राणी १७
अब तू मिथ्या मत माने पूजा भई निराश प्राणी।
पूरब दक्षिण मे वन्दे पश्चिम उत्तर जात ॥ प्राणी १८
मैं मिथ्या नही भापहूँ मोहि जिनवर की आण प्राणी।
सुनि राजा से सब कहो जिन वाणी शुभ सार ॥प्राणी १६

ढाई दीपन लंघई, मानुष जन विस्तार प्राणी ।
विद्यापति से सुर भया, रूप धरौ शुभ सोइ ।। प्राणी० २० ।।
राणी की स्तुति करी, निश्चय समकित तोय प्राणी ।
देव कहे अब सुनो राणी, मानुषोत्तर मिलो जाय ।।प्राणी २१।।
तिहतै चय मै सुर भयो. पूज नन्दीश्वर आय प्राणी ।
एक भवान्तर मो रहो. जिन शासन परमाण ।। प्राणी० २२ ।।
मिथ्याती मानो नाही श्रावक निश्चय आण प्राणी ।
सुरचय तहाँ हथिनापुरी राज कियो भरपूर ।। प्राणी० २३ ।।
परिग्रह तज संयम लियो, करम महा गिर चूर प्राणी ।
केवल ज्ञान उपार्जन कर, मोक्ष गयो मुनिराय ।। प्राणी० २४।।
शाश्वत सुख बिलसै कदा, जन्मन-मरण मिटाय प्राणी ।
अब राणी की सुनो कथा सयम लीनो सार ।। प्राणी० २५ ।।
तप कर चय के सुर भयो, बिलसे सुक्ख अपार प्राणी ।
गज पुर नगरी अब तरो, राज करो बहु भाय ।। प्राणी० २६ ।।
सालह कारण भाइयो, धर्म सुनो अधिकाय प्राणी ।
मुनि सङ्घाटक आइयो, माली सार जणाय ।। प्राणी० २७ ।।
राजा वद्धो भाव सो, पुण्य बढ़ो अधिकाय प्राणी ।
राजा मन वैरागियो, सयम लीनो सार । प्राणी- २८ ।।
आठ सहस्र नृप साथ ले, यह ससार असार प्राणी ।
केवल ज्ञान उपार्ज के दोय सहस्र निर्वाण ।। प्राणी० २९ ।।
दोय सहस्र सुख स्वर्ग मे भोगे भोग सुधान ।
चार सहस्र भू - लोक मे हुडे बहु ससार ।। प्राणी० ३० ।।
काल पाय शिवपुर गये, उत्तम धर्म विचार प्राणी ।
बरस अठाई जे करे तीन जन्म परमाण ।। प्राणी० ३१ ।।
लोकालोक सुजाण सो सिद्धारथ कुल ठान प्राणी ।
भव समुद्र के तरण को, बावन नौका जाण ।। प्राणी० ३२ ।।

जे जिय करे स्वभाव सो, जिनवर साँच वखान प्राणी ।
मन वच काया जे पढे, ते पावें भव पार ॥ प्राणी० ३३ ॥
विनय कीति सुखसा भरणे जनम सफल ससार प्राणी ।
वरत अढाई जे करें ते पावे भव पार ॥ प्राणी० ३४ ॥

सर्व शान्ति ! सर्व शान्ति !! सर्व शान्ति !!!

इति श्री अठाई रासा समाप्तम्

१५७—अञ्जना सती का जीवन (लावनी)

पतिव्रता एक नार अञ्जना, राजा महेन्द्र की लड़की ।।टेक।।
अशुभ करम पूरव ले आयो, दासी सग वन-वन फिरती ।
मान स॰ावर तट के ऊपर, सिंह जडी के हुए पती ॥ १ ॥
चकवा-चकवी वियोगिन देखे, तव त्रिया की सूरत धरी ।
जभी पवन जी ने आवी रैन को, राह लई अपने घर की ॥ ॥
गुप्त त्रिया से जाय महल मे, वात कही है तन मन की ।
हाथ जोड़ कर कहे अञ्जना, सुनो नाथ मेरे प्राणपती ॥ ३ ॥
कुछ निशानी मुझको दीजो, सासु पूछे केतुमती ।
कडा मुद्रिका दिया निशानी, राह लई है कटघर की ॥ ४ ॥
गर्भवती जव देखी अञ्जना, सासु पूछे केतुमती ।
आधी रात को विमान वैठकर, आये मेरे प्राणपती ॥ ५ ॥
मेरी न मानो दासी से पूछो, वो तुमसे कहदे सच्ची ।
जा दिन से वरमाला डाली, वा दिन छुटा तेरा पती ॥ ६ ॥
अव कैसे तुझे गर्भ रहा है, पुत्र बुलायो लङ्कापति ।
हाथ जोडकर कहे अञ्जना, सुनो सासु मेरी केतुमती ॥ ७ ॥
कडा मुद्रिका दिया निसानी, निकल गये मेरे प्राणपती ।
तू झूठी तेरी दासी झूठी, वो दूती तेरी पक्षी ॥ ८ ॥

कुल को कलक लगाया पापिन, जामें फर्क न एक रत्ती।
दौनों को दिया देश निकाला, दासी संग बन-बन फिरती ॥९॥
मात-पिता पर गई अंजना, वहाँ पर देखी गर्भवती।
बिन आदर वो घर से निकाली, दासी सग वन बन फिरती।१०।
निराश होकर गई बनो में, वहाँ पर देखे मुनी जती।
बन्दन कर पूरब ले पूछे, कैसे छूटे प्राणपती ॥ ११ ॥
कहै मुनीश्वर सुनो अंजना, धर्म ध्यान राखो मन मे।
चर्म शरीरी पुत्र होगया, पति मिले थोड़े दिन मे ॥ १२ ॥
दे उपदेश मुनीश्वर चाले, पुत्र होय तेरे बन मे।
सुन्दर मूरत जब देखी पुत्र की, तेजी जैसे सूरज में ॥ १३ ॥
अजना का एक मामा था, आ निकला इस ही बन में।
सती अंजना पुत्र सहित, चली तभी मामा सग में ॥ १३ ॥
खेलत बालक विमान में से, आन गिरा है परबत मे।
टूक-टूक हो गये शिला के, अचरज माना है मन में ॥ १५।
खेलत बालक मामा देखा, खुशी हुआ अपने मन में।
मामा ने तब प्यार करके, उठा लिया है गोदिन में ॥ १६ ॥
तन्नूलाल यह देख तमाशा, खुशी हुआ अपने मन में।
चिरजीव हो यह बालक तेरा, आनन्द बरस रहा मन में ॥१७॥

बारहमासा सीता सती नं० १५८

अथ सीता सती के वनोवास सम्बन्धी दुख सयुक्त अद्भुत शील प्रभावना का बारहमासा यति नयनानन्दनकृत लिख्यते

॥ रागनी हिंडोल चाल श्रवण की मल्हार ॥

(जैसे-नदिया किनारे बेला किन वोया) इसकी चाल मे सीत वचन—बिन कारण स्वामी क्यो तजी ॥ बिनवैजनक दुलारि ॥
बिना कारण स्वामी क्यो तजी ॥टेक॥

(१) आषाढ मास

आषाढ घुमड़ि आए बादरा, घन गरजै चहुँ ओर।
निर्जन वन में स्वामी तुम तजी, बैठन कूँ नही ठौर ॥
बिन कारन स्वामी क्यो तजी। विनवै जनक दुलारि ॥१॥
क्या हम सतगुरु निंदियौ, क्या दियौ सतियन दोस।
क्या हम सत संजम तज्यौ, किस कारन भए रोस ॥
बिन कारन स्वामी विनवै० जनक० ॥२॥
क्या पर पुरुष निहारकै, पर भव कियो है निदान।
क्या इस भव इच्छा करी, क्या मैं कियो अभिमान ॥
बिन कारन ॥ विनवै० जनक० ॥ ३ ॥
कटुक वचन स्वामी नहिं कहे, हिंसाकरमन कीन।
परधन पर चित नहिं दियौ, क्यो मन भयो है मलीन ॥
बिन कारन ॥ विनवै० जनक० ॥४॥

(२) श्रावण मास

श्रावण तुम सग वनविषै, विपति सही भगवान।
पाय पथादी वन-वन मैं फिरी, तनक न राखी मोरी कान।
बिन कारन स्वामी क्यो तजी ॥ विनवै० जनक० ॥ १ ॥
स्वसुर दिसौटा जिस दिन तुम दियौ, कियौ भरत सरदार।
ता दिन विकल्प नहिं कियौ, तजि संपति भई लार ॥
बिन कारण० ॥ विनवै० जनक० ॥ २ ॥
जनक पिता की मै 'लाड़ली' मात विदेहा की बाल।
भ्रांत प्रभा मंडल सा बला, विपता भरूँ बेहाल ॥
बिन कारण० ॥ विनवै० जनक० ॥३॥
माता मन्दोदरी गर्भ से जन्मी रावण गेह।
परभव करम सजोग सें, रावण कियौ है सन्देह ॥
बिन कारण० ॥ विनवै० जनक० ॥४॥

(३) भादो मास

भादौं पण्डित पूछियौ, पण्डित कही है विचार।
कन्या के कारण राजा तुम मरो, दीनी तुरत विसार।।
बिन कारण०।। विनवैं० जनक०।। १।।

गाड़ी धारि मजूष मे, जनक नगर वन बीच।
हल जोतत किरयान के, लई करम ने खीच।।
बिन कारण० विनवै०।। २।।

मरण भयौ नही ता दिना, करम लिखे दुख एह।
करी नजर राजा जनक के, पाली पुत्र सन्देह।।
बिन कारण० विनवै०।। ३।।

जनक स्वयम्वर जब कियो, लिये सब भूप बुलाय।
दरशन करि थारे वश भई, पडी चरण बिच आय।।
बिन कारण० विनवै०।। ४।।

(४) कुँवार मास

क्वार मास फिर गये भूप सब, मो कारण कियौ युद्ध।
बहुत बली मारे रण विषै, ठायौ धनुष प्रबुद्ध।।
बिन कारण० विनवै०।। १।।

खर दूषण के युद्ध मे, आयौ रावण दौड।
छलकर धोखा प्रभु तुमकूँ दियौ, नाद बजायौ घनघोर।।
बिन कारण० विनवै०।। २।।

जल्दी पधारौ प्रभु में गिर गयौ, तुम जानो भगवान्।
कष्ट पड्यौ जी मेरे भ्रात पै, उपज्यौ मोह महान्।।
बिन कारण० विनवै०।। ३।।

मोहि मेली पात बटोरिकै, करम लिखी कछु और।
आप पधारे अपने वीर पे, आनयौ रावण चोर।।
बिन कारण० विनवै०।। ४।।

चीर दुपट्टा करिके ले गयो, मोकूं अचक उठाय।
देखी नाथ जटायु नैं, क्या तुम जानत नाहि॥
विन कारण० विनवैं ॥ ५ ॥
झपट झपट वाके सिर हुयो, मुकट खसोट्यो पूँछ उपारि।
मारि तमाचा डारयों भूमि मे, पन्छी खाई जो पछार॥
विन कारण० विनवैं० ॥ ६ ॥
लक्षमन तुमहि निहारिकें, वात कही करि गौर।
विनहिं वुलाए आए भ्रात क्यो, है कछु कारन और॥
विन कारण० विनवैं० ॥ ७ ॥
काहू छलिया नै ये कछु छल कियो, कै कछु कर्म चरित्र।
नाहिं पिछान्यो जावै युद्ध मे, कौन है वैरी कौन है मित्र॥
विन कारण० विनवैं० ॥ ८ ॥

(५) कार्तिक मास

कार्तिक तुरत पठाइयो, उलटि तुम्हे थारे भ्रात।
विनाही वुलाए आए आप क्यूँ, शत्रु करेंगे उतपात॥
विन कारण० विनवैं० ॥ १ ॥
आएजी तुरत रक्षा करनकूँ, हममे धरि प्रभु प्यार।
विखरे ही पाए पत्ते वेल सव, खाई आप पछार॥
विन कारण० विनवैं० ॥ २ ॥
भ्रात हठाई आके मूर्छा, सकल शत्रु रण जीत।
परयो जटायु देख्यो सिसकतो, श्रावन धर्म पुनीत॥
विन कारण० विनवैं० ॥ ३ ॥
जन्म सुधारयो वाको आपनै, मो विन पायो न चैन।
डारी ढूँढी दोऊ मिल वन विषै, रोय सुजाए तुम नैन॥
विन कारण० विनवैं० ॥ ४ ॥

धीर बँधाई लछमन भुजबली, बहुत करी थारी सेव ।
विपति कटैगी प्रभु समता धरे, यदपि न माने थे तुम देव ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ ५ ॥

ल्याऊँ काढि पताल से, ल्याऊँ पर्वत फोर ।
खबर मिलै तो सब कुछ मैं करूँ चीर बगाऊँ थारा चोर ॥
बिन कारण० विनवै० ॥६॥

फेरि मिलेजी प्रभु सुग्रीव सैं, साहस गति दियौ मारि ।
पाय सुतारा ल्यायौ हनुमान कूँ, ढूँढ़न भेज्यौ मोहि सरकार ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ ७ ॥

(६) अगहन मास

अगहन खबर मँगवाय कै, मोढिग भेज्यौ तुम हनुमान ।
कूदि समन्दर गयो गढिलंक में र भेजी अँगूठी तुम भग० ॥
बिन कारण० विनवै ॥ १ ॥

तुम बिन बैठी रो रही बाग मे, राम ही राम पुकार ।
अन्न लियौ ना पानी मैं पीयौ, परवश हुई थी लाचार ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ २ ॥

मुख धुलवायौ श्री हनुमान नें तुमरी आज्ञा के परवाण ।
प्राण बचाए मेरे विपत में, करवायौ जल पान ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ ३ ॥

तुरत ही भेज्यौ तुमरे चरण में, चूड़ामनि दियौ वारि ।
गाय फँसी है गाडी गार में, खैंचि निकारौजी भरतार ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ ४ ॥

(७) पौस मास

पौस चढे जी गढलंक पै, भारत कियौ भगवान ।
भारत किये लाखों सूरमा, मार कियौ घमसान ॥
बिन कारण० विनवै० ॥ १ ॥

काट्यो शिर लकेश को, लक्ष्मी घर वर वीर।
कूद पड़े जो जोधा लंक मे, लवण समुन्दर चीर॥
विन कारण० विनवै० ॥२॥

ल्याए तुरत छुड़ाय के, अशरण शरण अधार।
इतनी करि ऐसी क्यो करी, घर से दई क्यूँ निकार॥
विन कारण० विनवै० ॥३॥

पगभारी जो गिर गिर मैं पड़ूँ, शरण सहाय न कोय।
अपनी कही न मेरी तुम सुनी, बहुत अंदेशा है मोहि॥
विन कारण० विनवै० ॥४॥

(८) माघ मास

माघ प्रभुजी पाला पड़ रहा, पौढन कूँ नहिं सेज।
ओढन कूँ नहिं काँवली, दई क्यूँ विपति में भेज॥
विन कारण० विनवै० ॥१॥

सिंह घडू के कूके भेडिए, मारे गज चिघाड।
थर थर कापै थारी कामनी, स्यालन रही है दहाड़॥
विनकारण० विनवै० ।२॥

नाचै भूत पिशाच गण, रुंडमुंड विकराल।
सनन सनन सारा दरे, कटि चुभे जी कराल॥
विनकारण० विनवै ।३।

कित बैठूँ लेटूँ कित प्रभु, पास खवास न कोय।
अन्न करूँ ना पानी मै पिऊँ, बालक कूँ दुख होय॥
विनकारण० विनवै ॥४॥

तुम सब जानो प्रभू मेरे हालकूँ, अष्टमबलि अवतार।
तुम सूरज मै पटबीजनो, क्या समझाऊँ भरतार॥
बिन कारण० विनवै० ॥५॥

समरथ हो प्रभु क्यो कसी, प्रगट कियो क्यो न दोष ।
धोखा दे क्यों धक्का दियौ, आवे नही सन्तोष ।।
बिनकारण० विनवै०।।६।।

(६) फागुन मास

फागुन आई जी अठाइयाँ, अपने करम कूँ दे दोष ।
ध्यान धरयो भगवान को, बैठी रही मन मोस ।।
बिनकारण० विनवौ० ।।१।।

अरज करे प्रभु की हजूर में ममता भाव निवार ।
तुमही पिता हो प्रभु तुमही, मात हो तुमही भाई हमार।।
बिनकारण० विनवौ० ।।२।।

निर्धन के प्रभु तुम धनी, निर्जन के परिवार ।
इकवर राम मिलाइयो दीजियो दोषनुतार ।।
बिनकारण० विनवौ० ।।३।।

तुमही राजा प्रभुजी धरम के, हमकूँ लगायो परजा दोष ।
शील मे मेरे सब शन्से करे, राम रुसाये हो गये रोष।।
बिनकारण० विनवौ० ।।४।।

त्याग दियो है, प्रभु हम रामजी, त्याग दियो है सब संसार ।
गर्भवती हूँ कर्म सयोग से, इसमे हुई हूँ लाचार ।।
बिनकारण० विनवौ० ।।५।।

जिस दिन प्रभु पल्ला पाक हो मिले मोही भरतार ।
भरम मिटा के धारूँ धरम को, त्यागूँ सब संसार ।।
बिनकारण० विनवौ० ।।६।।

राम मनावे तौ भी ना मनूँ कर जाऊँ बन को विहार ।
कर पै श्री रघुवीर के, चौटी धरूँगी उताड़ ।।
बिनकारण० विनवौ० ।।७।।

भावे यो सती जी चौथी भावना, ध्यावे पद नवकार।
पापा घट्यो प्रगट्यो पुन फल, सुन लई तुरत पुकार॥
विन कारण० विनवौ० ॥८॥

पुंडरीक पुर नगर को, वज्र जघ भूपाल।
आगये पुन्य सयोग ते, गज पकडत वाही काल॥
विनकारण० विनवौ० ॥९॥

ढूढत गजपति उन विषे, भनक पडा वाके कान।
कोई सतवन्ती रोवै वन विषे, कि ये सताई जी अज्ञान॥
विनकारण० विनवौ० ॥१०॥

दोष लगायो कैसे पूछिये, गज तजि उतरयो धीर।
विनय सहित दुख पूछन चलयो, आवे जैसे भेना घरकेवीर॥
विनकारण विनवौ० ॥११॥

तुम हो वहन मेरी धर्म की, विपत कहो समझाय।
मात पिता पति परिवार से दूंगी वहन मिलाय॥
विनकारण० विनवौ० ॥१२॥

जनक पिता की मैं हूँ लाडली, भ्रात भामण्डल वीर।
श्वसुर हमारे दशरथ नृपवली, भर्त्तार श्री रघुवीर॥
विनकारण० विनवौ० ॥१३॥

रावण हरिकरि लेगयो दोष धरै संसार।
शील मे मेरे सब शसे करे, दीनी राम निकार॥
विनकारण० विनवौ ॥१४॥

सुनत कथा जी छाती भर हरी, टपकैं असुवन धार।
हा हा रे कर्मते ए कियो कभी, क्यो तुरत उपगार॥
विनकारण० विनवौ० ॥१५॥

देव धरम दिये वीच मे, वसन वनाई तत्कार।
पुन्डरीक पुर लेगयो, करिके गज असवार॥
विनकारण० विनवौ० ॥१६॥

पुत्र भये दो लवकुश बली, शिवगामी अवतार।
उज्जजव रक्षा करी पाल कियो हुषियार॥
बिनकारण० विनवै० ॥१७॥

(१०) चैत मास

चैत मास नारद मुनि मिले, चरण पड़े दोऊ वीर।
राम लखन किसी सम्पदा, हूज्यो थार घर वर वीर॥
बिनकारण० विनवै० ॥१॥

पूछियो अपनी मात से रामलखन माता कौन।
टपटप लागे आंसू ढपकने, मारयो मन धारयो मौन॥
बिनकारण० विनवै० ॥२॥

नारद मुनि समझाइयो, पिछले सकल वृतान्त।
सुनत उठे जोधा खड़ग ले, बैठि विमान तुरन्त॥
बिनकारण० विनवै० ॥३॥

घेरि अजुध्या रण भेरी दई, कांपे सुरग पताल।
सोच भयो श्री रघुवीर के, आये कौन अकाल॥
बिनकारण० विनवै० ॥४॥

निकसे दोऊ भ्राता जुद्धकूँ, खूब मचाए घमसान।
रामलखन घबरा दिए, पटक्यो रथ काटे बाण॥
बिनकारण० विनवै० ॥५॥

हलमूशल ठाए रामने, लछमन चक्र सम्भार।
सातवार कियो तान के, वृथा गए सातों वार॥
बिनकारण० विनवै० ॥६॥

हम हरिवल अकाए किधो, उपजो सोच अपार।
आगबबूला होके फिर लियो, चक्र प्रलय करतार॥
बिनकारण० विनवै० ॥७॥

तब नारद आए भूमि मे, रामलखन ढिग जाय।
बात कही समझाय के, किसपे कोपे रघुराय।
विनकारण॰ विनवै॰ ॥८॥

पुत्र तुम्हारे दोऊ भुजवली, लव व कुश वलवन्त।
माता विपत सुनि कोपियो, भाप्यो सकल वृतन्त॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥९॥

भरि आई छाती श्री रघुवीरकी रनकूँ दियो है निवार।
आय परे सुत चरन मे, लीने दोऊ पुचकारि॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥

(११) वैशाख मास

माह वैसाख वसन्त ऋतु, सुनि सीता जो की सार।
भाग पड़े हनुमन से वली, ल्याए करि मनुहार॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥१।

वज्रजंघ आये धूमसे, ल्याये सव परिवार।
राम कहें मै आने दूँ नही, सीता दई मैं निकार॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥२॥

जो आवै तो आवो इस तरह, कूदे अगनि मझार।
देय परीक्षा अपने शील की, होवे कुण्ड तयार॥
अगन जलादो देरी मत करो, सौ योजन विसतार॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥३॥

साडी कसि त्यारी करी, अङ्गद क्यों वढ भाग।
साडी कसि त्यारी करी, अङ्गद क्यो वढ भाग।
विनकारण॰ विनवै॰॥४॥

जाय चढो ऊँचे दमदमे, देखे देव अपार।
सत मूरत सूरत मोहनी, मन में हरष अपार॥
विनकारण॰ विनवै॰ ॥५॥

देखे सुरगो के देवता, देखे भवन बतीस।
चन्द्र सूरज देखे ज्योतिषी, देखे भूत पतीस।।
बिनकारण० विनवै० ।। ।।

देखे सब विद्याधरा, देखे गण गन्धर्व।
कमर कसौ फौजे आपड़ी, देखे राजा सर्व।।
बिनकारण० विन०० ।।७।।

डीग अगन उठी गगन लों, तड तडाट भयो घोर।
कहत प्रजा श्रीराम से, क्यों प्रभू भए हो कठोर।।
बिनकारण० विनवै० ।।८।।

वज्र बचैना ऐसी अगन मे, फाटे धरणि पताल।
पर्वत फटि मठ गिर पडे, हे प्रभु कीजिये टाल।।
बिनकारण० विनवै० ।।९।।

राम खड़ग संत्वौ हाथ में, देबे भरम मिटाय।
आज्ञा माने मेरी जानकी देवे भरम मिटाय।।
बिनकारण० विनवै ।।१०।।

हुकम दिये रघुवीर ने, शील परीक्षा देय।
नाार क्यो आई तू यहाँ, परजा करे है सन्देह।।
बिनकारण० विनवै० ।।११।।

पंच परम गुरु वंदिके, करि पति कूँ परिणाम।
छिमाजी कराई सब जीवसैं, देखे लक्षमन राम।।
बिनकारण० विनवै० ।।१२।।

पुत्र जुगल छोडे रोवते, सोहे शची समान।
हरप भरी सतवती महा, बोली बचन महान।।
विनकारण० विनवै ।।१३।।

जो पर पुरुष निहोरि के, मै कछु किये है कुभाव।
भस्म अग्नि मोहि कीजिये, नानर जल होय जाव।।
बिनकारण० विनवै० ।।१४।।

१९) जेठ मास

जेठ तपै सूरज आकरै, नीचै अगनि प्रचण्ड।
आसपास जल थल बयार सब, मूकि गए बनखण्ड ॥
विनकारण विनवौ० ॥ १ ॥
कूद पड़ी जलती डीग मे, शान्ति भई ततकार।
उभरे कमल अमल अकाशलो, लीनी अधर सहार ॥
विनकारण० विनवौ०॥ २ ॥
जल लहरावे वाले हँसनी, कर रही मीन कल्लोल।
छत्र फिरै जो उसके शीश पै, इन्द्र चवर रहे डोल ॥
विनकारण० विनवौ० ॥ ३ ॥
कीतल मन्द सुगँध जुत, मीठी मीठी चलेजो वयार।
मणि वरपै मणि अमृत गडी, देव करे जै जैकार ॥
विनकारण० विनवौ० । ४ ॥
धन्य सती धन सत वती, धन धन धीरज एह।
एह धृग २ हत उनके करे, जिनके मन सन्देह ॥
विनकारण० विनवौ० ॥ ५ ॥

अथ द्वादशानुप्रेक्षा भावना सीताजी भावे है जोग धारण।
कमल मे बैठो विचार करे है।

सीता भावे मन मे भावना, यह ससार अनित्य।
धम बिना तीनो लोक मे, शरण सहाई ना मित्र ॥
विनकारण० विनवौ० ॥ १ ॥
उलट पुलट चाले रहटसा, ये ससारो चक्र।
एक इकेला भटके आतमा, क्या पशु पछी अरु क्या मानुष॥
बिन कारण० विनवै० ॥ २ ॥
अनकोई जग मे आपना, अन हम काहू के मीत।
अशुचि अपावन तम विषै, करम करे विपरीत ॥
विन कारण० विनवै० ॥ ३ ॥

संवर जल बिन ना बुझे, तृष्णा अगन प्रचन्ड ॥
कर्म खपाये बिन ना खपे, फट के सब ब्रह्माण्ड ॥
बिन कारण० विनवै ॥४॥

दुर्लभ बोधनु जगत में, दुर्लभ श्री जिन धर्म।
दुर्लभ स्वपर विचार है, कर्म न डारयो भर्म ॥
बिन कारण० विनवै० ॥५॥

परवश भोगो भारी वेदना, स्ववश सही नहि रच।
सास्वत सुख जासै पावती, लई करम ने बच ॥
बिन कारण० विनवै० ॥६॥

अब मै सब वेदन सहू, कीनी धरम सहाय।
परतिज्ञा मैं पूरी करू, मोह महा दुख दाय ॥
बिन कारण० विनवै० ॥७॥

राम कहे प्यारी चल घरू, ल्या भुज में भुज डार।
पाडि शिखा कर पै धरिदई त्यागौ हम ससार ॥
बिन कारण० विनवै० ॥८॥

तुम त्यागी निरदोषकू, हम त्यागे लखि दोस।
करके छिमा मै, सजम लियौ, करियो मत अफसोस ॥
बिन कारण० विनवै० ॥९॥

गई सतीजी बनखण्डकू, भई अरजिका शीर।
उग्ररूप तप वो करे, सब दुख सहे शरीर ॥
बिन कारण० विनवै० ॥१०॥

पूरी करि परजायकू, अच्युत सुरग मँझार।
इन्द्र भएजी पुण्य सजोग से भोगे सुख अपार ॥
बिनकारण० विनवै० ॥११॥

ॐ इति श्री सीताजी का वारहमासा समाप्त ॐ

॥ आगे कवि का ग्राम सवत् लिख्यते ॥

पढिये भाई नैना भावसे, गावो वाल गुपाल।
भावो जो धरम की वही भावना, सिर पर गरजत काल॥
विनकारण० विनवै० ॥१॥

शील महातम मे कहे, या सम धरम न कोय।
शील रतन मोटा रतन, जाते जगयश होय॥
विनकारण० विनवै० ॥२॥

पर भव में सुख सम्पदा, इन्द्रादिक पद पाय।
कटि करम शिव सुन्दरि विरे, जन्म मरण छुटि जाय॥
विनकारण० विनवै० ॥३॥

वंश वढ़े सव सकट कटे, सोग वियोग न कोय।
रोग मिटे जी सेवो सतजन, पाप सकल मेरे धोय॥
विनकारण० विनवै० ॥४॥

नैनानन्द प्रवन्ध यह, दयासिन्धु सुतहेत।
गायो ध्यान जिलेन्द्र कूँ, पद्म पुराण उपेत॥
विनकारण० विनवै० ॥५॥

सवत् विक्रम भूप को, नवशत्त एक हजार।
तापर षट चालीस धर, १९४६ लीज्यो सुघड़ संभाल॥
विनकारण० विनवै० ॥६॥

मत पड़ियो वेटा कुपथ मे, तजियो मत्त जिन धर्म।
करलो ज्यो वेटा नरभव को सफल, रख लीज्यो मेरी शर्म॥
विनकारण स्वामी क्यो तजी, विनवै जनक दुलारि।
विन कारण स्वामी क्यो तजी॥

बारहमासा राजुलजी का नं० १५६

राग मरहट्टी (झड़ी)

मैं लूँगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ।।टेक।।

अषाढ मास (झड़ी)

सखि आया आषाढ घनघोर मोर चहुँ ओर मचा रहे शोर इन्हें समझाओ। मेरे प्रीतम की तुम पवन परीक्षा लाओ। हैं कहाँ बसे भरतार कहाँ गिरनार महाव्रत धार बसे किस बन में, क्यो बाँध मोड दिया तोड़ क्या सोची मन मे ।।

(झर्वटे)

जा जा रे पपैया जा रे प्रीतम को दे समझारे।
रही नौभव सग तुम्हारे, क्यों छोड़ दई मझदारे ।।

(झड़ी)

क्यों बिना दोष भये रोष नही सन्तोष यही अफसोस बात नहि बूझी। दिये जादों छप्पन कोड छोड़क्या सूझी, मोहि राखो शरण मझार मेरे भर्तार करा उद्धार क्यों दे गयो झुरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ।।

श्रावण मास (झडी)

सखि श्रावण सँवर करे, समन्दर भरे, दिगम्बर घरे सखी क्या करिये। मेरे जी में ऐसी आवे महाव्रत धरिये। सब तजूँ साज शृङ्गार तजूँ संसार क्यों भव मझार मे जा भरमाऊ, फिर पराधीन तिरिया का जन्म न पाऊँ ।।

(झर्वटे)

सब सुनलो राजदुलारी, दुख पड़ गया इस पर भारी।
तुम तज दो प्रीति हमारी, करदो सँयम की तय्यारी ।।

(झड़ी)

अब आगया पावस काल करो मत टाल भरे सब ताल महा-
जल बरसैं। बिन परसे श्री भगवन्त मेरा जी तरसैं, मैंने भज
दई तीज सलौन पलट गई पौन मेरा है कौन मुझे जग तरना।
निर्नेम नेम बिन मुझे जगत क्या करना।

भादो मास (झडी)

सखि भादो भरे तलाब मेरे चित चाव करूँगी उछाह से सोलह
कारण, करूँ दस लक्षण के व्रत से पाप निवारण। करूँ रोट
तजि उपवास पंचमी अकास अष्टमी खास निशल्य मनाऊँ;
तपकर सुगन्ध दशमी को कर्म जलाऊँ॥

(झवंटे)

सखि दुद्धर रस की धारा, तजि चार प्रकार आहारा।
करूँ उग्र उग्र तप सारा, ज्यों होय मेरा निस्तारा॥

(झड़ी)

मैं रत्नत्रय व्रत धरूँ चतुर्दशी करूँ जगत से तिरूँ करूँ
पखवाड़ा, मैं सबसे क्षिमाऊँ दोष तजूँ सब गाड़ा। मैं सातों
तत्व विचार कि गाऊँ मल्हार तज संसार ते फिर क्या करना,
निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना।

आसोज मास (झड़ी)

सखि आगया मास कुवार लो भूषण तार मुझे गिरनार की दे
दो आज्ञा, मेरू पाणि पात्र आहार की है प्रतिज्ञा। लो तार ये
चूड़ामणि रतन की कणी सुनो सब जनी खोल दो वैनी, मुझको
अवश्य ही परभात दीक्षा लेनी॥

(झवंटे)

मेरे हेतु कमण्डल लावो, इक पीछी नई मँगावो।
मेरा मतना जी भरमावो, मत सूते कर्म जगावो॥

(झडी)

है जग मे असाता कर्म बडा बेशर्म मोह के मम से धर्म न सूझै, इसके वश अपना हित कल्याण न बूझै ।। जहाँ मृग तृष्णा की धूर वहाँ पानी दूर भटकना भूर कहाँ जल भरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ।।

कार्तिक मास (झड़ी)

सखि कार्तिक काल अनन्त श्री अरहन्त की सन्त महन्त ने आज्ञा पाली, घर योग तजे भव भोग की तृष्णा टाली । सजे चौदह गुण अस्थान स्वर पहचान तजे मक्कान महल दिवाली, लगा उन्हें मिष्ट जिनधर्म अमावस काली ।।

(झर्वटें)

उन केवल ज्ञान उपाया, जग अन्धेर मिटाया ।
जिनमें सब विम्ब समाया, तन धन सब अथि है बताया ।।

(झडी)

है अथिर जगत सम्बन्ध अरी मति मन्द, जगत का अन्ध है धुन्ध पसार मेरे प्रीतम नैं सत जान के जगत बिसारा । मै उनके चरण की चेरी, तू आज्ञा दे मां मेरी, है मुझे एक दिन मरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ।।

अगहन मास (झडी)

सखि अगहन ऐसी घडी उदय में पडी मै रह गई खडी दरस नहि पाये । मैने सुकृत के दिन विरथा यों ही गँवाये । नहि मिले हमारे पिया न जप तप किया न सयम लिया अटक रही जग मे, पडी काल अनादि से पाप की बेडी पग में ।।

(झर्वटे)

मत भरियो माँग हमारी, मेरे शील को लागे गारी ।
मत डारो अंजन प्यारी, मै योगन तुम संसारी ।।

(झड़ी)

हुए कन्त हमारे जती मैं उनकी सती पलट गई रती तो धर्म नहि खण्डू, मैं अपने पिता के वँश को कैसे भण्डू। मै मड शील सिंगार अरी नाथ तार गये भर्तार के सङ्ग आभरना, निर्नेम नेम विन हमे जगत क्या करना ॥

पौष मास (झड़ो)

सखि लगा महीना पौष ये माया मोह जगत से द्रोह के प्रीत कराव, हरे ज्ञानावरणी अदर्शन छावै। द्रव्य से समता हरे तो पूरी परै जु सम्वर करे तो अन्तर टूटै, अस ऊँच नीच कुल नाम की सँज्ञा छूटै ॥

(झर्वटे)

क्यों ओछी उमर धरावै, क्यों सम्पति को विलगावै।
क्यो पराधीन दुख पावै, जो सयम मे चित लावै ॥

(झड़ी)

सखि यों कहलावैं दीन क्यों हो छवि छीन क्यो विद्या हीन मलीन कहावै, क्यों नारि नपुंसक जन्मे कर्म नचावै। वे तजैं शील शृङ्गार रुलै ससार जिन्हे दरकार नरक मे पड़ना, निर्नेम नेम विन हमे जगत क्या करना ॥

माघ मास (झड़ी)

सखि आगया माघ वसन्त हमारे कन्त भये अरहन्त वो केवल ज्ञानी, उन महिमा शील कुशील की ऐसी बखानी। दिये सेठ सुदर्शन शूल भई मखतूल वरसे फूल जयवाणी वे मुक्ति गये अरु भई कलंकित राणी ॥

(झर्वटे)

कीचक ने मन ललचाया, द्रौपदी पर भाव धराया।
उसे भीम ने मार गिराया, उसने करनी का फल पाया॥

(झड़ी)

फिर गहा दुर्योधन चीर हुई दिलगीर जुड़ गई भीर लाज अति आवै, गये पाण्डु जुए में हार न पार बसावै। भएपरगट शासन वीर हरी सब पीर बँधाई धीर पकर लिए चरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

फागुन मास (झड़ी)

सखि आया फाग बड भाग तो होरी त्याग अढाई लाग के मैंना सुन्दर, हरा श्रीपाल का कुष्ठ कठोर उदम्बर। दिया धवल सेठ ने डार उदधि की फार तो हो गए पार वे उस ही पल मे, अरु जा परणी गुण माल न डूबे जल में ॥

(झर्वटे)

मिली रैन मजूषा प्यारी, जिन ध्वजा शील की धारी।
परी सेठ पै मार करारी, गया नर्क में पापाचारी ॥

(झड़ी)

तुम लखो द्रोपदी सती दोष नहिं रती कहे दुर्मती पद्म के बन्धन हुआ घात की खण्ड जरूर शील इस खण्डन। उन फूटे घड़े मझार दिया जल डाल तो वे आधार थमा जल झरना, निर्नेम नेम बिन हमे जगत क्या करना ॥

चैत मास (झड़ी)

सखि चैत मे चिन्ता करे न कारज सरे शील से टरे कर्म की रेखा, मैने शील से भील को होता जगत गुरु देखा। लखि शील मे सुलसा तिरी सुतारा,फिरी स्वलाखी करो श्री रघुनन्दन अरु मिली शील परताप पवन से अन ॥

(झर्वटे)

रावण ने कुमत उपाई, फिर गया विभीषण भाई।
छिन मे जा लँक गमाई, कुछ भी नही पार वसाई ॥

(झड़ी)

सीता सती अग्नि मे पडी तो उस ही घडी वह शीतल पडी चढी जल धारा, खिल गये कमल भये गगन मे जय जय कारा । पद पूजे इन्द्र धरेन्द्र भई शीतेन्द्र श्री जैनेन्द्र ने ऐसा वरना, निर्नेम नेम विन हमे जगत क्या करना ।।

वैशाख मास (झड़ी)

सखि आई वैशाखी भेष लई मैं देख ये उरध रेख पडी मेरे कर में, मेरा हुआ जन्म यूँही उग्रसैन के घर मे । नहिं लिखा करम मे भोग पड़ा है जोग करो मत सोग जाऊँ गिरनारी, है मात पिता अरु भ्रात से क्षमा हमारी ।

(झवंटे)

मैं पुण्य प्रताप तुम्हारे, घर भोगे भोग अपारे ।
जो विधि के अङ्क हमारे, नहिं टरे किसी के टारे ।।

(झड़ी)

मेरी सखी सहेली वीर न हो दिलगीर धरो चितधीर मै क्षमा कराऊँ, मैं कुल को तुम्हारे कबहूँ न दाग लगाऊँ । वह ले आज्ञा उठ खड़ी थी मङ्गल घडी जा वन में पड़ी सुगुरु के चरना, निर्नेम नेम विन हमें जगत क्या करना ।।

जेठ मास (झड़ी)

अजी पड़े जेठ की धूप खड़े सब भूप वह कन्या रूप सती बड भागन, कर सिद्धन को प्रणाम किया जग त्यागन । अजि त्यागे सब संसार चूड़ियाँ तार कमण्डलु धारकै लई पिछौटी, अरु पहर कै साड़ी श्वेत उपाटी चोंटी ।।

(झर्वटे)

उन महा उग्र तप कीना, फिर अच्युत्येन्द्र पद लीना ।
है धन्य उन्ही का जीना, नही विषयन मे चित दीना ।।

(झड़ी)

अजी त्रियाभेद मिट गया पाप कट गया बढा पुरुषारथ,करे धर्म अरथ फल भोग रुचे परमारथ। वो स्वर्ग सम्पदा मुक्ति जायगी मुक्ति जैन की उक्ति में निश्चय धरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

जो पढ़ें इसे नर नारि बढ़े परवार सब संसार में महिमा पावे, सुनि सुतियनशील कथान विघ्न मिट जावें। नहिं रहै सुहागिन दुखी होंय सब सुखी मिटे बेरुखी वे होंय जगत में महा सतियों की चादर।

(झर्वटे)

मैं मानुष कुल में आया, अरु जती यती कहलाया।
है कर्म उदर की माया, बिन सयम जन्म गँवाया ॥

(झडी)

ग्राम, सम्वत्, कवि वश, नाम

है दिल्ली नगर सुवास वतन है खास फाल्गुन मास अठाई आठें, हों उनके नित कल्याण छपा कर बाँटें। अजी विक्रम अब्द उनीस पै धार श्री जगदीश की ले लो शरण, कहै दास नैनसुख दोष पै दृष्टि न धरना। मैं लूँगी श्री अरहन्त सिद्ध भगवन्त साधु सिद्धान्त चार का सरना, निर्नेम नेम बिन हमें जगत क्या करना ॥

भजन नं० १६०

महावीर चालीसा

(शमसाबाद निवासी स्व० पूरनमल कृत)

सिद्ध समूह नमों सदा, अरु सुमिरु अरहन्त।
निर आकुल निरवांच्छ हो, भये लोक से अन्त॥

विघन हरन मङ्गल करन, वर्द्धमान महावीर ।
तुम चितत-चिन्ता मिटे, हो प्रभु-चरम शरीर ॥

जय महावीर—दया के सागर ।
जय श्री सन्मति ज्ञान उजागर ॥ १
शात छवि मूर्ति अति प्यारी ।
भेष दिगम्बर तुम धारी ॥ २
कोटि भानु से अति छवि छाजै ।
देखत तिमिर पाप सब भाजे ॥३
महाबली अरि कर्म विदोरे ।
जोधा महा सुभट से मारे ॥ ४
काम क्रोध तजि छोड़ी माया ।
क्षण मे मान कषाय भगाया ॥ ५
रागी नहो, नही तू द्वेषी ।
वीत-राग तुम हित उपदेशी ॥ ६
प्रभु तुम नाम जगत में साँचा ।
सुमिरत भागत भूत पिशाचा ॥ ७
राक्षस यक्ष डाकनी भागे ।
तुम चितत भय कोई न लावे ॥ ८
महाशूल को जो तन धारै ।
होवे रोग असाध्य निवारै ॥ ९
वियाल कराल होय फण धारी ।
विष को डगल क्रोध कर भारी ॥१०
महाकाल सम करें डसन्ता ।
निर्विकार करो आप भगवन्ता ॥ ११
महा मत्त गज मद की झारै ।
भगे तुरन्त जब तोई पुकारै ॥ १२

फार डाढ़ सिंहादिक आवैं ।
ताको प्रभु हे तुही भगावै ॥ १३

होकर प्रबल अगिन जो जारे ।
तुम प्रताप शीतलता धारे ॥ १४

शस्त्र धार - अरि युद्ध लड़न्ता ।
तुम दृष्टि होय विजय तुरन्ता ॥ १५

पवन प्रचण्ड चले झकझोरा ।
प्रभु तुम हरो होय भय चोरा ॥ १६

झार खण्ड गिरि अटवी माहीं ।
तुम बिन शरणा तहाँ कोउ नाही ॥ १७

वज्रपात करि घन गरजावैं ।
मूसल - धार होय तडकावैं ॥ १८

बहि अथाह परवाह सुनीरा ।
पडते भँवर मिटावैं पीरा ॥ १९

होय अपुत्र दरिद्र सन्ताना ।
सुमिरत होत कुवेर समाना ॥ २०

बन्दीगृह मे बँधी जजीरा ।
कण्ठ सुई आन सकल शरीरा ॥ २१

राज दण्ड कर शूल धरावैं ।
ताहि सिंहासन तुही बिठावैं ॥ २२

न्यायाधीश राज दरबारी ।
विजय करे जब कृपा तुम्हारी ॥ २३

जहर हलाहल दुष्ट पिलन्ता ।
अमृत सम प्रभु करो तुरन्ता ॥ २४

चढ़े जहर जीवादि डसन्ता ।
निर्विष क्षण मे आप करन्ता ॥ २५

एक सहस वस तुम्हरे नामा।
जन्म लियो कुण्डलपुर धामा ॥ २६

सिद्धारथ नृप सुत कहलाये।
त्रिशला माता उदर प्रगटाये ॥ २७

तुम जनमत भयो लोक अशोका।
अनहद घोर भई तिहुँ लोका ॥ २८

इन्द्रनि नेत्र सहस करि देखा।
गिरि सुम्मेर कियो अभिषेका ॥ २९

कामादिक असना संसारी।
तज तुम भए वाल ब्रह्मचारी ॥ ३०

अथिर जान जग अनित विसारी।
वालपने प्रभु दीक्षा धारी ॥ ३१

शान्त भाव धर कर्म विनाशे।
तुरतहि केवल ज्ञान प्रकाशे ॥ ३२

जड़ चेतन त्रिय जग के सारे।
हस्त देख वतु समतु निहारे ॥ ३३

लोक अलोक द्रव्य पट जाना।
द्वादशाङ्ग का रहस्य वखाना ॥ ३४

पशु - यज्ञ का मिटा कलेशा।
दया धर्म देकर उपदेशा ॥ ३५

वहुमत और कुवादी डण्डी।
रहने न दिया एक पाखण्डी ॥ ३६

पञ्चम काल विखें जिनराई।
चाँदनपुर प्रभुता प्रगटाई ॥ ३७

क्षण मे तोपनी बड़ि हटाई ।
भक्तनि के तुम सदा सहाई ॥३८

मूरख नर नहिं अक्षर ज्ञाता ।
सुमरत पडित होत विख्याता ॥३९

पूरनमल रच कर चालीसा ।
हे प्रभु तोहि नवावत शीशा ॥४०

दोहा-करे पाठ चालीस दिन, नित चालीसहि बार ।
खेवै धूप सुगध पढ़ि, श्री महावीर आगार ॥
जनम दरिद्र होय अरु, जिसके नहिं सन्तान ।
नाम वश जग में चले, होय कुवेर समान ॥

पद्मप्रभु चालीसा न० १६१

दोहा-शीश नवा अरिहन्त को, सिद्धन करूँ प्रणाम ।
उपाध्याय आचार्य का ले सुखकारी नाम ॥
सब साधु और सरस्वती, जिन मदिर सुखकार ।
पद्मपुरी के 'पद्म' को मन मन्दिर मे धार ॥

चौ०—जय श्री पद्मप्रभु गुणधारी, भविजन को तुम हो हितकारी ।
देवों के तुम देव कहाओ, पाप भक्त के दूर हटाओ ॥
तुम जग के सर्वज्ञ कहाओ, छटे तोर्थकर कहलाओ ।
तीन काल तिहुँ जग की जानो, सब वाते क्षण में पहचानो ॥
वेष दिगम्बर धारन हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे ।
मूर्ति तुम्हारी कितनी सुन्दर दृष्टि सुखद जमती नासा पर ॥
क्रोधमान मदलोभ भगाया, राग द्वेष का लेश न पाया ।
वीत राग तुम कहलाते हो, सब जग के मन को भाते हो ॥

कौशाँवी नगरी कहलाए, राधा धारण जो बतलाए।
सुन्दर नार तुसीमा उनके, जिसके उर से स्वामी जन्मे ॥
कितनी लम्बी उमर कहाई, तीस लाख पूरब बतलाई।
एकदिन हाथी बँधा निरखकर, झट आया वैराग्य उमड़कर ॥
कार्तिक सुदी त्रयोदश भारी, तुमने मुनि-पद दीक्षा धारी।
सारे राजपाट को तज के, जभी मनोहर वन मे पहुँचे ॥
तप कर केवल ज्ञान उपाया, चैत सुदी पन्दरस कहलाया।
एकसौदस गणधर बतलाए, मुख्य वज्र चामर कहलाए ॥
लाखो मुनि अर्जिका लाखों, श्रावक और श्राविका लाखो।
असख्यात तिर्यञ्च बताए, देवी देव गिनत नही पाए ॥
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, शिवरमणी को ली परनाके।
पञ्चमकाल महादुखदाई, जब तुमने महिमा दिखलाई ॥
जयपुर राज्य ग्राम बडा है, स्टेशन शिवदास पुरा है।
मूला नाम जाट का लडका, घर की नींव खोदने लागा ॥
खोदत खोदत मूर्ति दिखाई, उसने जनता को बताई।
चिन्ह कमल लख लोग लुगाई, पद्मप्रभु की मूर्ति बताई ॥
मन मे अति हर्षित होते है, अपने दिल का मल धोते है।
तुमने ही अतिशय दिखलाया, भूत-प्रेत को दूर भगाया ॥
भूत-प्रेत दुख देते जिसको, चरणो में लाते है उसको।
जब गन्धोदक छींटा मारे, भूत-प्रेत तब आप बकारे ॥
जपने से जब नाम तुम्हारा, भूत-प्रेत करें किनारा।
ऐसी महिमा बतलाते है, अन्धे भी आँखे पाते है ॥
प्रतिमा श्वेतवर्ण कहलाये, देखत ही हृदय को भाये।
ध्यान तुम्हारे जो धरता है, इस भव से वह नर तरता है ॥
अन्धा देखे गूँगा गाये, लँगडा पर्वत पर चढ जाये।
बहरा सुन सुन कर खुश होवे, जिस पर कृपा तुम्हारी होवे ॥

मैं हूँ स्वामी दास तुम्हारा, मेरी नैया कर दो पारा।
चालीसे को 'चन्द्र बनावे पद्म प्रभु को शीश नवावे ॥

सोरठा--नित चालीसहिं बार, पाठ करे चालीस नित।
खेय सुगन्ध अपार, पद्मपुरी में आय के ॥
होय कुबेर समान, जन्म दरिद्री होय जो।
जिनके नहिं सन्तान, नाम वंश जग में चले ॥
॥ इति पद्मप्रभु चालीसा ॥

भजन नं. १६२

(तर्ज—चुप चुप खड़े हो)

भव भव रुला हूं न पाया कोई पार है,
तेरा ही आधार है तेरा ही आधार है।
सीता के शील को तुमने बचाया है,
सूली से सेठ को आसन बिठाया है।
खिली खिली कलियाँ किया नागहार है तेरा
जीवन की नाव ये कर्मों के भार से,
अटकी है बीच बीच रतियों की मार से।
रही सही मत का तू ही पतवार है तेरा ही
महिमा का पार जब सुर नर न पा सके,
'सौभाग्य' ये प्रभु गुण तेरे गा सके
बार बार आपको सादर नमस्कार है हो

भजन नं० १६३

चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

वीत राग सर्वज्ञ जिन वाणी को ध्याय,
लिखने का साहस करूँ, चालीसा सिर नाय ॥ १॥

देहरे के श्री चन्द्र को, पूजो मन वच काय,
रिद्धि सिद्धि मङ्गल करे, विघ्न दूर हो जाय॥२॥

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर॥३॥
शाँति छवि मूरति अति प्यारी, भेष दिगम्बर धारा भारी॥४॥
नासा पर है दृष्टि तुम्हारी, मोहनी मूरति कितनी प्यारी॥५॥
देवों के तुम देव कहावो, कष्ट भगत के दूर हटावो॥६॥
समन्त भद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्शन तुम पाया॥७॥
तुम जग मे सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थङ्कर कहलावो॥८॥
महासेन के राजदुलारे मात सुलक्षणा के हो प्यारे॥९॥
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्र प्रभु स्वामी॥१०॥
पोष वदी ग्यारस को जन्में, नर नारी हरषे तब मन मे॥११॥
काम क्रोध तृष्णा दुख कारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी॥१२॥
फाल्गुन वदी सप्तमी भाई, केवल ज्ञान हुआ सुख दाई॥१३॥
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गये प्रभू आप वहाँ से॥१४॥
लोभ मोह और छोड़ी माया, तुमने मान कषाय नसाया॥१५॥
रागी नहीं नहीं तू द्वेषी, वीत राग तू हित उपदेशी॥१६॥
पँचम काल महा दुख दाई, धर्म कर्म भूल सब भाई॥१७॥
अलवर प्रान्त मे नगर तिजारा, होय जहाँ पर दर्शन प्यारा॥१८॥
उत्तर दिशि मे देहरा माही, वहाँ आकर प्रभुता प्रगटाई॥१९॥
सावन सुदी दशमी शुभ नामी, आन पधारे त्रिभुवन स्वामी॥२०॥
चिह्न चन्द्र का लख नर नारी, चन्द्र प्रभू की मूरत प्यारी॥२१॥
मूरत आपकी अति उजियाली, लगता हीरा भी है जाली॥२२॥
अतिशय चन्द्र प्रभु का भारी, सुनकर आते यात्री भारी॥२३॥
फाल्गुन सुदी सप्तमी प्यारी, जुड़ता है मेला यहाँ भारी॥२४॥
कहलाने को तो शशि धर हो, तेज पुंज रवि से बढ़कर हो॥२५॥
नाम तुम्हारा जग में साँचा, ध्यावत भागत भूत पिशाचा॥२६॥
राक्षस भूत प्रेत सब भागे, तुम सुमरत भय कोय न लागे॥२७॥

कीर्ति तुम्हारी है अति भारी, गुण गाने जिन नर और नारी ।२८
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, सकट झट कटता है भारी ।२९
जो भी जैसी आश लगाता, पूरी उसे तुरत कर पाता ।३०
दुखिया दर पर जो आते है, सकट सब खोकर जाते है ।३१
खुला सभी को प्रभू द्वार है, चमत्कार को नमस्कार है ।३२
अन्धा भी यदि ध्यान लगावे, उसके नेत्र शीघ्र खुल जावे ।३३
बहरे को सुनने लग जावे, पगले का पागलपन जावे ।३४
अखड ज्योति का घृत जो लगावे, सकट उसका सब कट जावे ।३५
चरणों की रज अति सुखकारी, दुख-दरिद्र सब नाशनहारी ।३६
चालीसा जो मन मे ध्यावे, पुत्र पौत्र सब सम्पति पावे ।३७
पार करो दुखियों की नैया, स्वामी तुम बिन नही खिवैया ।३८
प्रभू मैं तुमसे कुछ नही चाहूँ, दर्श तिहारा निश दिन पाऊँ ।३९
दोहा—करूँ बन्दना आपकी, श्री चन्द्रप्रभू जिनराज ।
जङ्गल में मङ्गल कियो, रखो सुरेश की लाज ॥

१६४—श्री बाहुबली स्तुति (कन्नड़)

बाहुबली स्वामी जग के नी स्वामि ।
शान्तिय-मूरुति ये नमिपेवु अनुदिनवु ॥टेक॥
आदिनाथ-कुँवरा भरतन सोदरा ।
सोदरनगे दूदेयल्ला राजवन्नु कोट्टयल्ला ॥१॥
नोडे नी किरियव आदेनी हिरियव ।
विवेक निन्ददागे तालमेय बालागे ॥२॥
शान्तिय वदना, कान्तिय निलवु ।
विश्व के आदर्शा निन्नय दर्शनवु ॥३॥
बुलगुल राजा, अगणित – तेजा ।
अरलिद कमलगला, निन्नय पद-युगला ॥४॥

CHARACTER IS GOD
चरित्र ईश्वरीय रूप है

हनुमानज्योतिष
द्रक व
काशक
ला. श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस मथुरा

❀ श्रीः ❀

हनुमान-ज्योतिष

पण्डित बनमालि चतुर्वेदीकृत

❀ भाषा टीका सहित ❀

मानसरोवर में ही पूर्णता निहित
प्रेम त्याग
H B N
सेवा

लाला श्यामलाल हीरालाल ने
श्याम काशी प्रेस, मथुरा में
छापकर प्रकाशित किया।

मूल्य ।॥)

सर्वाधिकार प्रकाशक के आधीन है।

❀ अथ हनुमज्ज्योतिषस्य ❀

विषयानुक्रमणिका

अथ चक्रवर्णनारम्भः

अथ फलकथनवर्णनारम्भः

अथान्यस्फुटविषया :—

इत्यन्यस्फुटविषयाः

॥ श्रीः ॥

❀ हनुमज्ज्योतिषम् ❀

भाषाटीका सहितम् ।

श्रीरामचन्द्र उवाच ।

ऋष्यमूकगिरौ रामो हनुमन्तं हि पृष्टवान् ।
रवेः किं पठितं धीमन् तत्सर्वं मम वर्णय ॥१॥

श्रीरामचन्द्रजी ने ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से पूछा कि हे श्रीमन् ! सूर्यनारायण से तुमने क्या पढ़ा वह सब हमसे वर्णन करो (कहो) ॥१॥

श्री हनुमानुवाच

सूर्यात्सर्वं मया धीतं वेदान्तादि यथा विधि ।
ज्योतिःशास्त्रस्यापि फलंवदामि किमतःप्रभो॥२।

तब हनुमानजी बोले कि हे प्रभो ! मैंने वेदादि समस्त शास्त्रों की और ज्योतिःशास्त्र के फल को भी सूर्य से अच्छी रीति से पढ़ा है उन शास्त्रों में से ज्योतिष भाषा का फल लाभदायक है जो आप पूछें उसे निवेदन करूं॥२

श्री रामचन्द्र उवाच ।

अन्यच्छास्त्रं विवादाय पदार्थानां विरोधकम् ।
भविष्यार्थस्य बोधाय ज्योतिः शास्त्रंवदाधुना॥३

श्रीरामचन्द्र ने कहा कि हे हनुमान दूसरे जितने शास्त्र है सब विवाद (झगड़े) के लिये और पदोंके अर्थ का जानने (बताने) वाले है परन्तु ज्योतिष शास्त्र संसार के होने वाले भविष्य को जानने वाला है इसलिये तुम उस ज्योतिष शास्त्रको इस समय मुझसे कहो ॥३॥

हनुमानुवाच

तस्यद्वचश्चाश्रुत्य निजगाद हनूमतः ।
भविष्यदर्थबोधाय शृणु तद्रघुनन्दन ॥ ४ ॥

ऐसा वचन श्रीरामचन्द्र का सुनकर हनुमानने कहा कि हे रघुनन्दन! भविष्य में आगे होने वाला अर्थ का ज्ञान जिससे हो उससे सुनिये ॥४॥

दशकाष्ठं समालिख्य चक्रं नामयुतं पुनः ।
अद्यवर्णस्वरो ग्राह्यो भविष्यति सुनिश्चितम्॥५॥

चक्र के आकार का दश कोठा बनाकर लिखे उसमें नाम लिखे उस कोठे के बीच में जो शब्द लिखा है उसके पहले अक्षर से भविष्यत फल निश्चय करके होगा ऐसा जाना जावेगा । ५॥

अथ चक्रसंघः ।

गमनागमनञ्चैव कृषिर्व्यापार एवच ।
गङ्गाप्राप्तिश्चरोगैर्हिंसृत्युचिन्ता तथैव च ॥
सेवासाहित्यवासाश्च मन्त्रिचिन्ता धनस्य च ।

मनःकामस्तथा रोगा धनोत्पत्तिकरस्तथा ।
वादो विवादः सङ्गश्च युद्ध नेलनमेवच ।
यांचा प्राप्तिश्च विश्वासःस्थानं नष्ट निधिस्तथा ।
ग्राहकी भीति गर्भो च चिन्ता बन्धनमेवच ।
विश्वासीवद्यादूतांश्च सम्बन्धो राज्यमेवच ॥
सन्तानसंचयोद्वाहा विक्रय प्रणयौ तथा ।
कुशलं च क्रमेणैषां चक्राण्युक्तानि नामभिः ।
चक्रकोष्ठेऽङ्गुलिं स्थाप्या कुर्यादत्रपरीक्षणम् ॥

चक्र समुदाय लिखते हैं परदेश जाना और परदेश से लौटना, खेती, रोजगार, गंगा की प्राप्ति, रोगों से मृत्यु की चिन्ता, सेवा (नौकरी) सहायता वास, मैत्री की चिन्ता, मनोरथ, रोग, धनकी पैदावार, विवाद (शास्त्रार्थ)साथ रहना, युद्ध, मुलाकात, मांगना, प्राप्ति विश्वास, स्थान, नष्ट हुआ खजाना, ग्राहक, भय, गर्भ की चिंता बन्धन (जेल) विश्वास, विद्या, दूत, सम्बन्ध, राज्य, पुत्रोत्पति, द्रव्य का संग्रह, ब्याह, बिक्री, प्रेम, कुशल इत्यादि सबों में जिसकी परीक्षा करना हो ऊपर प्रत्येक चक्रके जो जो नाम लिखा है उस नामके अनुसार चक्र के कोष्ठ में उंगली रखकर कोष्ठ के अंकों के अनुसार फल समझना ॥६॥

❀ अथ गमन परीक्षा ❀

बालिनं नलनीला च सुग्रीव रामचन्द्रकम् ।
विभीषण लक्ष्मण च जाम्बवन्तं तथाङ्गदम् ॥
हनुमन्तं समालेख्यहस्तं धत्वाफलंवदेत् ॥१॥
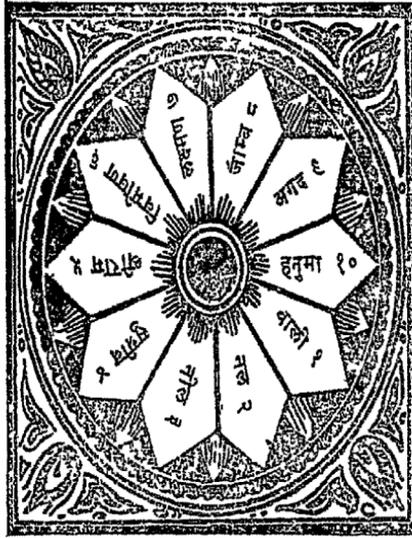
चक्र के बीच में जो दश नाम लिखे हैं जिसको कहीं जाने की इच्छा हो वह इस चक्र के नामों में किसी पर हाथ की अंगुली रखकर भला बुरा फल जानलें ॥१॥

॥ अथ आगमन परीक्षा ॥

आगम चिन्तयेदत्र विलम्बं शीघ्रतां तथा ।
हनूमान् नीलनलकौ विभीषण सुकण्ठकौ ॥
लक्ष्मणौ रामचन्द्रश्च ह्यङ्गदो जाम्बवांस्तथा ।
वाली चैतेषु वक्ष्यामि क्रमेण गणयेद्बुधः॥२॥
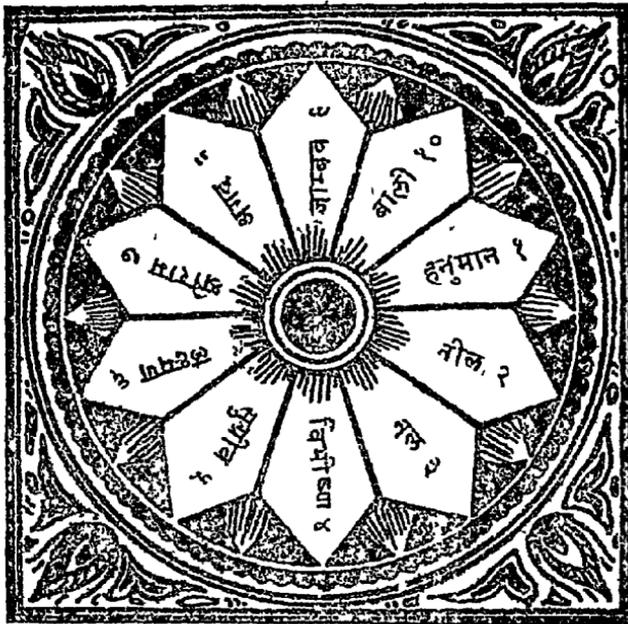
परदेशसे अपने देश आने की परीक्षा जिसे करनी हो (अर्थात् देर में आना होगा या जल्द) यह इस चक्रसे जान ले ॥ २ ॥

❀ अथ कृषिकर्म परीक्षा ❀

कृषिकर्म परीक्षादि यत्नतश्चिन्तयेद्बुधः ।
अङ्गदो हनुमांश्चैववाली च नल नीलकौ ॥
सुग्रीवो रावणभ्राता श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा ।
जाम्बवांश्चक्रमादेतैः फलंब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥३॥
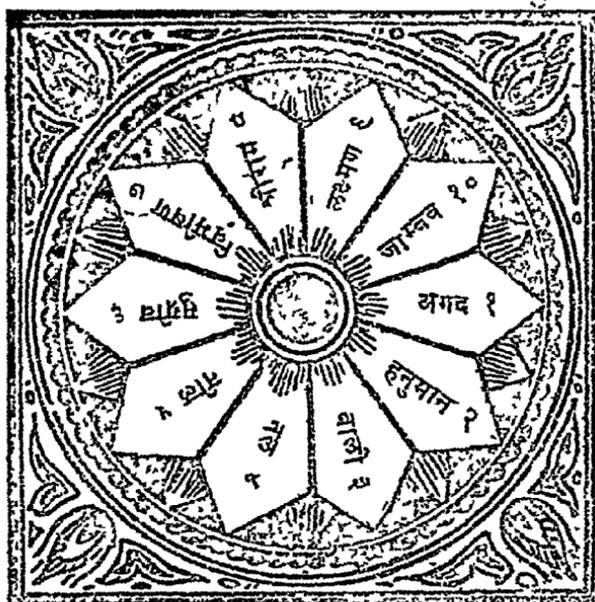
जिन लोगों की इच्छा खेती करने की होवे कि अब की बार खेती करता हूं इसमें शुभ अशुभ कैसा फल होगा । तब इस चक्र में जान लें ॥३॥

❀ अथ व्यापार परीक्षा ❀

जाम्बवानङ्गदश्चैव हनुमान्वालिसंज्ञकः ।
रामलक्ष्मण सुग्रीव नलनील विभीषणः ॥
लाभालाभंशुभं दृष्ट्वा यत्नतः परिवर्जयेत् ॥४
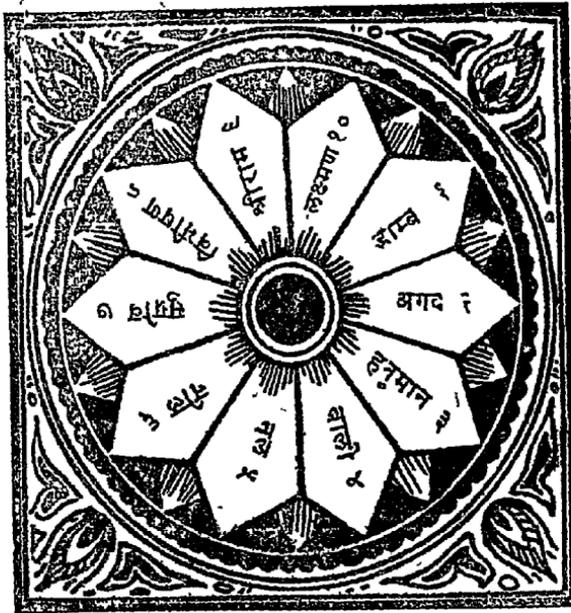
व्यापार (रोजगार) करने की इच्छा जिनकी होवे इस चक्रके भीतर जो नाम लिखे हैं उनमेंसे किसी एक पर अंगुली रखकर अङ्का-नुसार अच्छे बुरे फलको समझलें ॥४॥

❀ अथ गङ्गाप्राप्ति परीक्षा ❀

गङ्गातीरे मृतिं प्राप्तुं यदीच्छंति च मानवाः ।
नलो वाली सुकराठश्च नीलश्चै च विभीषणः ।
श्रीरामो जाम्ववान्वीरो लक्ष्मणो हनुमांस्तथा ।
अङ्गदश्च विजानायुः क्रमेणतैः फलशुभम् ॥५॥
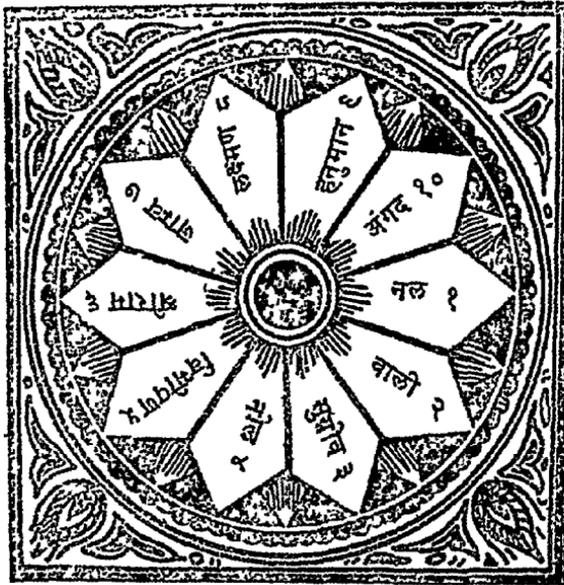
गङ्गा तट पर मृत्यु होने की इच्छा से जो लोग यात्रा करते हैं, वे इस चक्रके नामाँकों के अनुसार शुभ अशुभ फल को जानें ॥५॥

❀ अथ मृत्यु चिन्ता परीक्षा ❀

मृत्युचिन्तापरीक्षायामस्मात्तच्चिन्तयेद्बुधः ।
गरुड़ः शङ्करश्चैव गणेशः कार्तिकस्तथा ॥
श्रीकृष्णश्चापि प्रद्युम्नो बलभद्रश्चसांवकः ।
अनिरुद्धः कामदेवेभ्यःस्यान्मृत्युनिश्चयः ॥६॥
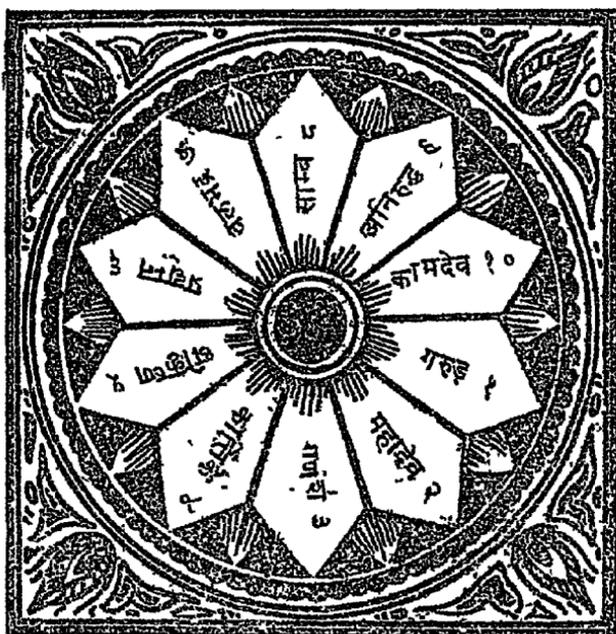
रोग से जो मनुष्य अधिक दुःखी होकर क्लेश से छूटने की, अथवा मरने की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार फल जाने ॥६॥

❀ अथ देवेष्ट परीक्षा ❀

देवोऽयंपरितुष्टः स्याद्याद् पृच्छति मानवः ।
कामश्च गरुड़श्चैव कार्तिकेयो गणेश्वरः ॥
महादेवश्च श्रीकृष्णोऽनिरुद्धस्ततिपतातथा ।
साम्बश्चबलभद्रश्च फलमेभिरुदाहरेत् ॥ ७॥

देवता की सेवा के प्रसन्न होने की परीक्षा जोमनुष्य करना चाहें, कि देव मुझ पर प्रसन्न होगा या नहीं तो इस चक्र के नामाकों के अनुसार शुभाशुभ फल जानलें ॥७॥

❀ अथ सहायता परीक्षा ❀

साम्बःकामश्चगरुड़ो महादेवश्चकार्तिकः ।
गणेश्वरश्च श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एव च ॥
अनुरुद्धः क्रमादेतैः फलब्रूयाच्छुभाशुभम् ॥

किसी से सहायता की इच्छा जो मनुष्य करना चाहे तो इस चक्रांकों के नामानुसार शुभ अशुभ की परीक्षा करे ॥८॥

❀ अथ वासनिरूपण परीक्षा ❀

अनिरुद्धश्च साम्बश्च कामो गरुड एवच ।
गणेश्वरो महादेवः कार्तिकः कृष्ण एव च ॥
बलभद्रश्च प्रद्युम्नो जानीयात् वाजकर्मणि ॥९
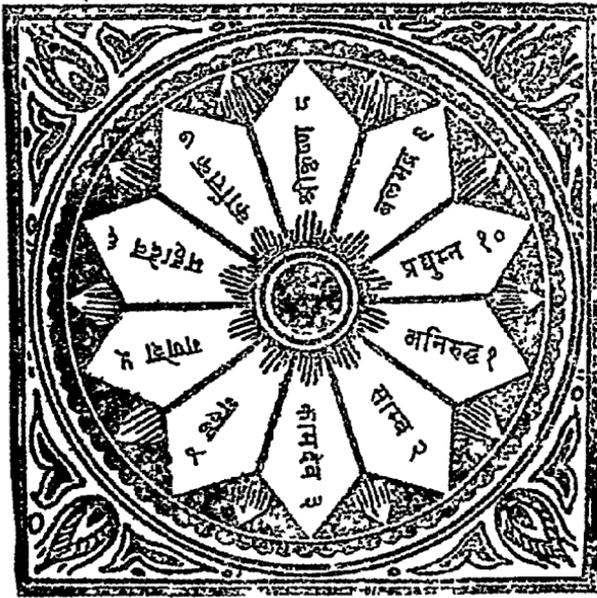
किसी जगह रहने की अभिलाषा जो करना चाहे इस चक्र के नामांकों के अनुकूल शुभ अशुभ फल जानले ॥ ९ ॥

❀ अथ मन्त्र परीक्षा ❀

युधिष्ठिरश्चाहिवरः कार्तिकेयसुयोधनौ ।
दुःशासनश्च गांगेयो अर्जुनः सहदेवकः ॥
नकुलो भीमसेनश्चक्रमन्मन्त्रिविचारणम् ॥१०॥
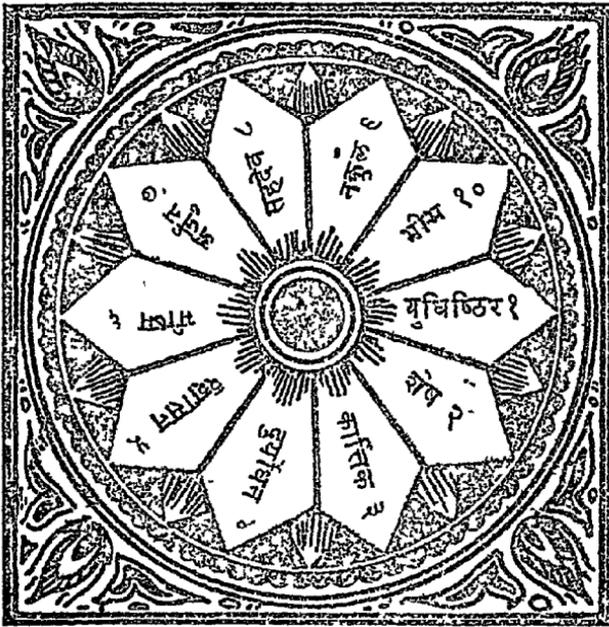
किसी कार्य में मन्त्र (सलाह) देने का विचार करना चाहे तो इस चक्र के नामों के अनुसार विचार कर परीक्षा करे ॥१०॥

❀ अथ धन चिन्ता परीक्षा ❀

प्रद्युम्नो ह्यनिरुद्धश्च महादेवारतीश्वरः ।
गरुणो वलभद्रश्च गणेशः कार्तिकस्तथा ।
श्रीकृष्ण साम्बोकथितोजानीयाच्चशुभाशुभम्११
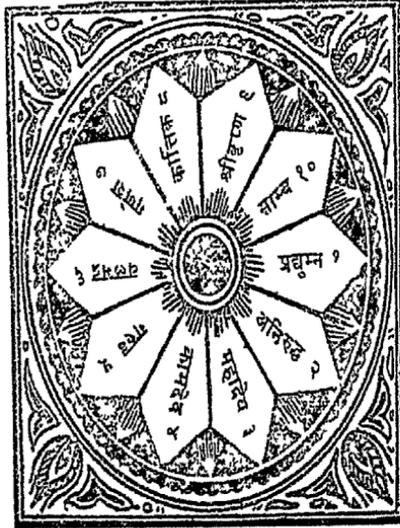
जो मनुष्य धन की चिन्ता (अर्थात् हमको धन मिलेगा कि नहीं) करना चाहे तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार शुभाशुभ परीक्षा कर जान सकता है ॥११॥

❀ अथ मनोभिलषित कामःपरीक्षा ❀

आदौ बलस्य प्रद्युम्नोऽनिरुद्धः साम्ब एव च ।
कामदेवोऽथगरुडोमहादेवगणेश्वरौ ।
कार्तिकेश्च श्रीकृष्णोजासीयाच्चशुभाशुभम् ॥ १२ ।
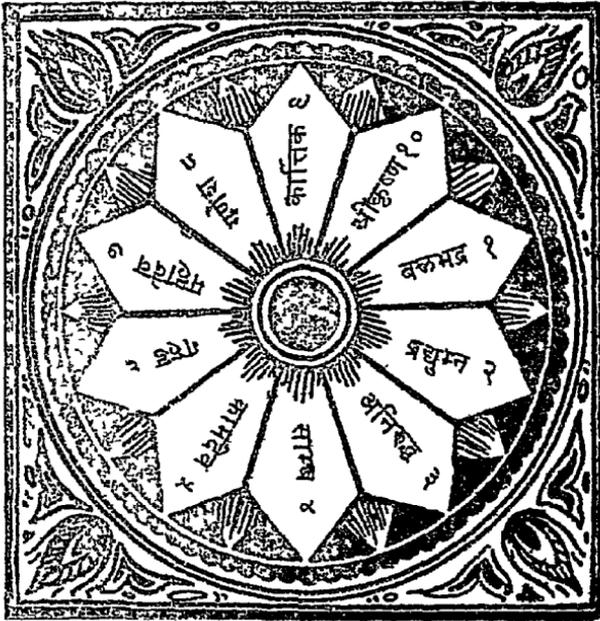
जो मनुष्य मनोवांछित मनोर्थ पूर्ण होने की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्रके नामांकों के अनुसार शुभाशुभ की परीक्षा करे ॥१२॥

❀ अथ रोग परीक्षा ❀

कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णो बलः प्रद्युम्न एवच ।
अनिरुद्धश्च साम्बश्च कामदेवः खगेश्वरः ॥
महादेव गणेशश्चक्रमपूर्वं शुभं वदेत् ॥१३॥

जो मनुष्य रोग के चिन्ता की परीक्षा करना चाहे कि ये रोग अच्छा होगा या नहीं तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अनुसार रोगों से छूटना न छूटना समझलें ॥

❀ अथ धनागम परीक्षा ❀

गणेशः कार्तिकेयश्च श्रीकृष्णोबलभद्रकः ।
प्रद्युम्नोह्य निरुद्धश्च साम्बो वै कामदेवकः ॥
गरुणश्च महादेवः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥१४
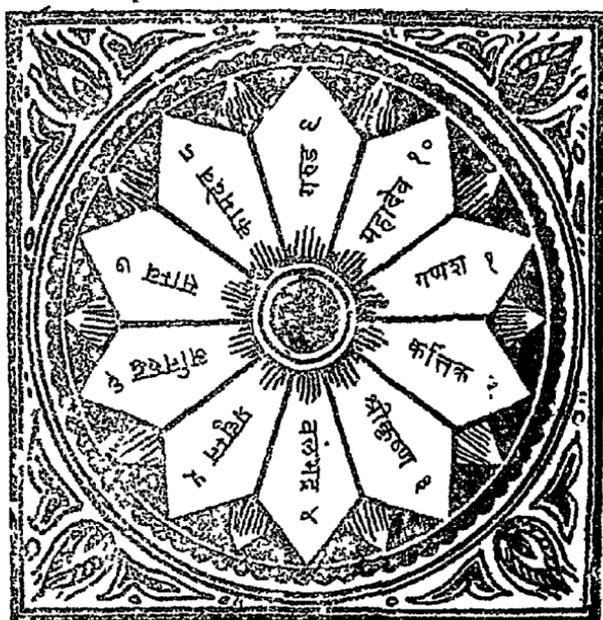
जो मनुष्य किसी व्यापार से धन प्राप्ति की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र के बीच में अंगुली रखकर अच्छे प्रकार से नामांकों के अनुसार शुभाशुभ विचारले ॥१४॥

❀ अथ वाद परीक्षा ❀

लक्ष्मणो जाम्बवानेव ह्यङ्गदो हनुमांस्तथा ।
वाली नलो नलश्चैव सुकण्ठकविभीषणौ ॥
रामचंद्रक्रमादेभिर्जानीवाद्धौ शुभाशुभम् ॥१५॥

जो मनुष्य वाद (किसी से तिरस्कार) से युक्त हो वह इस चक्र के मध्य में अंगुली रखकर नामों के अनुसार शुभाशुभ फल जान ले ॥१५॥

❁ अथ विवाद परीक्षा ❁

अहीश्वरश्चकर्णश्च धर्मराजोऽर्जुनस्तथा ।
भीमश्च नकुलश्चैव तथा दुःशासनः स्मृतः ॥
गाँगेयः सहदेवश्च तथा दुर्योधनो मतः ।
शुभाशुभ फलं तेषांक्रमपूर्वं विचारयेत् ॥१६॥
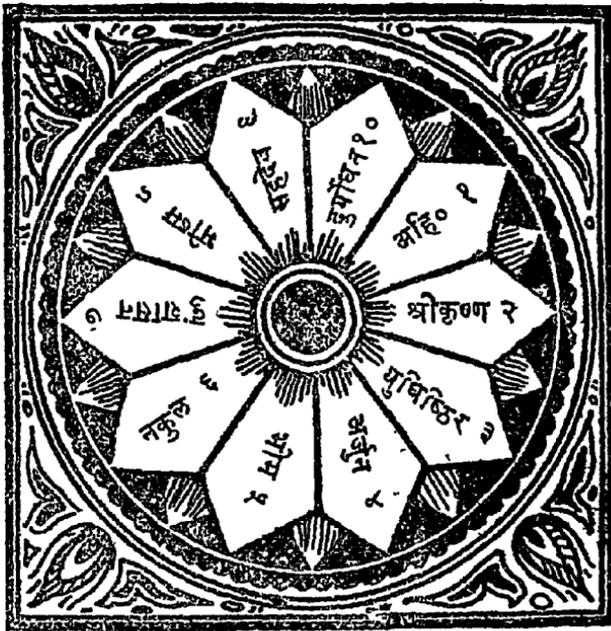
जो पुरुष किसी प्रकार के विवाद (झगड़ा) में फँसकर उससे छूटने की इच्छा करे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों से परीक्षा करले ॥१६॥

❀ अथ सङ्ग परीक्षा ❀

भीष्मा दुःशासनश्चैव अर्जुनोऽहिवरस्तथा ।
नकुलः सहदेवश्च भीमो दुर्योधनस्तथा ॥
कर्णो युधिष्ठरश्चैवक्रमपूर्वं विचारयेत् ॥१७॥
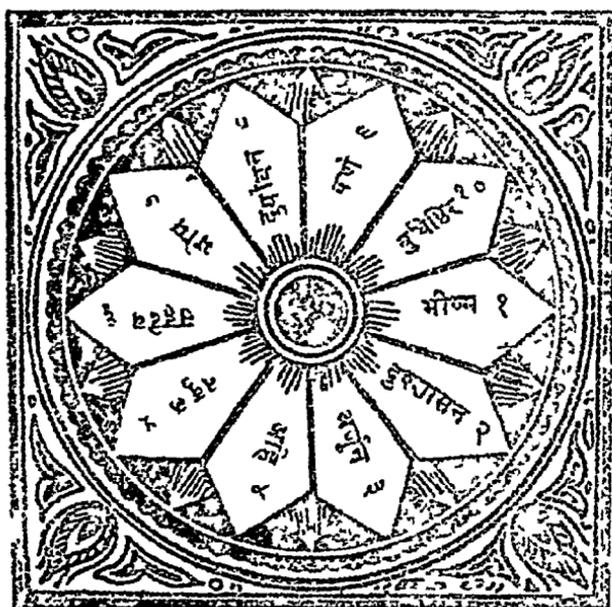
जो पुरुष किसी का साथ करना चाहे तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल जान ले ॥१७॥

❀ अथ युद्ध परीक्षा ❀

कर्णो भीष्मस्सर्प राजस्तथैवच युधिष्ठिरः ।
अर्जुनो भीमसेनश्च नकुलोदुष्टशासनः ॥
दुर्योधनः सहदेव एभिः फलमुदाहरेत् ॥१८॥
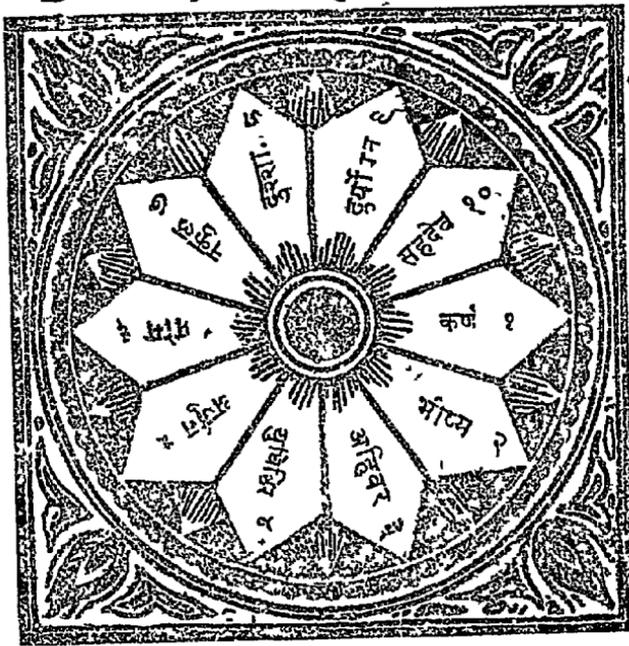
जो मनुष्य किसी से युद्ध (लड़ाई) करने की इच्छा करे तो इस चक्र में अंगुली रखकर शुभाशुभ फल नामांकों के अनुसार समझकर करे ॥१८

❀ अथ मिलन परीक्षा ❀

दुःशासनो ह्यर्जुनश्च भीष्मश्चनकुलस्तथा ।
सहदेव धर्मराजौ दुर्योधन वृकोदरौ ॥
अहीश्वरस्तथा कर्णःक्रमादेतै विचारयेत् ॥१६॥

जो मनुष्य किसी से मिलने की इच्छा करे तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल को विचार ले ॥१६॥

❀ अथ यात्रा परीक्षा ❀

सहदेवो धार्तराष्ट्रो भीष्मो दुशासनस्तथा ।
कर्णश्चाहिवरो धर्मः सव्यसाची वृकोदरः ॥
नकुलश्चक्रमादेतज्जानीयाद्धौ शुभाशुभम् ॥२०॥
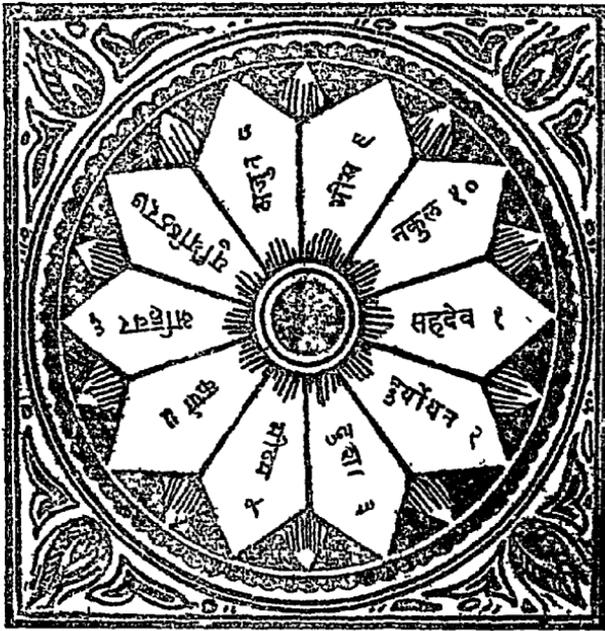
जो मनुष्य किसी राजा या बाबू से कुछ मांगने की इच्छा करे तो इस चक्रके नामांकों के अनुसार मिलने न मिलने की शुभाशुभ परीक्षा करले ॥२०॥

❀ अथ स्वस्थान परीक्षा ❀

अगस्त्यो नारदश्चैव वसिष्ठो विथिलस्तथा ।
अङ्गिराः सनको दुर्वासास्तुसानन्दकश्चैव ॥
सनकोगोरखश्चैव जानीयत्तैः शुभाशुभम् ॥२१॥
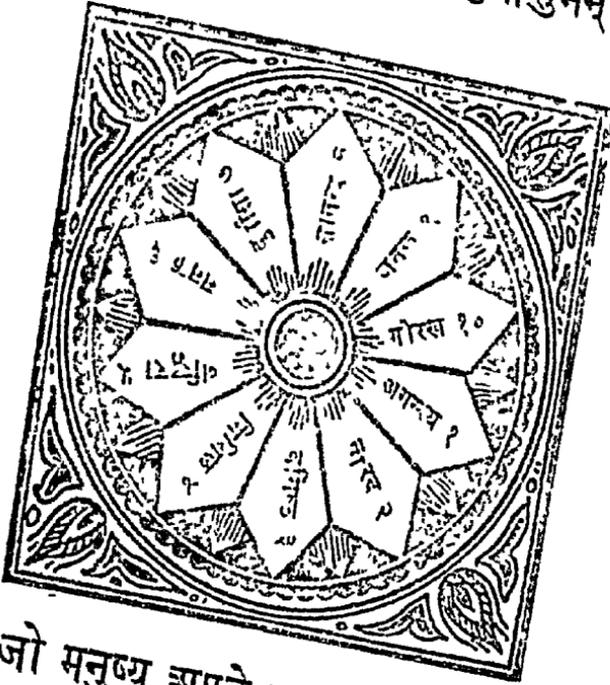
जो मनुष्य अपने स्थान (मकान) जाने की इच्छा करे तो इस चक्र में उँगली रखकर शुभाशुभ फल नामांकोंके अनुसार जाने ॥२१॥

❁ अथ नष्टद्रव्य परीक्षा ❁

भीमश्च माद्रीतनयौ दुःशासनयुधिष्ठिरौ ।
दुर्योधनश्च राधेयोऽहीश्वरश्चसरिज्जनुः ॥
सव्यासाची च दशमः क्रमात्सर्वं फलंवदेत्॥२२
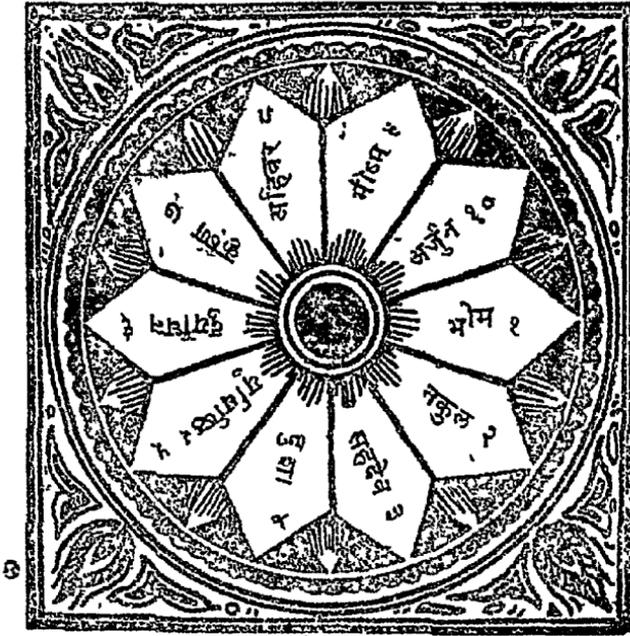
जिसका द्रव्य नष्ट होगया हो, अर्थात् कोई चुरा ले गया हो, और उसके पाने की इच्छा करे तो इस चक्र के नामांकों के अङ्कानुसार प्राप्ति की परीक्षा करले ॥२२॥

❀ अथ प्राप्ति परीक्षा ❀

नकुलः सहदेवश्च दुर्योधन बृकोदरौ ।
गङ्गा पुत्रःकर्णदेवाऽहिधर्मोऽर्जुन एव च ॥
दुशासनश्चदशभि फलमेभिरुदाहरेत् ॥ २३ ॥
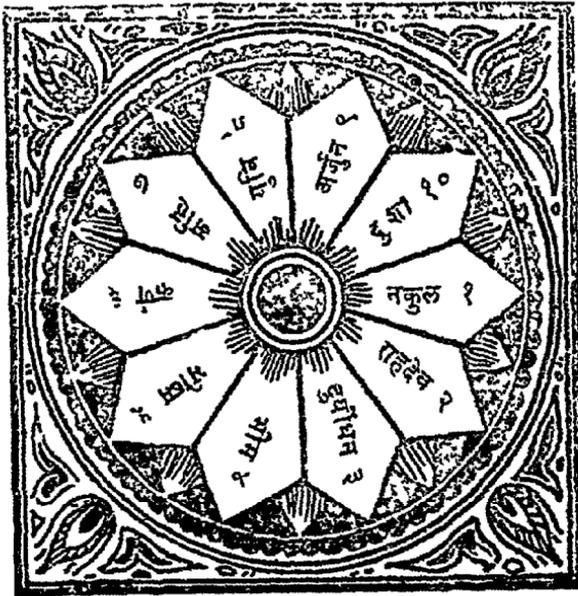
जो मनुष्य कहीं से कुछ प्राप्ति की इच्छा करे तो इस चक्र में अँगुली रखकर नामों के अङ्कों के अनुसार शुभाशुभ फलाफल जान कर कहै ॥२३॥

❀ अथ पीछे पड़ने की परीक्षा ❀

अर्जुनो भीमसैनश्च यमो दुर्योधनस्तथा ।
दुःशासनश्च गांगेयराधेयौ च युधिष्ठिरः ॥
अहीश्वरःक्रमादेतः फलंचक्रे विचारयेत् ॥२४॥
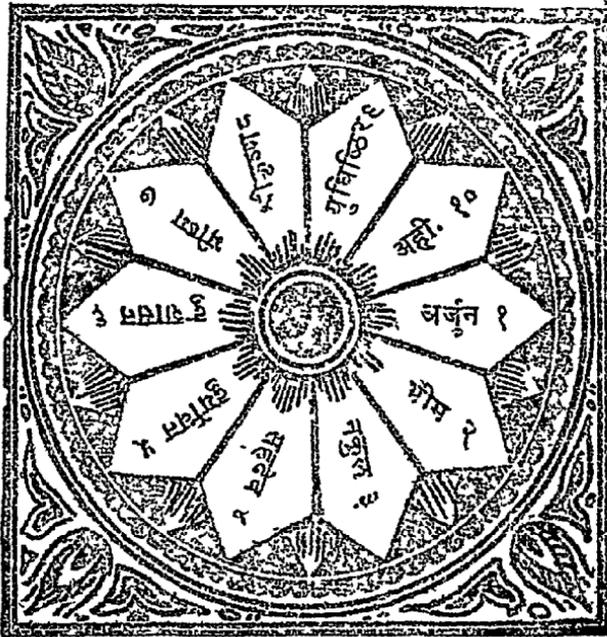
जिस मनुष्य के चित्त में यह सन्देह हो कि कोई हमारा क्यों पीछा किये हैं वह इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अनुसार शुभअशुभ फलकी परीक्षा का विचार करे ॥२४॥

❀ अथ ग्राहक परीक्षा ❀

गोरखश्चाप्यगस्त्यश्चाङ्गिराः नारदस्तथा ।
सनकश्चाय सानन्दो जनको दुष्टवासकः ॥
वसिष्ठोमिथिलादत्तः क्रमादेभिर्वदेत्फलम् ॥२५॥
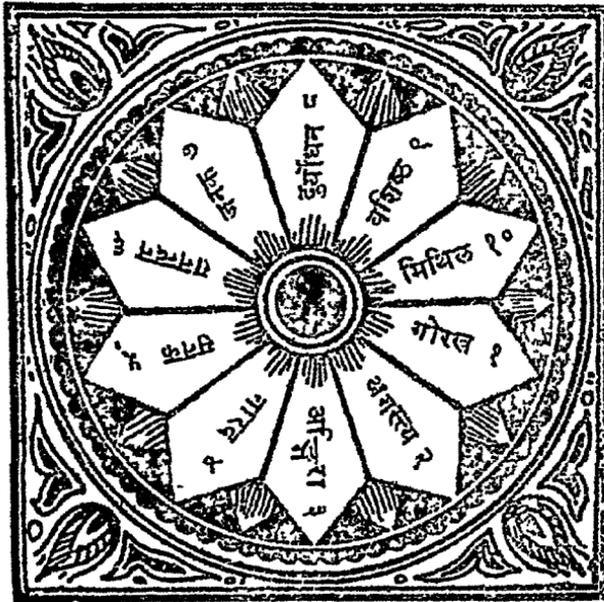
जो किसी मनुष्य से ग्राहक (मिलने की) प्रार्थना करे तो इस चक्रके नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल की परीक्षा कर फल कहै ॥२५॥

❀ अथ भीति परीक्षा ❀

वसिष्ठो विथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्यकस्तथा ।
दुर्वासा नारदश्चैव ह्यङ्गिराः सनकस्तथा ॥
सानन्दो जनकश्चैव क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥२६

जो मनुष्य किसी से भय (डर) कर शुभाशुभ फल की इच्छा करे तो इस चक्र के नामाङ्कों के अनुसार फल को विचार कर जाने ॥२६॥

❀ अथ गर्भ परीक्षा ❀

नीलसुग्रीव लंकेशास्ततः श्रीरामलक्ष्मणौ ।
जाम्बवानङ्गदश्चैव हनूमांश्च तथाऽष्टमः ॥
वाली नलःक्रमादेतैर्दशभिः फलमादिशेत् ॥२७॥
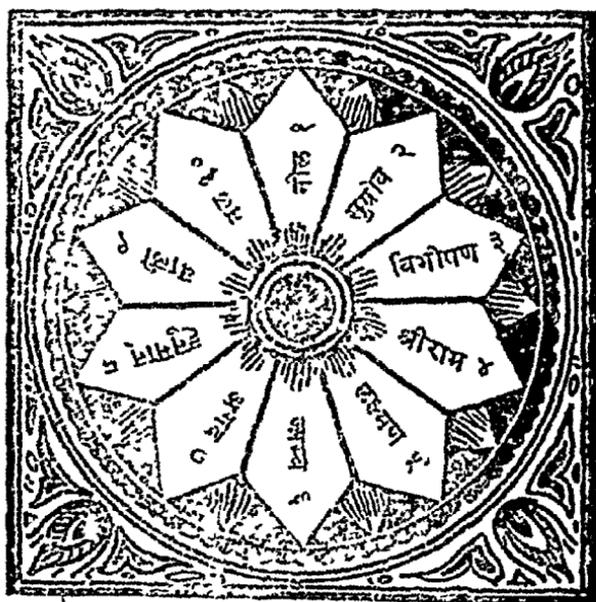
जो मनुष्य गर्भ के विषय की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र में अंगुली रखकर इन दश नामों के अङ्कानुसार शुभाशुभ फल जान कर कहै ॥ २७ ॥

❀ अथ चिन्ता परीक्षा ❀

दुर्योधनोऽजातशत्रु भीमः कर्णः फणीश्वरः ।
अर्जुनः सहदेवश्च नकुलो दुशासनः ॥
भीष्माश्चापि यथापूर्वफलमेतविचारयेत् ॥२८॥
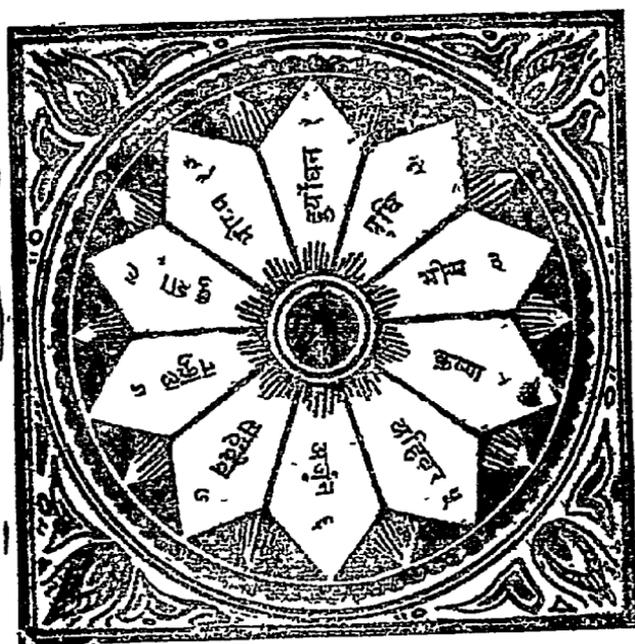
जो मनुष्य किसी चिन्ता ग्रस्त होकर परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र के बीच में अंगुली रखकर अच्छे प्रकार से नामांकों से शुभाशुभ विचारले ॥२८॥

❀ अथ बन्धन परीक्षा ❀

श्रीकृष्णो बलभद्रश्च प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः ।
साम्बश्च कामदेवश्च गरुड़ः शङ्करस्तथा ॥
गणेशः कार्तिकेयश्च क्रमात्सर्वं विचारयेत्॥२९

जो मनुष्य बन्धन (कैद) से छूटने की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल को विचार कर जान ले ॥२९॥

❀ अथ विश्वास परीक्षा ❀

आद्यौ सनकसानंदौ वसिष्ठजनकौ तथा ।
मिथिलौ गोरखश्चैव ह्यगस्त्याङ्गिरसौ तथा ।
दुर्वासानारदश्चैषा नामांकैःफलमादिशेत् ॥३०॥
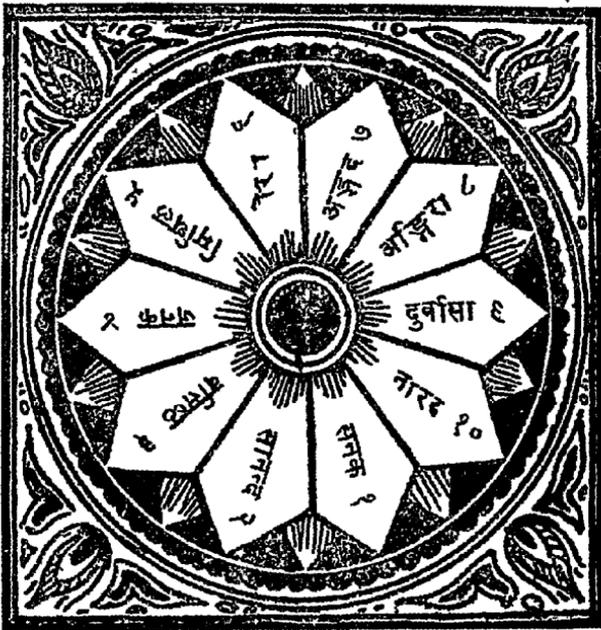
जो मनुष्य किसी से काम के लिये किसी के विश्वास करने की इच्छा करना चाहे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अनुसार शुभाशुभ कहै ॥३०॥

❀ अथ विद्या परीक्षा ❀

श्रीरामो लक्ष्मणश्चैव जाम्बवानङ्गदस्तथा ।
हनूमद्वाजिनौ नीलो नल सुग्रीवकरस्तथा ॥
विभीषणः क्रमादेतैः फलं सर्वमुदाहरेत् ॥३१॥
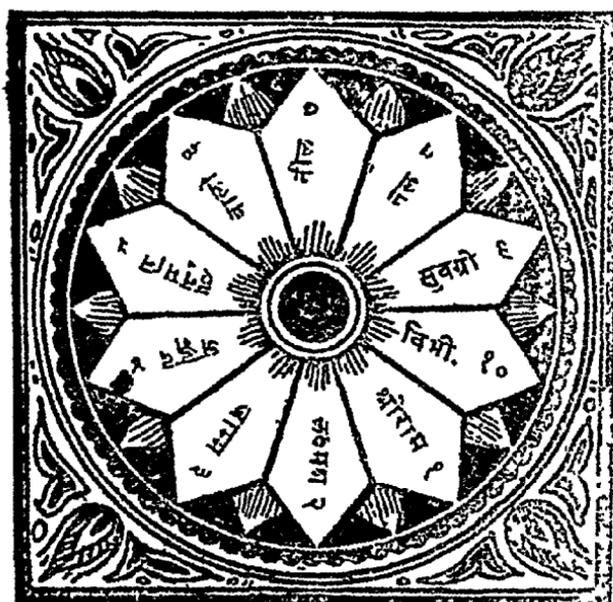
जो मनुष्य विद्या होने, न होने की परीक्षा कराना चाहे तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल जानकर कहै ॥३१॥

❀ अथ दूत परीक्षा ❀

सानन्दः सनकश्चैव दुर्वासा जनकस्तथा ।
वसिष्ठो विथिलश्चैव गोरखोऽगस्त्य एवच ॥
अंगिरा नारदश्चैव नामांकैस्तुफलं वदेत ॥३२
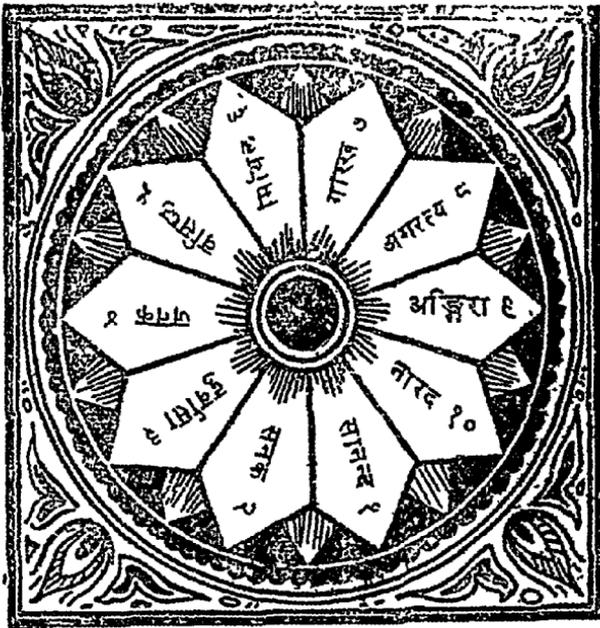
जो मनुष्य दूत (खबर देने वाला) की परीक्षा करना चाहे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल जानकर कहे ॥३२॥

❀ अथ सम्बन्ध परीक्षा ❀

दुर्वासाश्च वसिष्ठश्च विथिलो गोरखस्तथा ।
अगस्त्यश्चांगिराश्चैव नारदोजनकस्तथा ॥
ततःसनकसानन्दौ क्रमान्नामफलंवदेत् ॥३३॥
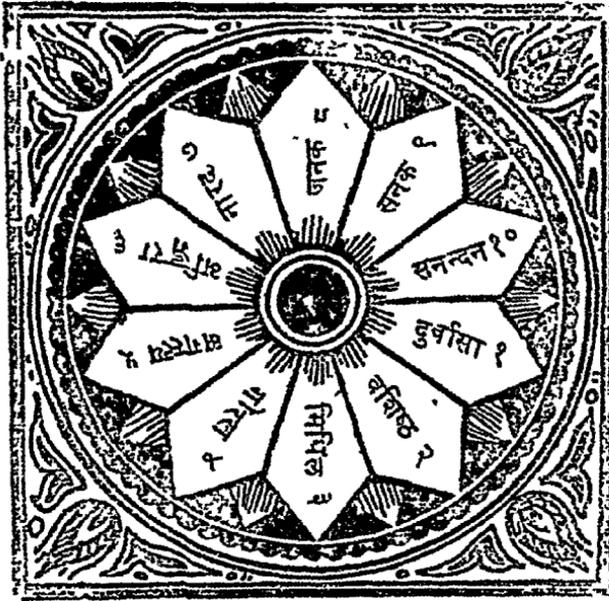
जो मनुष्य किसी से सम्बन्ध (शादी वगैरह) करने की इच्छा करे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अङ्कानुसार शुभ-अशुभ फल को जानकर कहै ॥३३॥

❀ अथ राज्य परीक्षा ❀

दुर्वासा नारदश्चैव सानन्दः सनकस्तथा ।
जनकश्च वशिष्ठाश्चविथलो गोरखस्तथा ॥
अगस्त्यश्चांगिराश्चैषाम् क्रमान्नाम्नोंफलंवदेत् ॥
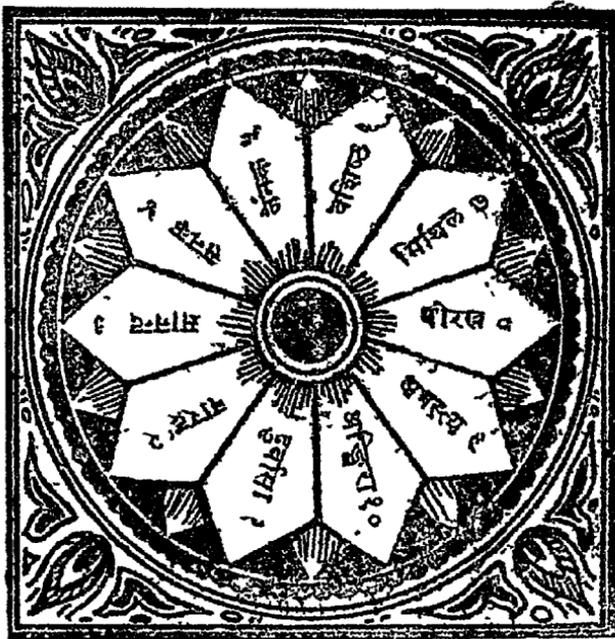
जो किसी मनुष्य को राज्य खरीदने अथवा राज्य का अधिकार प्राप्त करने की परीक्षा करनी हो तो इस चक्र के नामांकों के अनुसार शुभाशुभ फल जानकर कहै ॥३४॥

❀ अथ सन्तान परीक्षा ❀

विभीषणश्च सुग्रीवः श्रीरामो लक्ष्मणस्तथा ।
जाम्बवानङ्गदश्चैव हनूमान्बालिनोनलाः ॥
नीलएभिःक्रमादब्रूयात्विचार्यहिफलाफलम्॥३५

जो मनुष्य सन्तान उत्पन्न होने की इच्छा करे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामांकों के अङ्कानुसार शुभाशुभ फल को विचार कर परीक्षा करले ॥३५॥

❀ अथ संचय परीक्षा ❀

अङ्गिरा जनकश्चैव नारदः सनकस्तथा ।
सानन्दश्चैव दुर्वासा वसिष्ठो विथिलस्तथा ॥
गोरखऽगस्त्य एतेस्तुक्रमात्सर्वं विचारयेत्॥२६
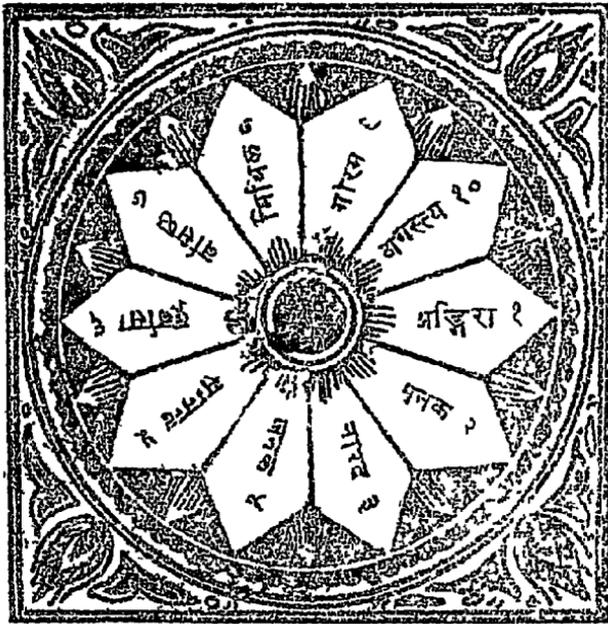
जो मनुष्य धनके संचय की परीक्षा करना चाहे तो चक्र में अँगुली रखकर नामांकों के अङ्कानुसार शुभअशुभ फल जान सकता है ॥२६॥

❀ अथ विवाह परीक्षा ❀

विभीषणो रामचन्द्रो लक्ष्मणो जांबवांस्तथा ।
अङ्गदो हनुमान्वालीनलनीला सुकरठकाः ॥
एतैश्चक्रगतैः सर्वं शुभाशुभ फलं वदेत् ॥३७॥
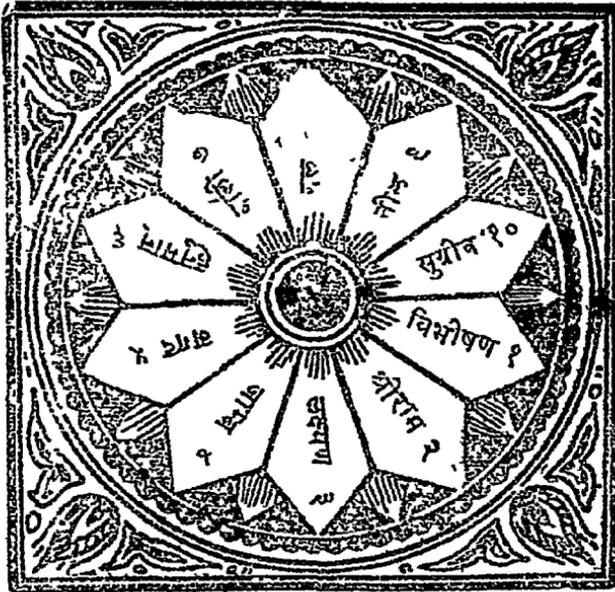
जो मनुष्य विवाह की इच्छा करे तो इस चक्र में अंगुली रखकर नामों के अनुसार शुभाशुभ फल परीक्षा करले ॥३७॥

❀ अथ धन विक्रय परीक्षा ❀

मिथिलो गोरखश्चैव ह्यगस्तंऽगिरसौतथा ।
नारदो जनकश्चैव सानन्दस्तुवसिष्ठकः ॥
दुर्वासाः सनकश्चैवक्रमादेतैः फलं वदेत् ॥३८॥
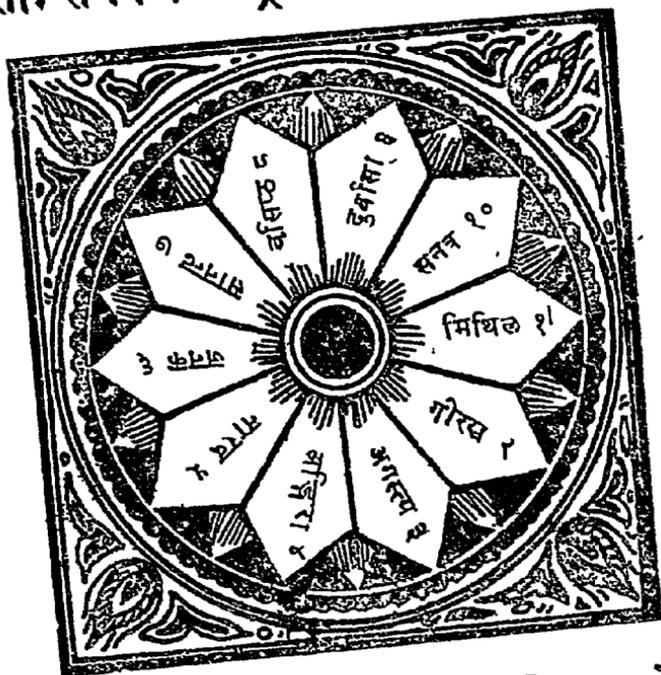
जो मनुष्य किसी वस्तु को विक्रय (बेचने) की इच्छा करे इस चक्र में नामांकों के अनुसार क्रम से शुभाशुभ फल की परीक्षा करके कहे ॥३८॥

❀ अथ प्रणय परीक्षा ❀

जनको ह्यङ्गराश्चैव दुर्वासा गोरखस्तथा ।
अगस्त्यःसनकश्चैव नारदो विथिलस्तथा ॥
तथावसिष्ठसानन्दौ जानयाच्च शुभाशभम्॥३६॥
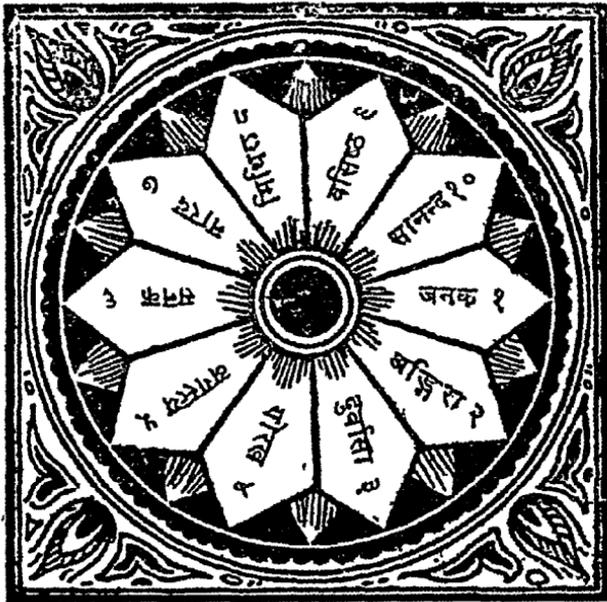
जो मनुष्य किसी से प्रणय (प्रेम) की इच्छा करे इस चक्र के अङ्कानुसार फलाफल की परीक्षा जान ले ॥३६॥

❀ अथ कुशल परीक्षा ❀

महादेवो गणेशश्च साम्बः श्रीकृष्ण एवच ।
बलभद्रः कार्तिकेयो प्रद्युम्नस्तत्सुतस्तथा ॥
कामदेवश्च गरुड़ः क्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥४०॥
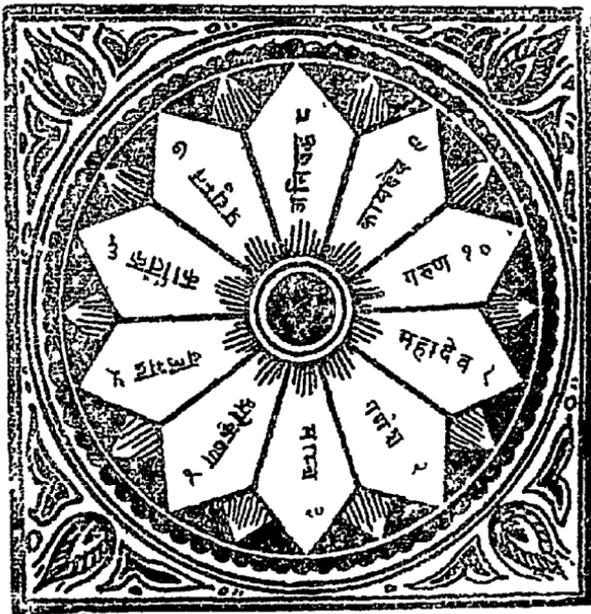
जो मनुष्य कुशल की इच्छा करे तो इस चक्र के नामांकों के अङ्कानुसार चक्र से समग्र फल की परीक्षा कर सब को विचारै ॥

गोरख कथनम्

ग्राहको विक्रयश्चैव संग सम्बन्धकस्तथा ।
विश्वासः प्रणयश्चैव दूतो राज्यं च संचयः ॥
स्वस्थान च क्रमेणएवं फलानि कथितान ते ॥१॥

१—ग्राहक इच्छा जो करता है वह न होगा।

२—यह चीज आखिर तक कभी न बिकी होगी ।

३—इस विषय मे दोस्ती न करने से अच्छा होगा।

४—ग्राम अथवा बस्ती के पश्चिम उत्तर मे सम्बन्ध करने की बात-चीत हो रही है सो हो जायगी।

५—इस मनुष्य का विश्वास करोगे तो पीछे कुशल होगी और पीछे रक्षा पाओगे।

६—प्रेम करने पर भी अधिक क्लेश होगा।

७— उस स्थान मे दूत के भेजने से शीघ्र काम सिद्ध होगा।

८—इस राज्य मे भाग्य के दोष से उपद्रव होगा।

९—सञ्चय (इकट्ठा) करने से कष्ट तो है पर चिन्ता न करे लाभ होगा।

१०- अपने इस स्थान को छोड़ने से उपद्रव अवश्य होगा।

यथा श्रीरामचन्द्र कथनम्

विद्या विवाहसन्तानगर्भाश्चागमनानि च ।
गंगाप्राप्तिगतिश्चैव कृषिकर्म तथैवच ॥
वाणिज्यमपबादश्च एतच्चिन्त्य शुभाशुभम् ॥२॥

१—विद्या पढ़ना बड़ा मुश्किल है परिश्रम करने से कुछ होने की आशा है ।

२—बस्ती के दक्षिणमे नदीके पार कुछ देर से विबाह होगा।

३—पुत्र की इच्छा बहुत कठिनता से शायद सिद्ध होगी।

४–इस गर्भ में अच्छा पुत्र उत्पन्न होगा निश्चय रक्खो।

५–दक्षिण तरफ तुम जाने की इच्छा करते हो तो इस समय जाना होगा।

६–गङ्गा प्राप्ति की इच्छा करते हो वह तुम्हारी सिद्ध होगी।

७–वह पुरुष दक्षिण दिशा में गया है आने में बिलम्ब है।

८–खेती करो परन्तु मेह वर्षा का क्लेश होगा।

९–रोजगार करने से अच्छा न होगा मूल में नुकसान होगा।

१०–इस उपद्रव से देर में छूटेगा।

लक्ष्मण कथनम

अपवादोद्वाहविद्याः सन्तान गर्भ एव च ।
गमनागमने चैव गङ्गाप्राप्तिस्तथैवंच ॥
कृषिकर्म च वाणिज्यं जानीयाच्छुभलक्षणम् ॥३॥

१–अपवाद (झूठा कलङ्क) से दुःख है वह शीघ्र दूर होगा।

२–विवाह घर से पूर्व तरफ होगा परन्तु कुछ बिलम्ब है।

३–पढ़ने से विद्या का लाभ शीघ्र होगा सन्देह नही।

४–कुछ दिन के वीतें पश्चात् बहुत पुत्र होगे।

५–इस गर्भ में भाग्यशाली पुत्र होगा निश्चय जानो।

६–वह मनुष्य पूर्व दक्षिण की तरफ रहाहै वहां कुशल होगा।

७–वह मनुष्य पूर्व दिशा मे आने की इच्छा कर रहा है सो अच्छा नही होगा।

८–गङ्गा के प्राप्त होने की इच्छा है वह तुम्हारी इच्छा सिद्ध होगी।

९–खेती करो, लाभ निश्चय समझो।

१०–व्यौपार करने से अधिक धन मिलेगा निश्चय जानो।

अङ्गद कथनम्

अपवादः कृषिर्वाणिज्यं विद्या लाभ एव च ।
उद्वाहगर्भ प्राप्ती च गमनागमनं तथा ॥
गङ्गाप्राप्तिः क्रमेणैव फलानि दश कीर्तयेत् ॥४॥

१—तुम्हारा अपवाद कुछ द्रव्य के खर्च करने से दूर होगा ।
२—तुम खेती करोगे तो अधिक लाभ होगा ।
३—अपने द्रव्य से तुम व्यापार करना चाहते हो तो अच्छा होगा ।
४—विद्या पढ़ने से अवश्य तुमको लाभ होगा ।
५—अपना स्थान तुमको मिलेगा पर कुछ विलम्ब है ।
६—व्याह अपने देश मे बस्ती के पूर्व दिशा में होगा ।
७—इस गर्भ में पुत्र उत्पन्न होगा निश्चय जानो ।
८—बहुत समीप तुम आवोगे तुम्हे अच्छा होगा ।
९—गङ्गा की प्राप्ति बहुत कठिनता से तुमको होगी ।

जाम्बवन्त कथनम्

वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च सन्ततिः ।
गर्भचिन्ता तीर्थमृत्युगमनागमनं तथा ॥
कृषिकर्मान्तिमं ज्ञेयं विचार्यैतत्सुधीर्वदत् ॥५॥

१—अपने द्रव्यसे व्यापार करना चाहते हो सो करो लाभ होगा ।
२—यह कलङ्क तुम्हारा दूर होगा चिन्ता मत करो ।
३—जो विद्या तुम पढ़ोगे वह जल्दी पढ़ोगे ।
४—व्याह तुम्हारा शीघ्र होगा ।
५—एक कन्या तुम्हारे होगी ।
६ - इस गर्भ से भाग्यवती बेटी उत्पन्न होगी ।
७—तुम्हारी मृत्यु गङ्गा तट के पूर्व में होगी ।

८—तुम दक्षिण तथा पूर्व की तरफ जाने की इच्छा करते हो सो अच्छा फल मिलेगा ।
९—वह प्राणी पूर्व से उत्तर दिशा को गया है घर आ रहा है ।
१०—खेती करो अति उत्तम होगी ।

वालि कथनम्

गमन जाह्नवीप्राप्तिः कृषिर्व्यापार एव च ।
विद्याऽपवादोद्वाहश्च सन्तान गर्भ च ॥
आगमश्चात् विज्ञेयो फलादेशो शुभः स्मृतः ॥६॥

१—दक्षिण को तुम्हारे जाने की इच्छा है वह अच्छा नहीं है ।
२—तुमको गङ्गा प्राप्ति मरने पर होगी ।
३—खेती तुम न करो शुभ न होगा ।
४—पास की जमा से व्यापार मत करो हानि होगी ।
५—विद्या का लाभ तुमको होने की सम्भावना नहीं है ।
६—इस बदनामी से तुमको निश्चय कलङ्क होगा ।
७—तुम्हारी शादी न होगी ।
८—सन्तान तुम्हारे अभी नहीं होगी ।
९—इस स्त्री के गर्भ में सन्तान तुम्हारी है ।
१०—यह प्राणी पूर्व की तरफ़ गया है अभी न आवेगा ॥

हनुमत कथनम्

आगमः कषणं कर्म वाणिज्यमपवादकः ।
विद्या विवाहसन्तानगर्भचिन्तास्तथैव च ॥
गंगाप्राप्तिश्च गमनं यत्प्रश्नस्तत्फलवदेत् ॥७॥

१—यह मनुष्य पूर्व या दक्षिण की तरफ गया है आवेगा ।
२—खेती करो अच्छी होगी ।
३—आपका पशु पक्षी जीवों के व्यापार करने की इच्छा है सो करो अच्छा लाभ होगा ।
४—यह बदनामी तुम्हारी दूर होगी कुछ खर्च करो ।

५-विद्या का अभ्यास करो पर विलम्ब से होगी ।
६-व्याह आपका होगा पर कुछ देर है ।
७-उत्तम लड़का आपके होगा सोच मत करो ।
८-इस गर्भ में भाग्यवान पुत्र होगा ।
९-गङ्गा का लाभ तुमको होगा ।
१०-पूर्व दिशा को गमन करने की इच्छा तुमको है सो करो अच्छा होगा ।

नील कथनम्

गर्भप्रश्नश्चागमनं गङ्गाप्राप्तिर्गमस्तथा ।
कृषि कर्म च वाणिज्य वादविद्योपयामकाः ।।
सन्तत्पवाप्तिर्यस्यस्ति प्रश्नस्तस्य फलं वदेत् ।। ८ ।।

१-इस गर्भ में लड़का उत्पन्न होगा ।
२-वह प्राणी उत्तर दिशा को गया है देर मे आवेगा ।
३-तुमको गङ्गा लाभ कन्ठ बन्द होने पर होगा ।
४-उत्तर दिशा को जावोगे तुम्हारा कार्य देर से होगा ।
५-खेती करो वृष्टि होगी फल थोड़ा होगा ।
६-किसी जीव का रोजगार मत करो लाभ होगा ।
७-तुम्हारा झगड़ा देर से निबटेगा ।
८-विद्याभ्यास करो थोड़ा फल होगा ।
९-तुम्हारा व्याह वस्ती के उत्तर तरफ होगा ।
१०-कन्या सन्तान आपको अच्छी प्राप्ति होगी ।

नल कथनम्

गङ्गाप्राप्तिश्य गमनमागमः कृषिरेव च ।
वाणिज्यमपवादश्च विद्योद्वाहश्च संततिः ।।
गर्भचिन्ता प्रयत्नेन ब्रूयाच्छुभाशुभम् ।। ९ ।।

१-गङ्गा का लाभ आपको होश में रहते ही होगा ।

२—आप समीप देश में गमन करना चाहते हो तो शीघ्र करो लाभ होगा।
३—वह मनुष्य पूर्व दिशा में गया है जल्दी आवेगा।
४—खेती करने से आपका अन्न अधिक होगा।
५—मूल्य द्रव्य से आपने रोजगार करने की इच्छा की है सो करो अधिक लाभ होगा।
६—आपकी आपत्ति एक सप्ताह में दूर होगी।
७—शास्त्र पढ़ो लाभ अधिक होगा।
८—आपका ब्याह ग्राम से पूर्व दिशा में शीघ्र होगा।
९—तीन सन्तान आपके होगी चिन्ता न करो।
१०—इस गर्भ में आपके राजा के समान पुत्र होगा।

विभीषण कथनम्

विवाहो दुहितुश्चिन्ता गर्भमागमनं तथा
गङ्गाप्राप्तिश्च गमनं कृशिर्वाणिज्यकं तथा ॥
अपवादश्चैव विद्वत्मेतेषा फलमादिशेत् ॥१०॥

१—ग्राम के दक्षिण ओर तुम्हारा ब्याह होगा देर है।
२—कन्या तुम्हारे उत्पन्न होगी परन्तु देर है।
३—उत्तम कन्या इस गर्भ में तुम्हारे होगी।
४—वह प्राणी दक्षिण दिशा मे गया है आवेगा।
५—अवश्य ही तुमको गङ्गा का लाभ होगा।
६—दक्षिण दिशा मे तुम्हारी जाने की इच्छा है शीघ्रता करो कार्य सिद्ध होगा।
७—खेती करो वृष्टि अच्छी होगी, अच्छा लाभ उठाओगे।
८—मूल द्रव्य और जीव का रोजगार तुम करना चाहो, वह करो लाभ होगा।
९—तुम्हारा कलङ्क शीघ्र छूटेगा

१०-विद्याभ्यास करो, बिलम्ब से विद्या होगी ।

सुग्रीव कथनम्

सन्तान गर्भचिन्ता गङ्गा च प्राप्तिस्तथैव च ।
गमनागमनं चैव कृषिलञ्छिन मेव च ॥
वाणिज्यं विद्योपयमाः शुभाशुभमुदाहरेत् ॥११॥

१-तुम्हारे सन्तान शिवजी की कृपा से देर में होगी ।
२-इस गर्भ में अति भाग्यवान पुत्र होगा ।
३-उत्तर दिशा में जाओगे तो तुम्हारा भला न होगा ।
४-तुमको गङ्गा की प्राप्ति में सन्देह मालूम होता है ।
५-वह प्राणी पश्चिमोत्तर की तरफ गया है देर में आवेगा ।
६-खेती करोगे तो मुश्किल से थोड़ा लाभ होगा ।
७-इसी अपवाद से आपको कलङ्क होगा ।
८-धातु की द्रव्य का रोजगार आपको करने की इच्छा है सो वह मत करो ।
९-आपको विद्या बड़े परिश्रम से होगी ।
१०-ग्राम के उत्तर दूसरे देश में तुम्हारी शादी होगी ।

बलभद्र कथनम्

मनः कामो बन्धनं च रोगोद्योग शुभानि च ।
धन मृत्युश्चसाहित्यं वासः सेवा विचारयेत् ॥१२॥

१-तुमको होने वाली बात और भूल की चिन्ता है, सो बहुत जल्द सिद्ध होगी ।
२-तुम्हारा बन्धन शीघ्र जबरदस्ती छूटेगा ।
३-तुम्हारी नाड़ी मे पित्त का अधिक कोप है, वह जल्दी शान्त होगा ।
४-अनेक प्रकार का रोजगार तुमको अभी होगा ।
५-वहां कुशल क्षेम है शोक न करो ।

६—शीघ्र कुछ धन तुमको मिलेगा दिखाई पड़ता है ।
७—आप अवश्य शीघ्र ही मरोगे ।
८—सहायता करने में अच्छा शुभ होगा ।
९—इस स्थान से तुमको अवश्य शीघ्र जाना होगा ।
१०—तुम्हारी भगवान की पूजा करने की इच्छा है सो करो भला होगा ।

श्रीकृष्ण कथनम् ।

बन्धनं रोग उद्योगः कुशलं मृत्युरेव च ।
सेवा साहित्यवादौ च धनंच पनसेप्सितम् ॥
क्रमात्फलाफलं सर्वमेतेषां फलमादिशेत् ॥१३॥

१—आपकी अब शीघ्र ही कैद से निवृत्ति होगी ।
२—आपको कफ का रोग है, अच्छा होगा ठाकुरजी को कुछ प्रसाद भोग लगाओ ।
३—आपको अनेक व्यापार होंगे पर बिलम्ब है ।
४—कुशल समाचार आनन्द से देखा जाता है ।
५—अभी आपको मरने में बिलम्ब है ।
६—आपको भगवान की पूजा करनेकी इच्छा है सो करो शुभ होगा।
७—सहायता करो शत्रु नही दोस्त है ।
८—यहां निवास करो दोस्त का स्थान है झगड़ा करना उचित नहीं है ।
९—किसी से तुमको कुछ मिलेगा पर देर में मिलेगा ।
१०—तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी पर कुछ देर है ।

अनिरुद्ध कथनम्

वासो धनं मनः कामो बन्धनं रोग एव च ।
उद्यमश्चेष्ठ देवस्य सेवा कुशलमेव च ॥

साहित्य निधनं प्रश्नफलं ब्रूयाद्याथायथम् ॥ १४ ॥

१–इस स्थान मे निवास करने से तुम्हारा भला होगा ।

२–कुछ धन तुमको मिलेगा परन्तु विलम्ब है ।

३–होने वाले काम की (तुम) इच्छा करते हो शीघ्र ही पूरी होगी ।

४–बन्धन तुम्हारा विलम्ब से छूटेगा सोच मत करो ।

५–पित्त की अधिकता का रोग तुमको है, सो दूर होगा ।

६–रोजगार तुमको अच्छा मिलेगा, परन्तु कुछ दिनोका विलम्बहै ।

७–अपने इष्ट देवता का चिन्तवन करो, कामना तुम्हारी पूर्ण होगी ।

८–सङ्ग करो कल्याण होगा ।

९–वहां का समाचार अच्छा है सोच मत करो ।

१०–तुम्हारी मृत्यु समीप ही आ गई है ।

प्रद्युम्न कथनम्

धन मनोऽभीप्सितं च बन्धनं रोग एव च ।
उद्यमो मृत्युचिन्ता च कुशल देव सेवनम् ॥
साहित्य वसतिज्ञैया ब्रूयादेतत्फल शुभम् ॥ १५ ॥

१–अपने मन धन से रोजगार करोगे तो शीघ्र अच्छा होगा ।

२–अन्न, जल आदि वस्तु दान करने की इच्छा तुम्हारी है सो पूरी होगी ।

३–तुम्हारा ये बन्धन अति परिश्रम से दूर होगा ।

४–तुमको कफसे मिला हुआ रोग है बड़े क्लेश से निवृत्त होगा ।

५–तुम्हारा व्यापार अति शीघ्र होगा ।

६–तुम शीघ्र मरोगे. ईश्वर का चिन्तवन करो ।

७–तुम्हारा भला होगा सोच मत करो ।

८–तुमको किसी देवता की सेवा करने का चित्त है, सो करो भला होगा ।

९-तुम्हारे साथ करने के योग्य वही है सो करो, भला होगा ।
१०-इस स्थान में रहने से राजा के सदृश सुख पाओगे ।

कामदेव कथनम

सेवा साहित्यवासाश्च धनचिन्ता तथैव च ।
मनः कामो बन्धनं च रोगोद्योगसुखानि ॥
मृत्यु चिन्ता भवेद्येषा तेभ्योऽदः फलमादिमेत् ॥१३॥

१-तुम देवी की आराधना करना चाहते हो करो, शुभ होगा ।
२-सङ्ग के करने से तुमको बिलम्ब होगा ।
३-वहां रहने की इच्छा तुम्हारी है, निवास करो शुभ फल होगा ।
४-आपको कुछ धन धातु के रोजगार से मिला है ।
५-आपको धातु की चिन्ता है पूरी होगी ।
६-यह बन्धन आपका छूटता है, सोच मत करो ।
७-आप रोग ग्रस्त हो अपने देश जाओ वहां अच्छे होगे ।
८-वह जीव दुःखी है, यह मालूम होता है ।
९-आप पर कठिन विपत्ति है, छूटने वाली है दान करो ।

साम्बे कथनम्

साहित्यं वासकार्यं च कुशलं मानसेच्छितम् ।
बन्धनं रोग उद्योगो निधनं सेबन तथा ॥
धनचिन्ता च यस्यैते प्रश्नास्तेषा फल वदेत् ॥१७॥

१-आप उसका सङ्ग करो वह सग देगा, मालूम होता है ।
२-यहां आपको निवास से लाभ होगा शीघ्रता करो ।
३-आपकी कुशलता की बात यहां के लोगों से पूर्व दक्षिण दिशा में जायगी ।
४-ग्राम के पूर्व दक्षिण तरफ जाने की आपकी इच्छा है ।
५-बड़े दुःख से आपका बन्धन छूटेगा ।
६-आपको मध्य नाड़ी में बात में और दक्षिण नाड़ी में बात

पित्ताधिक्य है रोग कष्ट साध्य है ।

७—व्यापार आपको मिलेगा शीघ्र ही विदेश को जाओ ।

८—आप जल्दी मरोगे ।

९—आपको शिवजी की मानसिक सेवा करने की इच्छा होती है सो करो अधिक लाभ होगा ।

१०—ग्राम के पूर्व दक्षिण के कोने पर जाओ, धन मिलेगा ।

महादेव कथनम्

कुशलं मृत्युचिन्ता च धनचिन्ता तथैव च ।
साहित्यसेवावासाश्च मनः कामश्य बन्धनम् ॥
उद्यमो दशमः प्रोक्तो विचार्य फलमादिशेत् ॥१८॥

१—उस जगह सब की कुशल है ।
२—आप अभी नहीं मरोगे, खूब सुख भोग करोगे ।
३—ब्राह्मण तथा मित्र से तुमको कुछ धन मिलेगा ।
४—शीघ्र ही आप उसका साथ करो राजयोग है ।
५—नाम पार्थिव पूजन करो कल्याण होगा ।
६—इस स्थान के निवास से राज्य सुख पाओगे ।
७—आपका मनोरथ पूर्ण होगा ।
८—बन्धन आपका छूट जायगा पर कुछ खर्च करो ।
९—दक्षिण और बाम नाड़ी में आपको कफ पित्ताधिक्य है छूटेगा
१०—अच्छा व्यापार आपका होगा शोच मत करो ।

गणेश कथनम्

उद्योगः कुशलं नित्यं मृत्युः सेवा स्थितिस्तथा ।
धनप्राप्तिश्च सारित्यं मनः कामस्तथैवच ॥
बन्धनं व्याधिसहितमेतेषां फलमादिशेत् ॥ १९ ॥

१—देर से व्यापार आपका होगा ।
२—कल्याण के लिये उस स्थान की इच्छा आपको है ।

३—अभी कुछ बिलम्ब से आपकी मृत्यु होगी ।
४—जीने की इच्छा आपको होय तो ठाकुर की पूजा करो ।
५—अधिक बिलम्ब से आपको बडा कष्ट होगा ।
६—यहां रहने से आपको बड़ा कष्ट होगा ।
७—साहित्य सङ्ग करना, अधिक भलाई पाओगे ।
८—किसी धातु की इच्छा आपको है सो बिलम्ब है ।
९—बन्धन आपका बिलम्ब से छूटेगा ।
१०—आपकी नाडी में कुछ रोग है सो देर से छूटेगा उससे अधिक कष्ट भी होगा ।

कार्तिकेय कथनम्

व्याध्युद्योगौ सेवनं च मृत्युः साहित्यमेव च ।
कुशलं बसंतिर्द्रव्यं मदोभिलाषिते तथा ॥
बन्धनं च विजानीयाच्छुभाशुभफलं वदेत् ॥२०॥

१—पित्त की अधिकता का रोग आपको है, उपाय करो शीघ्र ही दूर होगा ।
२—व्यापार आपका बिलम्ब से होगा ।
३—भगवती की आराधना करो, अच्छा फल होगा ।
४—रोग आपको अधिक प्रबल है बिलम्ब से मरोगे ।
५—अब साहित्य (साथ) का समय नहीं है हानि होगी ।
६—शुभ बृतान्त है सोच मत करो ।
७—यहां ही निवास करो । अवश्य लाभ होगा ।
८—कुछ धन आपको मिला है और भी मिलेगा ।
९—जीव और धातु की इच्छा आने की हैं देर से पूरी होगी ।
१०—बन्धन आपका शीघ्र ही छूटेगा पर खर्च होगा ।

गरुड़ कथनम्

निधनं सेवनं वासो धनचिन्ता मनोरथः ।

बन्धनं व्याधिरुद्योगः साहित्यं कुशलं तथा ।
विचार्य फलमेतेषां पृच्छकाम निवेदयेत् ॥२१॥

१–मृत्यु तो आपकी समीप है, पर सत्यव्रत से न मरोगे ।
२–धातु की प्रतिमा का पूजन करो भला होगा ।
३–यहां निवास करने से पीड़ा होगी ।
४–धन की अभिलाषा आपको है परन्तु मिलेगा नही ।
५–आपको धन की चिन्ता और सभी भावी कर्म के फल की अभिलाषा है अधिक बिलम्ब से सिद्धि होगी ।
६–यह बन्धन आपका बड़ी कठिनता से छूटेगा ।
७–आपकी नाड़ी में पित्ताधिक्य और प्रमेहादिक रोग है अधिक कष्ट से छूटेंगे ।
८–रोजगार आपका कोई नही होगा ।
९–साहित्य करने मे देर से लाभ होगा ।
१०–वहां की खबर अच्छी है दुश्मन पकड़ा जायगा ।

अर्जुन कथनम्

पृष्ठलग्नारिमुक्तिर्वै मिलनं संग एव च ।
विवादः समरश्चित मैत्री याञ्चा धनागमः ॥
नष्टद्रव्यस्य प्राप्तिगमश्चैव सर्वं फलं वदेत् ॥२२॥

१—शत्रु तुम से परास्त होगा सोच मत करना ।
२–मित्र से मिलाप तुमको कुछ देर से होगा ।
३–तेरा यह मित्र है इसको साथ रक्खो सोच मत करो ।
४–इस समय विवाद मत करो पराजय पाओगे ।
५–उसके साथ लड़ाई मत करना तुम्हारा मित्र है ।
६–भावी कर्म की चाहना तुमको है सो जल्दी होगा ।
७–मन्त्री करना आपको अब उचित है भला होगा ।
८–यहां जो मांगोगे मिलेगा ।

९—धन मिलने में अब आपको देर नहीं है ।

१०—खरीदा हुआ धातु द्रव्य आपका खो गया है घर में खोजने से मिलेगा ।

युधिष्ठिर कथनम्

मन्त्री चिन्ता विवादश्य युद्ध नष्टधनं तथा ।
मिलनं याचनं प्राप्तिः पृष्ठगामिविमोचनम् ॥

१—उसे मन्त्री तुम करो, वह अति कुटिल है पीछे शत्रु होगा ।

२—धर्न इत्यादि की चिन्ता आपको है शीघ्र छूटेगा ।

३—इससे झगड़ा मत करो पराजय होगी ।

४—युद्ध करो आपकी विजय होगी सोच करने का काम नहीं हैं ।

५—धातु द्रव्य आपकी खोई सो खोजो उत्तर पश्चिम घर में है ।

६—आपके साथी से मुलाकात जाते ही होगी ।

७—यांचा करने से प्राप्ति होगी सोच मत करो ।

८—सुख पूर्वक कार्य करो, प्राप्ति तुमको अधिक होगी ।

९—क्लेश मत करो, आपका पीछा शत्रु छोड़ेगा ।

१०—साथ करने से अच्छा नही है साथ न करो ।

नकुल कथनम्

प्राप्तिर्नष्टधनं पृष्ठलग्नरिमिलनं तथा ।
संगोविवादो युद्धश्य चिन्ता मन्त्री च याचनम् ॥

१—शीघ्र ही तुमको अधिक लाभ होगा ।

२—सात धातु की चीज आपकी खोई है मिलेगी ।

३—शत्रु आपका पीछा छोड़ेगा सोच मत करो ।

४—आप से मेल होगा ।

५—सङ्ग करो आपका भला होगा, सोच मत करो ।

६—उससे झगड़ो. अवश्य जय पावोगे ।

७—युद्ध में आपको शीघ्र जय प्राप्ति होगी ।

८–शोक आपका शीघ्र दूर होगा सन्देह न करो।
९–मन्त्री करो राजा सद्दक्ष वह होगा ।
१०–मांगने से अधिक लाभ होगा शोच नहीं करना ऐसा दिखाई देता है।

दुर्योधन कथनम्

चिन्ता याञ्चा च सम्प्राप्तिर्मन्त्री पृष्टगताहितः।
नष्ट द्रव्यं संगतिश्च मिलनं युद्धमुद्वहः ॥
शुभाशुभ फलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निवेदयेत् ॥ २५

१–शोच आपका शीघ्र दूर होगा ऐसा मालूम होता है।
२–अवश्य यांचा करो, मिलेगा, सन्देह नही ।
३–लाभ अवश्य आपको होगा सोच न करना।
४–यह पुरुष बुद्धि सागर होगा, इसको मन्त्री करो।
५–पृष्ठगत शत्रु से पीछा छूटेगा, चिन्ता नही करो ।
६–खोई हुई आपकी चीज अब नही मिलेगी ।
७–उस पुरुष से संग न करो, अच्छा न होगा, दुख पाओगे ।
८–उससे मुलाकात न होगी, वह धनवान है।
९–वे सब बड़े बलवान है, उनसे युद्ध मत करना।
१०–शादी करने में दुःख होगा, ऐसा लक्षित होता है।

भीम कथनम्

नष्टं पृष्ठगतः शत्रुश्चिन्ता प्राप्तिविवादकः ।
युद्धसंगी च मिलनं याञ्चा मैत्री तथैवच ॥
फलाफलं देद्धौमान्विचार्य च पुनः पुनः ॥ २६ ॥

१–जानवर खो गया है बड़े परिश्रम से प्राप्त होगा।
२–शत्रू के पीछा करने से आपको कुछ नुकसान नहीं होगा बिलम्ब से छूटेगा ।
३–आपका यह सोच देर से छूटेगा।

४-अब भी आपको कुछ नही प्राप्त होगा ।
५-झगड़ा करने से आपको कुछ भी फल न मिलेगा ।
६-देर से विजय प्राप्त होगी, युद्ध करो ।
७-उसका साथ करो आपका मित्र है चिंता मत करो ।
८-आपका मेल होगा परन्तु देर है ।
९-यह बड़ा बुद्धि हीन है उससे मागने से मिलेगा ।
१०-इसको मन्त्री करो आपका भला होगा ।

सहदेव कथनम्

याञ्चा प्राप्तिश्च नष्टत्वं पृष्ठलग्नौविपक्षकः ।
मिलनं संगतिश्चिन्ता विवाहे सौहृदं रणः ॥
एतत्फलं वदेल्योके यत्र तत्रं शुभाशुभम् ॥ २७ ॥

१-मांगने से अवश्य पावोगे ।
२-इस समय आपकी प्राप्ति होती है और भी मिलेगा ऐसा मालूम होता है ।
३-मूल द्रव्य आपका खोगया है वह मिलेगा सोच न करना ।
४-अधिक क्लेश देकर शत्रु आपका पीछा छोड़ेगा ।
५-आपसे जिसका मेल होने वाला है वह ब्राह्मण है ।
६-उसके हाथ से आपका भला नही होगा ।
७-चिन्ता आपकी बिलम्ब से छूटेगी ऐसा लखाई होता है ।
८-उसके साथ किसी तरह झगड़ा नही करना ।
९-यह आपका मित्र नहीं है दुष्ट बुद्धि देने वाला है ।
१०-उसके साथ आप लड़ाई मत करना ।

गंगापुत्र कथनम्

रामौ युद्धश्च मिलनं याञ्चा सम्प्राप्ति सौहृदे ।
पृष्ठलग्नौपि पक्षश्च विवादो विजयस्तथा ॥
नष्टद्रव्यस्य चिन्ता च भवेदेतेच्छुभं फलम् ॥२८॥

१—अच्छी सोहबत आप करोगे ऐसा मालूम होता है ।
२—युद्ध करने से आपकी जय होगी ।
३—इस समय उसके साथ मेल नही होगा ।
४—वहां मांगने से आपको नही मिलेगा ।
५—अभी आपको लाभ होगा ऐसा मालूम होता है ।
६—आप इससे मित्रता करो यह अधिक बुद्धिमान है ।
७—होशियार रहना आपका पीछा अब न छूटेगा ।
८—झगड़ा करने से आपको जय मिलेगी सोच नही ।
९—धातु या द्रव्य खोगया है सो खोजने से मिलेगा ।
१०—कुछ देर से आपको चिन्ता निवृत्त होगी ।

दुःशासन कथनम्

मिलनं संगतिर्याञ्चा नष्टद्रव्यं च सौहृदम् ।
पृष्ठलग्नारिमुक्तश्च विरोधः संगास्तथा ॥
चिन्ता च दशमी प्राप्तिःक्रमात्सर्वं विचारयेत् ॥१९॥

१—उस मनुष्य के साथ आपका शीघ्र ही मिलना होगा ।
२—इसका सङ्ग करो, आपका भला होगा ।
३—याचना से मिलेगा ।
४—धातु या द्रव्य खोगया है, कष्ट से मिलेगा ।
५—उससे मित्रता करो, शुभ होगा वो बड़ा बुद्धिमान है ।
६—इस पीछे आने वाले शत्रु से शीघ्र ही छुट्टी पावोगे ।
७—विवाद करो अवश्य विजय प्राप्त होगी ।
८—युद्ध करो शुभ होगा सोच मत करो ।
९—यह सोच आपका शीघ्र ही निवृत्त हो ।
१०—अब आपको विशेष प्राप्ति होगी, सोच मत करो ।

अहिवर कथनम्

विरोधाऽमात्ययुद्धानि संगश्चिन्ता च याचनम् ।

संप्राप्तिर्मिलनं नष्टः पृष्ठतोरिबिमोचनम् ।
शुभाशुभफलं ज्ञात्वा क्रमात्सर्वं निबेदयेत् ॥३०॥

१–आपका बड़ा मित्र है उसके साथ बिरोध न करना ।
२–मन्त्री बुद्धि हीन है उससे कार्य सिद्धि न होगा ।
३–युद्ध करने से आप बलहीन हो जाओगे, इससे आगे जय पीछे से पराजय होगी ।
४–आपका साथी बुद्धिहीन है शुभ नहीं होगा ।
५–आपकी चिन्ता झूंटी है तो दूर होगी ।
६–मांगने से कुछ थोडा सा मिलेगा ।
७–आपके आदमी के साथ मिलन देर से होगा ।
८–लाभ आपको कुछ देर से होगा, समझ लेना ।
९–इसका पीछा करने से आपका कुछ भी बिगाड़ नही होगा शीघ्र ही छूटोगे ।

कर्ण कथनम्

युद्धविवादोऽमात्यस्य चिन्ता यात्राप्तिरेव च ।
नष्टद्रव्यं मोक्षणं च शत्रुमिलनसंगती ॥
प्रश्नोत्तराणि चैतानि कथनीयानि धी ॥ ३१ ॥

१–युद्ध करो आपकी बिना ही मन्त्री के जय होगी ।
२–उस मनुष्य से कभी झगड़ा मत करना ।
३–इस मन्त्री से विरोध अधिक होगा ।
४–आपकी इच्छा यहां है, सो पूरी नही होगी ।
५–मांगोगे तो अवश्य कुछ मिलेगा ।
६–अच्छी प्राप्ति अब तुमको होगी ।
७–तुम्हारा द्रव्य खोया है, तुम्हारे मेली के पास है वो मिलेगा नही ।
८–पीछा आपका उससे बिलम्ब से छूटेगा ।
९–इससे साथ करो चिन्ता नही परन्तु यह मनुष्य मन्दबुद्धि है ।

१०—आपके आदमी से मुलाकात दर्शन होने से होगी ।

अंगिरा कथनम्

समयः प्रलयश्चैव ग्राहकाः क्रयविक्रयौ ।
स्थानसम्बन्धशंकाश्च विश्वासः किंकरस्तथा ॥
राजकार्यस्तथैतानि फलानीमानि चादिशेत् । ३२॥

१—इस समय आपका शुभ होगा चिन्ता नही ।
२—इस आपत्ति मे से आप खुशी से रक्षित होंगे ।
३—इस चीज की बिक्री आपकी देर से होगी ।
४—इस द्रव्य को बिलम्ब से बेचोगे तो नफा होगा ।
५—आपको इस स्थान से जाना होगा ।
६—व्याह आपका ग्राम से पूर्व दिशा मे होगा ।
७—इसमें किसी प्रकार का सन्देह आप नही करना ।
८—इस पर विश्वास करने से तुम्हे कोई चिन्ता नही है ।
९—इस दूत को वहां भेजो आपका कार्य सिद्ध होगा ।
१०—लड़कों के खेलसा आपका राज कार्य होता है इससे भला न होगा ।

अगस्त्य कथनम्

स्वस्थानं ग्राहकश्चैव तथा चक्रयविक्रयौ ।
सम्बन्धः प्रलयश्चिन्ताविश्वासः किंकरस्तथा ॥
राजकार्यं क्रमादेतत्फलं सर्वमुदाहरेत् ॥ ३३ ॥

१—इस स्थान मे रहने से आपका कल्याण होगा इसको कभी न छोड़ना ।
२—इस चीज के अधिक ग्राहक आपको मिलेगे ।
३—इस द्रव्य को बेचो लाभ देर से होगा ।
४—इस द्रव्य को कुछ रोज रखकर बेचोगे तो अधिक लाभ होगा।
५—आपकी शादी अपने ही ग्राम मे होगी ।

६—आपना स्थान आपको छोड़ना होगा, कारण यह कि प्रलय होगा।

७—आप बिलकुल सोच मत करो, ठीक होगा।

८—इस पर विश्वास करो कोई हानि न होगी।

९—इस दूत को वहां भेजो काम होगा।

१०—आपका राजकार्य बालकों का सा है अच्छा न होगा।

दुर्वासा कथनम्

सम्बन्धो राज्यचिन्ता च दूतः प्रलय एव च।
शंका च समयश्चैव स्वस्थानग्राहकविक्रयाः॥
विश्वासश्च क्रमादेतत्फलं ज्ञात्वा निवेदयेत् ॥३४॥

१—स्थान में सम्बन्ध करने से आपका भला नहीं होगा।

२—इस रियासत में आपको उत्पात होगा भला नहीं।

३—उस स्थान में दूत भेजने से कार्य अवश्य नष्ट होगा।

४—इस आपत्ति से रक्षा आपकी होगी सोच मत करो।

५—इसमें आप सोच मत करो निडर रहो।

६—इस समय आपका शुभ होगा।

७—इस स्थान को छोड़ दो ये अच्छा नहीं है।

८—आपको ग्राहक अवश्य मिलेगा सोच मत करो।

९—इस द्रव्य के बेचने से आपको लाभ होगा।

१०—इस विश्वास से अवश्य लाभ होगा।

जनक कथनम्

प्रलय. समयश्चैव विश्वासो दूत एव च।
राज्यलाभो विक्रयश्च सम्बन्धो ग्राहकस्तथा॥
स्वस्थानंतचथाशंका ज्ञात्वैतत्फलमादिशेत् ॥३५॥

१—इस आपत्ति से आपकी रक्षा होगी सन्देह नहीं है।

२—यह समय आपका अति कठिन है मरण तुल्य होगा।

३—इसको देने से फिर न मिलेगा ये अविश्वासी है।

४—इस स्थान में दूत भेजने से आपका कार्य नहीं होगा ।
५—राज्य की प्राप्ति आपको नहीं होगी यह मालूम होता है ।
६—यह वस्तु आपकी अभी नहीं विकेगी ।
७—इस स्थान में सम्बन्ध करने से हानि होगी ।
८—अब ग्राहक आपका न होगा ऐसा लक्षित होता है ।
९—यह स्थान अच्छा नहीं है इसको छोड़कर चले आओ ।
१०—यह शङ्का आपकी कुछ भी नहीं है सोच मत करो ।

नारद कथनम्

राज्येष्टं समयः स्थान तथा ग्राहकविक्रयौ ।
शंका प्रलयसम्बन्धो विश्वास. किंकरस्तथा ॥
यथा तथंफलं ब्रूयाच्छुभं वायदिवाऽशुभम् ॥३६॥

१—राज्य आपका अधिक शुभ होगा ।
२—यह समय आपका अति हर्ष से बीतेगा ।
३—इसी स्थान में आनन्द होगा, इसका त्याग मत करो ।
४—चिन्ता मत करो, वह तुम्हारा ग्राहक हुआ है ।
५—यह चीज तुम्हारी बिक चुकी है, सोच मत करो ।
६—यहा तुमको अवश्य शङ्का है ।
७—ग्राम के दक्षिण तुम्हारा सम्बन्ध है, वो शुभ है ।
८—इस आफत से तुम्हारी रक्षा होना अति कठिन है ।
९—इसके विश्वास से तुम्हारा शुभ होगा, सोच नहीं ।
१०—उस स्थान में दूत भेजा है सो अवश्य कार्य होगा ।

सनक कथनम्

विश्वासदूतराज्यानि समया ग्राहकस्तथा ।
स्थानप्रलयचिन्ताश्च सम्बन्धो विक्रयस्तथा ॥
शुभ वा यदि वाऽनिष्टंज्ञात्वा फलमुदाहरेत् ॥३७॥

१—इसका कभी विश्वास मत करना, छोड़ने से नहीं मिलेगा ।

२—वहां दूत भेजो कार्य सिद्ध होगा ।
३—इस रियासत में तुमको अधिक लाभ होगा ।
४—यह तुम्हारे लिये बहुत अच्छा है, सुख होगा ।
५—अब ग्राहक अधिक मिलेंगे सोच मत करो ।
६—आखिर में शुभ होगा इस जगह को मत छोड़ो ।
७—इस आफत से अवश्य बचोगे, सोच नहीं करना ।
८—इस कार्य मे अधिक चिन्ता तुमको होती है ।
९—ग्रामके पूर्व ओर तुम्हारे ब्याह की बात होती है, वहां जाओ ।
१०—इस वस्तु की बिक्री शीघ्र होगी ।

सानन्द कथनम्

दूतः प्रलयविश्वासो राज्य समय एव च ।
विक्रय्यवस्तु द्रव्यं च स्वस्थान संगतिस्तथा ॥
सम्बन्धश्य तथातेषां सर्वं विचारयेत् ॥ ३८ ॥

१—वहां दूत को मत भेजो कार्य नहीं होगा ।
२—इस आपत्ति से तुम्हारी रक्षा नहीं होगी ।
३—इसके विश्वास से अच्छा नहीं होगा ।
४—इस राज्य में आपको सुख नहीं होगा ।
५—यह समय आपके लिये मृत्यु तुल्य दिखाई देता है ।
६—यह वस्तु आपकी शीघ्र ही बिकेगी ।
७—इस द्रव्य का लाभ अभी तुमको नहीं होगा ।
८—इस स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को जाओ ।
—इसके साथ से अधिक क्लेश मिलेगा ।
१०—उस स्थान में सम्बन्ध करने से आपका भला नहीं है ।

वशिष्ठ कथनम्

शंकासम्बन्धस्थानानि तथा विश्वास किंकरौ ।
राज्यं च समदश्चैव विक्रयस्य च ॥

ग्राहकः प्रलश्चान्त्य फलान्येतान्युदाहरेत् ॥ ३९ ॥

१–यह सन्देह आपका झूठा है क्यों सोचते हो ।
२–इस सम्बन्ध में आखिर आपको दुःख होगा ।
३–इस स्थान को छोड़कर अन्यत्र नहीं जाना ।
४–इसका विश्वास कदापि नहीं करना यह दुर्जन है ।
५–उस स्थान में दूत भेजो कार्य सिद्ध समझो ।
६–इस राज्य में आपको आनन्द होगा कुछ सोच नहीं है ।
७–अब अच्छा समय आपका आया लक्षित होता है ।
८–इस द्रव्य को वेचो, अच्छा फायदा होगा ।
९–इस वस्तु का अब ग्राहक आपको मिलेगा ।
१०–इस आपत्ति में कठिनता से प्राण रक्षा पाओगे ।

मिथला कथनम्

शंकाविक्रयचिन्ताश्च वास स्थानं तथैव च ।
विश्वासः किंकरो राज्य समयः प्रलयस्तथा ॥
द्रव्याणां ग्राहको नूनं न भविष्यति न संशयः ।
एतेषां फलं ज्ञात्वा वदेत्सर्वो शुभम् ॥ ४० ॥

१–आप सोच न करो इसमें सन्देह कभी न होगा ।
२–कुछ समयके अनन्तर इस द्रव्यके वेचनेमें आपको लाभ होगा।
३–आपके उत्तर दिशामें आपका सम्बन्ध हुआहै सो बहुत अच्छाहै।
४–इस जगह को अब न छोड़ो भला होगा ।
५–उसके विश्वास से अच्छा फल आपको मिलेगा ।
६–इस रियासत मे आपका कल्याण होगा ।
७–उस स्थान में दूत भेजो अवश्य कार्य सिद्ध होगा ।
८–इस रियासत मे आपका कल्याण होगा ।
९–अल्प समय बीतने पर आपका भला देखा जाता है ।
१०–इस वस्तु के अधिक ग्राहक आपको मिलेंगे ।

❀ इति हनुमानज्योतिष समाप्तम ❀

ॐ अथ काक चरित्रम् ॐ

नागार्जुन उवाच

काकस्य चरितं वक्ष्ये यथोक्तं मुनिभाषितम् ।
तस्य विज्ञानमात्रेण सर्वतत्त्वं लभेन्नरः ॥ १ ॥

किसी समय नागराज (शेष) ने अर्जुन से पूछा कि हे महाराज ! काक (कौवा) से शुभ और अशुभ फल किस प्रकार जाना जाता है । तब नागराज का प्रश्न सुन, अर्जुन बोले कि हे नाग ! काक का सम्पूर्ण चरित्र विस्तार पूर्वक कहते हैं तुम सुनो । दिन के घड़ी प्रमाण से काक की जो बोली सुनी जाती हैं उसी से शुभाशुभ फल जाना जाता है ।

प्रातःकाले काक वचनम्

यदा प्रथमदण्डे पूर्वपार्श्वे 'श्रय श्रय' शब्द ।
रटति काकस्तदा पौरुषलाभवार्ता कथयति ॥१॥

प्रातःकाल एक घड़ी दिन से जो काक 'श्रय श्रय' शब्द करे तो उस रोज सब जगह बड़ा सुख होगा ॥१॥

यथा पक्षदण्डे अग्निकोणे 'श्रय श्रय' शब्द ।
रटति काकस्तदा शोकवार्त्ता कथयति ।
ऊर्ध्वमुखो वा रटति तदा दूरदेशतः ।
पुत्रतो वा शोकवार्त्तां कथयति ॥ २ ॥

दो घड़ी दिन में अग्निकोण की तरफ काक 'श्रय श्रय' शब्द करे तो शोक होगा । यदि काक ऊपर मुख करके शब्द करे तो दूर से शोक का समाचार आवेगा, यदि नीचे मुख करके काक शब्द करे तो पुत्र का शोक होगा ॥२॥

तृतीयदण्डे दक्षिण दिशि 'मुय मुय' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा वृत्तिलाभवार्त्तां कथयति ॥३॥

प्रातःकाल तीन घड़ी दिन चढ़े यदि काक दक्षिण दिशा

में 'मुय मुय' शब्द बोले तो जिसके मकान से बोलेगा उसको अवश्य अकस्मात कुछ धन मिलेगा ।। ३ ।।

नैऋ'त्युकोणे चतुर्थदंडे यदा 'मुय मुय' शब्दं ।
रटति काकस्तदा अग्निचौरभयं तूर्ध्वमुखो वा ।।
काकः राजतोऽन्यतो वा भय कथयति ।। ४ ।।

प्रातःकाल के चार घड़ी दिन में काक जब नैऋ'त्य कोण में 'मुय मुय शब्द करे तो चोर या अग्नि का भय हो । और ऊपर मुख करके बोले, तो राज्य भय, नीचे मुख करके बोले तो अन्य कुछ भय होगा ।।१।।

'अहा अहा' रवं पञ्चमदण्डे पश्चिम दिशि ।
यदारटतिकाकस्तदा वृत्तिलाभवार्ता' कथयति ।।
ऊर्ध्वमुखो रटति तदा विदेशतो धनलाभः ।
अधोमुखो रटति तदाऽऽशु धनलाभः ।। ५ ।।

पांच घड़ी दिनको काक जब पश्चिम तरफ मुख करके 'अहा अहा' बोले तो मनुष्य को उस दिन धन की प्राप्ति होगी ।।५।।

'कहा कहा' षष्ठदण्डे समये पश्चिम दिशि ।
यदा रटति काकस्तदा कार्यप्रदायकवार्ता कथयति । ६।।

छः घड़ी दिनको यदि काक पश्चिम दिशा में 'कहा कहा' शब्द करे तो अवश्य अभिलाषित कार्य सिद्धि होगा ।।६।।

सप्तमदण्डे वायुकोणे 'आहे आहे' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा व्याधो मरणकथां कथयति ।।
सप्तमदण्डे उत्तर दिशि 'जा जा' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा अन्यवार्ता' कथयति ।।७।।

सातवें घड़ी मे दिनको वायुकोण मे जो काक 'आहे आहे' रटे तो रोग से मृत्यु होगी । यदि सातवीं घडी मे दिन को 'जा जा' शब्द करे तो दूसरी ही कोई बात सुनने मे आवेगी ।।७।।

अष्टमदडे ऐशान्या 'हा हा' रवँ ।
यदा रटत काकस्तदा मरणवार्त्ता कथयति ॥ ८ ॥

दिन को आठ घड़ी को यदि काक ईशानकोण पर 'हा हा' शब्द करे तो कहीं से मरने की खबर आयेगी ॥८॥

नवमे दण्डे ब्रह्मस्थाने 'हा हा' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा प्रार्थनावार्त्ता कथयति ।।९ ।

नव घड़ी दिन में काक सिर के ऊपर 'हा हा' शब्द करे तो उस दिन प्रार्थना की बात सुनने में आवेगी ॥ ९ ॥

दशमे दण्डे सन्मुखे 'आवा आवा' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा शुभवार्त्ता कथयति ॥१०॥

दिन की दशवीं घड़ी मे यदि काक 'आवा आवा' शब्द रटे, तो समझना कि कोई शुभ सन्देश है ॥ १० ॥

एकादशदण्डे अग्निकोणे 'भज भज' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा पुत्रवर्त्ता कथयति ॥ ११ ॥

दिन के ११ घड़ी में यदि काक अग्निकोण में 'भज भज' शब्द करे तो समझना कि पुत्र होने की आशा है ॥ ११ ॥

द्वादशदण्डे वायुकोणे 'जय जय' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा शोकवार्त्ता कथयति ॥१२॥

दिन को १२ घडी में वायुकोण से काक यदि 'जय जय' शब्द करे तो समझना कि शोक को बात कहता है ॥१२॥

त्रयोदशदण्डे नैऋत्यकोणे 'का का' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा महादुःखवार्ता कथयति ॥१३॥

दिन के १३ घडी में नैऋत्य कोण से काक 'का का' शब्द करे तो समझना कि महान् दुःख की बात कहता है ॥१३॥

चतुर्दशदण्डे उत्तर दिशाया 'कोवा कोवा' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा शत्रु भय कथयति ॥ १४ ॥

दिन में १४ घड़ी दिन को उत्तर दिशा में 'कोवा कोवा' शब्द करे तो शत्रु से भय बतलाता है ॥ १४ ॥

पञ्चदशदण्डे ऐशान्यां 'ऐशान्यां' 'जा जा' शब्दं ।
यदा रटतिकाकस्तदा महद्दुःखलाभं कथयति ॥१५॥

११ दिन में घड़ी मे काक यदि ईशानकोण में जा जा' शब्द करे तो समझे कि महान् दुःख होगा ॥ १५ ॥

षोडषदण्डे पूर्व दिशायां 'कोवा कोवा' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा मित्रलाभं कथयति ॥ १६ ॥

१६ घडी दिन को यदि काक पूर्व दिशा मे ' कोवा कोवा ' शब्द करे तो समझना कि मित्र से मुलाकात होगी ॥१६॥

अह्नि् नैं सप्तदशदण्डे दक्षिण दिशाया 'आय आय' शब्द ।
यदा रटति काकस्तदा महद् दुःख कथियति ॥ १७ ॥

१७ घड़ी दिन को यदि काक दक्षिण दिशा मे 'आय आय' शब्द करे तो समझना कि भारी दुःख होगा ॥१७॥

वायुकोणे अष्टादशदण्डे 'खावा खावा' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा महाकार्यलाभ कथयति ॥ १८ ॥

दिन १८ घडी मे यदि काक वायुकोण में 'खावा खावा' शब्द करे तो कार्य मे बड़ा लाभ बताता है ।

पूर्व दिशा दिशायां ऊनविंशतिदण्डे 'महा महा' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा विदेशगमनं कथयति ॥ १९ ॥

दिन को १९ घड़ी दिन में यदि काक पूर्व दिशा में 'महा महा' रटे तो विदेश यात्रा योग बतलाता है ॥ १९ ॥

विंशतिदण्डे उत्तराभिमुख 'अय अय' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा अर्थलाभवार्त्ता कथयति ॥२०॥

दिन को २० घड़ी यदि काक उत्तर दिशा में होकर 'अय

अथ शब्द करे तो धर्म की प्राप्ति बताता है।

एकविंशतिदण्डे ब्रह्मस्थाने 'सा सा' ध्वनि ।
यदा ऊर्ध्वंगो रटति काकस्तदा भूमिलाभं कथयति ॥२१॥

दिनमें २१ घड़ी में यदि काक ऊपर होकर 'सा सा' ध्वनि करे तो समझना कि पृथ्वी का लाभ उस घरके मनुष्य को होगा॥ २१ ॥

द्वाविंशतिदण्डे पूर्वदिशाया 'आका आका' शब्दं ।
यदा रटति काकस्तदा अपूर्व वस्तुलाभ कथयति ॥२२॥

दिन को २२ घड़ी बाद काक पूर्व दिशा में 'आका आका' शब्द करे तो किसी अपूर्व चीज का लाभ होगा ॥२२॥

त्रियोविंशतिदण्डे अग्निकोणे 'अद्वयं अद्वयं शब्द ।
यदा रटति काकस्तदा सर्व लाभ कथयति ॥२३॥

दिनको २३ घड़ी दिनमे यदि काक अग्निकोण में 'अद्वयं अद्वय' शब्द करे तो घरके स्वामी को सब ऐश्वर्य प्राप्त होय ॥२३॥

चतुर्विंशतिदण्डे दक्षिण दिशायां 'ओवा ओवा' शब्दं ।
यदा रटति काकस्तदा अकालचक्र कथयति ॥२४॥

दक्षिण दिशा में दिन के २४ घड़ी में यदि काक 'ओवा ओवा' शब्द करे तो अकाल चक्र बताता हैं॥ २४ ॥

पञ्चविंशतिदण्डे नैर्ऋत्यकोणे 'खाये खाये शब्दं ।
यदा रटति काकस्तदा सर्पभयं कथयति ॥२५॥

नैर्ऋत्यकोण पर पश्चिम मे दिन के २५ घड़ी में यदि काक 'खाये खाये' शब्द करे तो घर वालो में से किसी को अवश्य सर्प का भय बताता है ॥२५॥

षड्विंशतिदण्डे पश्चिम दिशायां 'आहा आहा' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा सर्वत्र लाभं कथयति ॥ २६ ॥
पश्चिम दिशा में दिन के २६ घड़ी में काक 'आहा आहा' शब्द करे तो गृह के स्वामी को हर जगह लाभ होगा ॥२६॥

सप्तविंशतिदण्डे उत्तरपार्श्वे 'आका आका' ध्वनि ।
यदा रटति काकस्तदा महासुखलाभवर्ता कथयति ॥२७॥
उत्तर तरफ दिनके २७ घड़ी मे यदि काक 'आका आका' शब्द करे तो गृहपति को भारी सुख की बात कह रहा है ॥२७॥

अष्टविंशतिदण्डे ऐशान्या 'सा सा' ध्वनि यदा ।
रटति काकस्तदा ममस्कामनासिद्धिकथा कथयति ॥२८॥
ईशान कोण पर दिन को २८ घड़ी में यदि काक 'सा सा' ध्वनि करे तो गृह स्वामी का मनोरथ पूर्ण होगा ॥१८॥

ऊनत्रिंशदण्डे ब्रह्मस्थाने 'आखां आखां' रवं ।
यदा रटति काकस्तदा सुखवार्ता कथयति ॥२९॥
दिनके २९ घड़ी में यदि काक सिरके ऊपर होकर 'आखां आखां' शब्द करे तो समझना कि उस मनुष्य का यह दिन बड़े आनन्द से बीतेगा ॥२९॥

त्रिंशदण्डे 'आवा आवा' रव ।
यदा रटति काकस्तदा दुःखवार्त्ता कथयति ॥३०॥
दिन के ३० घड़ी मे यदि काक पृथ्वी पर होकर 'आवा आवा' शब्द करे उस मनुष्य को बड़े दुःख की बात सुनने मे आवेगी ॥३०॥

——❀——
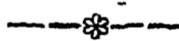
❀ पुनर्व्यक्तम् ❀

काक जो बोले अपने मने । छाया नापि के कीजे दुगने ॥

सत भाग से काकी जोई । बोले काक प्रमाण है सोई ॥

पुनः स्पष्ट रूप से कहते है ।

अपने मतलब से यदि काक बोले, तो जितने घड़ी में बोले उस काक की छाया को उङ्गली से नाप लेवे उस (जो उङ्गली छाया मिले उस छाया) को दूना करे, दूना जितना हो उसको सात से भाग देकर जितने अङ्क शेष रहें बनका विचार यह है कि–

एक रहे तो भोजन कारी । दूजी लम्बी जाव-सचारी ॥
तीजे मृत्यु यात्रा पावे । चौथा कलहा आग जलावे ॥
पांचसे मङ्गल यात्रा कहै । शून्य अरुछ निज मनही लहै ।

ससांगु लिपरिमिताच्छ्या च द्विगुणी कृता ।

इसका अर्थ यह है कि सात अंगुल का खरका टुकड़ा लेकर उसकी छाया को नापे उस नाप को दूना करे उससे जो अङ्क लाभ हो उस अङ्क में सात का भाग देवे जो शेष (बाकी) रहे उसका शुभाशुभ फल यह है कि– १ शेष होय तो भोजन मिले, २ हो तो उस ग्राम में कोई प्राणी उत्पन्न होवे, ३ रहे तो किसी की मृत्यु होगी, ४ बाकी बचे तो अधिक उपद्रव होगा अथवा आग लगेगी, ५ रहे तो किसी स्थान से अच्छा सन्देशा आवेगा, ६ अथवा शून्य मिले तो समझना काक अपनी भाषा बोलता है ।

—: इति काक चरित्रं समाप्तम् :—

अथ दिवादण्डप्रमाणम्

दिनखरामा ३० दधिनवन्तुयत्कलरसेन ६ पङ्क्त्या १० निहितंशरास
हीन च प्रभान्वितभेद्ध कार्यं छाया तदन्तादिनमध्यभागे ।
छायोदितेष्टादिनमध्यभागे पदानि तादृक्सहसा नवासा ।
दिया भवेत् सागतगम्यनाडी श्रीमान् वराही वददि स्म युक्त्या

दिन दण्ड का प्रमाण

३० घड़ी से दिनमान यदि अधिक होय तो जितनी घड़ी अधिक होगी उस घड़ी को ६ से पूरा करके ५ मिला के भाग देवे उससे बाकी निकाल के जितना होवे उसी अङ्क को गृह मध्य छाया ५-१० अंगुल यही अङ्क को घटावे यही मध्याह्न काल की छाया होवे और ३० घड़ी (कम) हो तो जितनी घड़ी कम हो उसी घड़ी को १० देकर पूर्ण करे अथवा ५ से भाग देना, उसमें जितने अङ्क मिले उन्ही अङ्को को वरो मध्य (वंची) छाया ५-१० अंगुल उसमे मिलाने से दिन मध्य छाया होगी जितनी बेला समय को गणना वही समय अङ्क को छाया करके अर्थात् उस समय की जो छाया है, उसको पैर से नाप लेना जितना पैर होय उससे गुणा करने से जो छाया उदित होगी उसको मध्य छाया से हीन करके जो अङ्क शेष रहे उसमे और भी १० मिलाकर एक जगह रखना होगा और दिनमान होगा उसको ५ देकर इन अङ्को को घटावें उससे वेला का परिणाम जाना जायगा अर्थात् वह अङ्क घटाने से जितना वाकी दण्ड रहेगा और घटाने से वाकी जो रहेगा, वही फल होगा, प्रात.काल से लेकर मध्याह्न (दोपहर) तक यही रूप समझना उसके अनन्तर का समय आया है वह भी उसी प्रकार से समझना ।

❀ इतिः ❀

अथ रात्रिदण्ड प्रमाणम्

अनीशश्चापञ्च नवत्रयोदश कपोदिनष्टकपमूश्चचुर्दश ।
ततोयिसर्द्धा शिवराञ्चिकंटीमातुराक्याविधिविष्णुषोडशम् ॥

रात्रि के एण्ड का प्रमाण

जितना रात्रि प्रश्न करने वाला प्रश्न करे उस समय रात्रि का अन्दाज़ यदि न मिले, तो जो मनुष्य प्रश्न करे, उससे एक

फूल का नाम लेने को कहे उस फूल मे नाम यदि अक्षर आकार से गणना से आदि तक के नौ अक्षर आदि हो तो रात्रि ४ का अनुमान ५ दण्ड वा १३ दण्ड होगा । एक और आदि के अक्षर उकार से मकार तक यदि नौ अक्षर आदि हो तो २-६१ दण्ड रात्रि का अनुमान समझना और च आदि से अक्षर तक ञ क्ष तक हो तो २-११-१२ दण्ड रात्रि का अनुमान समझना।

अथ स्पन्दचरितम्

अङ्गस्फूर्ति प्रवक्ष्यामि यथैव मुनिभाषितम् ।
फलाफल विदित्वा तु वदाम्यत्र शुभाशुभम् ॥

मनुष्य के अङ्ग फरकने का विचार

देह के प्रत्येक अङ्ग फरकने से जो शुभाशुभ फल होता है उसे कहते है । सिर फरके तो राजा के यहाँ सम्मान मिले सिर का दक्षिण भाग फरके तो सुख मिले, वाम सिर फरके तो अशुभ, ललाट फरके तो ऐश्वर्य लाभ, दक्षिण नेत्र फरके तो जय लाभ अथवा मित्र से मुलाकात हो बाम नेत्र फरकने से धन की हानि अथवा राज भय होय अथवा दूसरी कोई आपत्ति आवे, दक्षिण नेत्र नीचे फरके तो कष्ट होवे ऊपर फरके तो सुख होय, बांई नाक फरके तो मृत्यु अथवा मृत्युके समान रोग होवे, दक्षिण नासिका फरकने से मधुर भोजन मिले, जिह्वा फरकने से अधिक धन मिले. तालु फरकने से कलह होय,परन्तु धनका लाभ अधिक होय,कर्ण फरकनेसे कुटुम्ब लाभ होगा तथा अति सुन्दर स्त्री मिले, वामकर्ण फरके तो सिर में पीड़ा होय. दोनों कर्ण फरके तो धन की प्राप्ति होय और सन्तोष भी होय । दक्षिण स्कन्ध फरके सोना मिले, बाम स्कन्ध फरके तो कुछ यात्रा करनी होय दोनो स्कन्ध फरकें तो सिर काटा जाय । ग्रीवा फरके तो वस्त्र मिले और

असन्तोष जनक वृत्ति होय, दक्षिण भुजा फरके तो बड़ा बलवान होय वाम पद फरके तो कलह होय, दक्षिण पांव फरके तो विदेश) जाना होय, वाम पद फरकने से बड़ा सुख होय । उङ्गली फरके तो सीता भोजन मिले । कमर फरके तो समझना कि आम रोग होगा । ललाट फरके तो समझना कि राजद्वार जाकर सम्मान पावेंगे । भग फरकने से पीड़ा प्राप्त होय, छाती फरके तो सर्वांग पीड़ा होय, पीठ फरके तो शूल होय, नाभि फरकने से दुष्ट स्वप्न देखे, ऊरू (जांघ) फरके तो सर्व जय हो और कुशल होय गुदा फरकनेसे शिर कटे कण्ठ फरके तो केश नाश होय, नितम्ब फरके शरीर में फोड़ा हो. शिर फरके तो बिजय की प्राप्ति हो ।

इस प्रकार से मुनिवृन्दों ने शरीर फरकने का शुभाशुभ फल कहा है बिचार पूर्वक मनुष्य समझ लेवें ।

॥ सुप्रसव प्रश्न ॥

अच्छी रीति से गर्भ जननें का मन्त्र

अस्ति गोदावरीतीरे जन्ममाला नाम राक्षसी ।
तस्याःस्मरणमात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत् ॥

इस मन्त्र को पढ़कर और इसी मन्त्र को लिखकर गले में बांधने से शीघ्र गर्भिणी स्त्री कुशल से बाहर निकले ।

और इसी को जल मे धोकर गर्भिणी को पिलादे तो स्त्री की गर्भजन्य पीड़ा दूर होकर सुख से प्रसव होय ॥१॥

॥ गर्भ प्रश्न ॥

रवि	चन्द्र	मंगल
बुध	गुरु	शुक्र
	शनि	

❀ गर्भ का प्रश्न ❀

किसी के गर्भ मे पुत्र है या कन्या है यदि इसकी परीक्षा करनी हो तो ऊपर के चक्र मे हाथ रख कर अक्षर देख के विचार लेवे इस प्रकार से कि रवि, मङ्गल, गुरु इन तीनों मे से किसी कोष्ट में हस्त पढ़े ता अवश्य पुत्र होगा। चन्द्र, बुध, शुक्र इन में हस्त पड़े तो समझना कि कन्या होगी। शनि के कोठे मे हस्त पड़े तो गर्भ गिर जायगा।

❀ रामचरित्र प्रश्न ❀

राम	सीता	लक्ष्मण
भरत	शत्रुघ्न	हनुमान

रामराज सुख सेज विलासा। सीता सोच करे बन वासा ॥
लक्ष्मण लक्ष जीत घर आवे। हनुमत आगे खबर जनावे ॥
भरत के देखत होय अनन्दा। देखि रिपुहन तरकस कन्धा ॥

४	१०	९
८	५	६
११	३	१०

चारि और दश पुनि आगम आवे। आठ पाच फल मागे पावे ॥
तीन और ग्यारह से ले राजू। नव छः तेरह अरे अकाजू ॥

❀ समाप्तम् ❀

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का एक मात्र स्थान :—
श्यामलाल हीरालाल श्यामकाशी प्रेस, मथुरा
के लिये शर्मा प्रेस, हाथरस में मुद्रित।

आपको उपयोगी पुस्तकें

इन पुस्तकों को मनन करने से आप रोगों का इलाज स्वयं कर सकते हैं। अपनी, अपने परिवार की तथा सर्व साधारण की रोगों से रक्षा कीजिये।

बूटी प्रचार

(महन्त सुखरामदास कृत)

इस पुस्तक मे सम्पूर्ण रोगोंका इलाज जड़ी बूटी द्वारा बताया गया है। बूटियो के चित्र उनके संस्कृत, मराठी, गुजराती आदि नाम सहित छपे हैं। धातुओं के जारण मारण की विधि चित्र सहित छपी हैं।

मूल्य २)५०

सहस्त्र रस दर्पण

प्रसिद्ध वैद्य कौशिक जी द्वारा लिखित इस पुस्तक में १००० रसों का वर्णन है। अमुक रस किस रोग पर कितनी मात्रा में देना है सब-वर्णित है। मूल्य २)५०

हम सौ वर्ष कैसे जियें

इस पुस्तक में संतुलित आहार, व्यायाम, आसन आदि ऐसे विषयों का पूरा विवरण है कि जिनके व्यवहार मे लाने से आदमी [illegible] [illegible] हो सकता है। मूल्य २)५०

इलाजुलगुरबा

(अर्थात् दीनजन चिकित्सा)

एक एक रोग पर ऐसे नुसखे लिखे हैं कि जो पैसो मे तैयार हो जाते हैं। शिर से पैर तक सम्पूर्ण रोगोंका वर्णन है।

मूल्य ४)

महात्माजी के १२५१ नुसखे

महात्मा कीड़ीरामजी ने अपने जीवन भर के अनुभव से यह नुसखे लिखे हैं। बड़े उपयोगी हैं।

मूल्य २)५०

प्राकृतिक चिकित्सा

प्राकृतिक चिकित्साके प्रकाण्ड विद्वान डा० युगल किशोर जी ने यह पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक द्वारा संतुलित आहार, सूर्य की किरणे, टब स्नान, मिट्टी की पट्टी आदि से कठिन रोगों का इलाज कर सकते हैं। मूल्य ३)

आ[illegible] [illegible] पुस्तकें [illegible]

मगाने का पता [illegible] मथुरा